दशाफलदर्पणम्

॥ ವಕ್ರತುಂಡ ಮಹಾಕಾಯ ಸೂರ್ಯಕೋಟಿ ಸಮಪ್ರಭ ॥
॥ ನಿರ್ವಿಘ್ನಂ ಕುರುಮೇದೇವ ಸರ್ವಕಾರ್ಯೇಷು ಸರ್ವದಾ ॥
ಶ್ರೀ ಮಹಾಗಣಪತಿ ದೇವರು – ಇಡಗುಂಜಿ
LUCKY

दशाफलदर्पणम्

सम्पादन व व्याख्या :

डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्रः ज्योतिषाचार्यः

एम.ए., पी.-एच.डी.

☎ 2401170(दु), 2333508(नि)

चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय

ग्रन्थों के प्रकाशक एवं विक्रेता

आई० सी० आई० सी० आई० बैंक के पास,

सीके० २८/१५, ज्ञानवापी, चौक, वाराणसी-२२१००१

रंजन पब्लिकेशन्स

16, अंसारी रोड, दरियागंज,

नई दिल्ली-110002

प्रास्ताविकम्

दशाफलदर्पण नामक यह ग्रन्थ पं. श्रीनिवास पाठक, रतलाम, मध्यप्रदेश निवासी, श्री महादेवपाठक के पुत्र ने संग्रह करके लिखा था तथा छपने के बाद यह पाठकों को बहुत श्रेयस्कर लगा भी था। वास्तव में यह एक संग्रह ग्रन्थ है। ग्रन्थकार का दावा है कि विभिन्न ग्रन्थों से उन्होंने संग्रह करके इसे तैयार किया है।

विक्रम संवत् 1960, फाल्गुन शुक्ल पंचमी, रविवार को रतलाम में यह कार्य समाप्त हुआ था, जैसा कि लेखक ने पुस्तक के अन्त में स्वयं लिखा है। तदनुसार 21 फरवरी, सन् 1904 रविवार, को यह ग्रन्थ समाप्त हुआ था। अतः इस की रचना आज से 97 वर्ष पूर्व हुई थी। महादेवपाठक, **जातकतत्त्वम्** के रचयिता हैं तथा जातकतत्त्वम् फलादेश के लिए एक अच्छा ग्रन्थ माना जाता है। यह **औदुम्बर** पाठकों का वंश ज्योतिष के क्षेत्र में, अपने समय में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका था। श्रीनिवास पाठक, इन्हीं महादेव पाठक के पुत्र हैं।

जिस समय दशाफलदर्पण लिखा गया था, उस समय पाराशरहोरा की हस्तलिखित प्रतियाँ ही केवल दैवज्ञों के निजी संग्रहों में थीं। उसका छपा संस्करण कोई भी उपलब्ध नहीं था। पाराशरहोरा को सम्पूर्ण रूप से छपवा पाना, उस युग में सरल कार्य नहीं था, अतः श्रीनिवास पाठक ने अपने पिता के जीवन काल में ही सम्भवतः पाराशरहोरा से दशाफल के श्लोकों को यथावत्, मामूली हेर-फेर से संग्रह करके यह पुस्तक तैयार की थी, जो उस समय के अनुसार एक प्रशंसनीय कार्य था। वृहत्पाराशरहोरा शास्त्र के कई मुद्रित संस्करण आज उपलब्ध हैं, अतः बहुत-सा पाठ यथावत् पाराशरहोरा में उपलब्ध होने से यह ग्रन्थ प्रामाणिकता की श्रेणी में आ ही जाता है। मानसागरी, जातकाभरण पाराशरहोरा तथा **भार्गवनाड़ी** ग्रन्थों से मूलपाठ का संग्रह करके तैयार यह पुस्तक विभिन्न ग्रन्थों की विषयसामग्री लेकर तैयार की गई है, ऐसा कहना मिथ्या तो नहीं है।

यदि उक्त ग्रन्थों के विषय व फल भिन्न होते तो बात ठीक होती, लेकिन जिस तरह पाराशरहोरा के आधार पर ही कभी भार्गवनाड़ी लिखी गई थी, उसी तरह दशाफलदर्पण भी पाराशरहोरा के मूलपाठ से ही प्रायः **उपबृंहित** किया गया है।

मानसागरी आदि ग्रन्थ वास्तव में बहुत प्रारम्भिक स्तर के हैं। ऐसे प्रारम्भिक ग्रन्थों की उपयोगिता उस समय तो थी जब दैवज्ञ हाथ से लिखकर जन्म पत्रिकाएँ तैयार करते थे तथा फल लिखने के स्थान पर मानसागरी, जातकाभरण आदि ग्रन्थों से फलादेश के श्लोक सीधे लिख दिया करते थे। वास्तव फल निर्णय में उस परस्पर असम्पृक्त फलादेश का क्या महत्त्व था, यह बात विद्वानों से छुपी नहीं है। इसी कारण हमने मानसागरी व जातकाभरण के श्लोकों को विषय पुनरावृत्ति तथा कहीं कहीं अनावश्यक समझकर इस संस्करण में छोड़ दिया है, जो ग्रन्थ की कलेवर रक्षा के सन्दर्भ में युक्तियुक्त ही था।

दशाफल के सन्दर्भ में पाराशरहोरा व लघुपाराशरी ये दो ही ग्रन्थ विशेष महत्त्व रखते हैं, शेष सब ग्रन्थ दशाफल के प्रसंग में कवित्व प्रदर्शन मात्र का प्रयत्न ही हैं। अतः सार मात्र का ग्रहण करते हुए, विषयक्रम को अनवच्छिन्न रखते हुए, पुस्तक की आत्मा की सर्वतोभावेन रक्षा करते हुए, व्यर्थ बातों को छोड़कर, तत्त्वमात्र को ही इस संस्करण में प्रस्तुत किया गया है।

इन्हीं श्रीनिवास पाठक ने अपने पिता महादेव पाठक के **जातकतत्त्वम्** पर हिन्दी व्याख्या भी लिखी थी, जिसकी योग्यता को हम अपने जातक तत्त्व के आमुख में प्रकट कर ही चुके हैं। सम्भवतः अपने पुत्र को भी ज्योतिष क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त करवाने हेतु ही महादेव जी ने जातक तत्त्व पर व्याख्या लिखने के लिए कहा होगा, जो बहुत से स्थानों पर अशुद्ध, कहीं अनावश्यक विस्तार, दीर्घ व्याख्या के स्थलों पर अति संक्षेप, पाठ की अशुद्धियों आदि के कारण विद्वानों को कुछ कम जँची थी।

जहाँ तक सम्भव था, हमने इस संस्करण में मूल रूप से विद्यमान, संस्कृत अशुद्धियों को शुद्ध किया है, जहाँ पर सम्भव नहीं था, वहाँ हम वैसा न कर सके, क्योंकि यदि करते तो पूरा श्लोक ही पुनः लिखना पड़ता, जो कि मौलिकता के विरुद्ध होता। एतदर्थ विद्वान् पाठक हमें क्षमा करेंगे। ध्यान रखें, मूल आशय व भावना को अक्षत ही रखा गया है।

दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्म व प्राणदशा का फल यहाँ एक साथ उपलब्ध है, यह इस की विशेषता है। विशेष व्युत्पत्ति के लिए पाठकों को हमारा वृहत्पाराशरहोरा का संस्करण भी अवश्य देखना व समझना चाहिए। आशा है, दशाफलदर्पण का किसी भी भाषा में (सम्प्रति हिन्दी भाषा) अनुवाद, पाठकों के लिए यथाकथाचित् लाभप्रद ही होगा, इसी विश्वास के साथ यह पुस्तक जिज्ञासु पाठकों के हाथों में सादर सप्रश्रय समर्पित करता हूँ।

विद्वदाश्रवः
सुरेशचन्द्र मिश्रः

वसन्तपंचमी
(29 जनवरी 2001)
4732, दयानन्द मार्ग
21, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

एक दृष्टि में

विंशोत्तरी दशा : प्राणदशाभुक्ति तक फलकथन।

सूक्ष्म दशाफल के लिए प्रसिद्ध रचना।

लगभग 100 वर्षों पुराना ज्योतिष पुस्तक।

हिन्दी भाषा में सर्वप्रथम प्रकाशित।

पाराशरहोरा के आधार पर लिखित दशाफल।

कई अचूक दशाफल नियमों का खुलासा।

श्रीनिवास महादेव पाठक रतलाम की लेखनी से।

सूक्ष्मदशा का फलादेश : अकाट्य व अनोखा।

सुरम्य-प्रामाणिक-संग्रहणीय ग्रन्थ।

दशाफल की सर्वांगपूर्ण एकमात्र प्रस्तुति।

॥अध्यायोपक्रम॥

1
॥ दशाप्रवेशाध्यायः ॥

मंगलाचरण

नत्वा गुरुपदाम्भोजं सच्चिदानन्दरूपिणीम्।
भुवनेशीं शिवं विष्णुं हेरम्बं च सरस्वतीम्॥1॥
तथा सूर्यादिखेटांश्च भक्तिपूर्वं पुनः पुनः।
कुर्वे वै श्रीनिवासोऽहं दशानां फलदर्पणम्॥2॥
कस्मिन्काले कीदृग्दशाफलं भवति कस्य खेटस्य।
तस्यविनिर्णयसिद्ध्यै कृतो ममायं सदुद्योगः॥3॥
प्रीत्यैगणकगणानामल्पायासेन चार्थसंसिद्ध्यै।
जातकशास्त्रसुधाब्धेः सारमपारं प्रचारये रुचिरम्॥4॥
अतिविज्ञानविशालास्सन्तः सन्तोषमुख्यगुणवन्तः।
परगुणदोषविशेषप्रकटनपटवः क्षमान्विताः सन्तु॥5॥

1. श्री गुरु चरणों में नमन पूर्वक, सच्चिदानन्द रूप भुवनेश्वरी, त्रिपुरसुन्दरी, भगवान् शिव, विष्णु, श्री गणेश व सरस्वती देवी को मैं ग्रन्थकार प्रणाम करता हूँ।

2. अपि च सूर्यादि नवग्रहों को प्रणाम करके, मैं श्रीनिवासपाठक दशाफलदर्पण नामक ग्रन्थ का प्रारम्भ कर रहा हूँ।

3. विभिन्न ग्रह अपनी दशाओं में, विभिन्न कारणों से व्यक्ति को अपना दशाफल अलग ढंग से देते हैं, इसी बात का निर्णय लेते हुए, यह सत्प्रयास किया जा रहा है।

4. थोड़े प्रयत्न से ही दैवज्ञों का कार्य सम्पन्न हो और उत्तम दशाफल कहने से मन सन्तोष से प्रसन्न हो सकें, इसी उद्देश्य से जातक शास्त्र रूपी महासमुद्र से रुचिर सारांश को मैं यहाँ कहता हूँ।

5. सज्जन विद्वान्, बहुत विशिष्ट ज्ञान रखते हुए भी दूसरों के द्वारा किए गए कार्य में किसी बहुत विशेष दोष को ही विनम्रता से प्रकट करते हैं। सामान्य दोषों को तो वे स्वाभाविक प्रक्रिया दोष समझकर उपेक्षित करते हुए, गुणों को

सविशेष प्रकट करते हैं। सज्जनों व विद्वानों का स्वभाव ही क्षमाशील होता है।

दशा प्रयोजन

दशानुरोधेन फलं वदन्ति मुनीश्वरा जातशुभाशुभं तत्।
सारं समुद्धृत्य तदेव वक्ष्ये भेदं यथा विस्तरतो दशानाम्॥6॥
बलानुसारेण यथा हि योगो योगानुसारेण दशामुपैति।
दशाफलैः सर्वफलं नराणां वर्णानुसारेण यथा विभागः॥7॥

सर्वार्थ चिन्तामणि में कहा गया है कि सभी ज्योतिष प्रवर्तक महर्षियों व मुनियों ने ग्रहों का फल, दशा अन्तर्दशा के अनुसार ही कहा है अर्थात् ग्रहों का फल, उनके दशाकाल में विशेषतया अनुभव में आता है। इसी कारण मुनिवचनों का सारांश लेकर यहाँ दशाओं का विभिन्न भेदात्मक फल कहा जा रहा है।

ग्रहों के बलाबल से ग्रहों द्वारा बनाए गए योग की शक्ति का निश्चय होता है। योगों का फल, योग कारक ग्रहों की दशा में प्राप्त होता है। अतः सभी मनुष्यों को दशाफल मिलता है।

यद्राजयोगजनितमथभावजातं यद्रिष्टयोगजफलं गदितं पुराणैः।
सर्वं च तत्किलदशाफलगं भवेच्च तेनाधुना फलमलं कथयामि सम्यक्॥8॥
यद्यद् द्रव्यं कथितमृषिभिर्यस्य यस्य ग्रहस्य
कर्माजीवोऽपिच तनुभृतां यश्चयश्चोदितोऽत्र।
यद्भावोत्थं यदपि ग्रहजं योगजं दृष्टिजं च
तत्तत्सर्वं ग्रहबलवशाद्योजनीयं दशायाम्॥9॥

सभी राजयोगों, भावों, अरिष्टयोगों का फल, योगकारक व योगाकरक के सम्बन्धी ग्रहों की दशान्तर्दशा में प्राप्त होता है। इसीलिए विस्तार से दशाफल बताया जा रहा है।

ग्रहों के द्रव्य, पदार्थ, कर्माजीव, अधिकारक्षेत्र, कारकत्व, शील, भाव कारकत्व आदि का समन्वय करते हुए ग्रहों की दशा का फल कहना चाहिए। उक्त फल, ग्रह के बलाबलानुसार प्राप्त होता है।

दशाभेद

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दशाभेदान्यनेकशः।
विंशोत्तरीदशा चाद्या दशातु षोडशोत्तरी॥10॥
द्वादशोत्तरिका ज्ञेया तथैवाष्टोत्तरी दशा।
पंचोत्तरी दशा तद्वद्दशा शतसमाःस्मृता॥11॥
दशा हि चतुरशीति समा चाथ द्विसप्ततिः।
तथाषष्टिसमा प्रोक्ता दशा षड्विंशति समा॥12॥

खेटक्रमदशाराशिक्रमा भागक्रमा तथा।
नवांशकग्रहदशा राश्यंशकदशास्ततः॥13॥
दशाकालाभिधा चक्रदशाप्रोक्ता मुनीश्वरैः।
चरपर्यायका विप्र दशा च स्थिरसंज्ञिका॥14॥
अथोत्तरदशा विप्र ब्रह्माख्या चापरादशा।
केन्द्रादि च दशा ज्ञेया कारकादिग्रहा दशा॥15॥
मण्डूका च दशा प्रोक्ता तथा शूलदशाभिधा।
योगार्धाच्चदशा विप्र दृग्दशा च द्विजोत्तम॥16॥
दशा त्रिकोण नाम्ना वै राशीनां च दशा तथा।
तारा दशा तथा ज्ञेया दशा ज्ञेया च वर्णदा॥17॥
पंचस्वरा दशा विप्र योगिनी च दशास्मृता।
ततः पैण्ड्यदशा ज्ञेया तथांशानां दशा द्विज॥18॥
नैसर्गिकदशा विप्र अष्टवर्गदशा स्मृता।
सन्ध्या दशा च ज्ञातव्या पाचका च दशा द्विज॥19॥

दशाभेद

(10-19) दशाओं के अनेक भेद कहे गए हैं : 1. विंशोत्तरी 2. षोडशोत्तरी 3. द्वादशोत्तरी 4. अष्टोत्तरी 5. पंचोत्तरी 6. शतवर्षदशा 7. चतुरशीतिसमा 8. द्विसप्ततिसमा 9. षष्टिवर्षा 10. षट्त्रिंशत्समा 11. ग्रहक्रमदशा 12. राशिक्रमदशा 13. भागक्रमदशा 14. नवांश ग्रहदशा 15. नवांशदशा 16. कालदशा 17. कालचक्र दशा 18. चरदशा 19. स्थिरदशा 20. उत्तरदशा 21. ब्रह्मदशा 22. केन्द्रादिदशा 23. कारकादिदशा 24. मंडूकदशा 25. शूलदशा 26. योगार्धदशा 27. दृग्दशा 28. त्रिकोणदशा 29. राशिदशा 30. तारादशा 31. योगार्धदशा 32. पंचस्वरा दशा 33. योगिनीदशा 34. पिण्डायुर्दशा 35. अंशायुर्दशा 36. निसर्गदशा 37. अष्टकवर्गदशा 38. सन्ध्या दशा 39. पाचकदशा

इन दशा प्रकारों का विवेचन हमारे वृहत्पाराशर होराशास्त्र व जैमिनिसूत्र में हो चुका है। यहाँ आवश्यक दशाओं का विवेचन करके, फलादेश पर विशेष बलाधान किया जाएगा।

विंशोत्तरी दशा

विंशोत्तरी द्विधा प्रोक्ता तथैवाष्टोत्तरी द्विधा।
चक्राख्या द्विविधा ज्ञेया कालाख्यास्त्रिविधा मता॥20॥

इन दशा भेदों में विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी व चक्रदशा के दो-दो प्रकार होते हैं। कालचक्र दशा तीन प्रकार की होती है।

विंशोत्तरी साधन

आनयनप्रकारं च शृणुस्व द्विजपुंगव।
नामनक्षत्रपर्यन्तमार्द्रादि कृत्तिकादितः॥21॥

विंशोत्तरी दशा कृत्तिकादि व आर्द्रादि भेद से दो प्रकार की होती है। कृत्तिकादि दशा तो प्रसिद्ध व सर्वत्र प्रचलित ही है, लेकिन आर्द्रादि दशा विंशोत्तरी भी होती है, यह नई बात ग्रन्थकार ने बताई है। इस बात का उल्लेख किसी मान्य ग्रन्थ में नहीं है। ग्रन्थकार जिस प्रदेश में रहते थे, वहाँ पर अष्टोत्तरी से फल देखने की परम्परा है, लेकिन विंशोत्तरी से सटीक फल मिलने के कारण ग्रन्थकार ने स्वबुद्धि से अष्टोत्तरी की विधि का प्रयोग विंशोत्तरी में कर लिया है।

शैवा कृष्णेऽर्कहोरायां चन्द्रहोरागते सिते।
दहनात्स्वर्क्षपर्यन्तं गणयेन्नवभिर्हरेत्॥22॥

कृष्ण पक्ष में जन्म हो और लग्न में सूर्य की होरा हो तो आर्द्रा नक्षत्र से गिनें। शुक्ल पक्ष में चन्द्र होरा में जन्म हो तो कृत्तिका से गिनकर क्रमशः विंशोत्तरी दशा जानें।

यदि कृष्ण पक्ष में चन्द्रहोरा या शुक्लपक्ष में सूर्य होरा हो तो क्या करें? ग्रन्थकार मौन हैं। कुछ नई बात कहने के उत्साह में, ऐसा लिख दिया है। आगे स्वयं विंशोत्तरी को मुख्य दशा मानकर पाराशरीय विधि से ही सारी गणना करने के पश्चात् फलादेश कहने की सलाह देते हैं। यह वदतोव्याघात अर्थात् स्वयं अपनी बात को स्थापित करके, स्वयं ही उसे काट देना ही है।

सूर्येन्दुक्ष्माजतमसो वाक्पतिर्मन्दचन्द्रजौ।
केतुः शुक्रः क्रमाच्छेषे विज्ञेयास्ते दशाधिपाः॥23॥
रसाशामुनिधृत्यब्दा भूपतिधृतिवत्सरा।
सप्तेन्दवो नगो व्योम बाहवो भास्करादितः॥24॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल (क्ष्माज), राहु (तम), गुरु, शनि, बुध, केतु, शुक्र ये क्रमशः दशेश होते हैं। 6, 10, 7, 18, 16, 19, 17, 7, 20 ये इनके दशा वर्ष हैं।

वास्तव में विंशोत्तरी दशा बिना किसी शर्त के सब पर लागू होती है। पराशर ने भी विंशोत्तरी को सर्वमुख्य कहा है तथा अन्य बहुत से दशा प्रकारों को सर्वमान्य नहीं कहा है। हमारे विचार से प्रचलित विंशोत्तरी साधन विधि ही पाठकों को लेनी चाहिए। पूर्वोक्त दशा प्रकारों का विस्तृत व सोदाहरण विवेचन हम अपने **वृहत्पाराशरहोराशास्त्र** में कर चुके हैं। यहाँ पिष्टपेषण करके, ग्रन्थ का कलेवर, हम अनावश्यक रूप से नहीं बढ़ाना चाहते हैं। जिन्हें दशा गणित के प्रकारों को देखने में रुचि हो, वे हमारा पाराशरहोराशास्त्र देखें।

विंशोत्तरी की महत्ता

कृत्तिकादि त्रिरावृत्या दशा विंशोत्तरी मता।
अष्टोतरी न संग्राह्या मारकार्थं विचक्षणैः॥25॥

कृत्तिका से जन्म नक्षत्र का गिनकर विंशोत्तरी दशा जाननी चाहिए। मारक विचार में विशेषतया विंशोत्तरी को ही लें। अष्टोत्तरी को मारकप्रसंग में विद्वानों ने विशेष महत्त्व नहीं दिया है।

फलानि नक्षत्रदशा प्रकारेण विवृण्महे।
दशा विंशोत्तरी ग्राह्या नाष्टोत्तरी मता॥26॥

उडुदाय प्रदीप या लघुपाराशरी में कहा गया है कि सभी नक्षत्रदशाओं में विंशोत्तरी मुख्य है। अष्टोत्तरी को पाराशरमत में विशेष स्थान प्राप्त नहीं है।

मरुभवयवनानां पद्धतिः प्रेक्षणीया
कलियुग शुभकाले सा च विंशोत्तरी स्यात्।
षट्कृति शतमब्दैर्यातकाले कलेर्वा
तदुपरि हर उक्तोऽष्टोत्तरी प्रत्यवायः॥27॥

जातक विनोद में कहा गया है कि मरु प्रदेशों में निवास करने वाले यवनों की दशा विधि विंशोत्तरी विचारणीय है। विंशोत्तरी से ही कलियुग में फल कहना चाहिए। अथवा कलियुग में 2600 वर्ष बीत जाने के बाद, अष्टोत्तरी दशाफल घटित नहीं होता है।

दशाभोग के 5 प्रकार

अथ वक्ष्ये खगेशानां भुक्तिं पंचविधामिह।
दशा चान्तर्दशा चैव तत्तदन्तर्दशास्तथा॥28॥
सूक्ष्मभुक्तिः प्राणदशा एवं पंचदशाः स्मृताः॥

सभी ग्रहों की दशा का भोग पाँच प्रकार से होता है। महादशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा व प्राणदशा, ये 5 दशाभोग के प्रकार हैं।

दशाफल भेद : 18 कारण

एकैकोडुदशा स्वीया गुणैरष्टादशात्मकैः।
भिन्ना फलविपाके तु कुर्याद् वैचित्र्यसंयुतम्॥29॥
परमोच्चे तुंगमात्रे तदर्वाक् तदुपर्यपि।
मूलत्रिकोणभे स्वर्क्षे स्वाधिमित्रग्रहस्यभे॥30॥
तत्कालसुहृदो गेहे उदासीनस्यभे तथा।
शत्रोर्भे चाधिशत्रोर्भे नीचान्तादुर्ध्वदेशभे॥31॥

तस्मादर्वाक् नीचमात्रे नीचांते परमांशके।
नीचारिवर्गके सखले स्ववर्गे केन्द्रकोणभे॥32॥
व्यवस्थितस्य खेटस्य समरे पीडितस्य च।
गाढमूढस्य च दशा पचति स्वगुणैर्फलम्॥33॥

ये श्लोक बृहत्पाराशरहोराशास्त्र से लिए गए हैं। एक ही ग्रह अपनी विभिन्न परिस्थितियों में अपने दशाकाल में भिन्न-भिन्न फल देता है। निम्नलिखित 18 परिस्थितियों से एक ही ग्रह का दशाफल विचित्र ढंग से अलग-अलग हो जाता है।

1. परमोच्चगत, 2. उच्चराशिगत, 3. उच्च राशि से थोड़ा आगे पीछे, 4. मूलत्रिकोणगत 5. स्वक्षेत्री 6. अधिमित्रक्षेत्री या मित्रक्षेत्री, 7. तत्कालमित्रक्षेत्री, 8. समक्षेत्री, 9. शत्रुक्षेत्री, 10. नीच राशि के आसपास, 11. नीचगत, 12. परमनीचगत, 13. नीचशत्रुवर्गगत, 14. पापयुक्त, 15. स्ववर्गगत, 16. केन्द्रत्रिकोण, 17. युद्ध में पराजित, 18. सर्वथा अस्तंगत इन गुणों के आधार पर दशेश अपना फल देता है।

परमोच्चगत ग्रह सर्वशुभ व अस्तंगत में भी सर्वथा अदृश्य, सूर्य अंशात्मक युति वाला ग्रह परम अनिष्ट हो जाता है। शेष बातों में थोड़ा बहुत शुभत्व रहता है। जैसे नीचगत ग्रह या परमनीचगत ग्रह अशुभ होना चाहिए ही। लेकिन वह केन्द्र त्रिकोण में हो, वर्गों में शुभ हो, पापयुक्त न हो, तत्काल मित्रादि क्षेत्र में हो तो अपने बलानुसार शुभत्व कमोबेश कर सकता है।

सम्पूर्णा दशा

परमोच्चगतो यस्तु योऽतिवीर्यसमन्वितः।
सम्पूर्णाख्या दशा तस्य राज्यभोग्यशुभप्रदा॥34॥
लक्ष्मी कटाक्षचिस्नानां चिदावासफलप्रदा।

परमोच्चगत या अत्यधिक (सम्पूर्ण) षड्बल प्राप्त ग्रह की दशा 'सम्पूर्णा' कहलाती है। इस दशा में सब मनोरथ, अपने स्तरानुरूप पूर्ण होते हैं। लक्ष्मी की कृपा राजयोग या राजभोग, भरपूर परिवार, भौतिक सुख, मन की शान्ति रहती है।

पूर्णा दशा

तुंगमात्रगतस्यापि तथा वीर्याधिकस्य च॥35॥
पूर्णाख्या बहुलैश्वर्यदायिनी च दशा मता॥
स्वक्षेत्रगतः खेटो यदि पूर्णबलान्वितः॥36॥
दशा पूर्णा भवेत्तस्य केवलं धनवृद्धिदा।
रुजप्रदा तथा किंचिद् अपरग्रहयोगतः॥37॥

परमोच्च में न होता हुआ भी ग्रह यदि षड्बली होकर उच्च राशि में हो तो

यह 'पूर्णा' दशा होती है। इसमें बहुत से ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। पूर्णबली ग्रह स्वक्षेत्री हो तो भी पूर्णा दशा होती है, लेकिन इस दशा में केवल धन बढ़ता है। उक्त ग्रह यदि अशुभ भावों में या अशुभ भावेशों के साथ सम्बन्ध करे तो थोड़ा बहुत रोग या स्वास्थ्य की शिथिलता भी देता है।

रिक्ता दशा

अतिनीचगतस्यापि दुर्बलस्य ग्रहस्य तु॥
रिक्ताख्यानिष्टफलदा व्याध्यनर्थमृतिप्रदा॥38॥
यदि सर्वबलाढ्योऽपि नीचराशिं गतो ग्रहः।
दशा रिक्ताभवेत्तस्य धनहानिकरी भेवत्॥39॥

परमनीचगत या षड्बल में बहुत कम बल प्राप्त ग्रह की दशा 'रिक्ता' कहलाती है। इस दशा में अनिष्ट फल, रोग, आपत्ति, असफलता तथा अन्यथा सम्भव होने पर मृत्यु भी हो सकती है।

यदि अपनी नीचराशि में ग्रह परमनीच में न हो, राशिमात्र से नीच हो, लेकिन षड्बली हो तो भी उसकी दशा 'रिक्ता' कहलाती है। इस दशा में केवल धनसम्पत्ति की हानि होती है।

अवरोहिणी दशा

उच्चभादतिनीचस्थमध्यगस्यावरोहिणी ।
नामानुरूपफलदा हानिदा राशियोगतः॥40॥

उच्चराशि से आगे नीच की ओर बढ़ते हुए ग्रह की दशा 'अवरोहिणी' होती है। इस दशा में ग्रह की राशि स्थिति के अनुसार अधिकाधिक हानि व अवनति क्रमशः होती है। अर्थात् उच्च राशि से अगली तीन राशियों में कम अवरोह व शेष अगली तीन राशियों में अधिक अशुभ अवरोह, उतार या अवनति होती है।

उदाहरणार्थ शनि तुला में उच्च होता है और मेष में नीच रहता है। उच्च व नीच के मध्य 6 राशि या 180° अंशों की दूरी होती है। परमोच्च में सर्वशुभ तो वृश्चिक के 20 अंश तक 1/6 भाग कम शुभ होता हुआ नीच में रिक्त हो जाएगा।

तुंगाच्च्युतस्य हि सुहृदुच्चांशेऽवरोहिणी मध्या।
नीचाद्रिपुनीचांशे ग्रहस्य चारोहिणी कष्टा॥41॥

अवरोहिणी दशा वाला ग्रह भी यदि अपनी मित्रराशि या नवांश में हो तो किसी भी राशि में मध्य अवरोही अर्थात् मध्यम, औसत अशुभ होता है।

इसी तरह नीच से आगे बढ़ा हुआ आरोही ग्रह यदि नीचांश या शत्रुराशि नवांश में हो तो कष्टप्रद हो जाता है।

आरोहिणी दशा

नीचादुच्चभागान्तं भषट्कमध्यगस्य च।
आरोहिणी दशा ज्ञेया नामतुल्यफलप्रदा॥42॥

नीच से आगे उच्च की ओर बढ़ता हुआ ग्रह, बीच की 6 राशियों में 'आरोहिणी' दशा वाला होता है। आरोहिणी दशा में आरोह, उन्नति, उठान नाम के अर्थ के अनुरूप होता है। यह सामान्य नियम है।

मित्रराशि नवांश में या अपने उच्च नवांश में गया हुआ अवरोही भी शुभ व नीचशत्रु राशि नवांश में स्थित आरोही भी अशुभ होता है, यह विशेष नियम है, जैसा श्लोक 41 में बताया गया है।

मध्या दशा

मित्रोच्चभावप्राप्तस्य मध्यमा ह्यर्थदा दशा।
नामानुरूपफलदा ग्रहवीर्यवशाद् द्विज॥43॥

अवरोही कोई भी ग्रह यदि मित्रराशि, अपने उच्च नवांश, वर्गोत्तम, अपने मित्र या अधिमित्र की उच्चराशि में हो तो 'मध्या' दशा वाला हो जाता है। वह ग्रह अपने बलानुसार शुभ फल देता है।

अधमा दशा

अधमाख्या दशा विप्र! नीचारिभांशगस्य च।
भयक्लेशव्याधिदुःखवर्धिनी क्लेशदायिनी॥44॥

आरोही ग्रह भी यदि नीच शत्रु नवांश में हो तो उसकी दशा 'अधमा' होती है। दस दशा में भय, कष्ट, विपत्ति, रोग व दुःख होते हैं।

स्पष्ट है कि अवरोही ग्रह यदि नीचांशादिगत हुआ तो विशेष अशुभ होगा और आरोही ग्रह उच्चांशादि में हो तो विशेष शुभ हो जाएगा।

चन्द्र दशा का विशेष नियम

काले जयोत्थेर्जलधेर्नराणां दशा हिमांशोरुदयाभिधा सा।
आरोहिणी सा कथिता पुराणैस्तद्वैपरीत्ये त्वारोहिणी स्यात्॥45॥

समुद्र में ज्वार भाटे के समय अर्थात् पूर्णिमा से 5 दिन पहले से पूर्णिमा तक का चन्द्रमा यदि हो तो उसकी दशा 'उदया' होती है। ऐसे चन्द्रमा के राश्यादि स्थिति से उत्पन्न दोष काफी कम हो जाते हैं तथा वह दशा आरोहिणी के समान ही फल देती है।

इसके विपरीत अमावस्या के पास का अतिक्षीण चन्द्रमा, चाहे उच्चादिगत

भी क्यों न हो तो भी वह 'कष्टा' दशा लाता है। अथवा वह अवरोहिणी के समान फल देता है। इसका विशेष स्पष्टीकरण अगले श्लोक में दिया जा रहा है।

बलक्षपक्षाद्यतिथेर्हिमांशोः
पूर्णान्तमारोहिणिका निरुक्ता।
मणित्थपूर्वैश्च सितेतरादे-
रमान्तकं स्यादवरोहिणी सा॥46॥

मणित्थ आदि यवनों का मत है कि शुक्ल पक्ष के बढ़ते चन्द्रमा की दशा पूर्णिमा तक आरोहिणी व कृष्ण पक्ष में घटते चन्द्रमा की दशा अवरोहिणी होती है। इसमें भी कृष्णपक्ष की अष्टमी से प्रतिपदा तक, अदृश्य चन्द्र रहने तक विशेष कष्टदायिनी है।

ताराग्रहों का विशेष नियम

येऽर्काद्भषट्कोपगता ग्रहेन्द्रा अधोमुखास्तेऽप्यवरोह संज्ञाः।
तथोर्ध्ववक्त्रः परषट्कसंस्था आरोहसंज्ञाः कथिताः पुराणैः॥47॥

प्राचीन आचार्यों ने कहा है कि सूर्य जिस राशि में हो, उससे पीछे की राशियों में स्थित ग्रह 'अधोमुख' संज्ञा वाले हैं। ऐसे 'सूर्यग' ग्रहों की दशा 'अवरोहिणी' ही कहलाती है। अर्थात् ऐसे ग्रहों की दशा में अवरोहिणी जैसा फल मिलता है। सूर्य के निकट आते हुए अस्ताभिलाषी ग्रह का अवरोहिणी फल अधिक उत्कट होता जाता है।

अस्त स्थिति से बाहर आए तथा सूर्य से अधिकाधिक आगे बढ़े ग्रहों की 'उर्ध्वमुख' संज्ञा है। उनकी दशा आरोहिणी के समान फल देती है।

आरोहिणी स्यादनुलोमगानां विलोमगानामवरोहिणी च।
ताराग्रहाणामपि सम्यगेवं भेदः पुराणैस्त्रिविधो निरुक्तः॥48॥

मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि ये पाँच ताराग्रह कहलाते हैं। ये वक्री-मार्गी भी होते हैं। पिछले श्लोकानुसार सूर्य के पीछे वर्तमान ताराग्रह यदि वक्री हो तो सामान्य नियम से अवरोही होता हुआ भी 'आरोही' माना जाएगा।

सूर्य से आगे के चक्रार्ध में वक्री ग्रह की दशा आरोहिणी होती हुई भी अवरोहिणी के समान समझी जाएगी।

आरोहिणी अवरोहिणी : मूल फल

नूनमारोहिणी खेचराणां दशा
मानवानां विशेषार्थसिद्धिप्रदा।
एवमत्रावरोहा विलम्बप्रदा
बुद्धिमान्द्यं च सर्वेषु कार्येष्वपि॥49॥

आरोहिणी दशा में मनुष्यों को विशेष सफलता मिलती है। आसानी से काम बनते जाते हैं तथा सुख प्राप्त होता है।

अवरोहिणी दशा में देर से कार्य सिद्ध होना, अड़चन, गलत निर्णय से हानि, बुद्धिभ्रम जैसे फल होते हैं।

या सावरोहारोहाख्या खेटानां द्विविधा दशा।
सिद्धसेनमणित्थाद्यै प्रागुत्तरफलाः स्मृताः॥50॥

अवरोही ग्रह अपनी दशा के पूर्वार्ध में सविशेष अशुभफल देते हैं। अवरोही ग्रह की दशा का फल, उत्तरार्ध में अधिक स्पष्ट रूप से अनुभव में आता है। यह सिद्धसेन व मणित्थ आदि यवनाचार्यों का मत है।

दशानां सकला संज्ञा पूर्वर्षिकथिता इमाः।
वर्गोत्तमगतानां स्युः स्फीताः स्वफलाश्च ताः॥51॥

ये सभी संज्ञाएँ पूर्व ऋषियों ने कही हैं। इसके अतिरिक्त वर्गोत्तम नवांशगत ग्रह की दशा अपना फल अधिक बढ़ाकर देती है। अर्थात् शुभ या अशुभ कोई भी फल पूर्व संज्ञानियमानुसार, निश्चय किया हो, वह सामान्य से अधिक मात्रा में होता है।

भावस्थिति से तारतम्य

आरोहवीर्यप्रभवन्ति भावसमान पर्यन्तमतश्च्युताः स्युः।
स्वोच्चे सुहृत्क्षेत्रगते ग्रहेन्द्रे षड्भिर्बलैः मुख्यबलान्वितोऽपि॥
सन्धौ स्थितः सन् अफलः प्रदिष्टश्चिन्त्यं विशेषेण दशाविपाके॥52॥

जो ग्रह भाव की आरम्भ सन्धि से लेकर भाव मध्य तक स्थित हों वे भावारोही ग्रह होते हैं। वे अपनी भावस्थिति का पूरा फल, अपने दशाकाल में देते हैं।

भावमध्य से विराम सन्धि की ओर बढ़ता ग्रह भावावरोही होता है। उसके भावफल की प्राप्ति, दशाकाल में क्रमशः उतार पर रहती है।

आरम्भ या विराम किसी भी सन्धि में गया हुआ ग्रह उच्चगत, स्वक्षेत्री आदि भी क्यों न हो, उस भाव का या अपने प्रभाव में पड़ने वाले किसी अन्य भाव का फल अपने दशाकाल में नहीं दे पाता है।

सूर्य चन्द्र की महत्ता

पंकेरुहेशस्तु दशाफलानां द्विजाधिराजः खलु बोधकर्ता।
विकर्तनेन्द्वोर्वशगाश्च सर्वे ताराग्रहाः स्युः सदसत्फलाय॥53॥

सूर्य व चन्द्रमा (गूढ़ ऊहा से लग्न भी) बलवान् हों तभी अन्य ग्रहों की दशाओं का पूरा फल मिलता है। अर्थात् सूर्य चन्द्रमा कुण्डली में बलवान् हों, चन्द्र

विशेषतया पक्ष बली हो, सूर्य कम से कम मध्यम षड्बल से अधिक हो, तभी ग्रहों का शुभ फल, दशाकाल में पूरा मिल सकेगा। इनके बलवान् होने से ग्रहों का अशुभ फल भी सहन सीमा के भीतर ही रहेगा।

आशय यह है कि सूर्य, चन्द्र, लग्न ये तीनों बली हों तो कुण्डली की गति सुधर जाती है। अशुभ फल देने वाले ग्रह अपना डंक, नखदन्त दबाकर रखते हैं और शुभ फलदायक ग्रह अधिक उत्साहित होकर बढ़-बढ़कर शुभ फल देते हैं।

इनमें से कोई एक भी बली न हो तो, शेष शुभयोग भी नाममात्र की शोभा देने वाले ही रह जाते हैं। अतः निश्चय से समझना चाहिए कि सूर्य व चन्द्रमा के अधीन रहकर ताराग्रह अपना शुभाशुभ फल दे पाते हैं। अर्थात् सूर्य व चन्द्र दोनों राजकीय ग्रह होने से प्रशासक होते हैं। अच्छा प्रशासक हो तो उद्दण्ड कर्मचारी भी सीमा में रहते हैं तथा कार्यशील, लगनशील, सज्जन कर्मचारी खूब मन लगाकर काम करते हैं। निष्कर्षतः सभी कुण्डलियों में सूर्य, चन्द्र, लग्न की बलवत्ता को अवश्य दृष्टि में रखते हुए, फल की मात्रा व उसका स्तर कहना चाहिए।

शुभ दशाओं का निर्णय

स्वक्षेत्रे स्वनवांशके सुहृदि वा स्वात्युच्चभागे यदा
स्वद्रेष्काणचतुष्टयेषु सहिता मूलत्रिकोणेषु वा।
तत्तत्कालबलान्वितास्तु खचरा वर्गोत्तमांशोऽपि वा
ते सर्वे शुभदा भवन्ति हि दशा स्वान्तर्दशादावपि॥54॥

ये ग्रह सामान्य नियम से, मौलिक रूप में अपनी दशा व अन्तर्दशा में शुभ फल देते हैं—1. स्वक्षेत्री, 2. स्वनवांशगत, 3. मित्रक्षेत्री, 4. मित्रनवांशगत, 5. स्वोच्चगत, 6. स्वद्रेष्काणगत, 7. केन्द्रगत, 8. मूलत्रिकोणी, 9. लग्न से त्रिकोणगत, 10. कालबली, 11. वर्गोत्तमी।

ऐसे ग्रह यदि भावेशादि नियमों से अशुभ या मध्यम सिद्ध होते हों, तो भी अपनी दशान्तर्दशा में अशुभता को स्थगित कर देते हैं तथा जहाँ तक हो सके जातक को शुभ फल देने का प्रयत्न करते हैं।

लग्नेश व राशीश की दशा

स्वोच्चे स्वर्क्षे वा त्रिकोणे सुवर्गे
मित्रर्क्षे वा संस्थितः कण्टकेषु।
नास्तं यातो नाशुभैर्दृष्ट्युक्तो
जन्मेशः स्याच्छोभनः स्वीयपाके॥55॥

जन्म लग्नेश या जन्मराशीश यदि उच्चगत, स्वक्षेत्री, मूलत्रिकोणी, अधिक शुभ वर्गों में स्थित, मित्रक्षेत्री, केन्द्रगत, उदित, अशुभ ग्रहों की दृष्टि व योग से

रहित हो तो अपनी दशान्तर्दशा में शुभ फल देता है।

आरोहवीर्याधिकभावतुल्यबिन्दूवाधिकाः कर्मभवोदयस्थाः।
तुंगादिवर्गोपगता नभोगाः षड्वीर्यवन्तश्च शुभप्रदाः स्युः॥56॥

जो ग्रह पूर्वोक्त नियमों से आरोही सिद्ध होता हो, भावमध्य के आसपास स्थित हो, अष्टक वर्ग में अधिक शुभ रेखाओं वाले भाव में हो या सर्वाष्टक में अधिक रेखायुक्त राशि भाव में हो, 1.10.11 भाव में स्थित हो, स्वोच्चादि वर्गों में गया हो, षड्बली हो, उक्त बातों में से कोई एक बात भी घटित होती हो तो अपनी दशा-अन्तर्दशा में शुभ फलदायक हो जाता है।

नवांश बली ग्रहदशा का नियम

नीचारिराशिस्थितखेचरस्य स्वर्क्षोच्चमित्रांशगतस्य नूनम्।
आद्ये दले मिश्रफला दशा सा पुंसां परार्द्धेऽप्यतिशोभना स्यात्॥57॥

अपनी नीच राशि या शत्रु राशि में स्थित ग्रह, यदि नवांश में उच्च, स्वनवांश, मित्र नवांश में गया हो तो उसकी दशा के पूर्वार्ध में मध्यम शुभ फल व उत्तरार्ध में बहुत शुभ फल होते हैं।

स्वर्क्षस्वमित्रोच्चग्रहस्थितानां नीचारिभागस्थितखेचराणाम्।
पूर्वे विभागेतु शुभा भवेत्सा दशापरार्धे मनुजस्य मिश्रा॥58॥

स्वक्षेत्री, स्वोच्चगत, स्वमित्रक्षेत्री ग्रह, यदि नवांश में नीच, शत्रु भागों में गया हो तो उसकी दशा प्रथमार्ध में शुभ तथा उत्तरार्ध में मध्यम शुभ होती है।

मनोरथदायिनी दशा

स्वोच्चाधिमित्रस्वगृहस्थितस्य यद्वा नवाशं त्रिलवोपगस्य।
षष्ठाष्टमद्वादशवर्जितस्य पाके ग्रहस्याखिलकार्यसिद्धिः॥59॥

जो ग्रह स्वोच्चगत, अधिमित्र राशिगत, स्वक्षेत्री, मूलत्रिकोणी हो या ऐसे ही नवांशों या द्रेष्काणों में गया हो और साथ ही 6.8.12 भावों में न हो तो उसकी दशा में सर्वत्र सफलता मिलती है।

वृहस्पति से राजयोग

स्वर्क्षे स्वतुंगे तनुगः सुरेज्यो दुश्चिक्यधर्मायगतः प्रसूतौ।
करोति राज्यं स्वकुलानुमानादुत्कर्षयुक्तं निजपाककाले॥60॥

जन्म समय में वृहस्पति यदि 1.3.9.11 भावों में, स्वक्षेत्री, स्वोच्च में हो तो अपनी दशा अन्तर्दशा के दौरान जातक की कुल परम्परा, परिस्थिति व हैसियत के अनुसार राजयोग के सुख देता है।

अष्टकवर्ग रेखा से दशाफल

स्वस्ववर्गाष्टके यत्र राशिस्थितः
खेचरस्तत्ररेखा फलं स्याद्यदा।
पंचमाद्यष्टमान्तं तदा तद्दशा
शोभना कीर्तिता सिद्धसेनादिभिः॥61॥

जन्म समय में ग्रह जिस राशि में स्थित हो, उस राशि में यदि भिन्नाष्टक वर्ग की 5 से 8 रेखाएँ हों तो उस ग्रह की दशा बहुत उत्कृष्ट फल देती है। ऐसा सिद्धसेन आदि आचार्यों ने कहा है।

वेदतुल्यं समं तद्विहीनेऽशुभं
शून्यराशौ भवेच्छून्यरूपा दशा।
इष्ट कष्टाधिके शोभना निन्दिता
चेष्टकष्टस्य साम्ये स्मृता मध्यमा॥62॥

यदि ग्रह की अधिष्ठित राशि में 4 रेखाएँ हों तो सम अर्थात् शुभाशुभ समान फल दशाकाल में होगा।

यदि उस राशि में शून्य रेखा हो तो वह दशा शून्य फल देती है। अर्थात् सारे शुभ फल स्थगित हो जाते हैं, अपि च बड़ी मात्रा में अशुभ फल भी प्रकट होते हैं।

यदि इष्ट बल अधिक हो तो ग्रह की दशा शुभ, कष्ट अधिक हो तो अशुभ की अधिकता तथा इष्ट कष्ट दोनों बराबर हों तो शुभाशुभ मिश्रित दशा होती है।

अशुभ दशा विवेक

नीचः शत्रुगृहं प्राप्तः शत्रुत्रिशांशं सूर्यगः।
विवर्णः रूक्षसम्पन्नो दशां कुर्यादशोभनाम्॥63॥

(1) नीचगत ग्रह (2) शत्रुक्षेत्री ग्रह (3) शत्रु त्रिशांश में स्थित ग्रह (4) अस्तंगत ग्रह (5) रश्मि रहित पराजित ग्रह।

ये ग्रह अपनी दशान्तर्दशा में अशुभ फल देते हैं।

मान्दिराशियाते मान्दिभावगाः स्वल्पबिन्दुरिपुनीचमूढगाः।
पापखेटयुतराशिसन्धिगा भावसन्धिलवगास्त्वनिष्टदाः॥64॥

(1) मान्दि जिस राशि में स्थित हो उस राशि का स्वामी (2) मान्दि के साथ स्थित ग्रह (3) चार से कम रेखाओं वाली राशि में स्थित ग्रह (4) शत्रु क्षेत्री (5) नीचगत (6) अस्तंगत (7) पापयुक्त ग्रह (8) राशि सन्धि (गण्डान्त) या राशि के अन्तिम अंश में स्थित ग्रह (9) भावसन्धि में विद्यमान ग्रह।

ये सब ग्रह अपनी दशान्तर्दशा में अशुभ फल देते हैं।

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्
स चापि तद्युक्तखगोनसक्तः।
दातुं शुभं राहुयुतस्त्वनिष्टं
तत्क्षेत्रगस्तद्युतराशिपश्च ॥65॥

(1) जन्म समय में नीचगत ग्रह,

(2) नीच ग्रह के साथ स्थित ग्रह,

(3) राहु से युत ग्रह,

(4) नीचगत ग्रह के स्वक्षेत्र में गया ग्रह, जैसे सूर्य तुला में नीच है तो तुला का स्वामी शुक्र, शुक्र के क्षेत्र में स्थित सभी ग्रह। ये सब भी अपने दशाकाल में अशुभ होते हैं।

शुभाशुभ दशा

यद्येक एव शुभदो ग्रहाधिष्ठित मांशयोः।
मिश्रं स्यात् तत्फलं तद्वत् सद्मांशे स बलोज्झितः॥66॥

शुभ फलदायक अर्थात् पाराशरीय नियमों से योगकारक या शुभ फलप्रद ग्रह की अधिष्ठित राशि या नवांश में गया ग्रह मिला जुला फल देता है।

यदि दशापति ग्रह किसी योगकारक ग्रह की अधिष्ठित राशि या नवांश में स्थित होकर स्वयं विशेष बली न हो, तब भी वह मिश्रित फल ही देता है।

उदाहरणार्थ कर्क लग्न में मंगल मेष या वृश्चिक में हो और शनि या राहु भी उसके साथ हों तो शनि या राहु भी अपनी दशान्तर्दशा में मिश्रित फल देंगे।

ग्रहोऽशुभफलाभावे दुर्दशापि शुभप्रदा।
श्रेष्ठभावगतः खेटः सुदृष्टस्तत्फलार्धकृत्॥67॥

यदि कोई ग्रह भावेशादि नियमों से शुभ या अशुभ फल देने वाला सिद्ध न होता हो, तो ऐसे निसर्ग पापी की दशा भी मिश्रित फल देती है।

यदि यही सम फलदायक ग्रह, स्वयं केन्द्र त्रिकोण में हो और शुभ दृष्ट हो तो भी वह शुभ फल थोड़ा अधिक देता है।

उच्चगत ग्रह दशा फल

निजोच्चगामिनो यदा तदा तता यशोलता
नवाम्बरादिभूषणैः सुखं वरांगनागमः।
उपेन्द्रतुल्यता गजेन्द्रवाजिराजिकारथो
रथो वृषस्य वैरिणः वृथा वशा दशा शुभा॥68॥

उच्चगत ग्रह की दशा में यशोवृद्धि, सम्मान वृद्धि, नए वस्त्रों आभूषणों की

प्राप्ति अर्थात् जीवन-स्तर में सुधार, उत्तम स्त्री सुख, इन्द्रतुल्य सुख भोग, बड़े वाहनों का सुख होता है। शत्रु निर्बल होते हैं और जनसमर्थन मिलता है।

उच्चस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्याद्
तद्राशिनाथो यदि नीचसंस्थः।
तदुच्चपाके च शुभं प्रयाति
भावेक्षितो वापि विशेषतः स्यात्॥69॥

जन्म समय में जो ग्रह उच्च में हो, उस उच्च राशि का स्वामी यदि स्वयं नीच में भी हो, तो भी उस नीचनाथ की दशा शुभ होगी।

यदि वह नीचनाथ उक्त भावों को देखता हो तो विशेष शुभ फल होता है।

बात कुछ उलझ गई है। आइए, उदाहरण से समझते हैं। कर्क राशि में वृहस्पति उच्चगत होता है। अतः वृहस्पति सामान्य नियम से शुभदशाप्रद हुआ।

वृहस्पति की उच्चराशि कर्क का स्वामी चन्द्रमा यदि स्वयं नीच (वृश्चिक) में हो, तब भी नीचपति अर्थात् वृश्चिकपति मंगल की दशा भी शुभ होगी। उच्चादिगत चन्द्रदशा शुभ होगी ही।

यदि नीचनाथ मंगल कर्क या वृश्चिक को देखता हो तो मंगल दशा विशेष शुभ होगी। कुल मिलाकर बात इतनी है कि उच्चगत ग्रह की दशा शुभ है। उस उच्चराशिपति ग्रह की दशा भी शुभ है। नीचगत ग्रह की नीचराशि का स्वामी यदि नीचराशि को देखे तो नीचगत ग्रह की दशा भी शुभ हो जाती है।

नीचादि गत ग्रहदशा फल

नीचारिभस्थस्य च वक्रिणो वा
पाके कुकर्माभिरतिर्मनुष्यः।
विदेशवासी निजबन्धुवर्गै-
स्त्यक्तो भवेदाग्रहताभियुक्तः॥70॥

नीचगत, शत्रुक्षेत्री, वक्री ग्रह की दशा में मनुष्य कुकर्मरत या कुकर्मों के प्रति सहज आकृष्ट होता है। उस दशा में परदेशवास, बन्धुओं से विरोध व बदनामी होती है।

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहः स्यात्
तद्राशिनाथो परमोच्चसंस्थः।
तन्नीचपाके सुखमेति सत्यं
तेनेक्षितो वापि शुभप्रदो वा॥71॥

यदि कोई ग्रह नीचगत हो तो उस नीचराशिपति को देखिए। यदि वह नीचराशीश, स्वयं अपने परमोच्च में हो या नीचराशीश नीचगत ग्रह को देखे तो उस नीचगत ग्रह की दशा भी शुभ फलदायक हो जाती है।

स्वक्षेत्री ग्रह दशा फल

दशा निजागारगतस्य यस्य नवाम्बरागारविहारसौख्यम्।
नवीनयोषा बहुभूमिभूषा यशो विशेषादरिवर्गहानिः॥72॥

स्वक्षेत्री ग्रह की दशा में नवीन सुख, नवीन स्थान या जायदाद, नए स्थानों पर भ्रमण का सुख, स्त्री सुख, सम्पत्ति वृद्धि, इक्कबाल से ही शत्रुओं की पराजय होती है।

अधिमित्रक्षेत्री ग्रहदशा

स्वर्क्षाधिमित्रोच्च गृहस्थितस्य
यद्वापि तन्नन्दलवोपगस्य।
ग्रहस्य पाकेऽभिमतार्थसिद्धिः
भूपप्रसादो धनधान्यवृद्धिः॥73॥

जो ग्रह अपनी राशि या अपने अधिमित्र की राशि में स्थित हो या स्वनवांश या अधिमित्र के नवांश में हो तो उसकी दशा में मनोवाञ्छित फलों की प्राप्ति, राजकीय पुरुषों की प्रसन्नता, धन-धान्य की वृद्धि होती है।

कलत्रपुत्रैरपिमित्रभृत्यैरतीव सौख्यं हितराशिगस्य।
दशाविपाके वसनं नृपालात् विशेषतो मानविवर्धनं स्यात्॥74॥

मित्रक्षेत्री ग्रह की दशा में स्त्री, पुत्र, नौकरों का सुख, राजकीय मान-सम्मान, विशेषतया यशोवृद्धि होती है।

शत्रुक्षेत्री ग्रहदशा

मनोजवेगो रिपुवर्गभीतिः कृशत्वमर्थक्षतिराप्ति बाधा।
दशा यदारातिगृहस्थितस्य तदा नरस्य प्रकृतिश्चला स्यात्॥75॥

शत्रु क्षेत्री ग्रह की दशा में स्वास्थ्य की शिथिलता, अधिक काम वेग, शत्रु वर्ग से भय, धन हानि, धनागम में बाधा व मन में विचारों की अस्थिरता होती है।

अधिशत्रुक्षेत्री ग्रहदशा

अथोऽध्यरिक्षेत्रनवांशगस्य ग्रहस्य पाके रिपुरोगभीतिः।
भवेन्नृपात्तस्करतः कलेर्वा धनस्य नाशः परदेशयानम्॥76॥

अधिशत्रु क्षेत्र में स्थित ग्रह या अधिशत्रु के नवांश में गए हुए ग्रह की दशा में शत्रुभय, रोगभय, राजा या चोरों से भय, विवाद, कलह, धनहानि व गृहत्याग आदि फल होते हैं।

अस्तग्रह दशाफल

दशाधीशे वास्तं गतवति विरोधो बलवतां
सदा रोगागारं हृदयकुहरे वाथ जठरे।
अरेराधिव्याधिव्यसनमुत मानक्षतिरथो
विरामो वित्तानामवनिपतिकोपेन भविनाम्॥77॥

दशाधिपति यदि जन्म समय में अस्त हो तो, उसकी दशा में बलवान् लोगों से विरोध, रोगों की उत्पत्ति, विशेषतया हृदय रोग या पेट में रोग, शत्रुभय, विपत्ति, मानहानि, धनागम में रुकावट, राजपक्ष से भय होता है।

अस्ताधिरूढद्युचरस्य पाके धनस्य नाशं रिपुरोगभीतिम्।
लोके महत्त्वापचयत्वमेव दुःखान्यनेकानि भवन्ति नूनम्॥78॥

अन्यत्र भी कहा गया है कि अस्तंगत ग्रह की दशा में धनहानि, शत्रु व रोगों से भय, सांसारिक महत्त्व में कमी व अनेक प्रकार के दुःख होते हैं।

चन्द्रादिकानामखिलग्रहाणां दशा तु मूढांशपरिच्युतानाम्।
शुभा स्मृता तद्विपरीतगानां होरागमज्ञैरतिदुःखदा सा॥79॥

अस्त युति के अंशों से बाहर आए हुए ग्रहों की दशा अर्थात् अंशात्मक युति से आगे बढ़े हुए ग्रह की दशा, वह चाहे उदित न भी हुआ हो, तब वह ग्रह अपनी दशा में क्रमशः उदय बिन्दु की ओर बढ़ता हुआ शुभ फल को पुष्ट करता जाता है।

इसके विपरीत, अस्त बिन्दु की ओर बढ़ता हुआ ग्रह, अर्थात् सूर्य के अंशों से पीछे स्थित ग्रह की दशा में अधिक दुःख होते हैं।

खेटस्य मूढांशपरिच्युतस्य पाके नराणां बहुसाहसत्वम्।
हर्षोदयं भूमिपतेः प्रसादं धनागमं कान्तिविवर्धनं च॥80॥

अंशात्मक युति से आगे बढ़ा हुआ ग्रह अर्थात् सूर्य के अंशों से आगे के अंशों में विद्यमान ग्रह की दशा में साहस वृद्धि, खुशी, राजा की प्रसन्नता, धनागम व शोभावृद्धि जैसे फल होते हैं।

वक्रीग्रह दशा

वक्रोपयातस्य द्युचरस्य पाके सन्मानसौख्यापचयं करोति।
निजस्थलाच्चलनत्वमेव सुहृद्विरोधं परदेशयानम्॥81॥

वक्रीग्रह की दशा में, विशेषतया पापग्रह वक्री हो तो, सम्मान में कमी, सुख में कमी, स्थान परिवर्तन, मित्रों से विरोध, परदेशवास आदि फल होते हैं।

नीचर्क्षजातस्य विलोमगस्य पाके कुकर्माभिरतिर्मनुष्यः।
प्रवासशीलो निजबन्धुवर्गैस्त्यक्तो भवेदग्निहताभियुक्तः॥82॥

यदि नीचगत ग्रह वक्री भी हो तो उसकी दशा में कुकर्मों में रति, प्रवास की स्थिति, अपने बन्धु बान्धवों से विरोध या मनमुटाव, अग्निभय, या मनस्ताप अधिक होता है।

मार्गी ग्रहदशा

ऋजुप्रयातद्युचरस्य पाके सन्मानसौख्यार्थयशःप्रवृद्धिः।
षष्ठाष्टमद्वादशवर्जितस्य ग्रहस्य पाकेऽभिमतार्थसिद्धिः॥83॥

यदि मार्गी ग्रह 6.8.12 भावों के अतिरिक्त, कहीं अन्यत्र स्थित हो तो उसकी दशा में सम्मानवृद्धि, सुख व धन की प्राप्ति, यशोवृद्धि व मनोरथसिद्धि होती है।

दिग्बली ग्रहदशा

संपोषितो यः किल दिग्बलेन खेटः स्वकाष्ठां पुरुषं च नीत्वा।
महाप्रतिष्ठां कुरुते दशायां नानाधनाभ्यागमनानि नूनम॥84॥

जो ग्रह दिग्बली होकर स्थित हो तो उसकी दशा में व्यक्ति को उस ग्रह की दशा में विशेष सफलता, महाप्रतिष्ठा, नाना मार्गों से धन लाभ आदि उत्तम फल होते हैं।

नवांश बली ग्रहदशा

तेजस्विनमतिसुखिनं सुस्थिरविभवं नृपाच्च लब्धधनम्।
स्वनवांशकबलयुक्तः पुरुषं कुर्याद् धनान्वितं ख्यातम्॥85॥

कोई ग्रह स्वोच्चनवांश, स्वनवांश, वर्गोत्तम, अधिमित्रादि नवांश में हो तो उसकी दशा में तेजोवृद्धि, सुखवृद्धि, स्थिर वैभव, राजपक्ष से धनलाभ, प्रसिद्धि आदि फल होते हैं।

राहुयुत ग्रहदशा

खेटस्य सिंहिसुतसंयुतस्य शुभा दशा साप्यतिरिष्टदा स्यात्।
दशावसाने परदेशयानं दुःखानिहानिर्नु मानवानाम्॥86॥

राहु के साथ युक्त ग्रह की दशा यदि अन्य नियमों से शुभ सिद्ध होती हो, तब भी उस दशा में थोड़ा बहुत अरिष्ट फल होता ही रहता है। उस ग्रह की दशा के अन्त में परदेशगमन, दुःख व हानि होती है।

लग्नेश व राशीश शत्रु ग्रह दशा

जननराशिजनुस्तनुनाथयो रिपुदशा समये मतिविभ्रमः।
भयमरेरपि राज्यपरिच्युतिः खलजनैः कलहो बलहीनता॥87॥

जन्मलग्नेश या जन्मराशीश के निसर्ग शत्रु या अधिशत्रु की दशा में सामान्यतया बुद्धि विभ्रम, शत्रुभय, राज्यहानि, दुष्टजनों से कलह व दीनता, दुर्बलता होती है।

सूर्य चन्द्र की पहली दशा

आद्या दशा चेद् दिवसाधिपस्य तातान्बिका विघ्नकारी नराणाम्।
तथा तनोः क्लेशकरी नितान्तं ज्ञानार्थदात्री शशिनो दशाद्या॥88॥

यदि सूर्य दशा, जन्म समय में विद्यमान हो तो माता-पिता व स्वयं बालक के लिए प्रायः कष्टकारी होती है।

इसके विपरीत चन्द्रदशा में जन्म हो तो, बालक व माता-पिता के लिए विद्या बुद्धि व धनदायक होती है।

दशा साधन का आधार

विलग्नतारेन्दुभनामतारा प्रश्नेन्दुनक्षत्रगणेषु मध्ये।
बलाधिकर्क्षेशदशाक्रमेण फलं दशायाः शुभमाहुरार्याः॥89॥

लग्नगत नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र, प्रसिद्ध नाम नक्षत्र, प्रश्नकालीन चन्द्र नक्षत्र, प्रश्न लग्न नक्षत्र में से जो बलवान् हो, उसी के आधार पर विंशोत्तरी आदि दशाओं का साधन करके शुभाशुभ फल कहें।

उत्पन्न नक्षत्रविलग्नतो वा भूयात्क्रमेणैव दशाफलानि।
दशवसानेष्वशुभं च सर्वे कुर्वन्ति सामान्यफलं नराणाम्॥90॥

अथवा जन्म नक्षत्र के आधार पर ही दशा का साधन करके फल कहें। सामान्यतः सभी ग्रह अपनी दशा के अन्त में थोड़ा बहुत अशुभ फल ही करते हैं।

विशेष कारक दशा

पंचमं नवमं चैव विशेषाद् धनमुच्यते।
चतुर्थं दशमं चैवं विशेषं सुखमीरितम्॥91॥
पंचमेशदशायां तु धर्मपस्य दशा तु या।
अतीवशुभदा प्रोक्ता कालविद्भिः मनीश्वरैः॥92॥

पंचम व नवम भाव विशेषतया धनप्राप्ति व आर्थिक समृद्धि के भाव हैं। इसी तरह 4.10 भाव सुख भाव हैं।

पंचमेश की दशा में नवमेश की व नवमेश की दशा में पंचमेश की अन्तर्दशाएँ बहुत शुभ होती हैं। ऐसा मुनियों ने कहा है।

पंचमेशेन युक्तस्य ग्रहस्य शुभदा दशा।
अथो धर्मपयुक्तस्य दशा परम शोभना॥93॥

जो ग्रह पंचमेश से युक्त हो, उसकी दशा शुभ फल देती है। अपि च नवमेश से युक्त ग्रह की दशा बहुत शुभ होती है।

पंचमेश नवमेश से कोई भी सम्बन्ध रखने वाले ग्रहों की दशा शुभ है। ऐसा समझना चाहिए।

दशाफल के कुछ सामान्य नियम

पापदृष्टस्य खेटस्य दशा राज्यप्रदायिनी।
शुभयुक्तस्य खेटस्य दशा द्रव्यप्रदायिनी॥94॥

पाप ग्रहों से दृष्ट ग्रह की दशा में राजयोग के फल विशेषतया घटित होने की सम्भावना रहती है। शुभ दृष्ट ग्रह की दशा में विशेषतया धनवृद्धि होती है।

सपंचमेशलग्नेशदशा राज्यप्रदायिनी।
पंचमेशेन युक्तस्य मानेशस्य दशा शुभा॥95॥
सुखेशसहितस्यापि धर्मेशस्य दशा शुभा।
पंचमस्थानगस्यापि मानेशस्य दशा शुभा॥96॥
तथैव मानाधिपसंयुतस्य सुतेश्वरस्यापि दशा शुभा स्यात्।
शुभाशुभस्थानगमानपस्य तथैव मानार्थसुखप्रदा स्यात्॥97॥

- पंचमेश व लग्नेश का सम्बन्ध हो तो इनकी दशा में राजयोग फलीभूत होता है।
- पंचमेश दशमेश परस्पर सम्बन्धी हों तो इनकी दशा भी बहुत शुभ होती है।
- 4.9 भावेशों का परस्पर सम्बन्ध होने पर इनकी दशा भी विशेष शुभ होती है।
- दशमेश यदि पंचम में हो तो ऐसे दशामेश की दशा भी बहुत शुभ होती है।
- 5.10 भावेश यदि साथ हों तो इनकी दशा शुभ होती है।
- दशमेश शुभ या अशुभ कैसे भी भावों में हो तो मान-सम्मान, धन व सुख बढ़ाती है।

षष्ठेश सप्तमेश की दशा

षष्ठसप्तमयोरेको नायको मानराशिगः।
दशा तस्य शुभा ज्ञेया तथा तेन युतस्य च॥98॥

सिंह लग्न में षष्ठेश व सप्तमेश शनि यदि दशम में हो तो उसकी दशा तथा ऐसे शनि से युक्त ग्रह की दशा शुभ होती है।

एको द्विसप्तमस्थाननायको यदि सौख्यगः।
तेन युक्तस्य च दशा शुभा प्राहुर्मनीषिणः॥99॥

मेष लग्न में द्वितीयेश व सप्तमेश होकर शुक्र यदि चतुर्थ में हो तो शुक्र व शुक्र से युत ग्रहों की दशा शुभ होती है, ऐसा विद्वानों ने कहा है।

षष्ठाष्टमव्ययाधीशाः पंचमेशेन संयुताः।
तेषां शुभा दशा ज्ञेया प्रोच्यते कालविद्भैः॥100॥

6.8.12 भावेश यदि पंचमेश से युक्त हों तो इनकी दशा भी शुभ होती है, ऐसा कालवेत्ता विद्वानों ने कहा है।

एवं शास्त्रानुसारेण कारकनिर्णययोगतः।
कारकानां दशास्तेषां शुभाः धनप्रदा मताः॥101॥

इस तरह पाराशरीय नियमों से कारक ग्रहों का निर्णय करके देखें। सभी कारक ग्रहों की दशा में राज्यादि शुभ फल, पदोन्नति, धनादि प्राप्त होते हैं।

यस्माद्व्ययगतो यस्तु तद्दशायां क्षतिर्भवेत्।
यस्मात् त्रिकोणगाः पापः तत्रात्मसमनाशनम्॥102॥

जो ग्रह जहाँ स्थित हो उससे अगले भाव से सम्बन्धित विषयों की हानि अपनी दशा में करेगा।

द्वादशस्थ ग्रह की दशा में लग्न की, लग्नस्थ ग्रह की दशा में कुटुम्ब या संचित धन की, पंचमस्थ ग्रह की दशा में शत्रु व रोग की, सप्तमस्थ की दशा में मृत्यु व ऋण की हानि होगी।

जिस ग्रह से या भाव से 5.9 में पापग्रह हो, उस ग्रह की दशा में अपने प्रियजनों या प्रिय वस्तुओं की हानि होती है।

भाग्येशगुरुसम्बन्धाद् योगदृक्केन्द्रभादिभिः।
परेषामपि दायेषु भाग्योपक्रममुन्नयेत्॥103॥

जिस ग्रह से भाग्येश या गुरु का कोई सम्बन्ध बने, अथवा दशापति से केन्द्र त्रिकोण में वृहस्पति हो तो उस ग्रह की दशा में भी भाग्योदय व उत्तम फल होते हैं। अर्थात् महादशेश से केन्द्र त्रिकोण में भाग्येश या वृहस्पति की स्थिति, महादशेश का भाग्येश या गुरु से स्थान परिवर्तन, दृष्टि सम्बन्ध, सह स्थिति, स्थान स्थित दृष्टि सम्बन्ध हो तो वह साधारण फलद महादशेश भी भाग्योदय कारक दशा वाला हो जाता है।

जातके यस्तु फलदो भाग्ययोगप्रदोऽपि यः।
सफलो वक्रिमादुर्ध्वम् अन्यानपि च खेचरान्॥104॥

जन्मकुण्डली में जो ग्रह पाराशरीय नियमों से शुभ फलदायक या कारक सिद्ध होता हो, वह योगकारक या शुभ ग्रह, जिसके साथ कोई सम्बन्ध स्थापित करेगा, उस ग्रह की दशा भी उत्तम फलदायक हो जाएगी।

वह शुभ फलद या भाग्यवर्धक ग्रह अपनी दशान्तर्दशा में जब वक्री रहेगा, तब विशेष अच्छा फल देगा तथा मार्गी रहने पर सामान्य शुभ फल देगा।

दुर्बलानसमर्थांश्च फलदानेषु योगतः।
तारतम्यात्सुसम्बन्धाद् दशा ह्येताः फलप्रदाः॥105॥

योगकारक या शुभ फलदायक ग्रह से सम्बन्ध रहने पर, निर्बल, असमर्थ ग्रह अपनी दशा व अन्तर्दशा में सम्बन्ध के बलाबल से शुभ फल देते हैं।

योगकारक ग्रह से श्रेष्ठ सम्बन्ध अर्थात् परस्पर एक-दूसरे की राशि में बैठे या दोनों एक दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखें तो उत्तम शुभ फल। परस्पर केन्द्र में हो तो कुछ कम उत्तम फल, जिस राशि में हों उसका राशीश वहाँ दृष्टि रखे तो मध्यम फल। स्थान स्थित दृष्टि सम्बन्ध हो तो भी साधारण शुभ फल होता है।

स्वकेन्द्रादिजुषां तेषां पूर्णांघ्रिव्यवस्थया।
एवं सर्वग्रहाणां च स्वस्वान्तर्दशास्वपि॥106॥

महादशेश व अन्तर्दशेश परस्पर केन्द्र में हों तो पूरा शुभ फल, पणफर में हों तो मध्यम शुभ फल व परस्पर आपोक्लिम में हों तो साधारण शुभ फल देते हैं। यह व्यवस्था सभी दशान्तर्दशाओं में लागू होगी।

महादशेश अन्तर्दशेश की मित्रता

जन्मकाले दशानाथ स्वेष्टगानां विचारणे।
निसर्गतश्च तत्काले सुहृदां हरणे शुभम्॥107॥

महादशेश के सम्बन्धी ग्रह, निसर्ग मित्रग्रह, तात्कालिक मित्रग्रहों की अन्तर्दशाएँ भी शुभ होती हैं।

अपि च ऐसे मित्रग्रहों की राशियों में अपने दशा काल में, महादशेश जब गोचर करता है तब महादशेश का और अधिक शुभ फल होता है।

अन्तर्दशा फल का एक विशेष नियम

दशेशाक्रान्तभावानामारभ्य द्वादशर्क्षभम्।
भक्त्वा द्वादशराशीनां दशाभुक्तिं प्रकल्पयेत्॥108॥

किसी भी महादशा में अन्तर्दशाओं का फल जानना हो तो महादशा वर्षों को 12 से भाग दें। इस तरह महादशा वर्षों के बारहवें भाग के बराबर एक अन्तर्दशा होगी।

महादशेश व्यक्ति की कुण्डली में जहाँ स्थित है, उसी भावराशि से अन्तर्दशाओं का आरम्भ करें।

एकैकराशिर्यस्तत्र सुहृत्स्वक्षेत्रगामिनी।
तस्यां राज्यादि सम्पत्तिपूर्वकं शुभमीरयेत्॥109॥
दुःस्थानरिपुगेहस्थ नीचक्रूरयुता च या।
तस्यामनर्थकलहं रोगमृत्युभयादिकम्॥110॥

जिस राशि में स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, उच्चस्थ ग्रह हों, उस राशि की अन्तर्दशा में राज्य लाभ, सुख-सम्पत्ति, धनवृद्धि व शुभ फल होते हैं।

जिस राशि में नीचगत ग्रह, क्रूर ग्रह, शत्रुक्षेत्री ग्रह हों अथवा जो राशि 6.8.12 भावों में पड़े, उस राशि की अन्तर्दशा में अनर्थ, कलह, रोग, भय, मृत्यु आदि होते हैं।

बिन्दुभूयस्त्वशून्यत्व वशात्स्वीयाष्टवर्गके।
वृद्धिं हानिं च तद्राशिभावस्य स्वगृहात्क्रमात्॥111॥
भावयोजनया विद्यात् सुतस्त्र्यादिशुभाशुभम्॥
धात्वादिराशिभेदाच्च धात्वादिग्रहयोगतः॥112॥
शुभपापदशाभेदात् शुभपापयुतैरपि।
इष्टानिष्टस्थानभेदात् फलभेदात्समुन्नयेत्॥113॥
एवं सर्वग्रहाणां च दशास्वन्तर्दशास्वपि।
स्वराशितो राशिभुक्तिं प्रकल्प्य फलमीरयेत्॥114॥

1. जिस राशि में अष्टवर्ग की शुभ रेखाएँ अधिक हों, उसकी अन्तर्दशा में बहुत शुभ फल होंगे। जहाँ कम रेखाएँ हो, वहाँ अशुभ फल की अपेक्षा होगी। यह विचार महादशेश के अष्टकवर्ग में करें।
2. जिस भावराशि में अन्तर्दशा हो, उसी भाव से सम्बन्धित बातों का शुभाशुभ विशेषतया उस अन्तर्दशा में समझें।
3. ग्रहों व राशियों के शील, चरित्र धातु आदि बातों की वृद्धि या हानि उस अन्तर्दशा में समझें।
4. शुभ ग्रह युक्त व शुभ भाव में पड़ी राशि का शुभ फल। पाप ग्रह युक्त व 6.8.12 भावगत राशि का अशुभ फल होता है। अपि च महादशा व अन्तर्दशा के सामान्य फल को भी दृष्टि में रखें।
5. यह विचार सब ग्रहों की दशाओं में, अन्तर्दशाओं, प्रत्यन्तर आदि में भी करें। हर बार ग्रहाधिष्ठित राशि से दशाक्रम चलेगा। अन्तर्दशाओं में महादशेश की स्थित राशि से, प्रत्यन्तर्दशा में अन्तर्दशेश से, सूक्ष्म दशा में प्रत्यन्तरेश से, प्राण में सूक्ष्म दशेश से दशाक्रम रहेगा।

॥इति दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
दशाप्रवेशाध्यायः प्रथमः॥
आदितः श्लोकाः 114

2
॥भावदशाफलाध्यायः॥

लग्न सम्बन्धी दशाफल

विलग्नदर्शी तनुपो विलग्नगस्त्रयोऽपि षष्ठाष्टमरिःफराशिगाः।
सपत्ननीचोपगताश्च दुर्बला यदि स्वपाके न फलं प्रकुर्युः॥1॥

(i) लग्न पर दृष्टि रखने वाला ग्रह (ii) लग्नेश (iii) लग्न में स्थित ग्रह, ये तीनों लग्न सम्बन्धी शुभाशुभ फल के लिए मुख्यतया जिम्मेवार होते हैं। यदि ग्रह उत्तम स्थिति में हों तो इनकी दशाओं में शुभ फल होंगे।

यदि लग्नद्रष्टा, लग्नेश व लग्नगत ये तीनों ही ग्रह 6.8.12 भावों में कहीं यथासम्भव हों या नीचगत, शत्रुक्षेत्री, पराजित, बल में कम हों तो अपनी दशा या अन्तर्दशा में शुभ फल नहीं कर पाते हैं, बल्कि विपरीत अशुभ फल प्राप्त होने के अवसर पैदा हो जाते हैं। तब उस दशा में लग्न के कारकत्व से सम्बन्धित बातें क्षीण होंगी अर्थात् स्वास्थ्य, सुख, सन्तोष, भौतिक समृद्धि में कमी व कष्टों में वृद्धि होगी।

यदि ये शुभ स्थानों में हों, उच्चादि राशियों या नवांशों में हों तो दशान्तर्दशा में विशेष शुभ फल करेंगे।

लग्नेश दशा : अशुभ फल

मध्यस्थो रिपुखेटयोस्तनुपतौ जातेऽरिभीतिर्भवेत्
केतौर्लग्नगतेऽथवाफणियुते दुःस्थे विलग्नाधिपे।
तत्पाके तदरीशभुक्तिसमये वैकल्यमंगे वदेत्॥2॥

1. लग्नेश यदि दोनों ओर शत्रुओं से घिरा हो तो लग्नेश की दशा या अन्तर्दशा में शत्रुभय होता है।
2. केतु लग्न में हो तो केतु की दशा में निजी अरिष्ट होता है।

3. लग्नेश यदि राहुयुक्त होकर 6.8.12 में हो तो लग्नेश या राहु की दशा में, परस्पर किसी की अन्तर्दशा हो या षष्ठेश की अन्तर्दशा हो तो शरीर के अंगों में चोट लगती है।

अपि च लग्नेश से षष्ठेश यदि राहु केतु से युक्त हो तो इनकी भी परस्पर दशान्तर्दशा में शरीर में चोट, दुर्घटना आदि का भय होता है।

प्रसंगवश भावेश दशाफल

लग्नेशस्य दशाबलं बहुधनं वित्तेशितुः पंचतां
कष्टं वेति सहोदरालयपतेः पापं फलं प्रायशः।
तुर्यस्वामिनि आलयं किल सुताधीशस्य विद्या सुखं
रोगागारपतेररातिजभयं जायापतेः शोकताम्॥3॥
मृत्युर्मृत्युपतेः करोति नियतं धर्मेशितुः सत् क्रियां
वित्तं राज्यपतेर्नृपाश्रयमथो लाभं हि लाभेशितुः।
रोगं द्रव्यविनाशनं च बहुधा कष्टं व्ययेशस्य वै
पूर्वैरंगभृतामुदीरितमिदं तन्वादिभावेशजम्॥4॥

सभी भावेशों का सामान्य फल बताया जा रहा है। यह फल भावेशों के सुस्थित होने पर समझें। 6.8.12 भावेशों के विषय में विपरीत विधि रखें। यह फल दशा का मूल वाक्य या दिशा (key word) देने में सक्षम है।

लग्नेश की दशा में मानवृद्धि, स्वास्थ्य सुख, धनवृद्धि। द्वितीयेश की दशा में कष्ट या मृत्यु की सम्भावना। तृतीयेश की दशा सामान्यतः पाप फलदायी। चतुर्थेश की दशा में जायदाद, मकान, वाहन आदि। पंचमेश की दशा विद्या का सुख या विद्या से सुख, पुत्रादि। षष्ठेश की दशा में शत्रुभय, रोगभय। सप्तमेश की दशा में शोक का अनुभव। अष्टमेश की दशा में मृत्यु की सम्भावना। नवमेश की दशा में सत्कार्यों की सम्पन्नता। दशमेश की दशा में राजकीय पद या राजा का आश्रय। लाभेश की दशा में लाभ। द्वादशेश की दशा में रोग, धनहानि, बहुधा कष्ट होता है। यह बात प्राचीनों ने कही है।

द्वितीय भाव सम्बद्ध दशा

धनोपयातः प्रथमोऽथदर्शी ग्रहो द्वितीयो धनपस्तृतीयः।
तत्पाकभुक्तौ धनलाभमेति क्रमेण तत्कारकवर्गमूलात्॥5॥

धनेश, धनभावगत ग्रह, धनभाव पर दृष्टि रखने वाले ग्रहों की दशा अन्तर्दशा में ग्रह की धातु, मूल चरित्र, कारकत्व के माध्यम से धनलाभ होता है। हमारे विचार में धनलाभ होता है, बस इतनी बात ठीक है। बचत बढ़ती है, द्वितीय भाव के कारकत्व की वृद्धि होती है। लाभ का स्रोत यथासम्भव पारस्परिक या गैर पारम्परिक हो सकता है।

धनहानि की दशा

धनस्थितः पापदृशा समेतः सपत्ननीचार्ककराभितप्तः।
तत्पाकभुक्तौ धननाशमाहुः सगोचरे दृष्टबलान्विते वा॥6॥

धनभाव में स्थित ग्रह पर किसी पापग्रह की दृष्टि या योग हो। धनभावस्थ ग्रह शत्रु क्षेत्री हो। वह स्वयं नीच में या अस्तंगत हो तो उसकी दशा अन्तर्दशा में धनहानि होती है अपि च दशाकाल में जब गोचर भी प्रतिकूल हो तो विशेष हानि होती है।

धनान्वितः पापखगस्तदीशः स्याच्चेद्दशायां क्षितिपालकोपात्।
नानार्थनाशं निगदेन्नाराणां स्थानच्युतिं स्वेष्टजनैर्विरोधम्॥7॥

धनभाव में पापग्रह हो या धनेश स्वयं पापयुक्त हो तो उनकी दशा में राजा के कोप से विविध प्रकार की धन हानि होती है। स्वजनों से विरोध व स्थान या पदवी की हानि होती है।

मुखरोगकारक दशा

वाग्भावेशे राहुयुक्ते च दुःस्थे राहुक्रान्तस्थाननाथान्विते च।
पाके भुक्तौ तस्य दन्तामयः स्याज् जिह्वारोगं तारकासूनुभुक्तौ॥8॥

द्वितीयेश यदि राहु से युक्त हो और 6.8.12 भावों में गया हो। द्वितीयेश व राहु की अधिष्ठित राशि का स्वामी साथ-साथ हो तो उसकी दशा में दन्त रोग होता है। यदि वह द्वितीयेश बुध हो तो जिह्वारोग, वाणी में दोष पैदा होता है।

तृतीय भाव सम्बन्धी दशा

भ्रातृस्थानं द्वितीयं च नवैकादशसप्तमम्।
तत्तदीशदशायां च भ्रातृलाभो भवेन्नृणाम्॥9॥

2.3.7.9.11 भावेशों की दशान्तर्दशा में व्यक्ति को भाई की प्राप्ति होती है। यदि उम्र अधिक हो तो उस दशा में भाइयों बहनों में समन्वय व सहयोग होता है। यहाँ भाई से तात्पर्य भाई बहन दोनों से समझें।

भ्रातृस्थानेश तद्राशिस्तद्भावस्थखचारिणाम्।
मध्ये बलसमेतस्य दशा सोदरवृद्धिदा॥10॥

तृतीयेश, तृतीयेश जिस राशि में हो उस राशि के स्वामी, तृतीयभावगत ग्रह, इनकी दशान्तर्दशा में मनुष्य के भाइयों की वृद्धि होती है। सम्भव हो तो भाई का जन्म, अन्यथा भाइयों के साथ प्रेम सहयोग बढ़ता है।

कारकः सहजाधीशस्तद्दर्शी तत्र संस्थितः।
इष्टानिष्टकरास्तेषां स्वदशान्तर्दशासु च॥11॥

तृतीय भाव का कारक मंगल, तृतीयेश, तृतीय पर दृष्टि रखने वाला ग्रह, तृतीय में स्थित ग्रह, इनकी दशान्तर्दशा, अपने बल व प्रकृति के अनुसार, भाइयों को शुभाशुभ फल देते हैं।

कुजानुजस्थानगराशिनाथास्त्रयो बलिष्ठा रणरंगशूरः।
कुजेन युक्ते खचरे बलिष्ठे सत्वं बलं स्थानसुखं समेति॥12॥

मंगल, तृतीयेश, तृतीयगतग्रह ये तीनों ही बलवान् हों तो व्यक्ति के भाई समर्थ, प्रभावशाली होते हैं।

मंगल के साथ स्थित ग्रह यदि बलवान् हो तो उसकी दशा में भाइयों को बल, प्रभाव वृद्धि स्थान लाभ होता है।

तेषां त्रयाणामपहारकाले पाकेऽथवा मूलफलादिसौख्यम्।
श्रोत्रद्वयोर्भूषणसत्कथादि सम्पत्करं भ्रातृसुतादिलाभम्॥13॥

उक्त तीनों ग्रहों के दशान्तर्दशा काल में व्यक्ति को भौतिक सुख, आभूषण प्राप्ति, सत्कथा-वार्ता श्रवण, सम्पत्ति वृद्धि व भाई बहनों के यहाँ सन्तानादि अथवा भाई बहनों का सुख होता है।

भ्रातृकष्टकर दशा

लग्नेशानुजनायकौ विबलिनावन्योन्यशत्रुग्रहौ
दुश्चिक्यस्थितकारकौ च यदि वा दुःस्थानगौ दुर्बलौ।
तत्पाके सहजप्रमादकलहं तन्नाशमर्थक्षयं
तत्खेटोपग कोपहेतुकलहं स्नेहादि सर्वं वदेत्॥14॥

1. लग्नेश व तृतीयेश यदि निर्बल हों और परस्पर शत्रु हों।
2. तृतीयगत ग्रह व मंगल 6.8.12 में हों या निर्बल हों।

उक्त स्थिति में इन ग्रहों की दशान्तर्दशा में भाइयों की हानि, धननाश, उक्त ग्रहों के कारकत्व से सम्बन्धित बातों के विषय में विवाद, कलह होती है।

यदि उक्त स्थिति न बने तो स्नेह सौहार्द बना रहता है।

भ्रातृस्थतन्नायककारकाणां नीचारिदुःस्थानसमन्वितानाम्।
भुक्तौ दशायां धनसत्वनाशं पराजयं भ्रातृविनाशमाहुः॥15॥

तृतीय में स्थित ग्रह, तृतीयेश व मंगल यदि नीचगत, 6.8.12 भावगत, शत्रुक्षेत्री हों तो इनकी दशान्तर्दशा में धन, पराक्रम की हानि, पराजय व भाइयों की हानि होती है।

भ्रातृमृत्यु समय

लग्नेशस्फुटतो विशोध्य सहजस्थानाधिपस्य स्फुटं
तन्नक्षत्रगते शनौ तु मरणं तत्सोदराणां वदेत्।

तस्माद्धि स्फुटतस्तु मानगृहपं भौमं च संशोधिते।
राशौ भानुसुते तथैव च चतुर्योगस्फुटांशेऽथवा॥16॥

जिस व्यक्ति के भाई का अनिष्टकारक समय जानना हो तो—

1. लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट को घटाएँ। इस घटाफल मे जो नक्षत्र हो, उसमें जब शनि गोचर करे तो भाई के लिए खराब समय समझें।
2. अथवा लग्नेश स्पष्ट—दशमेश स्पष्ट में विद्यमान शनि गोचर मे भाई को कष्ट कहें।
3. अथवा लग्नेश स्पष्ट—मंगल स्पष्ट में विद्यमान नक्षत्र राशि मे शनिगोचर में कष्ट कहें।
4. अथवा लग्नेश + तृतीयेश + दशमेश + मंगल के योग मे विद्यमान नक्षत्र में शनि गोचर के समय भाई का अनिष्ट कहें

चतुःस्फुटाक्रान्तदृगाणराशिं गते गुरौ सोदरनाशमाहुः।
तत्तारकानाथदशानुजानामतीव सम्पत्सुखदायिनी स्यात्॥17॥

1. लग्नेश, तृतीयेश, मंगल व दशमेश के योग में जो द्रेष्काण राशि पड़े, उस राशि में गुरु का गोचर होने पर भाइयों की हानि कहें।
2. तृतीयेश, लग्नेश, मंगल जिस नक्षत्र में हो, उस नक्षत्र के विंशोत्तरी दशा स्वामी ग्रह की दशा में मनुष्य के भाइयों को सुख, सम्पत्ति आदि उत्तम फल मिलते हैं।

भूसूनुस्फुटतो विशोध्य फणिनं शेषे त्रिकोणे गुरौ
जातस्यानुजनाशनं क्षितिसुतं राहुस्फुटाच्छोधयेत्।
तद्राशिस्थनवांशकेऽमरगुरौ तज्ज्येष्ठनाशं वदेत्
जन्माधानप कर्मपे स्फुटगृहे जीवेऽनुजो जायते॥18॥

1. मंगल स्पष्ट में से राहु स्पष्ट हो घटाएँ। शेष राशि में या उससे 5.9 राशियों में जब वृहस्पति गोचर करे तो छोटे भाई की हानि होती है।
2. राहु स्पष्ट में से मंगल स्पष्ट को घटाएँ। उस घटाफल में विद्यमान स्पष्ट में पड़ने वाली नवांश राशि में गुरु का गोचर हो तो बड़े भाई की हानि होती है।

जन्म नक्षत्र, आधान नक्षत्र (19वाँ नक्षत्र) कर्म नक्षत्र (10वाँ) इन तीनों नक्षत्रों के विंशोत्तरी दशेश देखें। इन तीनों के स्पष्टों को जोड़ने से प्राप्त योगफल की राशि में वृहस्पति गोचर करे तो छोटा भाई होता है।

चतुर्थ भाव सम्बन्धी दशा

मातृलग्नेशपितृपाः केन्द्रकोणस्थिता यदि।
तद्‌दशान्तर्दशाकाले जनन्यास्त्वनुमृत्युदाः॥19॥

चतुर्थेश, लग्नेश व दशमेश यदि केन्द्र या त्रिकोण में हों तो इनकी दशान्तर्दशा में माता की मृत्यु सम्भव होती है।

रवीन्दू पितृमातृस्थौ यदि वा अनुमृत्युदौ।
तदीशेक्षितयुक्तौ वा रविसम्बन्धिनस्तथा॥20॥

यदि सूर्य चन्द्र दोनों ही 4.10 भावों में हों तो इनकी दशा में माता-पिता की आगे पीछे मृत्यु होती है।

सूर्य राशीश, चन्द्र राशीश, इनके साथ स्थित ग्रह या इनसे स्पष्ट ग्रह या सूर्य से सम्बन्ध रखने वाले ग्रहों की दशान्तर्दशा में माता-पिता की मृत्यु होती है।

धन-वाहनदायक दशा

ग्रहास्त्रयः स्थानबलाधिकाश्चेद् विचित्रनानाभरणादियानम्।
खेटद्वये वीर्ययुते विलग्ने तदीयपाके समुपैति सौख्यम्॥21॥

चतुर्थेश, चन्द्रमा व चतुर्थगत ग्रह ये तीनों बलवान् हों और उत्तम स्थानों में हों तो इनकी दशान्तर्दशा में विचित्र व बहुत से वाहन व विलासिता की सामग्री प्राप्त होती है। यदि इनमें से दो ग्रह बली हों और लग्न से सम्बन्ध करें तो इनकी दशान्तर्दशा में बहुत सुख होता है।

चतुर्थधर्मायधनाधिनाथा विलग्नसम्बन्धबलाधिकाश्चेत्।
तदीयपाके समुपैति राज्यं क्रमेण लाभं धनलाभमर्थम्॥22॥

2.4.9.11 भावेश यदि लग्न से सम्बन्ध करें और बलवान् हों तो इनकी दशान्तर्दशा में चुतर्थेश व लग्न का सम्बन्ध हो तो लाभकारी राजयोग। नवमेश व लग्न का सम्बन्ध हो तो विविध। एकादशेश व लग्न का सम्बन्ध हो तो धनलाभ। धनेश व लग्न का सम्बन्ध हो तो धन की प्राप्ति होती है।

ये ये ग्रहा राजयोगाधायकाः संस्मृताः जनौ।
तद्‌दशान्तर्दशाकाले तद्राशिपदशागमे॥23॥
तेषामन्तर्दशास्वेव राजयोगो भविष्यति॥23॥

राजयोग, भाग्ययोग, धनयोग बनाने वाले ग्रहों की परस्पर दशान्तर्दशा में, अथवा राजयोगादि कारक ग्रह जिस ग्रह की राशि में बैठे हों, उसकी दशान्तर्दशा में राजयोगादि का अपना फल देते हैं।

सपत्नभावाधिपतौ तपःस्थे शुभैरदृष्टे बलसंयुते वा।
स्वकीयभाग्यादिकमल्पकालं ददाति शत्रौ सुखनाथदाये॥24॥

षष्ठेश यदि नवम में शुभ ग्रहों से अदृष्ट हो या नवम में षष्ठेश बलव हो। चतुर्थेश षष्ठ में यदि शुभ ग्रहों से अदृष्ट हो तो इनकी दशान्तर्दशा में थ समय के लिए भाग्योदय होता प्रतीत होता है।

सुखाधिपे शोभनखेटयुक्ते तदीयपाक्रान्तमरातिगं तत्।
पापन्विते तस्य दशावसाने पुनः स्वभाग्यं समुपैति सर्वम्॥25॥

चतुर्थेश यदि कहीं भी शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो। चतुर्थेश की अधिष्ठि राशि का स्वामी शत्रु क्षेत्री या पापयुक्त हो तो चतुर्थेश की दशा में बहुत भा हानि होकर अन्त में भाग्योदय हो जाता है।

चतुर्थस्थदशायां तु भवेच्छ्रीमत्वलाभता।
भाग्याधिपदशायां तु महाभाग्यमवाप्नुयात्॥26॥

चतुर्थ स्थान में बैठे बलवान् ग्रह की दशा में श्रीमन्तता, समृद्धि, मान-सम्म होते हैं। बली नवमेश की दशा में भाग्य बहुत साथ देता है।

सम्पत्ति हानि दशा

लग्नाधिपस्य गृहगो यदि शत्रुखेटस्तत्पाकभुक्तिसमये गृहभूमिनाशः।
यानेशभुक्तिसमये निजबन्धुहानिः शन्यारमान्दियुतभुक्तिरनर्थहेतुः॥27॥

लग्नेश जिस राशि में स्थित हो, वह राशीश यदि शत्रुक्षेत्री हो या शत्रु ग्र से युक्त हो तो उसकी दशान्तर्दशा में जमीन जायदाद, मकान की हानि होती है

लग्नेश के राशीश की दशा में यदि वह शत्रुक्षेत्री हो तो चतुर्थेश की अन्तर्द में अपने प्रिय मित्र या सहयोगी की हानि होती है।

शनि, मंगल व गुलिक से युक्त राशि स्वामी की दशान्तर्दशा में अनर्थ हो हैं।

चतुर्थेशदशाकाले सुखलग्नषण्णायकाः।
भुक्तौ बन्धुविनाशः स्याद् गृहक्षेत्रादिनाशनम्॥28॥

निर्बल चतुर्थेश की दशा में चतुर्थेश, लग्नेश, व षष्ठेश की अन्तर्दशाओं प्रायः बन्धुहानि, जायदाद में झंझट व मकान की समस्या या वाहन सम्बन्धी चिन्त होती है।

पंचम भाव सम्बन्धी दशा

जीवाच्चन्द्रमसो विलग्नभवनात्पुत्रप्रदं पंचमं
तस्माद्धर्मगृहं च तत्पतिदशाभुक्तौ सुताप्तिं वदेत्।
पुत्रस्थानपकामपस्फुटयुते यत्तारका तद्दशा
तत्खेटान्वितवीक्षकग्रहदशाभुक्तिश्च पुत्रप्रदा॥29॥

लग्न, चन्द्र, वृहस्पति जहाँ स्थित हों, उनसे 5.9 भाव सन्तान प्राप्ति में मुख्

भूमिका रखते हैं। अतः इन तीनों पंचमेशों की दशान्तर्दशाओं में पुत्रोत्पत्ति होती है।

पंचमेश व सप्तमेश का योग करके, योगफल में जो नक्षत्र हो, उस नक्षत्र की विंशोत्तरी दशा में पुत्र लाभ होता है।

सन्तान हानि योग

पुत्रस्थानपकारकेक्षकयुता दुःस्थानपार्दुर्बला
दुःस्थास्तत्परिपाकभुक्तिसमये पुत्रस्य नाशं वदेत्।
चत्वारो बलशलिनो यदि शुभास्तत्पाकभुक्तौ नृणां
पुत्राप्तिं सुतसम्पदः प्रभुजनप्रीतिं च कुर्वन्ति ते॥30॥

पंचमेश, पंचम भावगत ग्रह, पंचम कारक, गुरु, पंचम पर दृष्टि रखने वाले ग्रह यदि निर्बल हों, या 6.8.12 भावों के भी अधिपति हों या 6.8.12 भावों में स्थित हों तो इनकी दशान्तर्दशा में पुत्रहानि होती है।

ये चारों यदि बलवान् हों, शुभ स्थानों में गए हों तो इनकी दशान्तर्दशा में पुत्रप्राप्ति, सम्पत्ति वैभव, बड़े लोगों की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

पुत्रेशकारकयुतेक्षक खेचराणां
तत्कालजस्फुटयुतांशकराशियातौ।
वागीशभानुतनयौ यदि गोचरेण
जातस्यपुत्रजनमृत्युकरौ भवेताम्॥31॥

पंचमेश, पंचमकारक गुरु, पंचम द्रष्टा ग्रह, इनके साथ युक्त ग्रह, इन सबके स्पष्टों को जोड़ने से प्राप्त योगफल में जो राशि या नवांश राशि हो, उसमें जब गुरु शनि एक साथ गोचर करें तो व्यक्ति की सन्तान के लिए घातक समय होता है।

सन्तानप्राप्ति दशा

पुत्रस्थानपलग्नपस्फुटयुते राश्यंशकोणे गुरौ।
पुत्राप्तिः सचिवेन्द्विनः स्फुटयुते राश्यंशसंख्याः सुताः।
धीधर्मावनिनायकस्फुटत्रयप्राप्तांशं संख्याथवा
धीधर्मक्षितिगस्फुटैक्य भवने यातांशतुल्याः सुताः॥32॥

1. लग्नेश व पंचमेश के स्पष्ट राश्यादि को जोड़ लें। इस योग में पड़ने वाली राशि या नवांश राशि या इससे त्रिकोण राशियों में गुरु का गोचर हो तो सन्तान(पुत्र) प्राप्ति होती है।
2. सूर्य, चन्द्र, गुरु स्पष्टों के योग में जो राशि या नवांश राशि पड़े, उसके बराबर संख्या में व्यक्ति को सन्तान होती है।

3. पंचमेश, नवमेश चतुर्थेश स्पष्ट के योग की राशि या नवांश संख्या के बराबर पुत्र होते हैं।
4. 5.9.4 भावों में स्थित ग्रहों के स्पष्ट योग की राशि संख्या या नवांश संख्या के बराबर सन्तान होती है।

षष्ठ भाव सम्बन्धी दशा

रन्ध्राधिपस्तु यद्भावमीक्षते संस्थितोऽपि वा।
तद्भावस्य दाये तु शत्रुवृद्धिर्नृणां भवेत्॥33॥

अष्टमेश जिस भाव में हो या जिस भाव पर दृष्टि रखे, उसी भावेश की दशान्तर्दशा में मनुष्य को शत्रुओं या विरोधियों का अधिक सामना करना पड़ता है।

बलिनः शनिषष्ठेशदेहपाः केन्द्रकोणगाः।
तद्दशायां तु तद्युक्तो बन्धनप्राप्तिमादिशेत्॥34॥

लग्नेश, षष्ठेश व शनि ये बलवान् होकर साथ-साथ यदि केन्द्र त्रिकोण में गए हों तो इनकी दशान्तर्दशा में या इनके साथ स्थित अन्य ग्रह की दशा में बन्धन होता है।

रोगाधीशदशा बली जनकलिं रोगागमं जन्मिना-
माधिव्याधिमरिव्रजव्रणगणातं कं कलंकं खलात्।
मानध्वंसमतिक्षयं कलयति ज्ञानार्थनाशं तथा
चिन्ताव्याकुलतामृषारिवशतो धातुक्षयं प्रायशः॥35॥

सामान्यतः षष्ठेश की दशा में कलह, विवाद, रोग, व्याधि, मानसिक सन्ताप, शत्रुओं का भय, चोट, आतंक, बदनामी, मानभंग, हानि, बुद्धि विभ्रम, चिन्ता, व्याकुलता व शरीर कष्ट होता है।

सप्तम भाव सम्बन्धी दशा

कलत्रनाथस्थितभांशकेशयोः सितक्षपानायकयोर्बलीयसः।
दशागमे द्यूनपयुक्तभांशकत्रिकोणगे देवगुरौ करग्रहः॥36॥

सप्तमेश जहाँ स्थित हो वह राशीश या सप्तमेश का नवांशेश इन दोनों में जो बली हो, अथवा चन्द्रमा व शुक्र में जो बली हो, उस बलवान् ग्रह की दशा में विवाह होता है। उस दशाकाल में जब वृहस्पति, सप्तमेश की नवांश राशि या उससे त्रिकोण में गोचर करेगा जो विवाह होगा।

विवाह कारक दशा

शुक्रोपेतकलत्रराशिपदशाभुक्तिर्विवाहप्रदा
लग्नाद्वित्तपतिस्थराशिपदशाभुक्तौ च पाणिग्रहः।

कर्मायुर्भवनाधिनायकदशाभुक्तौ विवाहक्रमात्
कामेशेन युते कलत्रगृहगस्तत्पाकभुक्तौ तु वा॥37॥

(i) शुक्र या सप्तमेश जिस राशि में हो, उस राशि स्वामी की दशा में विवाह होता है।

(ii) द्वितीयेश जिस राशि में हो, उस राशीश की दशा में विवाह होता है।

(iii) अष्टमेश व दशमेश की परस्पर दशाभुक्ति में विवाह सम्भव होता है।

(iv) सप्तमेश के साथ स्थित ग्रह या सप्तम में स्थित ग्रह की दशा में विवाह सम्भव है।

सौम्यव्योमचरान्वितः शुभ ग्रहैश्चादौ ददाति श्रियं
पापर्क्षे शुभखेचरे यदि दशामध्ये विवाहादिकम्।
क्रूरः पापग्रहोपगो यदि फलं पाकावसाने तथा
सौम्यर्क्षे यदि सर्वकालफलदः सौम्यान्वितः शोभनः॥38॥

उक्त प्रकार से विवाह कारक दशा का निश्चय करके देखें। विवाह का कारक ग्रह शुभयुक्त या स्वयं शुभ हो तो दशा के आरम्भ में ही फल देता है।

विवाह कारक ग्रह यदि पापराशि में हो, लेकिन स्वयं शुभ हो तो दशा मध्य में फलदायी है। विवाह कारक ग्रह स्वयं पापी व पाप राशि में स्थित भी हो तो दशा के अन्त में विवाह कराता है।

शुभयुक्त, शुभ ग्रह यदि शुभ राशि में भी हो तो सारी दशा में कभी भी यथासम्भव विवाह करा सकता है।

यस्मिन्नवांशे वनिताधिनाथो भवेत्प्रसूतौ ननु मानवनाम्।
याते तदीशस्य दशान्तराले जायाधिपे तत्र कलत्रयोगम्॥39॥

सप्तमेश जिस नवांश में गया हो, उस नवांशेश ग्रह की दशा में जब सप्तमेश की अन्तर्दशा आती है, तब विवाह होता है।

स्त्री हानि दशा

लग्नेशस्थनवांशनाथगृहगे जीवे समेति स्त्रियं
नीचारातिनवांशके सति मृतस्त्रीको विदारोऽथवा।
लग्ने कामपतिस्फुटादपहृते राशित्रिकोणे गुरौ
लग्नात्सप्तमराशिपस्फुटहृते जीवे मृतिं योषितः॥40॥

1. लग्नेश जिस नवांश में हो, उस नवांशेश की राशि में जब गुरु नीचगत, शत्रुक्षेत्री या अस्तंगत हो या नीच शत्रुनवांश में गोचर करे तो पत्नी की हानि या वियोग होता है।

2. लग्न को सप्तमेश स्पष्ट में से घटाकर जो राशि मिले, उस राशि या उससे त्रिकोण राशि में गुरु जब गोचर करे तब पत्नी का अनिष्ट होता है।
3. लग्न में से सप्तमेश स्पष्ट को घटाकर जो राशि मिले, उसमें या उससे त्रिकोण राशि में गुरु गोचर होने पर स्त्री की मृत्यु सम्भव है।

लग्नात्कामपकारकौ शुभकरौ वीर्याधिके सप्तमे
पत्या साकमुपैति मृत्युमबला पापैरयुक्तेक्षिते।
कामाच्छिद्रदशापहारसमये शुक्राष्टवर्गोदिते
राशौ भानुसुते कलत्रमरणं जीवे तदंशान्विते॥41॥

सप्तमेश व सप्तम कारक शुक्र यदि बली हों और शुभ फलदायक हों सप्तम में हों तो पति के साथ ही पत्नी की मृत्यु होती है। इस स्थिति में इन पर पाप दृग्योग नहीं होना चाहिए।

द्वितीयेश की दशा में, शुक्र के अष्टकवर्ग में अधिक रेखा वाली राशि में शनि गोचर करे और वृहस्पति भी द्वितीयेश की नवांश राशि में गोचर करे तो पत्नी की मृत्यु होती है।

अष्टम सम्बन्धी दशाफल

रन्ध्रेशे रिपुरन्ध्ररिःफगृहगे तत्पाकभुक्तौ मृतिं
मन्दाक्रान्तगृहेशपाकसमये रन्ध्रेशभुक्तौ तथा।
पाके रन्ध्रगृहाधिपस्य तदनुक्रान्तस्य भुक्तौ तु वा
खेटानां बलदुर्बलेन सकलं संचिन्तयेत्तद्बुधः॥42॥

इन दशान्तर्दशाओं में व्यक्ति की मृत्यु सम्भव है—

1. अष्टमेश 6.8.12 में गया हो तो उसकी दशान्तर्दशा में।
2. शनि जिस राशि में हो उस राशि के स्वामी ग्रह की दशा में जब अष्टमेश की अन्तर्दशा हो।
3. अष्टमेश की महादशा में अष्टम में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा हो।

उक्त सब विचार ग्रहों के बलाबल विचार, मारक विचार व आयु विचार करने के पश्चात् करना चाहिए।

लग्नेशे निधनारिरिःफगृहगे राहौ सकेतौ तु वा
होरारन्ध्रपसंयुतग्रहदशा जातस्य मृत्युप्रदा।
तत्खेटान्वितराशिनायकदशा नाशप्रदा देहिनां
खेटानां प्रथमागतस्य फणिनः पाकापहारे क्रमात्॥43॥

1. लग्नेश 6.8.12 भावों में राहु या केतु के साथ हो तो लग्नेश की दशा में।
2. होरा लग्न के अष्टमेश के साथ स्थित ग्रहों की दशा में।
3. सर्वप्रथम जब भी राहु की दशा या भुक्ति आए।

इन सब में मृत्यु की सम्भावना होती है।

व्यापाररन्ध्रतनुनाथशनैश्चराणां मध्ये विधुंतुदयुतो विबलग्रहो यः।
तत्पाकभुक्तिसमये मरणं नराणां तद्युक्तवीक्षकनभोग दशान्तरे वा॥44॥

दशमेश, अष्टमेश, लग्नेश व शनि इनमें से जो ग्रह राहु से युक्त हो और निर्बल हो उसकी दशान्तर्दशा में मृत्यु सम्भव होती है अथवा ऐसे ग्रह के साथ बैठे या दृष्टि रखने वाले ग्रह की दशान्तर्दशा में मृत्यु होती है।

रोग कारक दशा

नाशे नाशपतौ तु तद्ग्रहदशाभुक्तौ समेत्यामयं
लग्ने लग्नपतौ तु लग्नपदशा भुक्तौ शरीरार्तिभाक्।
पश्चादामयनाशनं तनुसुखं मोदश्च संजायते
रन्ध्रेशे बलसंयुते तनुपतेर्दाये मृतिर्देहिनाम्॥45॥

1. अष्टमेश अष्टम में ही हो तो उसकी दशा में उसकी ही अन्तर्दशा में रोग होता है।
2. लग्नेश यदि लग्न में हो तो लग्नेश की दशा में लग्नेशान्तर्दशा में शरीर कष्ट होता है। लेकिन वह रोग समयानुसार नष्ट हो जाता है। रोग नाश के बाद शरीर स्वस्थ व सुखी रहता है।
3. यदि अष्टमेश बलवान् हो तो लगनेश की दशा में भी मृत्यु सम्भव होती है।

जातस्य जन्मसमये विबले विलग्ने
लग्नेशरन्ध्रपतिपाकमतीवकष्टम्।
पश्चादतीव सुखमेति विलग्ननाथे
वीर्यान्विते निधनपस्य मृतिं दशायाम्॥46॥

जन्म लग्न यदि निर्बल हो तो लग्नेश व अष्टमेश की परस्पर दशान्तर्दशा में बहुत कष्ट होते हैं। लेकिन यह अन्तर्दशा व्यतीत हो जाने पर बहुत सुख मिलते हैं। लग्नेश यदि बलवान् हो तो अष्टमेश की दशा में मृत्यु होती है।

देहेशे च विनाशपे बलयुते केन्द्रत्रिकोणस्थिते
तद्युक्तग्रहपाकभुक्तिसमये रोगापवादः फलम्।
रन्ध्रेशस्तनुपश्च खेचरयुतौ केन्द्रत्रिकोणस्थितौ
रन्ध्रस्थानगतस्य पाकसमये मृत्युं समेति ध्रुवम्॥47॥

यदि लग्नेश व अष्टमेश दोनों ही बलवान् हों, या केन्द्रत्रिकोण में स्थित हों तो उनके साथ स्थित ग्रह की दशान्तर्दशा में साधारण रोग व तनाव आदि होते हैं। यह बात अष्टमेश व लग्नेश दोनों पर स्वतन्त्र रूप से लागू होती है।

यदि दोनों ही केन्द्र त्रिकोण में स्थित हों तो अष्टम स्थान में स्थित ग्रह की दशा में मृत्यु होती है।

नो चेदष्टमखेचरो यदि तनुप्राप्तेन संचिन्तयेन्
मन्दे लग्नगतेऽथवाष्टमगते तत्पाकभुक्तौ मृतिः।
रन्ध्रेशोदयनायकौ सुखचरौ मध्ये ग्रहो दुर्बलो
यस्तस्य द्युचरस्य पाकसमये भुक्तौ च मृत्युं वदेत्॥48॥

यदि पूर्वोक्त श्लोक का योग घटित हो रहा हो, परन्तु अष्टम में कोई ग्रह न हो तो लग्नगत ग्रह की दशा में मृत्यु होती है।

यदि शनि लग्न या अष्टम में हो तो उसकी दशा अन्तर्दशा में मृत्यु होती है।

लग्नेश व अष्टमेश यदि दोनों ही शुभ ग्रह हों तो उनमें से जो निर्बल हो उसकी दशान्तर्दशा में मृत्यु सम्भव होती है।

लग्नात्पंचमराशिपेन सहितं व्योमाटनानां दशा
संख्याभानुहृतावशेषगृहगे मृत्युं दिनेशे सति।
पुत्रेशेन वियच्चरेण सहितस्वाब्देन संचितयेल्
लग्नेशेनयुताब्दमंगविहृतं संक्रान्तिपूर्वं दिनम्॥49॥

लग्न से पंचमेश की अधिष्ठित राशि तक जितने ग्रह पड़ें, उन सबके दशा वर्षों को जोड़कर 12 से भाग देने पर जो शेष बचे, उस राशि में सूर्य गोचर करे, तब मृत्यु होती है। लग्नेश व पंचमेश इन दोनों के दशा वर्षों को जोड़कर 6 से भाग दें। शेष संख्या तुल्य दिन सूर्य क्रान्ति से बीतने पर मृत्यु होती है। माना किसी उदाहरण में लग्नेश से पंचमेश तक गुरु, मंगल, शनि स्थित हैं। इनके दशा वर्ष $16 + 7 + 19 = 42 \div 12 = 6$ शेष बचा। अतः कन्या राशि में सूर्य गोचर करेगा तो मृत्यु होगी। इसमें भी लग्नेश दशावर्ष माना 10 + पंचमेश दशा वर्ष $= 17 \div 6 = 5$ शेष हैं। अतः कन्या राशि के 5 अंश बीतने पर मृत्यु होगी।

त्रिकोणे केन्द्रे वा यदि पितृतनुक्षेत्रपतयो
दशाभुक्तौ तेषांमनुमरणमाहुर्मुनिगणाः।
समौमे मन्दाढ्ये फणि युजि तु वेन्दौ निधनगे
त्वपस्मारतस्मान्मरणमथवेन्दौ कृशतनौ॥50॥

यदि दशमेश व लग्नेश केन्द्र त्रिकोण में हों तो उनकी दशाभुक्ति में मृत्यु सम्भव होती है। मंगल, शनि या राहु से युक्त चन्द्रमा अष्टम में हो या चन्द्रमा क्षीण हो तो अपस्मार (मिर्गी) से मृत्यु सम्भव होती है।

राशि संज्ञा से मारक दशा

शीर्षोदयेषु चरभादिषु वित्तपस्य लग्नाधिपस्य भुजगस्य दशापहारे।
पृष्ठोदये सति तदीयदृगाणपस्य तद्वीक्षितादिसहितस्य मृतिं वदेद् वा॥51॥

1. शीर्षोदय लग्न (3.5.6.7.8.11) लग्नों में जन्म हो या किसी चर राशि लग्न में जन्म हो तो द्वितीयेश में लग्नेश या लग्नेश में द्वितीयेश या लग्नेश व राहू की परस्पर दशान्तर्दशा में मृत्यु होती है।
2. पृष्ठोदय राशि लग्नों में (1.2.4.9.10) द्वितीयेश जिस ग्रह के द्रेष्काण में हो या जिस ग्रह के साथ दृग्योग करता हो, उसकी व लग्नेश की परस्पर दशान्तर्दशा में मृत्यु होती है।

दुर्घटना से मृत्यु की दशा

रन्ध्रांगनाथौ यदि वा रिपुस्थौ राह्वान्वितौ केतुयतौ समन्दौ।
तद्भुक्तिकालेऽप्यथवा विपाके शस्त्रेण चौरैर्मरणं प्रयाति॥52॥

लग्नेश व अष्टमेश दोनों यदि षष्ठ स्थान में हों, अथवा कहीं भी राहु से युक्त या केतु से युक्त होकर शनि सहित हों तो इनकी परस्पर, लग्नेश व अष्टमेश की, या इनकी दशान्तर्दशा में राहु केतु शनि की दशान्तर्दशा में शस्त्र, चोर, दुष्टजन या दुर्घटना में मृत्यु होती है।

विलग्नजन्माधिपतेर्नभोगः षडष्टकश्चाष्टकवर्गके च।
शून्यर्क्षगस्तस्य दशापहारे भवेदवश्यं निधनं नरस्य॥53॥

लग्नेश व जन्मराशीश परस्पर एक दूसरे से छठे आठवें हों या दोनों ही लग्न से 6.8 में स्थित हों।

तब इनकी दशान्तर्दशा में, किसी ऐसे ग्रह की दशान्तर्दशा आएगी जो अपने अष्टकवर्ग में 0 रेखा प्राप्त हो तो, मृत्यु हो जाया करती है।

लग्नेश की मरणकारक दशा

नीचस्थितश्चेत्तनुनायकोऽपि व्ययस्थितो वा निधनस्थितो वा।
स्यात्तद्दशायां निधनं त्वश्यं क्रूरग्रहैश्चेत् सहितं विलग्नम्॥54॥

लग्न में क्रूर ग्रह हों और लग्नेश नीचगत हो या 8.12 भाव में गया हो तो लग्नेश की दशा में मृत्यु सम्भव होती है।

लग्नाधिनाथस्य मृतिस्थितस्य स्यात्तद्दशायामतिपीडनं च।
पाकावसानेऽपि हि मानवानामायुः प्रपूर्णत्वमुपैति नूनम्॥55॥

1. लग्नेश यदि अष्टम में हो तो लग्नेश की दशा में बहुत कष्ट होता है।

2. वैसे लग्नेश की दशा में अन्त में प्रायः मनुष्यों की मृत्यु हो जाती है।

अन्य प्रकार से मारक दशा निश्चय

त्रिमण्डलेष्वथकस्मिन् पापस्तिष्ठति दुर्बलः।
न सौम्यग्रहसंयुक्तस्तद्दशान्ते मृतिं वदेत्॥56॥

लग्न से पंचम तक, पंचम से नवम तक, नवम से द्वादश तक, ये तीन मण्डल हैं। इनमें से किसी एक मण्डल में यदि कोई निर्बल पाप ग्रह स्थित हो और उस पाप ग्रह के साथ कोई भी शुभ ग्रह न हो तो वैसे पापी ग्रह की दशा के अन्तिम वर्षों में मृत्यु सम्भव होती है।

राशिसन्धिस्थखेटानां दशारोगप्रदा भवेत्।
त्रिंशद्भागमनुक्रान्तदशायां मरणं ध्रुवम्॥57॥

1. राशि सन्धि अर्थात् गण्डान्त में स्थित ग्रहों की दशा में रोग होते हैं।
2. जो ग्रह किसी भी राशि के 30वें अंश में स्थित हो, उसकी दशा में मृत्यु हो जाने की प्रबल सम्भावना होती है।

त्रिकगत पापी मृत्युप्रद

षष्ठाष्टमस्थो रिपुदृष्टमूर्तिः पापग्रहः पापखगोपगश्चेत्।
स्वान्तर्दशायां मरणं नराणां वदन्ति युद्धे विजितस्य दाये॥58॥

यदि 6.8 भाव में कोई पाप ग्रह स्थित हो और वह पाप ग्रह से युक्त व शत्रु ग्रह से दृष्ट हो तो उसकी अन्तर्दशा, किसी भी ग्रहयुद्ध में पराजित ग्रह की दशा में आएगी तो मृत्यु होगी।

दशाक्रम से मृत्यु

पंचम्यारदशा मृत्युं दद्यात् षष्ठी गुरोर्दशा।
शनेश्चतुर्थी मृत्युः स्याद्दशा राहोस्तु सप्तमी॥59॥

पाँचवें क्रम पर मंगल दशा। छठे क्रम पर गुरुदशा। चौथे क्रम पर शनि दशा। सातवें क्रम पर राहु दशा हो तो इन दशाओं में प्रायः मृत्यु हो जाया करती है।

नीचारातिविमूढस्य विपत्प्रत्यरिनैधनाः।
दशा दद्युर्मृतिं तस्य पापैर्युक्ता विशेषतः॥60॥

जो ग्रह नीचगत, शत्रुक्षेत्री, अस्तंगत हो, और वह पाप ग्रहों से युक्त भी हो तो उसकी तीसरी, पांचवीं, सातवीं दशा रहे, अर्थात् विपत्तारा दशा, प्रत्यरितारा दशा, वधतारा दशा मृत्युप्रद हो जाती है।

खरद्रेष्काण से मृत्यु

अष्टमस्य त्रिभागांशपति स्थित गृहं शनौ।
तदीशनवभागर्क्षगते वा मरणं भवेत्॥61॥

अष्टम भाव में जो द्रेष्काण हो वह खरद्रेष्काणेश या अष्टमभावगत नवांश का स्वामी अर्थात् खर नवांशेश (चतुः षष्ट्यंशेश) जिस राशि में हो, उस राशि में या उस राशि के नवांश में जब शनि गोचर करे, तब मृत्यु सम्भव होती है।

मन्दमान्धगुखरेशरन्ध्रपास्तन्नवांशपतयोऽपि ये ग्रहाः।
तेषु दुर्बलदशा मृतिप्रदा कष्टभे चरति सूर्यनन्दने॥62॥

शनि, मान्दि, राहु, खरद्रेष्काणेश, शनि जिस राशि में हों, उनके राशिपतियों को अलग लिख लें। अब इन सब ग्रहों के नवांशेशों को भी लिखें। इस सूची में जो ग्रह सबसे कमजोर हो, उस ग्रह की दशा में मृत्यु होती है।

उस दशा काल में भी जब शनि कष्टकारक राशि में गोचर करे, तब मृत्यु होगी। शून्य रेखा राशि, शत्रु क्षेत्र, नीच क्षेत्र को कष्ट राशि समझें।

क्रूरराशिस्थितः पापः षष्ठे वा निधनेऽपि वा।
सितेन रविणा दृष्टः स्वपाके निधनप्रदः॥63॥

6.8 भाव में क्रूर राशि में क्रूर ग्रह स्थित हो और उस पर सूर्य या शुक्र की दृष्टि हो तो उस पाप ग्रह की दशा में मृत्यु सम्भव होती है।

लाभाधीशयुतो वापि प्रेक्षितो वाथ कामपः।
तत्पाके मृत्युमाप्नोति रन्ध्रपेण युतेऽपि वा॥64॥

1. सप्तमेश यदि लग्नेश से युत या दृष्ट हो।
2. सप्तमेश यदि अष्टमेश से युक्त हो।

इन दोनों परिस्थितियों में सप्तमेश की दशा में मृत्यु होती है।

सप्तमाधिपतौ नीचरन्ध्रपेण च वीक्षिते।
तत्पाके मृत्युमाप्नोति सत्यमेव न संशयः॥65॥

यदि सप्तमेश के साथ नीचगत अष्टमेश हो या नीचगत अष्टमेश से सप्तमेश युक्त हो तो सप्तमेश या अष्टमेश की दशा में मृत्यु हो जाया करती है।

छिद्रग्रहों से मृत्युदशा

रन्ध्रेश्वरो रन्ध्रयुक्तो रन्ध्रद्रष्टा खरेश्वरः।
रन्ध्राधिपयुतश्चैव चतुःषष्ट्यंशनायकः॥66॥
रन्ध्रेश्वरातिशत्रुश्च सप्तछिद्रग्रहाः स्मृताः।
तेषां मध्ये बलीयस्तु तस्य दाये मृतिं वदेत्॥67॥

1. अष्टमेश 2. अष्टमगत ग्रह 3. अष्टम पर दृष्टि रखने वाला ग्रह

4. बाईसवें द्रेष्काण का स्वामी ग्रह 5. अष्टमेश से युक्त ग्रह 6. चौसठवें नवांश का स्वामी 7. अष्टमेश का अधिशत्रु। ये सात ग्रह छिद्रग्रह कहलाते हैं। इनमें से जो सबसे बलवान् हो, उसकी दशा में सम्भव होने पर मृत्यु हो जाती है। अर्थात् आयुखण्ड पूर्ण हो रहा है या अरिष्ट के प्रबल योग पड़े हों और उसी समय इनकी दशा आए तो मृत्युप्रद है।

अनिष्टदायक दशा

मान्दि त्रिकोणोपगते विलग्नं तद्द्वादशांशे यदि वा नवांशे।
मान्द्यान्विताः मान्दियुतर्क्षनाथः सर्वे सदानिष्टकरा भवन्ति॥68॥

यदि मान्दि लग्न से त्रिकोण भावों में पड़ता हो तो—मान्दि जिस ग्रह के द्वादशांश या नवांश में हो। जो ग्रह मान्दि के साथ स्थित हों। जिस राशि में मान्दि हो, उसका स्वामी ग्रह। ये सब प्रायः अपनी दशा में अनिष्टकारक होते हैं।

षष्ठाष्टमव्ययगतो निधनाधिपतिर्यदि।
तत्पाके तदधीशानामन्तर्भुक्त्यां मृतिर्भवेत्॥69॥

यदि अष्टमेश 6.8.12 में स्थित हो तो अष्टमेश की दशा में षष्ठेश अष्टमेश या द्वादशेश की अन्तर्दशा मारक होती है।

षष्ठाष्टमव्ययेशेन रन्ध्रपेण सपापिना।
युक्तो देहपतिः कुर्यान्नरं स्वल्पतरायुषम्॥70॥

पापयुक्त अष्टमेश यदि 6.8.12 में ही हो और साथ में ही लग्नेश हो तो मनुष्य की आयु थोड़ी होती है।

दशमेश की मारकदशा

कर्माधिपे राहुयुते रिःफषष्ठाष्टमस्थिते।
कर्मेशयुक्तपाकेतु राहुभुक्तौ मृतिर्भवेत्॥71॥

6.8.12 भावों में कहीं, दशमेश व राहु साथ हों तो दशमेश की दशा में राहु की अन्तर्दशा आने पर मृत्यु होती है।

यस्मिन् राशौ कर्मनाथस्तदधीशदशा यदा।
भवेदन्तर्दशा राहोस्तत्रैव मरणं भवेत्॥72॥

दशमेश जिस राशि में स्थित हो, उस राशि के स्वामी ग्रह की दशा में जब राहु की अन्तर्दशा होती है, तब मृत्यु हो जाती है।

लग्नेश की अनिष्ट दशा

लग्नाष्टमेशौ तनुरन्ध्रसंस्थौ स्वान्तर्दशायां स्वमहादशायाम्।
जातस्य गण्डं कुरुतस्तदूर्ध्वं शुभं भवत्येव न संशयोऽत्र॥73॥

लग्नेश अष्टमेश एक साथ ही लग्न या अष्टम में स्थित हों तो लग्नेश में अष्टमेश या अष्टमेश में लग्नेश की अन्तर्दशा में व्यक्ति का अरिष्ट होता है। लेकिन उस अवधि में जीवन सुरक्षित रहे तो आगे की शेष दशा में बहुत शुभ फल होता है। हमारे विचार से लग्नेश व अष्टमेश कहीं भी स्थित हों, उनकी परस्पर दशान्तर्दशा में अरिष्ट होता हुआ देखा जाता है।

अष्टमेश दशा यस्य जन्मकाले तु देहिनाम्।
लग्नेशान्तर्दशाप्युक्ता तस्य कष्टप्रदा बुधैः॥74॥

यदि किसी नवजात शिशु को जन्म समय में ही अष्टमेश की दशा हो तो उसमें जब लग्नेश की अन्तर्दशा आएगी, तब विशेष कष्ट होता है, ऐसा विद्वानों ने कहा है।

केन्द्रे त्रिकोणे तनुरन्ध्रनाथौ युक्तौ तु कैश्चिद्गगने चरैश्चेत्।
तेषां दशायां बलवर्जितस्य ग्रहस्य दाये मरणं प्रयाति॥75॥

लग्नेश व अष्टमेश साथ साथ या अलग, केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हों और उनमें से किसी के साथ कई अन्य ग्रह भी हों तो लग्नेश या अष्टमेश की दशा में जब युक्त ग्रहों में से निर्बल ग्रह की अन्तर्दशा आएगी, तब मृत्यु होती है।

अष्टमाधिपतौ केन्द्रे त्रिकोणे ग्रहसंयुते।
बलहीने तु देवेशे तद्दशायां मृतिर्भवेत्॥76॥

यदि अष्टमेश किसी अन्य ग्रह के साथ युत होकर केन्द्र या त्रिकोण में हो और वृहस्पति कमजोर हो तो अष्टमेश की दशा में मृत्यु हो जाती है।

आयुःस्थाने विलग्ने च गतो हि सूर्यनन्दनः।
विबलस्य दशायां तु जातस्य पुरुषस्य हि॥77॥

यदि शनि लग्न या अष्टम में निर्बल होकर स्थित हो तो उसकी दशा में भी मृत्यु होनी सम्भव होती है।

आधानादि दशा से मृत्यु

जन्मर्क्षात्परतस्तु पंचमग्रहादुत्पन्नसंज्ञादशा
स्यादाधानदशाप्यथाष्टमभवात् क्षेमान्महाख्यादशा।
आसां चैव दशावसानसमये मृत्युं वदेत्प्राणिनां
दीर्घस्वल्पसमायुषां वधविपत्प्रत्यक्दशासु क्रमात्॥78॥

जन्म नक्षत्र से पाँचवें को जन्म नक्षत्र समझकर दशाक्रम विंशोत्तरी के अनुसार निर्धारित करें। यह **उत्पन्नदशा** है।

इसी तरह आठवें नक्षत्र से प्राप्त दशा **आधानदशा** है। चौथे नक्षत्र से प्राप्त दशा **महादशा** है। जन्मनक्षत्र से प्राप्त दशा **जन्मदशा** है। जिस साल में ये तीन चारों दशाएँ एक साथ समाप्त होती हों तो उस वर्ष में दशा विचार के बिना भी

मृत्यु सम्भव होती है।

अपि च दीर्घायु योगों में उत्पन्न लोगों को वधतारा दशा (सातवीं), मध्यायु योगोत्पन्न जातकों को प्रत्यरितारा दशा (पाँचवीं) व अल्पायु योगों में उत्पन्न लोगों की विपत्तारा दशा (तीसरी) प्रायः कष्ट या मृत्युप्रद होती है।

चर स्थिर दशा में मारक निश्चय

बलीशुक्रस्य शनिनो ग्राह्यं षष्ठाष्टमादिकम्।
द्वितीयद्यूननाथौ च ज्ञेयमेवोत्तरोत्तरम्॥79॥

चरस्थिरादि जैमिनीय दशाओं में राशियों की दशा होती है। उन दशा प्रकारों में मारक राशि दशा का निश्चय कैसे होगा, यह बताया जा रहा है।

1. शनि व शुक्र में से जो बली हो, उसकी अधिष्ठित राशि से 6.8 राशियाँ मारक होती हैं।
2. द्वितीयेश व सप्तमेश जिस राशि में हो, वह राशि भी मारक होती है।

लग्नसप्तमयोर्मध्ये बलवान् तद्विधीयते।
षष्ठाष्टमेशौ द्वौ मुख्यौ स्वव्ययेशोपलक्षणम्॥80॥

लग्न या सप्तम में जो बलवान् हो, उससे 6.8 भावों को देखें। इन भावों में पड़ने वाली राशियाँ भी मारक होती हैं।

द्वाभ्यां मध्येऽपि प्रायो हि रन्ध्रेशः खलु मारकः।
षष्ठे चेत्पापबाहुल्ये षष्ठेशो मुख्यमारकः॥81॥

पिछले श्लोक की विधि से षष्ठ व अष्टम भाव का निश्चय करके समझना चाहिए कि षष्ठ की अपेक्षा अष्टम राशि या इन षष्ठेश अष्टमेशों की अधिष्ठित राशि प्रबल मारक होती है।

यदि षष्ठ स्थान में कई पापग्रह हों तो षष्ठेश की अधिष्ठित राशि या षष्ठ राशि प्रबल मारक हो जाती है।

षष्ठस्य वा तदीशस्य त्रिकोणे संस्थितो ग्रहः।
तस्याश्रितस्वामिराशेर्दशायां निधनं भवेत्॥82॥

यदि षष्ठस्थान से 5.9 में कोई ग्रह हो तो उस ग्रह युक्त स्थान के स्वामी ग्रह की अधिष्ठित राशि में या ग्रह युक्त राशि में ही मृत्यु सम्भव होती है।

भावेषु शुभसंयोगाद् आयुर्वृद्धिः प्रजायते।
कदाचिद्रोगरूपेण बाधते मृत्युदा दशा॥83॥

जिन भावों में पूर्वोक्त मरणदशादायक ग्रह स्थित हों, वहीं पर शुभग्रहों से सम्बन्ध बनता हो तो प्रायः मृत्यु फल टल जाता है। अपि च कभी-कभी मरणप्रदा दशा में रोगादि पीड़ा या दुर्घटना ही होती है।

नवम सम्बन्धी दशा

शुभस्थाने सितः शुक्रः शुभग्रहसमन्वितः।
भाग्याधिपदशायां तु कुरुते भाग्यवर्धनम्॥84॥

यदि शुक्र केन्द्र त्रिकोणादि में बलवान् हो या शुभ राशि में हो, शुभ युक्त दृष्ट हो तो ऐसे शुक्र की अन्तर्दशा, जब नवमेश की महादशा में होगी तो भाग्य अधिक साथ देता है।

भाग्योदय कारक दशा

शुभेन येन सहितश्चतुर्थेशो जनौ नृणाम्।
तद्ग्रहस्य दशां यावत् भाग्यवर्धनमेधते।
सपापे तद्दशां यावत् तस्य भाग्यं विनिर्दिशेत्॥85॥

चतुर्थेश जिस शुभ ग्रह के साथ दृष्टि सम्बन्ध करे या युत हो, उस ग्रह की दशा के दौरान व्यक्ति का भाग्योदय हो जाता है। यदि चतुर्थेश का सम्बन्ध किसी पापफलदायी ग्रह के साथ हो तो उस साथ में स्थित ग्रह की दशा तक ही भाग्य साथ देता है। पश्चात् भाग्य की निर्बलता अनुभव की जाती है।

पितृमृत्युप्रदा दशा

त्रिकोणकेन्द्रगाः मातृपितृदेहाधिपा यदि।
तद्दशान्तर्दशाकाले पितुर्मात्रासमं मृतिः॥86॥

1.4.10 भावेश यदि त्रिकोण या केन्द्र में हों तो इनकी दशान्तर्दशा में कदाचित् माता-पिता की अव्यवहित मृत्यु हो जाती है। इसका समन्वय माता-पिता की दशादि से भी करना चाहिए।

राहुकेतू रविक्षेत्रे यैर्युतौ तेषु दुर्बलः।
तद्दशा प्रायशो नृणां पितृर्मृत्युप्रदा भवेत्॥87॥

सिंह राशि में राहु या केतु हो तो इनके साथ स्थित ग्रहों में से दुर्बल ग्रह की दशा में माता या पिता की मृत्यु हो जाती है।

पितृस्थानाधिपो राहुयुक्तः पितृर्मृतिप्रदः।
पितृस्थितः पितृपतिर्दिवसेशयुतो भवेत्॥88॥
तद्दशान्तर्दशाकाले पितुर्मृत्यु प्रजायते।

1. नवमेश यदि राहु युक्त हो तो दशमेश व राहु की परस्पर दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु हो जाती है।
2. नवम भावस्थित ग्रह या दशमेश यदि सूर्य से युक्त हो तो इनकी परस्पर दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

यो ग्रहः पितृपस्थाने सराहुर्वाऽथ केवलः॥89॥
राहौ समागते पूर्वं पितुर्मृत्युः प्रजायते॥
पितृस्थाने यदा राहुः पितृपो निजक्षेत्रगः॥90॥
तद्दशायां मृतिर्वाच्या तत्पितुर्होरिकोत्तमैः॥

नवमेश जिस स्थान में हो वहाँ साथ में राहु या कोई ग्रह हो तो उस नवमेश के साथ स्थित ग्रह व राहु की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है। इनमें से जिसकी अन्तर्दशा पहले आएगी उसी में मृत्यु सम्भव है।

नवम में राहु हो और दशमेश स्वक्षेत्री हो तो इनकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पंचमे नवमे सूर्यो वा भवेत्सूर्यनन्दनः॥91॥
दिनेशो बहुभिः पापैः संयुतो बलवर्जितः।
यस्तस्यदशाकाले पितृनाशो भवेदध्रुवम्॥92॥

जन्म समय में 5.9 भावों में सूर्य या शनि हो तो इनकी दशा भी पिता के लिए मारक होती है।

यदि सूर्य कई पापग्रहों से युक्त हो तो उनमें से निर्बल पाप ग्रह की दशा में पिता की मृत्यु हो जाती है।

दशम सम्बन्धी दशा

शुक्रेन्दुप्रविलोकिते गतबले लग्नाधिपे निर्धनो
भिक्षुः स्याद्यदि तुंगभांशकयुतस्तारापतिः पश्यति।
एकस्थैरवलोकिते तु बहुभिर्लग्नेश्वरे दीक्षित-
स्तद्योगप्रदभावकारकदशा भुक्तौ तदीयं फलम्॥93॥

1. यदि लग्नेश निर्बल हो और उसे शुक्र व चन्द्रमा देखे तो व्यक्ति निर्धन होता है।
2. यदि चन्द्रमा उच्चगत उच्च नवांश में हो तो उक्त योग में जातक संन्यासी, योगी होता है।
3. एक साथ एक राशि में स्थित कई ग्रहों से लग्नेश देखा जाता हो तो व्यक्ति दीक्षा प्राप्त कर संन्यासी होता है।

उक्त फल योग बनाने वाले ग्रहों की दशान्तर्दशा में होता है।

भाग्यराज्यपयोर्मध्ये सम्बन्धो योगदो मतः।
तद्दशान्तर्दशाकाले भाग्यं राज्यं च जायते॥94॥

नवमेश व दशमेश का कोई सम्बन्ध बनता हो तो इनकी परस्पर दशान्तर्दशा में भाग्य योग राजयोग पदोन्नति आदि फल होते हैं।

सामान्यतः दशमेश की दशा में कारक ग्रह त्रिकोणपति ग्रह, राजयोग कर

ग्रह की दशान्तर्दशा सदा योगप्रद होती है। इस सन्दर्भ में हमारी **लघुपाराशरी** का सावधानी पूर्वक अध्ययन व मनन करें।

लाभ सम्बन्धी दशा

लाभस्थानपतौ विलग्नभवनात् केन्द्रत्रिकोणस्थिते
लाभे पापसमन्विते तु धनवान् तुंगादिराश्यंशके।
तत्तत्कारकवर्गतो बलवशाद्योगानुसारं वदेत्
तत्तत्खेटदशापहारसमये वित्तं वदेद्धौरिकः॥95॥

1. लग्नेश यदि लग्न से त्रिकोण भावों में स्थित हो।
2. लाभ स्थान में पापग्रह अच्छी राशि में स्थित हो।

इन योगों में मनुष्य धनवान् होता है। अपि च लाभ योग बनने पर ग्रह के बलाबलानुसार उन ग्रहों की परस्पर दशान्तर्दशा में धनलाभ आदि उत्तम फल कहने चाहिएं।

द्वादश सम्बन्धी दशा

इष्टं व्ययं भवति शोभनवर्गयाते दुष्टं व्ययं विबलखेटयुतेक्षिते वा।
यत्कारकद्युचरवर्गजनादनर्थं जातः समेति बलहीनदशापहारे॥96॥

द्वादश भावेश यदि अधिक शुभ वर्गों में गया हो तो अच्छे व मनोनुकूल कामों में धन व्यय होता है। यदि द्वादश भाव में निर्बल ग्रह की दृष्टि या योग हो तो व्यर्थ व्यय होता है। ऐसी स्थिति में दृग्योग करने वाले ग्रह के कारकत्व के अनुसार व्यय की दिशा व्यय के मद निश्चय करने उचित हैं। उक्त व्ययादि फल निर्बल ग्रह की दशा भुक्ति में होता है।

द्वादश में पापग्रह हो तो भी अनष्टि चीजों में धन व्यय होता है।

भावेश दशाफल

लग्नेशस्य दशा बलं बहुधनं वित्तेशितुः पंचतां
कष्टं वेति सहोदरालयपतेः पापं फलं प्रायशः।
तुर्यस्वामिनिमन्दिरं किल सुताधीशस्य विद्यासुखं
रोगागारपतेररातिजभयं जायापतेः शोकताम्॥97॥

भावेशों के अनुसार सामान्यतः उनके दशाकाल में उन भावों का फल होता है। यहाँ संकेत मात्र बताया जा रहा है। इन फलों से पूर्वोक्त दशाफलों, योगफलों का बाध नहीं होता है। पूर्वोक्त नियम सदा लागू होंगे।

1. लग्नेश की दशा में प्रायः स्वास्थ्य सुख, धनागम, बल प्रताप में वृद्धि होती है।

2. द्वितीयेश की दशा में सम्भव होने पर मृत्यु या कष्ट होता है।
3. तृतीयेश की दशा सामान्यतः पाप फल देती है।
4. चतुर्थेश की दशा में मकान, जायदाद का सुख मिलता है।
5. पंचमेश की दशा में विद्याप्राप्ति या विद्या से सुख होता है।
6. षष्ठेश की दशा में शत्रुभय, रोगभय होता है।
7. सप्तमेश की दशा में शोकादि फल होते हैं।

मृत्युं मृत्युपतेः करोति नियतं धर्मेशितुः सक्रिया
चित्तं राज्यपतेर्नृपाश्रयमथो लाभं हि लाभेशितुः।
रोगं द्रव्यविनाशनं च बहुधा कष्टं व्ययेशस्य वै
पूर्वैरंगभृतामुदीरितमिदं तन्वादिभावेशजम्॥98॥

8. अष्टमेश की दशा में मृत्यु सम्भव होती है।
9. नवमेश की दशा में उत्तम कामों के प्रति आकर्षण होता है।
10. दशमेश की दशा में राज्यलाभ, राजाश्रय, पदवी आदि प्राप्त होती है।
11. लाभेश की दशा में लाभ होता है।
12. व्ययेश की दशा में रोग, धनहानि, कष्ट प्रायशः होता है।

ऐसा फल प्राचीनों ने भावेशानुसार कहा है।

कुछ अन्य नियम

करोति यद्भावगतः स्वपाके तद्भावजन्यमशुभं शुभं वा।
शुभं शुभव्योमचरस्य पाके पापस्य दाये त्वशुभं वदन्ति॥99॥

—जन्मकुण्डली में ग्रह जिस भाव में स्थित हो, उस भाव से सम्बन्धित फल भी अपनी दशा में करता है। वह फल शुभ या अशुभ कैसा होगा, यह पिछले सारे नियमों को विचार कर निश्चय करें।

—सामान्यतया शुभ फलदायक ग्रह अपनी दशा में शुभ फल व पापफलदायी ग्रह पाप फल करेगा।

सौम्यान्वितग्रहदशातिशुभप्रदा स्यात्पापान्वितस्य विफलं परिपाककाले।
मिश्रग्रहेण सहितस्य दशापहारे मिश्रं फलं भवति मिश्रबलान्वितस्य ॥100॥

—निसर्ग शुभ ग्रहों, शुभ फलदायी ग्रहों के साथ स्थित शुभ फलद ग्रहों की दशा बहुत शुभ फल देती है। ऐसी स्थिति में अशुभ फलद ग्रह की दशा में भी अशुभ फल औसत मान से ही होते हैं।

—पापयुक्त ग्रह जो स्वयं भी पाप फलद हो तो उसकी दशा में बहुत खराब फल मिलते हैं। अपि च शुभ फलद ग्रहों से युक्त पाप ग्रह की दशा में भी शुभ फल पूर्ण नहीं होते हैं।

—मिश्रित शील वाले ग्रह की दशा में मिले जुले फल होते हैं।

—मध्यम बली ग्रह की दशा में भी मिले जुले फल होते हैं।

तत्तद्भावाधीश्वरस्याधिशत्रुर्यो वा खेटो बिन्दुशून्यर्क्षयुक्तः।
तत्तत्पाके मूर्तिभावादिकानां नाशं ब्रूयादेवमाहुर्मुनीन्द्राः॥101॥

—प्रत्येक ग्रह अपनी दशा में उन भावों से सम्बन्धित पाप फल करेगा, जिन भावों के स्वामियों का वह शत्रु या अधिशत्रु है।

—जो ग्रह अपने अष्टकवर्ग में, अपनी अधिष्ठित राशि में 0 रेखा प्राप्त हो, वह भी अपनी दशा में उन भावों को खराब करेगा, जहाँ वह स्थित है या जिनका वह भावेश है।

बाधास्थानगतद्युतग्रहदशा शोकादि रोगप्रदा
तत्केन्द्रस्थदशापहारसमये दुःखं विदेशाटनम्।
अन्योन्याष्टमषष्ठगद्युचरयोः पाकापहारे भयं
देशत्यागमनर्थमिष्टशुभयोः सर्वं विमिश्रं वदेत्॥102॥

1. बाधास्थान अर्थात् मुख्यतः 6.8.12 तथा अन्य मत से 3.6.8. 12 में स्थित ग्रहों या इनके भावेशों के साथ स्थित ग्रहों की दशा प्रायः रोग व शोक देती है।
2. इन भावेशों से केन्द्रगत ग्रहों की दशान्तर्दशा में कष्ट व विदेश भ्रमण होता है।
3. महादशेश व अन्तर्दशेश परस्पर छठे आठवें हों तो भय होता है। देश त्याग की स्थिति और अनर्थ भी होते हैं।
4. यदि महादशेश व अन्तर्दशेश दोनों अन्य नियमों से शुभाशुभ मिश्रित फलदायक हों तो परस्पर 6.8 होने पर भी मिला जुला फल होता है।

यस्मिन्भावे तु योगः स्यात्तदधीशस्तु योगतः।
तत्पाके श्रियमाप्नोति इति शास्त्रार्थनिश्चयः॥103॥

राजयोगादि शुभ योग जिस भाव में बनते हों, उसी भावेश की महादशा में जब ऐसे योगकारक की अन्तर्दशा होगी जो महादशेश से सम्बन्ध रखता हो, तब उक्त योग के फल श्रीमन्तता, आदि प्राप्त होंगे।

अस्तोपगो खगो वापि राहुग्रस्तो यदा भवेत्।
तत्पाके भावनाशः स्यादिति सर्वत्र निश्चयः॥104॥

जो ग्रह अस्तंगत हो या जो ग्रह राहु के स्पष्ट अंशों के अति निकट हो तो उसकी दशान्तर्दशा में उस भाव के फल नष्ट हो जाते हैं, जिस भाव में अस्त या राहुग्रस्त ग्रह स्थित हो।

भावेशाक्रान्तराशीश उच्चस्थः शुभवीक्षितः।
तद्भावपस्य दाये तु राज्यं भवति निश्चितम्॥105॥

जिस ग्रह की अधिष्ठित राशि का स्वामी कहीं पर अपने उच्च में होकर शुभ दृष्ट हो, उस ग्रह (भावेश) की दशा में भाग्यवृद्धि व सुख सम्पत्ति होती हैं।

यदि अधिष्ठित राशीश नीचगत हो तो भाव हानि करेगा, यह बात स्वयं स्पष्ट है।

दुष्टभावपतिर्नूनं योगदैर्युक्तवीक्षितः।
तत्पाके श्रियमाप्नोति सर्वारिष्टविनाशनम्॥106॥

दुष्ट भावों (6.8.12) का स्वामी यदि शुभ स्थानों में योगकारक ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो दुष्टभावेश की दशा में सब अरिष्ट शान्त रहते हैं तथा श्रीवृद्धि होती है।

अन्यथा सिद्ध नियम से स्पष्ट है कि शुभभावेश भी यदि पापभावेशों, नीचादिगत ग्रहों से युक्त दृष्ट हो, शुभयोगी न हो तो उसकी दशा में कष्ट होते हैं।

संज्ञाध्याये यस्य यद्द्रव्यमुक्तं कर्माजीवे यश्च यस्योपदिष्टम्।
भावस्थानालोकयोगोद्भवं च तत्तत्सर्वं तस्य योज्यं दशायाम्॥107॥

बृहज्जातक के संज्ञाध्याय में जिस ग्रह का जैसा शील व पदार्थ कहे हैं और कर्माजीवाध्याय में जैसा फल जिस ग्रह का कहा है, वह सारा विचार, सम्बन्धित ग्रह की दशा में अवश्य करें।

दशाफल का समय

आदिदृक्के स्थिते खेटे दशारम्भे फलं वदेत्।
दशामध्ये फलं वाच्यं मध्यद्रेष्काणगे खगे॥108॥
अन्ते फलं तृतीयस्थे व्यस्तं खेटे च वक्रिणि।
शीर्षोदयगतः खेटः पाकादौ फलदो भवेत्॥109॥
पृष्ठोदये च पाकान्ते चोभयोदयगः सदा॥109॥

राशि के प्रथम द्रेष्काण में स्थित ग्रह का फल दशारम्भ (सम्पूर्ण दशाकाल का तिहाई) में, मध्यद्रेष्काणगत ग्रह का फल दशामध्य में व अन्तिम द्रेष्काणगत ग्रह का फल दशा के अन्त में होता है।

यदि ग्रह वक्री हो तो यह विधि विपरीत ढंग से लागू करें। अर्थात् अन्तिम द्रेष्काणगत ग्रह का फल दशारम्भ में, मध्यगत का मध्यम में व प्रथम द्रेष्काणगत का दशा के अन्त में फल होता है।

शीर्षोदय राशि में स्थित ग्रह का फल दशा के प्रारम्भिक अर्धभाग में, पृष्ठोदयगत का उत्तरार्ध में व उभयोदयगत का सारे दशाकाल में फल होता है।

पाकस्यादौ भावजन्यं खगानां तत्तद्राशिस्थानजं पाकमध्ये।
दायस्यान्ते दृष्टिसंजातमेवं सर्वे तारापाकभेदं वदन्ति॥110॥

सभी नक्षत्र आधारित दशाओं में दशा के शुरू में दशेश अन्तर्दशेश का भाव

सम्बन्धित फल, मध्य में राशि स्थिति का फल, अन्त में दृष्टिफल विशेषतया होता है।

बलवन्तो दशाधीशा दिशन्ति सकलं फलम्।
निर्बला नैव कुर्वन्ति मध्यं मध्यबला नृणाम्॥111॥

दशेश व अन्तर्दशेश सदा अपने बलानुसार ही दशाफल देते हैं। बली होने पर पूर्ण फल, निर्बल होने पर साधारण फल व मध्यबली होने पर मध्यम फल देते हैं।

॥इति श्रीदशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने भावदशाफलाध्यायो द्वितीयः॥
॥आदितः श्लोकाः 225॥

3

॥ ग्रहावस्थादशाध्यायः ॥

ग्रहावस्था से दशाफल

त्र्यंशदंशे त्रिभागं च कल्पयित्वा पृथक्पृथक्।
विषमादिक्रमेणैव समे वै विपरीतकम्॥1॥
विज्ञाय प्रथमं पुंसां जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिकाः।
विशेषेण परीक्ष्यैवं जागरः कार्यसाधकः ॥2॥
स्वप्नावस्था मध्यफला विज्ञेया मुनिसत्तम!।
निष्फला चरमावस्था फलमेवं हि कल्पितम्॥3॥

एक राशि के 30 अंशों में 10-10 अंशों के 3 विभाग कर लें। विषम राशि में 0-10 तक जाग्रत; 11-20 तक स्वप्न व 21-30 तक सुषुप्ति अवस्था होगी।

सम राशियों में 0-10 तक सुषुप्ति, 11-20 तक स्वप्न तथा 21-30 तक जाग्रत अवस्था रहेगी। इनमें से जाग्रत अवस्था बालग्रह कार्यसिद्धिदायक है। स्वप्नावस्था में मध्यम फल तथा सुषुप्ति अवस्था प्रायः निष्फल होती है।

अनुभव में आता है कि ये अवस्थाएँ नाम मात्र की हैं। इन्हें साधारण महत्त्व ही देना चाहिए। आगे बताई जा रही शयनादि व दीप्तादि अवस्थाएँ फलदायी हैं।

दीप्तादि अवस्थाफल

उच्चस्थः खेचरो दीप्तः स्वस्थः स्वे चातिमित्रभे।
मुदितो मित्रभे शान्तः समभे दीन उच्यते॥4॥
शत्रुभेदुःखसंयुक्तो विकलः पापसंयुतः।
खलः पराजितो ज्ञेयः कोपी स्यादर्कसंयुतः॥5॥

1. अपने उच्च में दीप्त 2. स्वक्षेत्र में स्वस्थ 3. अधिमित्र राशि में मुदित 4. मित्रराशि में शान्त 5. समक्षेत्र में दीन 6. शत्रु क्षेत्र में दुःखित 7. पापयुक्त होने पर विकल 8. पराजित ग्रह खल 9. सूर्य के साथ कोपी कुपित अवस्था होती है।

अवस्थानुसार दशाफल

दीप्त दशा फल

पाके प्रदीप्तस्य धराधिपत्यमुत्साहशौर्यं धनवाहनानि।
स्त्रीपुत्रलाभं शुभबन्धुपूजां क्षितीश्वरान्मानमुपैति विद्याम्॥6॥

दीप्तावस्थागत अर्थात् उच्चगत ग्रह की दशा में अपने परिवेष व वातावरण, कुलानुमान से राज्यलाभ, पदोन्नति, आर्थिक भौतिक उन्नति, उत्साहवृद्धि, शूरता, धन, वाहन, स्त्री पुत्रों का सुख, बन्धुओं में सम्मान, राजा से सम्मान व सम्भव होने पर विद्या प्राप्ति होती है।

स्वस्थ दशा फल

स्वस्थस्य खेटस्य दशाविपाके स्वास्थ्यं नृपाल्लाभधनादिसौख्यम्।
विद्यायशः प्रीतिमहत्त्वमाराद्दारार्थभूम्यादिजधर्ममेति॥7॥

स्वक्षेत्री ग्रह की दशा में शरीर सुख, राजपक्ष से लाभ, धन का सुख, विद्या व यश की वृद्धि लोक में महत्ता, लोकप्रियता, स्त्री पुत्र, धन व सम्पत्ति की प्राप्ति व सुख होता है।

मुदित दशा फल

मुदान्वितस्यापिदशाविपाके वस्त्रादिकं गन्धसुतार्थधैर्यम्।
पुराणधर्मश्रवणादिलाभं गजादियानाम्बरभूषणाप्तिम्॥8॥

अधिमित्रक्षेत्री ग्रह की दशा में वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, अच्छा रहन-सहन, स्त्री पुत्र व धन का सुख, मन में धीरता, उत्तम धार्मिक कार्यों में रति व सहयोग, गजादि वाहनों का सुख व अन्य भौतिक सुख होते हैं।

शान्त दशा फल

दशाविपाके सुखधर्ममेति शान्तस्य भूपुत्रकलत्रयानम्।
विद्याविनोदान्वितधर्मशास्त्रं बह्वर्थदेशाधिपपूज्यतां च॥9॥

मित्रक्षेत्री ग्रह की दशा में सुख-वृद्धि, धर्मवृद्धि, भूमि जायदाद का सुख, स्त्री सुख, वाहन सुख, विद्या के माध्यम से लाभ व प्रसिद्धि, धर्मशास्त्रों के फलों का लाभ, अनेक बड़े लोगों व राजाओं द्वारा मान-सम्मान प्राप्त होता है।

दीन दशा फल

स्थानच्युतिर्बन्धुविरोधिता च दीनस्य खेटस्य दशाविपाके।
जीवत्यसौ कुत्सितहीनवृत्त्या त्यक्तो जनैः रोगनिपीडितः स्यात्॥10॥

समक्षेत्री ग्रह की दशा में अपने पद या स्थान से परिवर्तन, तबादला, जगह छोड़ने के अवसर, बन्धुओं से विरोध, हीन निन्दित जीविका से जीवनयापन, लोगों द्वारा उपेक्षित व रोग से पीड़ा होती है।

दुःखित दशा फल

दुःखार्दितस्यापिदशाविपाके नानाविधं दुःखमुपैति नित्यम्।
विदेशगो बन्धुजनैर्विहीनश्चोराग्निभूपैर्भयमातनोति॥11॥

शत्रुक्षेत्री ग्रह की दशा में अनेक प्रकार के दुःख, विदेशवास, बन्धुओं द्वारा परित्याग, चोर, आग व राज्य के विभागों से निरन्तर भय होता है।

विकल दशा फल

वैकल्यखेटस्य दशाविपाके वैकल्यमायाति मनोविकारम्।
मित्रादिकानां मरणं विशेषात्स्त्रीपुत्रयानाम्बरचोरपीडाम्॥12॥

पापयुक्त ग्रह की दशा में मन में विकलता, शरीर कष्ट, बेहाली, मित्रों के पक्ष से शोक समाचार, विशेषतया स्त्री, पुत्र की हानि, वाहन व उपभोक्ता सामानों की चोरी का भय होता है।

खल दशा फल

दशाविपाके कलहं वियोगं खलस्य खेटस्य पितुर्वियोगम्।
शत्रोर्जनानां धनभूमिनाशमुपैति नित्यं स्वजनैश्च निन्दाम्॥13॥

पराजित ग्रह की दशा में कलह, वियोग, पिता से वियोग, शत्रुओं से पीड़ा, धन सम्पत्ति की हानि, अपने लोगों की बीच निन्दा होती है।

कुपित दशा फल

कोपान्वितस्यापि दशाविपाके पापाः समायान्ति बहुप्रकारैः।
विद्याधनस्त्रीसुतबन्धुनाशं पुत्रादिकृच्छ्रं त्वथ नेत्ररोगम्॥14॥

अस्तंगत ग्रह की दशा में बहुत सी परेशानियाँ लगातार आती जाती है। पापकर्मों का उदय होता है।

विद्या, स्त्री, धन, पुत्र सहयोगियों से वंचित होना पड़ता है। सन्तान को विशेष कष्ट होता है तथा नेत्ररोग होते हैं।

गर्वितादि अवस्थाएँ

तुंगस्थानगतो वापि त्रिकोणेऽपि भवोत्पुनः।
गर्वितः सोऽपिगदितो निर्विशंकं द्विजोत्तम!॥15॥
पुत्रगेहगतः खेटो राहुकेतुयुतोऽथवा।
रविमन्दकुजैर्युक्तो लज्जितो ग्रह उच्यते॥16॥

1. स्वोच्च या मूल त्रिकोण में ग्रह **गर्वित** होता है। 2. शनि की राशि में सूर्य तथा बुध की राशि में चन्द्रमा। 3. राहु केतु से युक्त ग्रह 4. सूर्य मंगल शनि से युक़्त ग्रह **लज्जित** कहलाता है।

शत्रुगेही शत्रुयुक्तो रिपुदृष्टो भवेद्यदा।
क्षुधितः स च विज्ञेयः शनियुक्तो यथा तथा॥17॥
जलराशौ स्थितः खेटः शत्रुणा चावलोकितः।
शुभग्रहा न पश्यन्ति तृषितः स उदाहृतः॥18॥
मित्रगेही मित्रयुक्तो मित्रेण च विलोकितः।
गुरुणा सहितो यश्च मुदितः पश्यन्ति सर्वथा॥19॥
रविणा सहितो यश्च पापाः पश्यन्ति सर्वथा।
क्षोभितं तं विजातीयाच्छत्रुणा यदि वीक्षितः॥20॥

1. शत्रुक्षेत्री, शत्रुयुक्त, शत्रुदृष्ट या शनि से युक्त ग्रह **क्षुधित** होता है।
2. कर्क वृश्चिक, मीन मकर उत्तरार्ध में स्थित ग्रह यदि शत्रुदृष्ट हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो **तृषित** अवस्था होती है।
3. मित्रक्षेत्री, मित्रयुक्त, मित्रदृष्ट या वृहस्पति के साथ स्थित ग्रह **मुदित** होता है।
4. सूर्य के साथ स्थित ग्रह को शत्रु ग्रह या पापग्रह देखें तो **क्षोभित** अवस्था होती है।

क्षुधितः क्षोभितो वापि यत्र तिष्ठति तं बलात्।
विनाशयति पुष्णाति मुदितो गर्वितो ग्रहः॥21॥
कर्मस्थाने स्थितो यस्य लज्जितस्तृषितोऽथवा।
क्षुधितः क्षोभितो वापि स नरो दुःखभाजनम्॥22॥

जिस भाव में क्षुधित, क्षोभित ग्रह स्थित हो, उस भाव सम्बन्धी फल को अपने बलानुसार वह ग्रह नष्ट कर देता है।

जहाँ मुदित व गर्वित ग्रह स्थित हो, उस भाव की वृद्धि होती है।

दशम स्थान से यदि लज्जित, तृषित, क्षुधित, क्षोभित कोई ग्रह स्थित हो और अन्य कोई शुभ या अच्छी अवस्था वाला ग्रह उसे न देखे तो बहुत दुःख मिलते हैं।

लज्जितः पुत्रभावस्थः पुत्रनाशकरो मतः।
क्षोभितस्तृषितो यस्य सप्तमे स्त्री न जीवति॥23॥

पंचम भाव में लज्जित ग्रह पुत्रनाशकारक होता है। क्षोभित व तृषित अवस्था वाला ग्रह सप्तम में हो तो स्त्री को विशेष कष्ट होता है।

गर्वित दशा फल

नवालयारामसुखं नृपत्वं कलापटुत्वं विदधाति पुंसाम्।
सदार्थलाभं व्यवहारवृद्धिं फलं विशेषादिह गर्वितस्य॥24॥

गर्वित ग्रह (उच्चगत या मूल त्रिकोणी) की दशा में नए स्थान, जायदाद के बनने के योग, उपवन, उद्यान या फार्म हाउस का सुख, राजयोग, कला योग्यता या कलाप्रेम, लगातार धन लाभ, व्यापार या व्यवसाय वृद्धि होती है।

मुदित दशा फल

भवति मुदित योगे वासशाला विशाला
विमलवसनभूषा भूमियोषासु सौख्यम्।
स्वजनजनविलासो भूमिपागारवासो
रिपुनिवहविनाशो बुद्धिविद्याप्रकाशः॥25॥

मित्रदृष्टयुक्त व मित्रक्षेत्री ग्रह की दशा में बड़े मकान में रहने का सुख, उत्तम वस्त्राभूषण पहनने के योग, जमीन जायदाद व परिवार का सुख, अपने लोगों के साथ भोग विलास के अवसर, राजकीय भवनों में रहने के योग, शत्रुओं का नाश तथा विद्या बुद्धि की प्रसिद्धि होती है।

लज्जित दशा फल

दिशति लज्जितभाववशाद्रतिं विगतराममतिं विमतिक्षयम्।
सुतगदागमनं गमनं वृथा कलिकथाभि रुचिं न रुचिं शुभे॥26॥

लज्जित अवस्थागत ग्रह अति भौतिक व ऐन्द्रिक सुखों की लालसा, नास्तिकता का उदय, विचार शक्ति की क्षीणता, पुत्र को रोग, वृथा यात्रा, विवाद झगड़ा निन्दा आदि में रुचि व शुभवार्ताओं से अरुचि होती है।

क्षोभित दशा फल

संक्षोभितस्यापि फलं विशेषाद् दरिद्रजातं कुमतिं च कष्टम्।
करोति वित्तक्षयमंघ्रिबाधां धनाप्तिबाधामवनीशकोपात्॥27॥

क्षोभित ग्रह की दशा में दरिद्रता, कुविचारों का आक्रमण, कष्ट, धनक्षय, पैरों में परेशानी, आमदनी में रुकावट, राजपक्ष का कोप, राजकोप से व्यापार में बाधा होती है।

क्षुधित दशा फल

क्षुधितखगदशायां शोकमोहादिपातः
परिजनपरितापादाधिभीत्या कृशत्वम् ।
कलिरपि रिपुलोकैरर्थबाधा नराणा-
मखिलबलविरोधो बुद्धिरोधो विषादात्॥28॥

शत्रुक्षेत्री या शनियुक्त ग्रह की दशा में शोक, मोह, पतन (दुर्घटना, अवनति आदि), परिवार में कष्ट के कारण मानसिक सन्ताप, मन व तन की दुर्बलता, शत्रुओं से विवाद, धन में बाधा, अपनी शक्ति की रुकावट तथा मनस्ताप से बुद्धि विभ्रम सम्भव होता है।

तृषित दशा फल

तृषितखगदशायामंगिनामंगमध्ये
भवति गदविकारो दुष्टकार्याधिकारः।
निजजनपरिवादादर्थहानिः कृशत्वं
खलकृतपरितापो मानहानिः सदैव॥29॥

तृषित ग्रह की दशा में स्वयं या पत्नी के शरीर में रोग विकार, दुष्टजनों द्वारा करने योग्य कार्य करने की मजबूरी, अपने लोगों में ही बदनामी, धनहानि, दुर्बलता, दुष्टों द्वारा बनाई गई योजनाओं से मानहानि होती है।

शयनादि अवस्था दशा

शयनं चोपवेशं च नेत्रपाणिः प्रकाशनम्।
गमनागमनं चाथ सभायां वसतिस्तथा॥30॥
आगमं भोजनं चैव नृत्यलिप्सा च कौतुकम्।
निद्रा ग्रहाणां चेष्टादि कथयामि तवाग्रतः॥31॥

1. शयन 2. उपवेशन 3. नेत्रपाणि 4. प्रकाशन 5. गमन 6. आगमन 7. सभावास 8. आगम 9. भोजन 10. नृत्यलिप्सा 11. कौतुक 12. निद्रा। ये शयनादि 12 अवस्थाएँ हैं। इनमें चेष्टा-विचेष्टा व दृष्टि के अनुसार विशेष फल होता है।

यह सारा प्रसंग मूल पुस्तक में न होने से हम अपने **बृहत्पाराशरहोरा शास्त्र** के संस्करण से दे रहे हैं।

अवस्था साधन

यस्मिनृक्षे भवेत्खेटस्तेन तं परिपूरयेत्।
पुनरंशेन सम्पूर्य स्वनक्षत्रं नियोजयेत्॥32॥

यातदण्डं तथा लग्नमेकीकृत्य सदा बुधः।
रविभिस्तु हरेद्भागं शेषं कार्ये नियोजयेत्॥33॥

1. ग्रह जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र की क्रमसंख्या × ग्रह संख्या (सूर्य 1, चन्द्र 2 इत्यादि) ग्रह की नवांश क्रम संख्या के गुणनफल में अपने जन्म नक्षत्र की संख्या जोड़ लें।
2. उक्त योगफल में जन्मेष्ट घटी व लग्नराशि भी जोड़ें। योगफल में 12 का भाग देने से शेष संख्या से क्रमानुसार शयानादि अवस्था जानें।

चन्द्रस्पष्ट 2.11.21 में चन्द्रमा आर्द्रा में है। अश्विनी से गिनने पर आर्द्रा संख्या 6 × चन्द्र संख्या 2 × चन्द्र नवांश संख्या 4 = 48 + जन्म नक्षत्र संख्या 6 जोड़ी तो 54 मिला।

अब 54 + जन्म लग्न संख्या + गत घड़ी 29 = 83 ÷ 12 = शेष 11 है। अतः ग्यारहवीं कौतुक अवस्था में चन्द्रमा है।

चेष्टादि साधन

नाक्षत्रिकदशारीत्यां पुनः पूरणमाचरेत्।
नामाद्यस्वरसंख्याढ्यं हर्तव्यं रविभिस्ततः॥34॥
रवौ पंच तथा देयाश्चन्द्रे दद्याद्द्वयं तथा।
कुजे द्वयं संयुक्तं बुधे त्रीणि नियोजयेत्॥35॥
गुरौ बाणाः प्रदेयाश्च त्रयं दद्याच्च भार्गवे।
शनौ त्रयमथोदेयं राहौ दद्याच्चतुष्टयम्॥36॥
त्रिभिर्भक्तं च शेषांकैः सा पुनस्त्रिविधा मता।
दृष्टिश्चेष्टाविचेष्टा च तत्फलं कथयाम्यहम्॥37॥

1. पूर्वोक्त शयनादि अवस्था के क्रम को, उसी संख्या से गुणा करें।
2. गुणनफल में व्यक्ति के प्रसिद्ध नाम का अंक जोड़ें। चक्र आगे दिया जा रहा है।
3. योगफल में 12 का भाग दें।
4. शेष में ग्रह का अंक (चक्रानुसार) जोड़ें।
5. योगफल में 3 का भाग दें।
6. शेष 1 हो तो दृष्टि, शेष 2 हो तो चेष्टा व शेष 0 हो तो विचेष्टा समझें।

इस दृष्टि आदि का फल नक्षत्र दशा में विशेषतया मिलता है।

॥अंक चक्र॥

नामाद्याक्षर अंक					ग्रह अंक	
1	2	3	4	5		
अ	इ	उ	ए	ओ	सूर्य	5
क	ख	ग	घ	च	चन्द्र	2
छ	ज	झ	ट	ठ	मंगल	2
ड	ढ	त	थ	द	बुध	3
ध	न	प	फ	ब	गुरु	5
भ	म	य	र	ल	शुक्र	3
व	श	ष	स	ह	शनि	3

पिछले उदाहरण में चन्द्रमा की कौतुकावस्था संख्या 11 × 11 = 121 + नामाद्यक्षर (दिवाकर) 5 = 126 ÷ 12 = शेष 6 + चन्द्रमा का अंक 2 = 8 ÷ 3 = शेष 2 है। दो शेष रहने से चेष्टा हुई। अतः अवस्था का जो भी फल है वह उसकी दशान्तर्दशा में विशेष व्यापक होगा।

दृष्टौ मध्यबलं ज्ञेयं चेष्टायां विपुलं फलम्।
विचेष्टायां फलं स्वल्पमेवं दृष्टिफलं विदुः॥38॥
शुभाशुभग्रहाणां च समीक्ष्या बलाबलम्।
तुंगस्थाने विशेषेण बलं ज्ञेयं तथा बुधैः॥39॥

दृष्टि में मध्यम फल। चेष्टा में व्यापक फल। विचेष्टा में कम फल होता है। सभी ग्रहों की शुभाशुभ फलदायकता व बलाबल को दृष्टि में रखकर फल कहें। यदि ग्रह अच्छी अवस्था में होता हुआ, उच्च भी हो तो महान फल मिलता है।

सूर्यावस्था दशाफल

1. शयनावस्था के सूर्य की दशा में पित्त, अपच, पैरों में दर्द या सूजन अथवा गुप्त रोग होता है।
2. उपवेशनावस्था की दशा में श्रमसाध्य कार्य करने के अवसर, दरिद्रता, दुःख व अधीनता होती है।
3. नेत्रपाणि सूर्य की दशा में, यदि सूर्य 5.9.7.10 में हो तो सब सुख मिलते हैं। उन्नति होती है। धन वृद्धि व मान्यता मिलती है। अन्य स्थानों में सूर्य हो तो क्रोध, द्वेषभाव व नेत्रदोष तथा जल के कारण उत्पन्न रोग होते हैं।
4. प्रकाशनावस्था में सूर्य दशा में पुण्य व धर्म का उदय, धनवृद्धि, योग, मान-सम्मान होते हैं। लेकिन 5.7 भावों में यह सूर्य हो

तो पहली सन्तान को कष्ट होता है।

5. गमनावस्था में सूर्य दशा में परदेशवास, पैरों में रोग पीड़ा होती है।
6. आगमनावस्था में सूर्य दशा में कंजूसी, दम्भवृद्धि, बड़बोलापन, परस्त्री में आकर्षण होता है। यदि ऐसा सूर्य 7.12 भावों में हो तो कम धन व सन्तान की हानि होती है।
7. सभावसति अवस्था दशा में धन, विद्या, मान-सम्मान बढ़ता है।
8. आगमावस्था सूर्यदशा में दुःख, सन्ताप लेकिन धन बढ़ता है।
9. भोजनावस्था सूर्य दशा में स्त्रीपुत्र व धन की हानि, जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द रहता है।
10. नृत्यलिप्सावस्था सूर्य की दशा में विद्वत्ता, धन-धर्म-वृद्धि लेकिन शरीर में दर्द रहता है।
11. कौतुकावस्था सूर्यदशा में पुत्र की अच्छी तरक्की या उत्तम पुत्र सुख, स्त्री सुख, दान प्रवृत्ति होती है। यदि 5.7 भाव में हो तो क्रमशः पुत्र व स्त्री के सुख की हानि होती है।
12. निद्रावस्था सूर्य दशा में सदा घर से बाहर रहने के योग, गुप्तांगों में रोग, बेहाली होती है।

चन्द्रावस्था दशा फल

1. शयनावस्था चन्द्र दशा में सर्दी से पीड़ा, काम वासना वृद्धि, धनहानि, शरीर में संक्रमण होता है।
2. उपवेशनावस्था चन्द्र दशा में रोग, निर्धनता, बुद्धि का विभ्रम, व्यर्थ के कार्यों में प्रवृत्ति होती है।
3. नेत्रपाणि अवस्थागत चन्द्र दशा में बड़ा रोग, अधिक बोलने से हानि कुकर्म प्रवृत्ति होती है।
4. प्रकाशनावस्था चन्द्र दशा में शरीरसुख, तीर्थयात्राएं, धनवृद्धि होती है।
5. गमनावस्था दशा में परदेशवास, धन में कमी, क्रूर कार्यों में प्रवृत्ति, नेत्ररोग, व्यर्थ का भय, शरीर में शूल रोग होता है।
6. आगमनावस्था में चन्द्र दशा में पैरों में कष्ट, मानवृद्धि मन में सन्तोष होता है।
7. सभावासावस्था चन्द्र दशा हो तो दान-धर्म-वृद्धि, राज-सम्मान, उत्तम सामाजिक स्तर होता है।
8. आगमावस्था में चन्द्र दशा हो तो धर्म-बुद्धि, धन-वृद्धि तथा

ऐसा चन्द्रमा कृष्ण पक्ष का हो तो कन्या सन्तान जन्म व पत्नी के अतिरिक्त स्त्री के प्रति आकर्षण होना सम्भावित है।

9. भोजनावस्था चन्द्र दशा में अति क्षीण चन्द्रमा रहित, चन्द्र होने पर, वाहन, स्त्री, पुत्र, धन, सम्मान होते हैं। अति क्षीण चन्द्र हो तो सर्पादि सरकने वाले, रेंगने वाले कीटों से भय होता है।
10. नृत्यलिप्सागत चन्द्रदशा में पुष्ट चन्द्र हो तो धन-मान, सुख-वृद्धि तथा अति क्षीण चन्द्र हो तो पैरों में कष्ट, रोग शोकादि होते हैं।
11. कौतुकावस्थागत चन्द्रदशा में धन, पुत्र, यश, प्रतिष्ठा बढ़ती है। यदि चन्द्र 9.10 भावगत हो तो यह फल विशेषतया होता है।
12. निद्रावस्था चन्द्र दशा में रोग, शोक, दुःख, कष्ट होते हैं। लेकिन 5.7 भावों में ऐसा चन्द्रमा हो तो कुल मिलाकर अन्त में भला ही होता है।

मंगल अवस्था दशा फल

1. शयनावस्था मंगलदशा में चोट, घाव दुर्घटना, अंग-भंग, त्वचारोग होते हैं। 5.7 भाव में ऐसा मंगल हो तो सन्तान व पत्नी को कष्ट होता है।
2. उपवेशनावस्था मंगल दशा में विवेकहीनता, पापकर्म में रति, विकलांगता होती है। 1.9.10 भावों में ऐसा मंगल हो तो उक्त फल विशेषतया समझें।
3. नेत्रपाणि अवस्था मंगल दशा में दरिद्रता, नेत्र दोष, अपमानित होता है।
4. प्रकाशनावस्था मंगल दशा में तुनकमिज़ाजी, धनवृद्धि, आँख में चोट, गिरने से चोट लगती है।
5. आगमावस्था मंगलदशा में मनुष्य घर से बाहर रहने वाला, दुःखी, त्वचा रोगी होता है। लग्नगत मंगल से यह फल विशेष समझना चाहिए।
6. गमनावस्था में स्त्री से कलह, चोट, गुप्तरोग होते हैं।
7. आगमावस्था मंगल दशा में सब सुख होते हैं।
8. सभावासावस्था मंगल दशा में धन-सम्पत्ति, गुण धर्म में वृद्धि होती है। लेकिन 5.9. भावों में हो तो भाग्यहीनता होती है।
9. नृत्यलिप्सा अवस्था मंगल की दशा हो तो राजपक्ष से धन-लाभ, धनसुख, जीवनसुख होता है। लेकिन यह मंगल द्वादश

में हो तो सन्तानहानि, कष्ट होता है। 8.9 भावों में हो तो अपमृत्यु भय होता है।

11. कौतुकावस्था मंगल की दशा हो तो मित्र, पुत्र, स्त्री का सुख, सम्पत्ति वृद्धि होती है। लेकिन यही मंगल 5.7.9 भावों में हो तो सब सुखों में कमी होती है।
12. निद्रावस्था मंगल दशा में धनहीनता, मार्गभ्रष्टता, अनेक दुःखों का सामना करना पड़ता है।

बुध अवस्था दशा फल

1. शयनावस्था बुध लग्नगत हो या स्वगृही हो तो उसकी दश में विकलांगता, पैरों में दोष, होता है।
2. उपवेशावस्था बुध की दशा में गुणवृद्धि, कविता-प्रेम, आचर की शुद्धि होती है। नेत्र रोग सम्भव है। लेकिन यह बुध पापयुक हो तो पापाचार में मति होती है।
3. नेत्रपाणि अवस्था बुध दशा में पैरों में रोग, याचना करने वाल सन्तान हानि होती है।
4. प्रकाशनावस्था बुध दशा में वेदार्थ का ज्ञान, शास्त्रों के अ का अर्जन, धनी होता है।
5. गमनावस्था में कार्यचतुर, स्त्री के वशीभूत होने के योग, दु स्त्री से सम्पर्क, दोनों में कष्ट होता है।
6. गमनावस्था में कार्य चतुर, स्त्री के वशीभूत होने के योग, दु स्त्री से सम्पर्क, दाँतों में कष्ट होता है।
7. सभावास बुध की दशा में धनवृद्धि, धर्मवृद्धि, पुण्यवृद्धि, समृ लेकिन लम्बे समय तक चलने वाले रोग की उत्पत्ति होती यह बुध 5.12 में हो तो कन्या सुख होता है। सप्तम में तो सभी सुख मिलते हैं। सप्तमस्थ बुध से दबंगता इस द में बढ़ती है; परन्तु शरीर की रंगत में सांवलेपन का उदय हो है।
8. आगमावस्था बुध दशा में नीच संग से धनागम, मूत्र-रोग, स्थानों में रोग होते हैं।
9. भोजनावस्था बुध दशा में धनहानि, वाद-विवाद, सिर में होता है।
10. नृत्यलिप्सा बुध दशा में धनी, विद्वान्, कवित्वशक्ति, स्वाभिम वृद्धि, प्रसन्नता, सुख आदि होते हैं। लेकिन पापराशि में

बुध हो तो वेश्या-संग भी होता है।

11. कौतुकावस्था बुध दशा में लोकप्रियता, त्वचादोष, गीत-संगीत से प्रेम होता है। लेकिन 5.10 भावों में हो तो सन्तान हानि। 7.8 में हो तो बाजारू स्त्री से रति भी होती है।
12. निद्रावस्था बुध दशा में धन, मान, निद्रा, आयु की हानि है। 1.10 भावों में यह बुध हो तो यह फल अधिक होता है।

वृहस्पति अवस्था दशा फल

1. शयनावस्था गुरु दशा में वाणी के दोष, भय के कारण उपस्थित होते हैं। 1.5.7.9.10 भावों में हो तो धन व विद्वत्ता बढ़ती है।
2. उपवेशावस्था गुरुदशा में दुःख, रोग, राजभय, शत्रुभय, पैर हाथ व मुख में घाव होते हैं। 2.12.3.11 भावों में हो तो सब सुख मिलते हैं।
3. नेत्रपाणि गुरु दशा में सिर में रोग, दर्द या चोट, कार्य की पग-पग पर हानि, नीच वर्ण के लोगों से सम्पर्क, उत्तम शोभायुक्त लक्ष्मी से हीन होता है।
4. प्रकाशावस्था गुरुदशा में धनवृद्धि, तेजो वृद्धि, उच्चगत हो तो राजयोग होता है। 1.10 भावों के अतिरिक्त स्थित हो तो उक्त फलों के साथ-साथ गुप्तांगों में रोग भी होते हैं।
5. प्रकाशावस्था गुरु दशा में धनवृद्धि, तेजोवृद्धि, उच्चगत हो तो राजयोग होता है। 1.10 भावों के अलावा स्थित हो तो निजी व्यवसाय होता है।
6. आगमनावस्था गुरु दशा में स्त्री पुत्र व धन का सुख अच्छा होता है।
7. सभावास गत गुरु दशा में राजकीय सेवा, धनप्राप्ति होती है, लेकिन 8.12 भाव में गुरु हो तो बड़ी हानि होती है।
8. आगमावस्था गुरु दशा में धार्मिकता, तीर्थयात्राएं या नई खोजपरक रचना, सन्तानसुख, सांसारिक सुख होते हैं।
9. भोजनावस्था गुरु दशा में अभक्ष्य भक्षण के प्रति रुचि होती है। धन व भोग विलास बढ़ते हैं। यदि ऐसा गुरु त्रिकोण स्थानों के बाहर हो तो साथ में कई प्रकार के रोग भी होते हैं।
10. नृत्यलिप्सावस्था गुरुदशा में केन्द्र त्रिकोणगत गुरु हो तो राजसम्मान, धन, विद्या सन्तानवृद्धि होती है अन्यत्र हो तो सब साधारण फल होते हैं।

11. कौतुकावस्था में गुरु दशा में धनी, कुलदीपक, पुत्र सुख, ऐश्वर्य होता है। यदि 7.8.12 में ऐसा गुरु हो तो उक्त फल नहीं होते हैं।
12. निद्रावस्था में काम करने में अनाड़ीपन, मूर्खता, धनहानि होती है। यदि 8.12 भाव में वृहस्पति हो तो धन अवश्य होता है।

शुक्र अवस्था दशा फल

1. शयानावस्था शुक्रदशा में क्रोध की अधिकता, धनहानि, दाँतों में रोग होते हैं। लेकिन 7.11 भाव में शुक्र हो तो सब सुख होते हैं।
2. उपवेशावस्था शुक्र दशा में धनवृद्धि, जोड़ों में परेशानी, शरीर में घाव, स्त्री पुत्रादि का सुख होता है।
3. नेत्रपाणि अवस्था शुक्र दशा में नेत्र दोष होता है। 7.10 से शुक्र हो तो नेत्रहानि भी होती है। ऐसे शुक्र की दशा में खजाना भी खाली हो जाता है।
   अन्य स्थानों में शुक्र हो तो बड़े घर का सुख तथा राजसेवा का भोग होता है।
4. प्रकाशनावस्था शुक्र दशा में धन, धर्म, वाहन, सम्पत्ति, पदवी, कविता-शक्ति का सुख होता है। 1.7.9.2 भावों के अतिरिक्त शुक्र हो तो रोग भी होते हैं।
5. गमनावस्था शुक्र दशा में माता को कष्ट होता है।
6. आगमनावस्था में शुक्र दशा हो तो पैरों में कष्ट, रोग, कलात्मकता की वृद्धि होती है।
7. सभावास शुक्रदशा में राज्यकृपा, धनवृद्धि, शरीर में मूत्र रोग होता है। यदि ऐसा शुक्र शत्रुयुक्त दृष्ट हो तो बड़ी हानि होती है।
8. आगम अवस्थागत शुक्र दशा में धननाश, भय, पुत्र शोक होता है। लेकिन 2.10.4.8 में ऐसा शुक्र हो तो उक्त फल नहीं होता है।
9. भोजनावस्था शुक्र दशा में पाचन सम्बन्धी दोष, व्यापार वृद्धि होती है।
10. नृत्यलिप्सा शुक्रदशा में नीच शुक्र न हो तो विद्वत्ता, मान, धन, विद्या, पदवी बढ़ती है।
11. कौतुकावस्था शुक्रदशा में नीच शुक्र न हो तो अनेक सुख, अनेक सफलताएं, व स्त्री की कृपा होती है।
12. निद्रावस्था में शुक्र दशा में परसेवा, परनिन्दा व हानि होती है।

शनि अवस्था दशा फल

1. शयनावस्था शनि दशा में भाग्य की कमजोरी, भूख-प्यास से परेशानी होती है।
2. उपवेशावस्था शनि दशा में पैरों में सूजन, त्वचा विकार, धनहानि व पीड़ा होती है।
3. नेत्रपाणि अवस्था शनि दशा में धन, धर्म, स्त्री, सुख, सम्पत्ति की वृद्धि, पित्त रोग, जल व अग्नि से भय होता है।
4. प्रकाशनावस्था शनि दशा में सभी शुभ फल होते हैं। 1.7 भाव में शनि हो तो सब कुछ नष्ट हो जाता है।
5. गमनावस्था में शनि दशा में धन, पुत्र व गुणों में वृद्धि होती है।
6. आगमनावस्था शनि दशा में रोग, शरीर में सूजन, दाँतों में पीड़ा, क्रोध की अधिकता होती है। किन्तु 9.10.12 स्थानों में ऐसा शनि हो तो सब उत्तम परिणाम ही रहते हैं।
7. सभावास शनि में धन-धान्य, सम्पत्ति वृद्धि, लेकिन शत्रु क्षेत्री व शत्रु दृष्ट शनि हो तो हानियाँ होती हैं।
8. आगमावस्था में शनि दशा में रोग, शोकादि वृद्धि होती है। लेकिन 2.3.5.7 भावों में यह शनि हो तो बहुत सुख होते हैं।
9. भोजनावस्था शनि दशा में मन्दाग्नि, रोग, नेत्र दोष होता है। यदि यह शनि स्वोच्च क्षेत्र में हो तो शुभ है।
10. नृत्यलिप्सावस्था शनि हो तो धन, कर्म, मान, सम्पदा, सुख, उत्साह, साहस, वृद्धि होती है। यदि ऐसा शनि पंचम में हो तो पुत्रों को कष्ट होता है।
11. कौतुकावस्था शनि दशा में शनि 5.7.9.10 भावों को छोड़कर स्थित हो तो सब प्रकार से उन्नति होती है।
12. निद्रावस्था शनि दशा में, शनि 5.9 भाव या उच्च, स्वक्षेत्र के अलावा स्थित हो तो पित्तरोग, नेत्ररोग, कार्यहानि, धन-धर्म हानि होती है। त्रिकोण, स्वक्षेत्रोच्च में हो तो सब उत्तम फल होते हैं।

राहु अवस्था दशा फल

1. शयनावस्था राहु 2.3.5.6 राशियों के अलावा राशि में हो तो सब तरह से कष्ट व दुःख ही होते हैं।
2. उपवेशावस्था में राहु दशा में त्वचारोग, सूजन, धनहानि व पीड़ा होती है।

3. नेत्रपाणि राहुदशा में त्वचारोग, सूजन, धनहानि व पीड़ा होती है।
4. प्रकाशनावस्था राहु दशा में सब भौतिक सुख मिलते हैं। लेकिन 4.5 राशियों में हो तो अंग कटने के योग भी होते हैं।
5. गमनावस्था राहु दशा में सन्तान-वृद्धि, धन-वृद्धि, पदोन्नति होती है।
6. आगमनावस्था में राहु दशा में धन व बुद्धि में कमी होती है।
7. सभावासावस्था में धन-धान्य व सुख वृद्धि तथा 1.5.10 भावों में हो तो स्त्री पुत्र के कष्ट होता है।
8. आगमावस्था राहु दशा में सभी तरह के दुःख व इष्ट जनों से विरोध होता है।
9. भोजनावस्था में राहु हो तो योजनाओं को क्रियान्वित करने से हिचक, पारिवारिक सुखों में कमी, पत्नी को कष्ट होता है।
10. नृत्यलिप्सा राहु दशा में लग्नगत होने से बड़े रोग की उत्पत्ति, अन्यत्र हो तो सब सुखों में वृद्धि होती है।
11. कौतुकावस्था राहु दशा में, राहु 5.7.10 स्थानों में हो तो धनसुख, सम्पत्ति सुख होता है। लेकिन शरीर में दर्द की शिकायत होती है। अन्य स्थानों में हो तो सब तरह के दुःख आते हैं। 4.3.6.2.12 राशियों में राहु हो तो दुःख नहीं होते हैं।
12. निद्रावस्था राहु दशा में रोग शोक के समाचार, बहुत धन, होता है। यदि 9.10 भावों में यह राहु हो तो दरिद्रता होती है।

केतु अवस्था दशा फल

1. शयनावस्था केतु दशा में यदि केतु 1.2.3.6 राशियों में हो तो सब तरह से धन समृद्धि तथा अन्य राशियों में हो तो रोग वृद्धि होती है।
2. उपवेशावस्था केतु दशा में वात रोग, त्वचा रोग होते हैं।
3. नेत्रपाणि केतु दशा में नेत्ररोग, शत्रुभय राजभय होता है।
4. प्रकाशनावस्था केतु में धन, धर्म व सुख वृद्धि होती है।
5. गमनावस्था में केतु हो तो पुत्रवान्, धनवान्, गुणवान् माननीय होता है।
6. आगमनावस्था केतु दशा में रोग, शोक, कष्ट होते हैं।
7. सभावास केतुदशा में गर्व वृद्धि, छल-कपट, ढोंग से आमदनी होती है।
8. आगमावस्था केतु दशा में रोग व शत्रु से भय तथा बन्धुजनों से विवाद होता है।

9. भोजनावस्था में दरिद्रता, याचकवृत्ति की अवस्था आती है।
10. नृत्यलिप्सा केतु दशा में स्वयं अपनी हानि करना तथा रोगपीड़ा होती है।
11. कौतुकावस्था केतु दशा में स्थानपरिवर्तन, धन की तंगी होती है।
12. निद्रावस्था केतु दशा में धन-धान्य का उत्तम सुख होता है।

दशा प्रवेश समय से तारतम्य

दशाप्रवेशेऽपि खगाः सलग्नाः कार्याः स्फुटास्तत्र दशापतिश्चेत्।
लग्नत्रिखायारिगतोऽथ लग्ने तन्मित्रवर्गे शुभदा दशा सा॥40॥

दशा प्रवेश का सूक्ष्म समय जानकर, उस समय की लग्न कुण्डली में दशापति 1.3.10.11.6 भावों में हो या कहीं शुभभाव, शुभराशि, बलवानूराशि, उत्तम वर्गों में हो तो उस दशा के पूर्वनिर्णीत शुभ फलों में वृद्धि तथा अशुभ फलों में कमी होती है।

मित्रोच्चोपचये त्रिकोणमदने पाकेश्वरस्य स्थित-
श्चन्द्रः सत्फलबोधनानि कुरुते पापानि चातोऽन्यथा॥41॥

दशाप्रवेश के समय महादशेश या अन्तर्दशेश से 1.5.9.7.3.6.10.11 भावों में चन्द्रमा हो तो दशा के शुभ फलों को बढ़ाता है। अथवा उस समय चन्द्रमा मित्र राशि, उच्चराशि स्वराशि में हो तो भी शुभ फल बढ़ते हैं।

दशाप्रवेशे खचरः स्वतुंगे मूलत्रिकोणे यदि वा स्वगेहे।
शुभेष्टवर्गस्थितिकृच्छुभेष्टैर्दृष्टो दशारिष्टहरो भवेत् सः॥42॥

दशा प्रवेश के समय दशेश या अन्तर्दशेश, स्वोच्च, स्वगृह, मूलत्रिकोण शुभवर्गों में, मित्रवर्गों में शुभ दृष्ट, शुभयुत हो तो दशा के अनिष्ट फलों को नहीं देता है।

दशाप्रवेशे सबलः शशांको दशाफलं शस्तमतीव जन्तोः।
अतोऽन्यथा चेद् विपरीतमार्यैरुदीरितं चन्द्रबलानुमानात्॥43॥

दशा प्रवेश के समय चन्द्रमा यदि बलवान् शुभक्षेत्री, शुभयुक्त-दृष्ट, पुष्ट बिम्ब वाला हो तो दशा के शुभ फल अधिक प्रकट होते हैं। अन्यथा स्थिति में अशुभ फलों में वृद्धि होती है।

दशा वाहन से फल

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि दशावाहनमुत्तमम्।
प्राणिनां च हितार्थाय कथयामि तवाग्रतः॥44॥
जन्मभाद् दिनभं यावद् गणनीयमनुक्रमात्।
नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं वाहनमुच्यते॥45॥

गर्दभो घोटको हस्ती महिषो जम्बुसिंहकौ।
काको हंसो मयूरश्च वाहनं नवधा मतम्॥46॥

अब दशा या अन्तर्दशा के वाहन से फल निश्चय करने की विधि कहता हूँ। अपने जन्म नक्षत्र से दशप्रवेश के दिन नक्षत्र तक गिन कर 9 से भाग दें। शेष वाहन होता है। 1. गर्दभ, 2. घोड़ा, 3. हाथी, 4. भैंसा, 5. गीदड़, 6. सिंह, 7. काक, 8. हंस, 9. मयूर। शेष संख्या से वाहन समझें।

खरे च कलहं विद्याद् अश्वे बुद्धिर्विदेशके।
गजे लाभं विजानीयात् महिषे व्याधिजं भयम्॥47॥
जम्बुके च भयं घोरं सिंहे च विजयं स्मृतम्।
काके चिन्ता मयूरे च सुखसम्पत्तयः सदा॥48॥
हंसे जयं विजानीयाद् यात्रा काले विशेषतः॥48॥

वाहनों का फल इस प्रकार है। 1. गर्दभ—कलह 2. अश्व—विदेशयात्रा 3. गज—लाभ 4. भैंसा—रोगभय 5. गीदड़—भय 6. सिंह—विजय 7. का—-चिन्ता 8. मयूर—सुखसम्पदा 9. हंस—शत्रुओं का पराभव। विस्तृत फल आगे बताया जा रहा है।

दशाप्रवेशे खरवाहने चेदुत्पन्नभोगी जडतासमेतः।
लज्जाविहीनो धनधान्यहीनः स्यान्मानवो वस्त्रविवर्जितश्च॥49॥

खर वाहन होने पर दशा में अतिरिक्त प्रयत्नों की कमी, जो जैसा स्वाभाविक गति से मिल जाए, उसी से सन्तुष्ट रहना, बुद्धि व मन में उत्साह की कमी, आलस्य, लज्जाहीनता, धन की कम बचत, साधारण जीवन स्तर रहता है अर्थात् कोई बड़ा परिवर्तन नहीं होता है।

चपल चंचलता बहुभक्षकः प्रकटबुद्धिसघोषचमूपतिः।
दृढतनुर्बहुकार्यकरो परो तुरगयोर्यदि वाहनसंस्थितिः॥50॥

अश्व वाहन होने पर खूब खाना-पीना, मन में प्रसन्नता, उत्साह, बुद्धि विचारों का कौशल, नेतृत्व शक्ति का उदय, मुख्यता, स्वस्थ शरीर, अनेक नए काम करने का उत्साह होता है।

नाना कार्यपरो हि मुख्य पदवी देवाधिपे वाहने
भूयाद् वै बहुतानता शुभगतिः सेनापतिः शोभनः।
सर्वः सौख्यकरः सुभूषणधरः स्याच्चंचलो दुष्टता
पाकोऽयं यदि वाहनो गजपतेर्नानाकलाकौशलः॥51॥

गज वाहन से अनेक कार्यों में व्यस्तता, मुख्यताप्राप्ति, बहुत वृद्धि व व्यापकता, शुभ मति व आचरण, सेनापतित्व या नरपतित्व, सुख प्राप्ति, उत्तम रहन-सहन, मन की चंचलता से थोड़े दोष व नाना कलाओं में कुशलता प्राप्त होती है।

महिषयोर्बलबुद्धिविहीनता जनिमतां प्रबलाग्निभयं भवेत्।
शकटयोः प्रबले बलसंयुतो महिषयोर्यदिवाहनता भवेत्॥52॥

भैंसा वाहन होने पर बुद्धिहीनता, अग्निभय, गाड़ी से दुर्घटना भय होता है।

जम्बुकोत्पन्नभोगी च लाभमक्षस्तथैव च।
श्वेतांगः श्वेतवस्त्रं च हानिः स्यात्क्रयविक्रये॥53॥

गीदड़ वाहन होने पर जो भी लाभ हो वह सब खर्च होता है, वचत नहीं होती है। साधारण वस्त्राभूषण होते हैं तथा क्रय-विक्रय में हानि होती है।

दशा प्रवेशे यदि वाहनं च सिंहो बलिष्ठो विविधैः प्रकारैः।
उत्पन्नभोगी रिपुनाशकारी स्याद्वाहने केसरिणो विशेषः॥54॥

सिंह वाहन होने पर बलवत्ता, शत्रुहानि, उत्तम सुख भोग होते हैं।

काके वाहनसंस्थिते यदि दशा स्याच्चंचलो निर्भयो
वासारो मलिनः कुवेषधरितो नीचैर्जनैः पूजितः।
स्थाने राजभयं तथारिपुभयं मानापमानं नरा
दुष्टार्तिः कलहं कुचेष्टितनरः स्त्रीद्वेषकारी भवेत्॥55॥

काक वाहन होने पर मन की चंचलता, मलिन वेष, निडरता, नीच जनों द्वारा सत्कार, राजभय, शत्रुभय, मान व अपमान, दुष्टों से कष्ट, कुचेष्टाओं के प्रति आकर्षण तथा स्त्री से द्वेष होता है।

जनकलानिधि केलि समन्वितो द्विजपतेर्बहुजात्यसुखान्वितः।
सदशने मतिना प्रबलायता सुकृतिता चतुरानन वाहनः॥56॥

हंस वाहन होने पर मनुष्यों का स्नेह, सौहार्द, सम्मान, बन्धु-बान्धवों का सुख, उत्तम खाना-पीना, सत्कर्म होते हैं।

मयूरवाहनतो बहुसौख्ययुक् धृतिकलाकुशलो मखकेलिकृत्।
मधुरवाक्ययुतो मधुरप्रियः सदसमेन नरस्य समन्वितः॥57॥

मयूर वाहन में बहुत सुख, धैर्य, धार्मिक कार्य, मीठे वचन, मीठा भोजन, उत्तम सज्जनों का साथ होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
ग्रहावस्थादशाध्यायस्तृतीयः॥
॥आदितः श्लोकाः 282॥

4
॥ सूर्यदशाफलाध्यायः ॥

महादशा का सामान्य फल

मानोर्दशायां हि विदेशवासो भवेत्कदाचिन्नु मानवानाम्।
भूवह्निभूपद्विजवर्यशस्त्रभैषज्यतोऽतीव धनागमः स्यात्॥1॥
मन्त्राभिचारेऽभिरुचिविचित्रा धात्रीपतेः सख्यविधिर्विशेषात्।
विख्यातकर्माभिरुचिर्मतिः स्यादनल्पजल्पाचरणेन चिन्ता॥2॥
व्ययश्च दन्तोदरनेत्रबाधा कान्तासुताभ्यां वियुतिश्च चिन्ता।
नृपाग्निचोराहितबन्धुवर्गैः स्वगोत्रजैर्वा प्रबलः कलिः स्यात्॥3॥

सूर्य की दशा में सामान्यतया विदेश में वास, जमीन, अग्नि, राजा, द्विजों से लाभ, शस्त्र या दवा से लाभ, मन्त्र प्रयोग में रुचि, राजा से मित्रता, प्रसिद्धि देने वाले कामों में कम मन लगना, अधिक बोलने से कभी चिन्ता, धन का खर्च, दाँत या पेट में बाधा, स्त्री पुत्र से वियोग सम्भव, राजा, अग्नि व चोर से भय तथा बन्धुओं से विवाद होता है।

परमोच्च सूर्य दशा

भानोर्दशायां परमोच्चगस्य भूम्यर्थदारात्मजकीर्तिशौर्यम्।
सम्माननं भूमिपतेः संचारविनोदगोष्ठीम्॥4॥

परमोच्चगत सूर्य की दशा में जमीन जायदाद का आगम, स्त्री-पुत्रों का सुख, धनलाभ, कीर्ति व यश में वृद्धि, शूरता दबंगता में वृद्धि, राजा से सम्मान, उत्तम मनोविनोदकारी सभागोष्ठियों में सहभागिता होती है।

उच्च सूर्य दशा

उच्चान्वितस्यापि रवेर्दशायां गोवृद्धिधान्यार्थपरिभ्रमं च।
संचारयुग्बन्धुजनैर्विरोधं देशाद्विदेशं चरति प्रकोपात्॥5॥

प्रचण्डवेश्यागमन क्षितीशादुपैति वृत्तिं रतिकेलिमानम्।
मृदंगभेरीरवयुक्तयानमन्योन्यवैरं लभते मनुष्यः॥6॥

उच्चराशि में सूर्य स्थित हो तो उसकी दशा में पशु धन, वाहन, सम्पदा, की वृद्धि, खूब यात्राएँ बन्धुओं से विरोध होता है।

किसी प्रचण्ड स्वभाव वाली स्त्री से टकराव, राजा की सेवा का अवसर, सांसारिक सुख, मानसहित यात्रा व वाहन सुख होते हैं। लेकिन व्यक्ति की उन्नति के कारण लोगों में डाह की वजह से निन्दा या वैरभाव भी सम्भव होता है।

आरोहिणी सूर्य दशा

आरोहिणी वासरनायकस्य दशा महत्त्वं कुरुतेऽतिसौख्यम्।
परोपकारं सुतदारभूमिं गोवाजिमातंगकृषिक्रियादीन्॥7॥

सूर्य की आरोहिणी दशा में अर्थात् उच्च की ओर बढ़ते सूर्य की दशा में महत्ता, सुख, परोपकार करने के अवसर, स्त्री पुत्र का सुख, जायदाद बनने के योग, हाथी घोड़े आदि वाहनों का सुख, कृषि आदि कार्यों से या अपने व्यवसाय से लाभ होता है।

अवरोहिणी सूर्य दशा

दशावरोहा दिननायकस्य कृषिक्रियावित्तगृहेष्टनाशम्।
चौराग्निपीडां कलहं विरोधं नरेशकोपं कुरुते विदेशम्॥8॥

अवरोहिणी सूर्यदशा में व्यवसाय में हानि, धन की कमी, इष्ट जनों या इष्ट बातों से कम फल मिलना, चोर या अग्नि से पीड़ा, बन्धुओं से कलह व विरोध, राजपक्ष से कोप तथा घर से बाहर निवास करने के योग अर्थात् अनावश्यक यात्राएँ होती हैं।

नीचगत सूर्य दशा

नीचस्थितस्यापि रवेर्विपाके मानार्थनाशं क्षितिपालकोपात्।
स्वबन्धुनाशं सुतमित्रदारैः पित्रादिकानामपकीर्तिमेति॥9॥

नीचगत सूर्य की दशा में मान में कमी, धन में कमी, राजकीय विभागों से परेशानी, बन्धुओं या सहायकों का असहयोग, स्त्री पुत्र मित्रों का कम सुख, माता-पिता का कम सुख तथा बदनामी होती है।

परम नीचगत सूर्य दशा

अत्यन्तनीचान्वितसूर्यदाये विपत्तिमाप्नोति गृहच्युतिं च।
विदेशयानं मरणं गुरूणां स्त्रीपुत्रगोभूमिकृषेर्विनाशम्॥10॥

परम नीचगत सूर्य की दशा में मनुष्य को विपत्तियाँ प्राप्त होती हैं। अपने स्थान, जायदाद या मकान से वंचित होना पड़ सकता है। विदेश जाना अर्थात् अपने स्थान का परिवर्तन, बुजुर्गों को विशेष कष्ट, स्त्री, पुत्र, वाहन, पशुधन, व्यवसाय आदि की हानि होती है।

मूलत्रिकोण सूर्य दशा

मूलत्रिकोणस्थरवेर्विपाके क्षेत्रार्थदारात्मजबन्धुसौख्यम्।
राजाश्रयं गोधनमित्रलाभं स्वस्थानयानादिकमेति राज्यम्॥11॥

मूल त्रिकोणी सूर्य की दशा में जायदाद, सम्पत्ति, नौकरी, धन, स्त्री, पुत्र व बन्धु-बान्धवों का सुख होता है। राजपक्ष से सहयोग मिलता है। नये मित्र बनते हैं तथा पुराने मित्र सहायक होते हैं। पशुधन या वाहन का सुख, राज्य सुख, पदवी सुख प्राप्त होता है।

स्वक्षेत्री सूर्य दशा

स्वक्षेत्रगस्यापि रवेर्दशायां स्वबन्धुसौख्यं कृषिवित्तकीर्तिम्।
विद्यायशः प्रार्थित राजपूजां स्वभूमिलाभं समुपैति विद्याम्॥12॥

स्वराशिगत सूर्य की दशा में बन्धु-बान्धवों मित्रों का सुख, धन, कीर्ति की प्राप्ति, व्यवसाय की सुचारुता, विद्या व यश के कारण राजकीय पुरुषों से सम्पर्क, अपनी जायदाद की प्राप्ति आदि सुफल होते हैं।

अधिमित्र सूर्य दशा

अत्यन्तमित्रर्क्षगतस्य भानोर्दशाविपाके त्वतिसौख्यमेति।
स्त्रीपुत्रधान्यार्थमनोविलासतटाकयानाम्बरभूषणानि॥13॥

अतिमित्र की राशि में स्थित सूर्य की दशा में बहुत सुख प्राप्त होते हैं। स्त्री-पुत्र, धन-धान्य की वृद्धि, मन में उत्साह व प्रसन्नता, वाहन, वस्त्र, भूषण तथा अनेक विलास सामग्री प्राप्त होती हैं।

मित्रराशिस्थ सूर्य दशा

स्वमित्रराशिस्थितसूर्यदाये स्वभृत्यमित्रात्मजराजपूजाम्।
स्वगेहवासं स्वजनस्य संगं पानादिभूषाम्बरताम्रलाभम्॥14॥

मित्रक्षेत्री सूर्य की दशा में नौकरों, सेवकों की वफादारी, मित्रों व पुत्रों का सुख, राजपक्ष से प्रशंसा, अपने घर में निवास, अपने लोगों का साथ, खान-पान व वस्त्राभूषण का सुख, तांबे से लाभ होता है।

समक्षेत्री सूर्य दशा

समर्क्षगस्यापि रवेर्दशायां समं जनैः स्यात्कृषिभूमिधान्यम्।
गोवाजियानाम्बरदेहसौख्यं स्त्रीपुत्रदोषं रणपीडितं स्यात्॥15॥

समक्षेत्री सूर्य की दशा में जनसमुदाय में मान्यता, कृषि-भूमि का लाभ या व्यवसाय वृद्धि, सम्पत्ति प्राप्ति, वाहनों, वस्त्रों व शरीर का सुख, स्त्री व पुत्र की त्रुटि से मनस्ताप और विवाद या युद्ध में कमजोरी का सामना करना पड़ता है।

शत्रुक्षेत्री सूर्य दशा

सपत्नराशिस्थितसूर्यदाये दुःखी परिभ्रष्ट सुतार्थदारः।
नृपाग्निचौरैर्विपदो विवादं पित्रोर्विरोधं च दशान्तमेति॥16॥

शत्रु क्षेत्री सूर्य की दशा में दुःख-वृद्धि, मान में कमी, धन में कमी, स्त्री पुत्र के सुख में कमी होती है। राजपक्ष में भय, अग्निभय, चोरभय, विपत्तियाँ, विवाद या कलह, माता-पिता द्वारा भी जातक का विरोध किया जाता है।

अधिशत्रु क्षेत्री सूर्य दशा

दशाविपाके त्वाधिशत्रुगस्य रवेः प्रणष्टार्थकलत्रपुत्रः।
गोमित्रपित्रादिशरीरकष्टं शत्रुत्वमायाति जनैः समन्तात्॥17॥

अधिशत्रु की राशि में स्थित सूर्य की दशा में धन, स्त्री, पुत्र के सुख में कमी, इनसे वियोग, वाहन बाधा, माता-पिता या तत्सदृश किसी व्यक्ति सहित मित्र जनों को कष्ट, अनेक लोगों से विरोध होने की सम्भावना रहती है।

उच्चग्रहयुक्त सूर्य दशा

उच्चान्वितस्यापि रवेर्दशायां मनोविलासं लभते स्ववृत्त्या।
तीर्थाभिषेकं हरिकीर्तनं च प्राकारकूपादिपुराणशास्त्रम्॥18॥

किसी अन्य उच्चगत ग्रह के साथ स्थित सूर्य की दशा में अपने व्यवसाय में मनोनुकूल लाभ, तीर्थ यात्राएँ, भगवत्कथा व धार्मिक अनुष्ठानादि में सहयोग, जनसुविधा के लिए बनाए जाने वाली चीजों से सहयोग, पुराणों का श्रवण-चिन्तन आदि होता है।

नीचग्रह युक्त सूर्यदशा

नीचान्वितस्यापि रवेर्दशायां नीचानुवृत्त्या कुनखी कुशीलः।
स्त्रीपुत्रधान्यार्थपशुक्रियादिमनोविकारं समुपैति देहम्॥19॥

नीचगत ग्रह से युक्त सूर्य की दशा में अपने स्तर से हटकर जीविका करने

का अवसर, नाखूनों में विकार, मनोविचारों की अशुद्धता, स्त्री व पुत्रों के कारण मन में क्षोभ, धन, पशु, वाहन के कारण असन्तोष, देह में विकार होते हैं।

शुभयुक्त सूर्य दशा

दिनाधिनाथस्य शुभान्वितस्य पाके सुखं भूमिधनादिवस्त्रम्।
इष्टैर्विलासं स्वजनैः समाजं कल्याणवाग्जालविनोदगोष्ठीम्॥20॥

शुभ ग्रह से युक्त सूर्य की दशा में सुख वृद्धि, भूमि प्राप्ति, धन लाभ, सांसारिक सुखों में वृद्धि, इष्ट मित्रों व परिजनों के साथ हँसी खुशी समय बिताना, मनोरंजनार्थ सभा, गोष्ठी, परिषद् आदि में सहभागी होने के योग होते हैं।

पापयुक्त सूर्य दशा

पापान्वितस्य द्युमणेर्विपाके नित्यं मनः क्लिश्यति हेयबुद्ध्या।
कुभोजनं कुत्सितवस्त्रपानकुशीलवृत्त्या त्वधनं कृशत्वम्॥21॥

पापयुक्त सूर्य की दशा में मन में सदा बेचैनी, विचारों में हीनता, साधारण भोजन व वस्त्रों की प्राप्ति, स्तर के प्रतिकूल जीविका, धन में कमी, तन-मन व इक्कबाल में कमी होती है।

शुभ दृष्ट सूर्य दशा

करोति भानुः शुभवीक्षितश्चेद् विद्यायशः स्त्रीसुतवाग्विलासम्।
कान्तिप्रतापं रतिकेलिसौख्यं पित्रोः सुखं भूपतिमाननं च॥22॥

शुभ ग्रहों से दृष्ट सूर्य की दशा में विद्या, यश की वृद्धि, स्त्री पुत्रादि परिवार का सुख, वाणी के प्रभाव से सफलता, शोभावृद्धि, रतिसुख, माता-पिता का सुख, राजपक्ष से प्रशंसा मान आदि होता है।

पाप दृष्ट सूर्य दशा

पापेक्षितस्यापि सहस्रभानोर्दशाविपाके परमं तु दुःखम्।
पित्रोर्विनाशः सुतदार कष्टं चौराग्निभूपालकृतं कृशत्वम्॥23॥

पापग्रह से दृष्ट सूर्य की दशा में बहुत दुःख प्राप्त होते हैं। माता-पिता को कष्ट, स्त्री पुत्र या परिवार जन को कष्ट, चोरों व अग्नि से हानि, राजकीय विभागों द्वारा हानि होती है।

उच्चनवांश गत सूर्य दशा

उच्चांशगस्य च दशा विदधाति वृत्तिं
नित्यं प्रतापजनितां महतीं श्रियं च।

नानाविनोदललितं रतिकेलिसौख्यं
स्त्रीवस्त्रलाभमनिशं पितृवर्गनाशम्॥24॥

उच्च नवांश गत सूर्य की दशा में मनुष्य का अपने कार्यक्षेत्र में रुतबा व प्रभाव बढ़ता है। मान सम्मान व लक्ष्मी की वृद्धि होती है।

अनेक प्रकार से प्रसन्नतादायक माहौल में समय बीतता है तथा स्त्री-पुत्रादि का सुख निरन्तर बना रहता है। लेकिन इस दशा काल में माता-पिता के स्तर के लोगों में से किसी का सुख नहीं रहता है।

नीच नवांशगत सूर्य दशा

नीचांशयुक्तस्य रवेर्दशायां भार्यार्थभूपुत्र विदेशयानम्।
त्यक्तो जनैर्बन्धुविकुत्सितस्तु मनोविकारं ज्वरमेहरोगम्॥25॥

नीच नवांशगत सूर्य की दशा में स्त्री पुत्रादि व सम्पत्ति के सुख में कमी, अनावश्यक यात्राएँ, स्वजनों का असहयोग, बन्धुओं द्वारा निन्दा, मन में उदासी व विकार, ज्वरपीड़ा, शरीर में मधुमेहादि रोग प्रकट होते हैं।

भावानुसार सूर्य दशा फल

लग्नान्वितस्यापि दिवाकरस्य दशाविपाके नृपदण्डदुःखम्।
स्थानच्युतिं बन्धुवियोगमेति भंगः कृषेर्वित्तपरिभ्रमं च॥26॥

लग्नगत सूर्य की दशा में (उच्च, स्वक्षेत्रादि के अतिरिक्त) राजकीय दण्ड, दुःख, स्थान परिवर्तन, बन्धुओं से वियोग, खड़ी फसल की हानि, धन का व्यर्थ व्यय या धन की कमी होती है।

पुत्रोत्पत्तिविपत्तिमत्रकुरुते भानोर्धनस्थस्य वा
क्लेशं बन्धुवियोगदुःखकलहं वाग्दूषणं क्रोधनम्।
स्त्रीनाशं धननाशनं नृपभयं भूपुत्रयानाम्बरं
सर्वं नाशमुपैति तत्र शुभयुक् वाच्यं न चैतत्फलम्॥27॥

द्वितीय भाव से हीनराशिगत सूर्य की दशा में पुत्र जन्म के सम्बन्ध में कष्ट, बन्धुओं से वियोग, क्लेश, दुःख, परिवार में कलह, जुबान के दोष से हानि, क्रोध की अधिकता, स्त्री वियोग, धनहानि, राजा से भय, जमीन जायदाद, पुत्र व भोगसामग्री की कमी होती है।

यदि ऐसा सूर्य शुभयुक्त हो तो इन फलों का प्राकट्य नहीं होता है।

भानोर्विक्रमयुक्तस्य दशा धैर्यं महत्सुखम्।
नृपसम्मानमर्थाप्तिं भ्रातृवैरं विपत्तथा॥28॥

तृतीयगत सूर्य की दशा में मन में धीरता, बहुत सुखों की प्राप्ति, राजा से मान, धन लाभ, भाइयों से कलह तथा भाइयों पर विपत्ति आती है।

सुखस्थितस्यापि रवेर्दशायां भोगार्थभूभृत्यकलत्रहानिम्।
क्षेत्रादिनाशं स्वपदच्युतिं वा यानच्युतिं चौरविषाग्निभीतिम्॥29॥

चतुर्थभावगत सूर्य की दशा में भोग सामग्री, भूमि, नौकर, कर्मचारी, स्त्री आदि की हानि होती है। मकान आदि का नुकसान, पदच्युति, वाहन से पतन, चोर, विष, अग्नि का भय होता है।

त्रिकोणसंयुक्तरवेर्विपाके बुद्धिभ्रमं राजविमाननं च।
सौख्यादिहानिं निधनं पितुश्च कर्मादिवैकल्यमुपैति काले॥30॥

5.9 भावों में स्थित सूर्य की दशा में बुद्धि विभ्रम, राजा या अधिकारी द्वारा भर्त्सना, सुख में कमी, पिता को विशेष कष्ट, सभी कामों में चुस्ती की कमी या कार्यसिद्धि में बाधाएँ आती हैं।

दशाविपाके धनहानिमेति षष्ठस्थभानोरतिदुःखजालम्।
गुल्मक्षयोद्भूतकलत्ररोगं मूत्रादिकृच्छ्रं त्वथवा प्रमेहम्॥31॥

षष्ठ भावगत सूर्य की दशा में बहुत-सी परेशानियाँ, धनहानि, क्षयरोग या भीतरी फोड़ा (गुल्म) ट्यूमर आदि से स्त्री को पीड़ा, स्वयं को मूत्ररोग या मधुमेह रोग होता है।

दारान्वितस्यापि रवेर्दशायां कलत्ररोगं त्वथवा मृत्तिं वा।
कुभोजनं कुत्सित पाकजातं क्षीरादिदध्याज्यविहीनमत्रम्॥32॥

सप्तमस्थ सूर्य की दशा में स्त्री को रोग या स्त्री की मृत्यु, खराब भोजन, रूखा सूखा खाना मिलता है। अर्थात् भोजन व्यवस्था डगमगाने के कारण भोजन का स्तर गिर जाता है।

रन्ध्रस्थभानोरपि वा दशायां देहस्य कष्टं त्वथवाग्निछिद्रम्।
चातुर्थिकं नेत्रविकारकासं ज्वरातिसारं स्वपदच्युतिं च॥33॥

अष्टम भाव गत सूर्य की दशा में शरीर में कष्ट, अग्निभय, बार-बार होने वाला बुखार, आँखों में दोष, खांसी, ज्वर व दस्तों से पीड़ा, अपने पद से हटाया जाना आदि फल होते हैं।

कर्मस्थितस्यापि रवेर्दशायां राज्यार्थलाभं समुपैति धैर्यम्।
उद्योगसिद्धिं यशसा समेतं जयं विवादे नृपमाननं च॥34॥

दशम भाव में स्थित सूर्य की दशा में राज्य प्राप्ति, धन लाभ, प्रयत्नों में सफलता, धैर्यवृद्धि यशोवृद्धि, विवाद में विजय, राजा से सहयोग या सम्मान मिलता है।

आयस्थितस्यापि दशाविपाके भानोर्धनाप्तिं शुभकर्मलाभम्।
उद्योगसिद्धिं सुतदारसौख्यं यानादिभूषाम्बरदेहसौख्यम्॥35॥

ग्यारहवें स्थान में स्थित सूर्य की दशा में धन लाभ, उत्तम कार्यों का सम्पादन, कार्य में सफलता, प्रयत्नों का सफल होना, स्त्री पुत्रादि का सुख, वाहन, भूषण,

वस्त्रादि का सुख व शरीर सुख होता है।

भानोर्द्वादशगस्य चेद्यदिदशा क्लेशार्थहानिकृशं
स्त्रीबन्ध्वात्मजभूमिनाशमथवा पित्रोर्विनाशं कलिम्।
स्थानात्स्थानपरिभ्रमं विषकृतं राज्ञो भयं पादरुक्
विद्यावादविनोदगोष्ठिकलहं गोवाजिसंपीडनम्॥36॥

द्वादश भावगत सूर्य की दशा में क्लेश, धनहानि के कारण मन में निर्बलता, स्त्री, पुत्र या बन्धुओं के सहयोग में कमी, जायदाद की हानि, माता-पिता को कष्ट, विवाद या कलह, जगह-जगह घूमने की मजबूरी, विष या राजा से भय, पैरों में कष्ट, सामान्य सभा गोष्ठी में कलह, वाहन व पशु धन की बाधा होती है।

स्थान बली सूर्य दशा

सूर्ये स्थानबलाधिके कृषिधनं गोभूमियानाम्बरं
सौख्यं राजसुमाननं परधनैः संयुज्यते कान्तिमान्।
तत्पाके शयनाम्बरादि लभते सर्वोपकारं महा
कीर्तिं भूषणमिष्टबन्धुसहितं तीर्थाभिषेकं महत्॥37॥

सूर्य का स्थान बल अधिक हो तो उसकी दशा में उत्तम उत्पादन, फसल या उत्तम व्यवसाय, धनवृद्धि, पशुधन वृद्धि, जायदाद वृद्धि वाहन व भौतिक सुखों की प्राप्ति, राज-सम्मान, दूसरों से धन की सहायता, शोभा-वृद्धि, महाकीर्ति, इष्ट मित्रों का सहयोग तीर्थयात्रादि फल होते हैं।

रविर्भवेत्स्थानबलेन हीनस्तत्पाककाले बलमर्थनाशम्।
स्थानच्युतिं बन्धुविरोधतापं देशाद्विदेशं समुपैति दुःखम्॥38॥

स्थान बल से हीन सूर्य की दशा में बल, सामर्थ्य व धन की हानि होती है। प्रायः स्थान परिवर्तन या पदच्युति के अवसर होते हैं। बन्धु-बान्धवों व इष्टजनों से विरोध तथा व्यर्थ भ्रमण के अनेक अवसर आते हैं।

दिग्बली सूर्य दशा

दिग्वीर्ययुक्ते दिवसेश्वरे तु दिगन्तराक्रान्तधनादिसौख्यम्।
तत्तद्दिशः प्राप्तयशोऽर्थभूमी नोचेत्तथा तादृशमत्र नास्ति॥39॥

दिग्बल से युक्त सूर्य की दशा में चारों दिशाओं से विभिन्न स्थानों से धन व सुख का आगमन होता है।

विविध स्रोतों से यश, जायदाद व धन की प्राप्ति होती है। यदि सूर्य दिग्बल से रहित हो तो उक्त फल नहीं होता है।

काल बली सूर्य दशा

तत्कालमानात्तनुते बलिष्ठे रवौ विपाके कृषिभूमिवित्तम्।
उद्योगसिद्धिं नृपमाननं च हीने रवौ कालबलेन नाशः॥40॥

कालबली सूर्य की दशा में मनुष्य को व्यवसाय या कृषि आदि में अच्छा लाभ, जायदाद वृद्धि, धन लाभ, परिश्रम की सफलता, राजा की ओर से सम्मान प्राप्त होता है।

यदि काल बल से हीन सूर्य हो तो उक्त वस्तुओं की हानि होती है।

चेष्टाबली सूर्य दशा

रवौ तु चेष्टाधिकवीर्ययुक्ते स्वचेष्टितार्थागममेति सौख्यम्।
नृपस्य मानं सुतदारसौख्यं कृष्यादियानानि च नास्ति हीने॥41॥

चेष्टाबली सूर्य की दशा में अपनी चेष्टाओं व प्रयत्नों का अच्छा फल, सुखप्राप्ति, राजपक्ष से मान, स्त्री पुत्रादि का सुख, व्यवसाय से लाभ, वाहन सुख आदि उत्तम फल होते हैं। आवश्यक मात्रा से कम चेष्टाबल हो तो उक्त सुख अनुपात से कम होते हैं।

निसर्गबली सूर्य दशा

निसर्गतः सर्वमुपैति काले रवौ तु नैसर्गिकवीर्ययुक्ते।
पानार्थभूषाम्बरदेहसौख्यं हीने रवौ चौरनृपाग्निभीतिः॥42॥

निसर्ग बली सूर्य की दशा में सारे दशा काल में प्रायः समान रूप से खान-पान का वैभव सुख व शरीर सुख होता है।

निसर्गहीनबली सूर्य की दशा में चोरों, अग्नि व राजपक्ष से भय होता है।

प्रश्न यह है कि कोई और बल तो परिस्थिति पर निर्भर करते हैं लेकिन निसर्ग बल तो सदा प्रत्येक अवस्था में होता ही है। तब निसर्ग बल से हीन सूर्य कैसे होगा? आशय यह है कि अन्य बल, विशेषतया चेष्टा व स्थान बल बहुत कम हों तो सूर्य की दशा में उक्त फल होंगे।

दृग्बली सूर्य दशा

रवौ खगानां दृग्वीर्ययुक्ते त्वचिन्तयित्वा सकलं हि सौख्यम्।
संजायते तत्परिपाककाले तेनैव हीने सकलं विनष्टम्॥43॥

अन्य बलों से हीन होकर भी सूर्य यदि कई ग्रहों से दृग्बल प्राप्त कर रहा हो तो उसकी दशा में सब तरह से सुख होते हैं। यदि अन्य बल न हों, साथ ही दृग्बल बल भी नहीं तो कुछ भी सुख नहीं होता है।

क्रूरषष्ट्यंशगत सूर्यदशा

क्रूरादिषष्ट्यंशगते दिनेशे स्थानच्युतिं वा नृपचौरभीतिम्।
कोपाधिकं तत्र शिरोरुजं च पित्रादि नाशस्त्वथवा तीदयः॥44॥

क्रूरषष्ट्यंश में स्थित सूर्य की दशा में स्थान परिवर्तन, तबादला, विभागीय दण्ड, राजपक्ष से भय, चोरों लुटेरों का भय, अधिक क्रोध, सिर में रोग, अपने या पिता के शरीर में विशेष बाधा पैदा होती है।

शुभषष्ट्यंशगत सूर्यदशा

मृद्वशं षष्ट्यंश रवेर्दशायां मृद्वन्नपानामबरभूषणाप्तिः।
नामद्वयं राजसु पूजितं च वेदान्तशस्त्रागमधर्मशास्त्रम्॥45॥

शुभ षष्ट्यंश में सूर्य हो तो उसकी दशा में उत्तम खान-पान, उत्तम वस्त्राभूषण, प्रसिद्धि, राजमान, आध्यात्मिक शास्त्रों व दर्शनों के प्रति लगाव पैदा होता है।

पारावताद्यंशगत सूर्य दशा

पारावताद्यंशगतस्य भानोर्दशाविपाके महती च कीर्तिः।
बन्धवर्थदेशाधिपमाननं च पुत्रादिसन्मित्रकलत्रलाभः॥46॥

पारावतादि अंश में स्थित सूर्य की दशा में बहुत यश, प्रसिद्धि, बन्धुओं व मित्रों की प्राप्ति, स्त्री पुत्र का सुख, धन लाभ तथा राजपक्ष से सम्मान प्राप्त होता है।

भुजंग द्रेष्काणगत सूर्य दशा

भुजंगमत्र्यंशगतस्य भानोर्दशाविपाकेऽहिभयं विषाद् वा।
नृपाग्निपातित्यमनेकदुःखं पाशादिमृत्त्यंशयुतस्य चैवम्॥47॥

भुजग द्रेष्काण युत सूर्य की दशा में सर्प या विष से भय होता है। पाशादि द्रेष्काण गत सूर्य की दशा में राजभय, राजदण्ड, पतितता, बहुत दुःख होते हैं।

उच्चराशि नीचनवांश गत सूर्य

स्वोच्चस्थोऽपि दिनेशो नीचांशे चेत्कलत्रधनहानिः।
स्वकुलजबन्धुविरोधः पित्रादीनां तथैव मुनिवाक्यम्॥48॥

सूर्य उच्चराशि में होकर भी नीच नवांश में हो तो स्त्री व धन की हानि होती है। अपने परिजनों से विरोध तथा पिता या तत्समकक्ष व्यक्ति से विरोध होता है।

नीचराशि उच्च नवांश सूर्य

उच्चांशकगते भानौ नीचस्थेऽपि महासुखम्।
करोति राज्यभारं च दशान्तेऽपि पदं कृशम्॥49॥

नीचगत सूर्य यदि उच्च नवांश में हो तो अपने दशा काल में सुख देता है। राजकीय या विभागीय कार्यभार बढ़ जाता है, लेकिन दशा के अन्त में कष्ट या मनस्ताप होता है।

स्वोच्चे नीचनवांशगस्य तरणेर्दायेऽपवादाद्भयं
पुत्रस्त्रीपितृवर्गबन्धुमरणं कृष्यादिवित्तक्षयम्।
नीचे तुंगनवांशगस्य च रवेः पाके नृपालश्रियं
सौख्यं याति दशावसानसमये वित्तक्षयं वा मृतिम्॥50॥

उच्चराशि गत होकर सूर्य नवांश में नीचे हो तो बदनामी, स्त्री, पुत्र, माता-पिता को कष्ट, व्यवसाय में हानि होती है।

नीचराशिगत सूर्य नवांश में उच्च हो तो राजा की ओर से जिम्मेदारियाँ व सुख होते हैं। लेकिन दशा के अन्त में धनहानि व कष्ट होते हैं। अथवा वे सब सुख अस्थायी सिद्ध होते हैं।

राश्यनुसार सूर्यदशा फल

दशा दिनेशस्य निजोच्चगस्य स्वधर्मकर्माभिरुचिं करोति।
तातार्जितद्रव्यगृहादिलाभं नानासुखानि प्रमदासुतेभ्यः॥51॥

परमोच्च में मेषराशि गत सूर्य की दशा में अपने कर्म में विशेष उत्साह व लग्न, पैतृक सम्पत्ति का सुख, विविध प्रकार के सुख अपने परिजनों से प्राप्त होते हैं।

उच्चाच्च्युतस्यातितरामरिष्टं चौराग्निरोगात्स्वजनैर्विरोधः।
रवेर्दशातीवचतुष्पदानां करोति हानिं ननु मानवानाम्॥52॥

मेषराशि में ही अन्तिम अंश (तीसवां) में स्थित सूर्य की दशा में विविध विपत्तियाँ, स्वजनों से विरोध, चौपाए धन की हानि होती है।

कान्तासुतानां कृषिवाहनानां प्रपीडनं स्यान्नयनाननेषु।
हृद्रोगबाधा बहुधा नराणां वृषाधिरूढस्य रवेर्दशायाम्॥53॥

वृष राशि गत सूर्य की दशा में स्त्री, पुत्र, वाहन, व्यवसाय सुख में तात्कालिक कमी आती है। चेहरे व आँखों में कष्ट, हृदय रोग की सम्भावना आदि फल होते हैं।

स्यान्मन्त्रशास्त्रोत्तमकाव्यकर्ता प्रीतिः पुराणे च भवेन्नराणाम्।
कृषिक्रियाधान्यधनैः सुखानि नृयुग्मसंस्थस्य रवेर्दशायाम्॥54॥

मिथुनगत सूर्य की दशा में मन्त्र शास्त्र में रुचि, काव्य में अभिरुचि, पुराणादि के प्रति आकर्षण व्यवसाय में वृद्धि, धन-धान्य का सुख होता है।

ख्यातिर्नृपप्रीतिरतीवनित्यं स्त्रीनिर्जितत्वं च महत्प्रकोपः।
सुहृज्जने नूनमनूनपीडा कर्काधिरूढस्य रवेर्दशायाम्॥55॥

कर्कगत सूर्य की दशा में राजा व उच्च अधिकारियों से सम्बन्ध, प्रसिद्धि, स्त्री के दबाव या अधीनता में काम करना, बहुत क्रोध, मित्रों को विशेष पीड़ा होती है।

दुर्गादरण्याच्च कृषिक्रियायां धनान्यनेकानि भवन्ति नूनम्।
स्यात्ख्यातिरुच्चैर्नृपगौरवं च कण्ठीरवस्यार्कदशाप्रवेशे॥56॥

सिंह राशि में स्थित सूर्य की दशा में जंगल या किले आदि से या खेती-बाड़ी से, आधुनिक सन्दर्भ में जंगली पदार्थों या प्राचीन भवनों के रख-रखाव, मरम्मत आदि से या कृषि उपज के व्यवसाय से खूब धन प्राप्त होता है। राजकीय गौरव, प्रसिद्धि भी मिलती है।

स्यात्कन्यकानां जननं च भानो देवद्विजानां मनुपूजनं च।
लब्धिः पशूनां च भवेद्दशायां कन्यागतस्याम्बुजबान्धवस्य॥57॥

कन्यागत सूर्य की दशा में कन्या का जन्म या कन्या का सुख, देवों व द्विजों का आदर सत्कार, चौपाए धन की प्राप्ति आदि अच्छे फल होते हैं।

क्षेत्रात्मजार्थप्रमदासुपीडा चौराग्निभीतिश्च विदेशयानम्।
नीचत्वमुच्चैः खलु मानवानां तुलाधरस्थस्य रवेर्दशायाम्॥58॥

तुलागत सूर्य की दशा में स्त्री-पुत्र को पीड़ा, सम्पत्ति सम्बन्धी परेशानी, चोर व अग्नि से भय, विदेश पलायन, अच्छे सम्मानित लोगों के बीच हीनता का भाव पैदा होता है।

नीचांशमुक्तस्य रवेर्दशायां सुखेन लाभः परवंचनं च।
जायानिमित्तोत्थितदुःखलब्धिर्नीचैर्भवेत्सख्यविधिनितान्तम्॥59॥

परम नीच से आगे बढ़े हुए लेकिन तुला राशि में ही स्थित सूर्य की दशा में लाभ होता रहता है। दूसरों के द्वारा धोखा खाए जाने के योग होते हैं। स्त्री के कारण दुःख तथा नीच लोगों से अधिक मित्रता होती है।

नीचर्क्षसंस्थस्य रवेर्दशायामुद्विग्नतादोषसमुद्भवः स्यात्।
षष्ठाश्रितस्य व्रणजन्यपीडा पित्रोश्च बाधा बहुधावगम्या॥60॥

केवल नीचराशि में स्थित सूर्य की दशा में उद्विग्नता के कारण हानि होती है। ऐसा सूर्य षष्ठ स्थान में हो तो घाव लगता है तथा प्रायः माता-पिता को कष्ट होता है।

तेजो विशेषाभियुतो नितान्तं विषाग्निशस्त्रैः परिपीडितश्च।
पित्रोर्जनन्यागतचित्तशुद्धिः स्याद् वृश्चिकस्थस्य रवेर्दशायाम्॥61॥

वृश्चिक गत सूर्य की दशा में तेजोवृद्धि, विष, अग्नि या शस्त्र से पीड़ा, माता-पिता के अति आदर में मानसिक कमी आदि फल होते हैं।

कलत्रपुत्रद्रविणादिसौख्यं स्याद्गौरवं राजकुलाद्द्विजेभ्यः।
संगीतशास्त्रागमसौख्यमुच्चैश्चापोपयातस्य रवेर्दशायाम्॥62॥

धनुर्गत सूर्य की दशा में स्त्री, पुत्र व धन का सुख होता है। राजकुल व द्विजातियों से मान प्राप्त होता है। संगीत-वाद्यादि मनोरंजक कृत्यों में मन रमता है तथा सांसारिक सुख प्राप्त होते हैं।

जायात्मजद्रव्यसुखाल्पता स्यादनल्पपीडामयतो नितान्तम्।
भवेत्पराधीनतयातिचिन्ता नक्रोपयातस्य रवेर्दशायम्॥63॥

मकर गत सूर्य की दशा में स्त्री, पुत्र व धन के सुख में कमी आती है। रोग से अधिक पीड़ा होती है। मानसिक दबाव के कारण बहुत चिन्ता होती है।

हृद्रोगबाधा सुतवित्तकान्ताचिन्ता परान्नादि सुखं न किंचित्।
शत्रूद्गमश्चाप्यतिदीनता स्याद् घटाधिरूढस्य रवेर्दशायाम्॥64॥

कुम्भगत सूर्य की दशा में हृदय में रोगादि के कारण बाधा, स्त्री-पुत्रादि व धन की चिन्ता, पराया अन्न खाने के योग, सुख में कमी, शत्रुओं की उत्पत्ति आदि कुफल होते हैं।

स्त्रीवित्तसौख्योपचयः प्रतिष्ठा ज्वरादिपीडा च सुतादिकानाम्।
वृथाटनत्वं ननु मानवानां मीने दिनेशस्य दशाफलं स्यात्॥65॥

मीनगत सूर्य की दशा में स्त्री, धन सुख, प्रतिष्ठा में वृद्धि, परिवार में साधारण रोगों की बहुलता, व्यर्थ भ्रमण आदि फल होते हैं।

सूर्य दशा का विशेष फल

स्वोच्चस्थितस्याष्टमभावगस्य दशा दिनेशस्य च दोषदा स्यात्।
षष्ठस्थितस्य व्रणजातपीडां करोति बाधां च पितुर्जनन्याः॥66॥

उच्चगत सूर्य यदि अष्टम भाव में हो तो मनुष्य को अपनी दशा में परेशानियाँ बाधाएँ व कष्ट देता है। उच्चगत सूर्य षष्ठस्थ हो तो शरीर पर चोट के निशान बनते हैं तथा माता-पिता को कष्ट होता है।

नीचस्थितस्याष्टमभावगस्य भानोर्दशारिष्टकरी नितान्तम्।
व्रणादिपीडां रिपुभावगस्य पित्रोश्च पीडा विविधावगम्या॥67॥

नीचगत सूर्य अष्टम में हो तो वह विशेष कष्टकारक होता है। यदि षष्ठस्थ हो तो अपनी दशा में दुर्घटना, चोट, माता-पिता से अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं।

सूर्योत्कृष्टदशा करोति सुतधीः प्रज्ञाधिकारोच्छ्रयाज्
ज्ञानार्थागमकीर्तिपौरुषसुखप्राप्तिर्नृपानुग्रहात् ।
भानोः पापदशा करोति विफलोद्योगार्थहान्यामयान्
राजक्षोभमहीशकोपजनकारिष्टाग्नि बाधोदयान्॥68॥

सामान्यतः अच्छे भाव व अच्छी राशि में स्थित, बलवान् सूर्य की दशा में

स्त्री, पुत्रों का सुख, बुद्धिबल से अधिकार प्राप्ति, उन्नति, ज्ञान-वृद्धि, धनागम, पुरुषार्थ परिश्रम की सफलता राजा का सहयोग प्राप्त होता है।

इसके विपरीत खराब भाव, खराब राशि व निर्बल सूर्य की दशा में परिश्रम की विफलता, धनहानि, रोगपीड़ा, राजपक्ष से कष्ट, विविध परेशानियाँ व बाधाएँ होती हैं।

ग्रहभाव योग से सूर्यफल

मूलत्रिकोणे स्वक्षेत्रे स्वोच्चे वा परमोच्चगे।
केन्द्रत्रिकोणलाभस्थे भाग्यकर्माधिपैर्युते॥69॥
सूर्ये बलसमायुक्ते रवौ वर्गे बलैर्युते।
तस्मिन्दाये महत्सौख्यं धनलाभाधिकं शुभम्॥70॥
अत्यन्तराजसन्मानमश्वान्दोलादिकं सुखम्।
सुताधिपसमायुक्ते पुत्रलाभं च विन्दति॥71॥

1. सूर्य, अपने उच्च, परमोच्च, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्र में होकर 1.4. 7.10.5.9.11 भावों में हो, नवमेश या दशमेश या दोनों से सम्बन्ध करता हो, स्वयं सूर्य बलवान् हो, वर्गों में शुभ हो तो उसकी दशा में अनपेक्षित सुख, धन लाभ व अन्य शुभ फल मिलते हैं। व्यक्ति को राजकीय सम्मान, वाहनों का सुख होता है।
2. बलवान्, वर्गशुद्ध, स्वक्षेत्री, मूलत्रिकोणी, उच्चगत सूर्य यदि पंचमेश के साथ सम्बन्ध करता हुआ केन्द्रत्रिकोण या लाभ में हो तो उसकी दशा में अन्य सुखों के साथ पुत्र का सुख भी होता है।

धनेशस्य च सम्बन्धे गजान्तैश्वर्यमादिशेत्।
वाहनाधिपसम्बन्धे वाहनत्रयलाभकृत्॥72॥
नृपालतुष्टिर्वित्ताढ्यः सेनाधीशः सुखी नरः।
वस्त्रवाहनलाभश्च भाग्यवृद्ध्यंगना सुखम्॥73॥

उक्त प्रकार से बलवान्, शुभक्षेत्री, शुभभावगत सूर्य यदि धनेश से सम्बन्ध करता हो तो उसके दशाकाल में गजान्त ऐश्वर्य मिलता है। अर्थात् हाथी पालने की क्षमता वाली आर्थिक स्थिति होती है। साथ ही राजा की प्रसन्नता, व्यापक जनसमर्थन, नेतृत्त्व, सभी सुख, उत्तम रहन-सहन, भाग्य-वृद्धि व स्त्री-सुख होता है।

नीचे षडष्टके रिःफे दुर्बले पापसंयुते।
राहुकेतुसमायुक्ते दुःस्थानाधिपसंयुते॥74॥
तस्मिन्दाये महापीडा धनधान्यविनाशनम्।
राजकोपः प्रवासश्च राजदण्डं धनक्षयम्॥75॥
ज्वरपीडायशोहानिर्बन्धुमित्रविरोधकृत्।
प्रवासो रोगविद्वेषो ह्यपमृत्युभयं भवेत्॥76॥

चौराहिव्रणभीतिश्च ज्वरबाधा भविष्यति।
पितृक्षयभयं चैव गृहे त्वशुभमेव च॥77॥

यदि सूर्य नीचगत, दुर्बल, पापयुक्त, विशेषतया राहुकेतु से युक्त होकर या 6. 8.12 भावेश से युक्त होकर 6. 8. 12 में स्थित हो, तो उसकी दशा में बहुत सारे कष्ट, धन-धान्य की हानि, राजा का प्रकोप, गृहत्याग की स्थिति, अर्थात् मुँह छुपाने की नौबत, राजदण्ड, धनहानि, ज्वरपीड़ा, यशोहानि, मित्रों व बन्धुओं से विरोध, रोग, विवाद व शत्रुता, अपमृत्यु का भय होता है। अपि च चोरों, सर्पों आदि से भय, शरीर में रोग, माता-पिता की मृत्यु या सुख हानि के योग, घर में शोक होता है।

पितृवर्गे मनस्तापः जनद्वेषं च विन्दति।
शुभदृग्योगगे सूर्ये मध्ये मध्ये क्वचित्सुखम्॥78॥
पापग्रहेण संदृष्टे सर्वं पापफलं वदेत्॥

अपि च पितृतुल्य लोगों में मानसिक सन्ताप, लोगों के साथ वैरभाव होता है।

उस प्रकार का सूर्य यदि शुभ ग्रह से दृष्ट भी हो तो बीच-बीच में थोड़ा-थोड़ा सुख भी मिलता रहता है। यदि उक्त दोषों के साथ पाप ग्रह से दृष्ट भी हो तो पूर्वोक्त सारा अशुभ फल होता है।

स्वोच्चादिजन्यफलमाहुरादौ पश्चात्फलं खेचररिष्टजन्यम्।
मध्ये फलं स्थानभवं तथैव पापग्रहाणामिह योजयन्ति॥79॥

पाप ग्रह की दशा के विषय में सामान्य नियम बताया जा रहा है। सभी पाप ग्रह दशा के पहले विभाग में उच्चादि राशि जनित फल देते हैं। मध्य विभाग में स्थानोत्पन्न फल देते हैं तथा अन्तिम विभाग में अन्य ग्रह योगों से उत्पन्न फल विशेषतया देते हैं।

पूर्वं भवेत्सूर्यदशाप्रवेशः पित्रोश्च बाधा विविधा तदानीम्।
लग्नाद्दशा क्लेशविशेषदात्री नक्षत्रनाथस्य दशातिशस्ता॥80॥

1. सूर्य की ही दशा में जन्म हो तो उस दशा में माता-पिता को विशेष कष्ट होते हैं।
2. यदि आयुर्दशविधि में लग्न के तुरन्त बाद सूर्य की दशा आए तो विशेष कष्ट देती है।
3. प्रत्येक अवस्था में लग्नगत नक्षत्र की दशा अति प्रशस्त होती है। अर्थात् लग्नगत नक्षत्र का जो विंशोत्तरी दशेश हो, उसकी दशा अति शुभ होती है।

इति श्रीदशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृतहिन्दीव्याख्याने सूर्यदशा फलाध्यायश्चतुर्थः॥4॥

॥आदितः श्लोका 362॥

5
॥ चन्द्रदशाफलाध्यायः ॥

चन्द्रदशाफल : विविध सन्दर्भ

हिमकिरणदशायां मन्त्रदेवद्विजाप्तिर्युवतिजनविभूतिस्त्रीधनक्षेत्रसिद्धिः।
कुसुमवसनभूषागन्धनानाधनाढ्यो भवति बलविरोधे चार्थहा वातरोगी॥1॥

जातक पारिजात में कहा गया है कि बलवान्, पक्षबली, सत्स्थानगत चन्द्रमा की दशा में सामान्यतः बुद्धि की विमलता, मन में उत्साह, उत्तम लोगों से मित्रता, लायक स्त्री का सहयोग, मन्त्रसिद्धि या योजना का कार्यान्वियन, ऐश्वर्य, स्त्री के सहयोग से धन लाभ, जायदाद सम्बन्धी कार्यों में सफलता, उत्तम वस्त्राभूषण, धनवृद्धि होती है।

यदि चन्द्रमा हीनबली या अनिष्ट स्थानों में हो तो धनहानि व वातरोग से पीड़ा होती है।

राज्याभिषेकवरवाहनछत्रयानक्षेमप्रतापबलवीर्यसुखान्वितश्च ।
मिष्टान्नपानशयनासनभोजनानि चन्द्रो ददाति वरकांचनभूमिलाभम्॥2॥

चन्द्राभरण जातक में बताया गया है कि चन्द्र दशा में राज्यप्राप्ति, अधिकार प्राप्ति, उत्तम वाहन, कुशलता, प्रताप व बल में वृद्धि, सुख प्राप्ति, उत्तम रुचि कर भोजन, सुख निद्रा, धन सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

सौख्यं विभूतिं सुतराज्यलाभं कान्तिं प्रतापं ननु वीर्यवृद्धिम्।
मिष्टान्नपानानि सुखागमं च चान्द्रीदशा यच्छति मंगलानि॥3॥

वहीं पर कहा गया है कि चन्द्रमा की दशा में सुख, ऐश्वर्य, पुत्रसुख, राज्य लाभ, शोभा वृद्धि, प्रताप वृद्धि, सुखपूर्वक भोजन व मंगल होता है।

शम्भु होरा प्रकाश : विशेष मत

द्विजाधिपे प्राप्तबलाधिरूढे द्विजेश्वराद्रोहगता ग्रहेन्द्राः।
असत्फलास्ते शुभमेव दद्युस्त्वेवं रवेः शीतकरो यथैव॥4॥

यदि चन्द्रमा बलवान् हो तथा अन्य ग्रह उस बली चन्द्रमा के साथ हों या

थोड़ा आगे बढ़ गए हों तो अन्यथा अशुभ फलदायक दिखने पर, अन्य ग्रहों की अशुभता में कमी हो जाती है।

इसी तरह सूर्य से आगे निकला हुआ चन्द्रमा, अर्थात् पक्ष बल में बढ़ता हुआ चन्द्रमा भी अपनी अशुभता को क्रमशः कम करता जाता है।

आदित्यशीतद्युतियोगकाले मन्त्री भवेद्भूपसमोऽतिमानी।
भूदेववृन्दारकमन्त्रमुख्यैर्धनी कलाज्ञो विभवैः समेतः॥5॥

उत्तम भावों व अच्छी राशियों में सूर्य चन्द्रमा साथ हों और पक्ष बल के अलावा चन्द्रमा को बल प्राप्त हो तो ऐसे चन्द्रमा की दशा में व्यक्ति को अधिकार प्राप्त होते हैं। वह व्यक्ति राजा के समान हो जाता है। देवों, द्विजों की कृपा प्राप्त होती है। धन वृद्धि, कलाओं में अभिरुचि व वैभव होता है।

आरोहत्रितययुतादशा हिमांशोः सर्वार्थोपचयकरी तु सम्प्रदिष्टा।
मर्त्यानां सकलजनेषु मानदात्री भूपालाद्युवतिजनाच्च वित्तकर्मी॥6॥

यदि चन्द्रमा तीन प्रकार के आरोह युक्त हो तो उसकी दशा में सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं, सर्वत्र सफलता, जन समुदाय में मान-सम्मान, स्त्री व राजा के सहयोग से धनादि का लाभ होता है।

1. चन्द्रमा अपनी उच्च राशि की ओर बढ़ रहा हो, यह प्रथम आरोह है।
2. चन्द्र कलाएँ बढ़ती हुई हों अर्थात् शुक्ल पक्ष का बढ़ता चन्द्र हो, यह द्वितीय आरोह है।
3. स्थान, दिक्, काल, चेष्टा बल अच्छी मात्रा में प्राप्त हुआ हो, यह तीसरा आरोह है।

कुमुदानन्दकरस्य पाककाले सन्मानं विमलं भवेन्नराणाम्।
मन्त्रित्वं धरणिपतेः प्रसन्नता च भूदेवादितितनयार्चनप्रवृत्तिः॥7॥

बलवान् चन्द्रमा की दशा में सम्मान, मन्त्रीपद, राजा की प्रसन्नता, देवों की भक्ति का उदय होता है।

सद्गन्धैश्च तिलैः फलैः प्रसूनैर्यद्वाभूमिरुहैर्धनोपलब्धिः।
सद्धर्मश्च जलाश्रयादिकर्ता सन्मन्त्रागमशास्त्रविद्विनीतः॥8॥

शुभ फलद चन्द्रमा की दशा में खुशबूदार पदार्थ, तिल, फल फूल या वनस्पति के व्यवसाय से धनार्जन होता है। इस दशा में धार्मिक भाव का उदय, पेय जलादि की व्यवस्था करके जनोपकार की भावना का उदय, उत्तम विचार व योजनाएँ, शास्त्रों के अर्थों का खुलासा व विनय भाव होता है।

संचालनत्वमितस्ततो मृदुत्वं संजननत्वमिहापि कन्यकानाम्।
स्यात्कृष्यादिकृतिः परोपकर्ता निद्रालस्य कफान्वितोऽनिलात्मा॥9॥

मध्यम बली चन्द्रमा की दशा में विचारों व मनोभावों की चंचलता, मन में

अज्ञात भय या अकारण संकोच, कन्या का जन्म, कृषि व्यवसाय, परोपकार होता है। लेकिन कफ वृद्धि, वायुवृद्धि नींद व आलस्य अधिक होता है।

क्रौर्यंत्वच्छिरोरुजं च जाड्यं नूनं स्वीयजनैः कलिर्नितान्तम्।
सत्कार्ये न मनःस्थितिः कदाचित्सामान्याच्च पुरातनैः प्रणीतम्॥10॥

तीन बली, अशुभस्थानगत चन्द्रमा की दशा में निर्दयता, त्वचा व सिर में रोग, बुद्धि की जड़ता, अपने लोगों से कलह, सत्कार्य से मन का दूर भागना आदि फल प्राचीनों ने सामान्यतः कहे हैं।

जातकाभरण का मत

आरोहिणी चन्द्रदशा नराणां सर्वार्थसिद्धयै कथिता विशेषात्।
तथावरोहा कुरुते विलम्बं सर्वेषु कार्येषु च बुद्धिमान्द्यम्॥11॥

आरोह बली चन्द्रमा की दशा में मनुष्य की सभी योजनाएँ व इच्छाएँ सफल होती हैं। इसके विपरीत अवरोहिणी चन्द्र दशा में सभी कार्यों में देरी तथा निर्णय क्षमता की कमी, बुद्धि का विपर्यय होता है।

नक्षत्रनाथस्य दशाप्रवेशे भवेन्नराणां महती प्रतिष्ठा।
मन्त्रित्वमुच्चैर्नृपतेः प्रसादो भूदेवदेवार्चनता प्रवृत्तिः॥12॥

यदि चन्द्रमा का विंशोत्तरी नक्षत्र लग्न में हो या स्वयं चन्द्रमा अपने ही विंशोत्तरी नक्षत्र में हो तो ऐसा चन्द्रमा बलवान् व शुभस्थित होने पर सदैव महान् प्रतिष्ठा, मन्त्रीपद, राजाओं का सहयोग, सद्भावों का उदय, देव भजन में मति, धार्मिक बुद्धि लेकर आता है।

परमोच्च चन्द्र दशा फल

अत्युच्चगस्यापि निशाकरस्य दशाविपाके कुसुमाम्बराणि।
महत्त्ववृद्धिश्च कलत्रलाभो धनायतिः पुत्रमनोविलासाः॥13॥

परमोच्चगत चन्द्रमा की दशा में उत्तम आभूषणों का सुख, महत्त्व वृद्धि, स्त्री लाभ, या स्त्री सुख, धन-वृद्धि, पुत्र की ओर से मन में सन्तोष होता है।

उच्चस्थ चन्द्रदशा

उच्चस्थितस्यापि निशाकरस्य प्राप्तौ दशायां सुतदारवित्तम्।
मिष्टान्नपानाम्बरभूषणाप्तिर्विदेशयानं स्वजनैर्विरोधः॥14॥

उच्चगत चन्द्रमा की दशा में स्त्री, पुत्र व धन का सुख, उत्तम भोजन, उत्तम रहन-सहन, आभूषण प्राप्ति, विदेश गमन परन्तु अपने निकट सम्बन्धियों से साधारण विरोध होता है।

नीचगत चन्द्र दशा

नीचस्थितस्य हि दशा विपदं महार्ति
क्लेशार्थदुःखवनवासमुपैति काले।
कारागृहे निगडपादकृशान्नहीनो
चौराग्निभूपतिभयं सुतदारशेषम्॥15॥

नीचगत चन्द्रमा की दशा में बड़ी मुसीबत, कष्ट, विविध क्लेश, रोगादि जन्य दुःख होते हैं। व्यक्ति को कदाचित् अपने स्थान या पद से भ्रष्ट होना पड़ता है।

जेलयात्रा, हथकड़ी आदि का बन्धन, खाने-पीने की कमी व विविध आपदाओं का सामना करना पड़ता है। इस दशा में धनहीन हो जाता है।

आरोहिणी चन्द्रदशा

आरोहिणी चन्द्रदशा प्रपन्ना स्त्रीपुत्रवित्ताम्बरसौख्यकीर्तिम्।
करोति राज्यं सुखभोजनं च देवार्चनं भूसुरतर्पणं च॥16॥

आरोहिणी चन्द्रदशा में स्त्री सुख, पुत्र सुख, धन वृद्धि, विलास सामग्री की प्राप्ति, यशोवृद्धि, राज्यलाभ, सुखपूर्वक भोजन, देवों व ब्राह्मणों का सत्कार होता है।

अवरोहिणी चन्द्रदशा

निशाकरस्याप्यवरोहकाले स्त्रीपुत्रमित्राम्बरसौख्यहानिम्।
मनोविकारं स्वजनैर्विरोधं चौराग्निभूपैः पतनं तटाके॥17॥

अवरोहिणी चन्द्रदशा में स्त्री पुत्र मित्रादि के सुख में कमी, रहन-सहन के स्तर में गिरावट, मानसिक विकार, अपने लोगों, दुष्टों व राजपक्ष से विरोध तथा पानी में गिरने का भय होता है।

उच्च नवांश चन्द्र दशा

उच्चांशगस्यापि दशा ददाति सौख्यं महत्तरं चेन्दोः।
नानाविधधनलाभं भूपतिसम्मानदेहपुष्टिं च॥18॥

उच्चनवांश गत चन्द्रमा की दशा में उत्तम सुख, अनेक प्रकार से धन लाभ, राजकीय सम्मान, शरीर पुष्टि आदि अच्छे फल होते हैं।

नीचांशगत चन्द्रदशा

नीचांशगस्यापि निशाकरस्य प्राप्तौ दशायां विविधार्थहानिः।
कुभोजनं कुत्सितराजसेवा मनोविकारं समुपैति निद्राम्॥19॥

नीच नवांश गत चन्द्रमा की दशा में अनेक प्रकार से धन हानि, साधारण भोजन, खराब अधिकारी की अधीनता, मन में विकार व अधिक नींद आदि फल होते हैं।

नीचांशगस्य च दशा ददाति रोगं महत्तरं हीन्दोः।
पादाक्षिरोगपीडांयुद्धेषु पराजयं गतोत्साहम्॥20॥

नीच नवांश चन्द्रमा की दशा में रोगोत्पत्ति, पैरों व आँखों में कष्ट, सामान्यतया मुकाबलों में पराजय और उत्साहहीनता होती है।

मूल त्रिकोण चन्द्रदशा

मूलत्रिकोणस्थितचन्द्रदाये नृपाद्धनं भूमिसुतार्थदारान्।
प्राप्नोति भूषाम्बरयानलाभं सुखं जनन्या रतिकेलिलोलम्॥21॥

मूल त्रिकोण राशिगत चन्द्रमा की दशा में धन लाभ, जायदाद की प्राप्ति, पुत्र-स्त्री व धन का सुख, उत्तम वस्त्राभूषण, माता का सुख होता है। इस दशा काल में व्यक्ति स्त्री संग के लिए अधिक लालायित रहता है।

स्वक्षेत्री चन्द्रदशा

स्वक्षेत्रगस्यापि निशाकरस्य नृपाद्धनप्राप्तिमुपैति सौख्यम्।
प्रचण्डवेश्यागमनं क्षितीशात्सम्माननं स्त्रीसुतबन्धुसौख्यम्॥22॥

स्वक्षेत्री चन्द्र दशा में राजपक्ष से धन, सुख, राजपक्ष से सम्मान, परिवारजन व परिजनों का सुख होता है। लेकिन व्यक्ति किसी दबंग वेश्या के प्रभाव में आ सकता है।

अतिमित्रक्षेत्री चन्द्रदशा

सुधाकरस्याप्यतिमित्रराशिं गतस्यदाये त्वतिसौख्यमेति।
विद्याविनोदांकितराजपूजां क्षेत्रात्मदारात्मजकामलाभः॥23॥

अतिमित्रक्षेत्री चन्द्रमा की दशा में बहुत से सुख, सभा गोष्ठियों का आनन्द, सभा सदों द्वारा सम्मान, सम्पत्ति व परिवार का उत्तम सुख होता है।

मित्रक्षेत्री चन्द्रदशा

मित्रर्क्षगस्यापि निशाकरस्य पाकेऽर्थलाभः क्षितिपालमैत्रम्।
उद्योगसिद्धिर्जलवस्तुलाभश्चित्राम्बराभूषणवाग्विलासम् ॥24॥

मित्रक्षेत्री चन्द्रमा की दशा में धन लाभ, राजकीय पुरुषों से मित्रता, कार्यों में सफलता, जलपदार्थों से लाभ, उत्तम वस्त्राभूषण, उत्तम वाक्शक्ति की अनुभूति होती है।

समराशिगत चन्द्रदशा

दशाविपाके समराशिगस्य कलानिधेः कांचनभूमिलाभम्।
किंचित्सुखं बान्धवरोगपीडां विदेशयानं लभते मनुष्यः॥25॥

समराशिगत चन्द्रमा की दशा में सुवर्ण या सम्पत्ति का लाभ होता है। शेष बातों का थोड़ा-थोड़ा सुख, परिजनों में कष्ट का वातावरण, विदेश यात्रा आदि फल होते हैं।

शत्रुक्षेत्री चन्द्रदशा

यानाम्बरालंकरणादिहानिं विदेशयानं परिचारकत्वम्।
देशान्तरे भ्राम्यति बन्धुहीनो दुःखैः परिक्लिश्यति शत्रुगस्य॥26॥

शत्रुक्षेत्री चन्द्रदशा में वाहन, आभूषण आदि सामान की हानि, विदेशगमन, दूसरों की अधीनता, मित्रों व सहायकों से रहित होकर जैसे तैसे स्थानान्तर में समय बिताना तथा विविध दुःख होते हैं।

अति शत्रु क्षेत्री चन्द्रदशा

निशाकरस्याप्यतिशत्रुराशिं गतस्यदाये कलहोऽर्थनाशम्।
कुवस्त्रता कुत्सितभोजनं च क्षेत्रार्थदारात्मजतापयानम्॥27॥

अति शत्रु क्षेत्री चन्द्रमा की दशा में कलहागम, धन-हानि, हीन रहन-सहन, जायदाद व परिजनों को विशेष्ट कष्ट तथा व्यर्थ परिभ्रमण होता है। चन्द्रमा का कोई भी स्वाभाविक शत्रु नहीं है, यह सत्याचार्योक्त प्रसिद्ध मैत्री विधान है। जब निसर्ग शत्रु ही कोई नहीं है, तब अति शत्रु कैसे होगा? अतः यह फल भी शत्रु क्षेत्र का ही समझना चाहिए।

क्षीण चन्द्रदशा

क्षीणेन्दुपाके सकलं विहीनं राज्यार्थभूपुत्रकलत्रमित्रम्।
उन्मादचित्तं स्वजनैर्विरोधमृणीत्वमायाति कुशीलवृत्त्या॥28॥

क्षीण चन्द्रमा अर्थात् विशेषतः कृष्णपक्ष त्रयोदशी से शुक्ल पंचमी तक के चन्द्रमा की दशा में प्रायः बड़ी हानि होती है। राज्य, पदवी, जायदाद, स्त्री, मित्र सब चीजों में बाधा खड़ी होती है। मन में बहुत बेचैनी, अपने लोगों से विरोध तथा अपने आचरण की गल्तियों से कर्ज लेना पड़ता है।

पूर्ण चन्द्रदशा

पूर्णेन्दुपाके परिपूर्णमेति विद्याविनोदांकितराजपूजाम्।
स्त्रीपुत्रभृत्यार्थमनोविलासं विशेषतः शोभनकर्मलाभम्॥29॥

पूर्ण चन्द्रमा की दशा में सब कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होते हैं। अपने हुनर या विद्या के कारण राजकीय सम्मान मिलता है। स्त्री, पुत्र, नौकरों आदि का सुख, धन वृद्धि, अच्छे कार्यों से धन लाभ होता है।

उच्चयोगी चन्द्रदशा

केनापि स्वोच्चस्थ वियच्चरेण युक्तस्य चन्द्रस्य दशाविपाके।
मनःप्रसादो मदनाभिरामः स्त्रीपुत्रभृत्यादि विनोदगोष्ठी॥30॥

किसी उच्चस्थ ग्रह के साथ स्थित चन्द्रमा की दशा में मन में उत्साह, प्रसन्नता, स्वस्थ शरीर, स्त्री, पुत्रों व सेवकों का सुख तथा मनोविनोदमय गोष्ठियों में समय बीतता है।

शुभयुक्त चन्द्रदशा

चन्द्रस्य सौम्यग्रहसंयुतस्य प्राप्तौ दशायाः शुभकर्मलाभः।
गोभूहिरण्याम्बरभूषणानि तीर्थाभिषेकः परदारसौख्यम्॥31॥

शुभयुक्त चन्द्रमा की दशा में अच्छे मंगलमय कार्यों से लाभ, पशुधन, सुवर्ण, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, तीर्थयात्राएँ तथा अन्य स्त्री का सुख प्राप्त होता है।

पापयुक्त चन्द्र दशा

पापान्वितस्यापि निशाकरस्य पाकेऽग्निचौरक्षितिपालकोपः।
दुःखं सुतस्त्रीश्रुतबन्धुहानिः विदेशयानं त्वशुभादिकर्म॥32॥

पापयुक्त चन्द्रमा की दशा में अग्निभय, चोरभय, राजभय होता है। स्त्री, पुत्र, स्मरण शक्ति व बन्धुओं की हानि, विदेश यात्रा, अशुभ कर्मों में रुचि होती है।

शुभदृष्ट चन्द्रदशा

निशाकरस्यापि शुभेक्षितस्य परोपकारं महतीं च कीर्तिम्।
दृष्टार्थबन्ध्वागमभूपमानं जलक्रिया वस्त्रमनोविलासम्॥33॥

शुभ ग्रह से दृष्ट चन्द्रमा की दशा में परोपकार की भावना, बहुत यश, इष्ट मित्रों से समागम, राजमान, पानी की क्रीड़ा का आनन्द, मन में प्रसन्नता आदि फल होते हैं।

पापदृष्ट चन्द्रदशा

पापेक्षितस्यापि निशाकरस्य दशाविपाके विफलं सुकर्म।
कोपाधिकं कुत्सितभोजनं च मातुर्वियोगं त्वथवातदीयम्॥34॥

पापयुक्त चन्द्रमा की दशा में शुभ कार्यों में बाधा आती है। अधिक क्रोध खराब भोजन, माता का वियोग या माता को कष्ट होता है।

लग्नादि भावगत चन्द्रदशा

लग्नत्रिकोणमेन्दोर्दशां प्रपन्नो नरः सुबहुकोशः।
बहुपुत्रवान् विनीतो बन्धुविरोधं प्रधानतां याति॥35॥

1.5.9 भावों में स्थित चन्द्रमा की दशा में अच्छी बचत के योग, पुत्रों का सुख, विनय भाव का उदय, बन्धुओं से विरोध तथा लोगों में मुख्यता प्राप्त होती है।

चन्द्रस्य वित्तस्थितपाककाले वित्तात्मजस्त्रीसुखभोगभाग्यम्।
मिष्टान्नपानं रतिकेलिसौख्यं धनागमं पुण्यजलाभिषेकम्॥36॥

द्वितीय भाव में स्थित चन्द्रमा की दशा में धन, पुत्र, स्त्री का सुख, भोग विलासों की प्राप्ति, उत्तम भोजन, स्त्री सुख, धनागम, पुण्य तीर्थ स्थानों की यात्रा के योग होते हैं।

तृतीयभावस्थनिशाकरस्य दशा महासौख्यमनेकवित्तम्।
मनोदृढं भ्रातृजनादिसौख्यं कृष्यन्नपानाम्बरभूषणाप्तिः॥37॥

तृतीय भावगत चन्द्रमा की दशा में बहुत से सुख, अनेक प्रकार से धनागम, मन में दृढ़ता, भाई बन्धुओं का सुख, उत्तम खान-पान का वैभव होता है।

सुखस्थितस्यापि निशाधवस्य मातुर्वियोगः सुखयानभूमिः।
कृषेर्धनाप्तिर्गृहकर्मलाभः कीर्तिस्वनामांकितपद्यजालः॥38॥

चतुर्थ भावगत चन्द्रमा की दशा में माता का वियोग, उत्तम वाहन व स्थान की प्राप्ति, व्यवसाय या कृषि से धन लाभ, घरेलू या पैतृक कार्यों से लाभ होता है। व्यक्ति की प्रशंसा में कविता, अभिनन्दन पत्र आदि पढ़े जाते हैं।

षष्ठस्य चन्द्रस्य दशां प्रपद्य लभते वियोगं कलहं च दुःखम्।
चौराग्निभूपालभयं जलेन मूत्रादिकृच्छ्रं धननाशमाहुः॥39॥

षष्ठ भावगत चन्द्रमा की दशा में मनुष्य को इष्ट जनों का वियोग, कलह व दुःख सहना पड़ता है। विभिन्न प्रकार के भय होते हैं। पानी के कारण रोग, मूत्र दोष व धन नाश भी होता है।

जामित्रसंस्थस्य निशाकरस्य पाके कलत्राप्तिमुदाहरन्ति।
सुपुत्रसौख्यं शयनाम्बरं च प्रमेहमूत्रादिकृशं मनोरुक्॥40॥

सप्तम स्थान में स्थित चन्द्रमा की दशा में स्त्री प्राप्ति बताई गई है। अच्छे पुत्र का सुख होता है। सांसारिक सुख बढ़ते हैं, लेकिन मूत्रदोष, मधुमेह आदि रोग तथा मानसिक विकार पैदा होते हैं।

रन्ध्रस्थितस्यापि दशापहारे देहस्य कार्श्यं जलभीतिदुःखम्।
विदेशयानं सकलैर्विरोधः कुभोजनं मातृजनेषु नाशः॥41॥

अष्टम स्थान में स्थित चन्द्रमा की दशा में शरीर में कमजोरी, पानी से भय, अथवा पानी के दोष से उत्पन्न रोग, परदेश यात्रा, सब लोगों के साथ विरोध,

खाने-पीने का गिरा हुआ स्तर, मातृपक्ष के लोगों की हानि होती है।

कर्मस्थितस्यापि विधोर्दशायां कीर्तिं प्रतिष्ठां लभते सुविद्याम्।
यज्ञादिकर्माप्तिमनेकसौख्यं भूपुत्रयानाम्बरबन्धुपूजाम्॥42॥

दशम भाव में स्थित चन्द्रमा की दशा में प्रतिष्ठा, यश, अच्छी विद्या या कला, सत् धार्मिक कार्यों के अवसर, अनेक प्रकार के सुख, भूमि, सन्तान, वस्त्रादि का सुख व अपने परिचितों में आदर प्राप्त होता है।

श्रीदारवृद्धिं बहुभूषणं च वाहादिलाभं नृपतां च काले॥43॥

अपि च, अन्यत्र बताया गया है कि दशमस्थ चन्द्रमा की दशा में श्रीवृद्धि, स्त्री-सुख, बहुत से आभूषण, वाहन का लाभ, सम्भव होने पर राजयोग का सुख होता है।

लाभस्थितस्यापि निशाकरस्य प्राप्तौ दशायां विविधार्थलाभः।
मृद्वन्नपानाम्बरकेलिलोलं स्त्रीपुत्रलाभस्तु मनोविलासः॥44॥

एकादश स्थान में स्थित चन्द्रमा की दशा में अनेक प्रकार से धन लाभ, उत्तम मृदुभोजन, खान-पान का वैभव, उत्तम रहन-सहन, स्त्रीसंग की उत्कट भावना, स्त्री व पुत्र का सुख तथा मनोरंजन का उत्तम सुख होता है।

रिःफगचन्द्रदशायाः सम्प्राप्तौ भूतिनाशनं कुरुते।
राज्ञोऽनृतधनभाग्यं स्थानविनाशं महत्परं दुःखम्॥45॥

द्वादश भावगत चन्द्रमा की दशा में ऐश्वर्य व धन की हानि, राजा का कोप, असत्य बातों का प्रकोप, धन व भाग्य में कमी, स्थान हानि, बहुत दुःख होते हैं।

अस्त चन्द्रदशा

दिनेश्वराहतचन्द्रदाये प्राप्नोति दुःखं स्वजनैर्विरोधम्।
भार्याक्षयं भूपविषाग्निचौरैर्मातुवियोगं कृषिधान्यनाशम्॥46॥

सर्वथा अस्त हुए चन्द्रमा की दशा में, अर्थात् अमावस्या के चन्द्रमा की दशा में अपने लोगों से विरोध, दुःख, स्त्री सुख में अत्यन्त कमी, राज्य, अग्नि या विष से भय, माता का वियोग, खड़ी फसल या व्यवसाय में अन्तिम क्षणों में हानि होती है।

स्थानबली चन्द्रदशा

चन्द्रे स्थानबलाधिके धनसुखं कीर्तिं च विद्यागमं
देवब्राह्मणतर्पणं नृपधनान्याप्नोति भूमिं धनम्।
स्त्रीरत्नाम्बरभूषणं कृषिधनं गोविक्रयं सेवनं
मिष्टान्नादि रसायनं फलयुतं दध्याज्यमाल्याम्बरम्॥47॥

स्थान बली चन्द्रमा की दशा में धन का सुख, कीर्ति, विद्याप्राप्ति, दीनों व ब्राह्मणों की सन्तुष्टि, राजकोष से धन लाभ, भूमि, स्त्री-सुख, रत्न भूषणों का सुख, कृषि की अच्छी उपज, पशु क्रय विक्रय से लाभ, उत्तम भोजन, फल, दूध, दही

व उत्तम वस्त्रों का सेवन होता है।

निशाकरे स्थानबलेन हीने स्थानार्थनाशं स्वपदच्युतिं च।
स्वबन्धुनाशं त्वथवावियोगं कृषेर्विनाशं समुपैति काले॥48॥

स्थान बल रहित चन्द्रमा की दशा में स्थान (पद या जायदाद) की हानि, अधिकारों से वंचित होना, अपने बन्धुओं की हानि या वियोग, कृषि में हानि या व्यवसाय में घाटा होता है।

दिग्बली चन्द्रदशा

निशाकरे दिग्बलसंयुतेऽस्मिन् दिगन्तरादागतवस्तुचित्रम्।
विद्यागमं भूपतिमित्रतां च स्वबन्धुपूज्यं गजवाजिभूमिम्॥49॥

दिग्बली चन्द्रमा की दशा में दूरदराज के क्षेत्रों से लाभ या व्यवसाय प्राप्ति या उपहार प्राप्ति, विद्या प्राप्ति, राजकीय लोगों से मित्रता, अपने लोगों में आदर मान, हाथी घोड़ा व जमीन जायदाद की प्राप्ति होती है।

कालबली चन्द्रदशा

चन्द्रे तथा कालबलान्वितेऽस्मिन् तुरंगयानं कृषिगोमहीश्च।
विद्याविनोदं नखकेशदन्तचर्माम्बरालंकृतवाहनं च॥50॥

कालबली चन्द्रमा की दशा में तीव्रग्रामी वाहन की प्राप्ति, कृषि व पशु पालन का सुख या उत्तम व्यवसाय, अपने हुनर कला या विद्या की प्रशंसा, चमड़ा, हाथी-दांत आदि से सुसज्जित विलासदायक वाहन की सवारी होती है।

चेष्टाबली चन्द्रदशा

चेष्टाबलाढ्यो बहुमित्रकोशं चन्द्रो विधत्ते निरुजं मनुष्यम्।
श्रुताधिकं सत्यरतं विनीतं नित्यं सुराराधनतत्परं च॥51॥

चेष्टाबली चन्द्रमा की दशा में बहुत से लोगों के साथ मित्रता, अच्छी बचत, अच्छा स्वास्थ्य, ज्ञान वृद्धि, सत्य व न्याय के प्रति स्वाभाविक आकर्षण, देवभजन आदि होते हैं।

निसर्गबली चन्द्रदशा

निसर्गवीर्यान्वितचन्द्रदाये निसर्गतश्चापि करोति सौख्यम्।
अयत्नतो वाहनदेशलाभं नृपालपूज्यं बहुवाहनं च॥52॥

निसर्गबली चन्द्रमा की दशा में स्वाभाविक रूप से बहुत से सुख होते हैं। वाहन, स्थान व पद का, बिना विशेष प्रयत्नों के ही लाभ होता है। राजा से सत्कार व कई वाहन प्राप्त होते हैं।

दृग्बली चन्द्रदशा

चन्द्रे यदा दृग्बलवीर्ययुक्ते कृपाकटाक्षेण नरेश्वरस्य।
समस्तभाग्यं समुपैति सौख्यं परोपकारं च मनोऽभिलाषम्॥53॥

दृग्बली चन्द्रमा की दशा में राजा, राजकीय पुरुष या धनी व्यक्ति की सहायता से भाग्य बढ़ता है, सब सुख मिलते हैं। परोपकार करने की भावना का उदय होता है। मन की इच्छाएँ पूरी होती हैं।

क्रूर षष्ट्यंशगत चन्द्रदशा

क्रूरादिषष्ट्यंशसमान्वितस्य दाये शशांकस्य विपत्तयः स्युः।
स्त्रीपुत्रनाशः क्षितिपालकोपः विद्याविवादः कलहो जनैश्च॥54॥

क्रूर षष्ट्यंशगत चन्द्रमा की दशा में अनेक तरह की विपत्तियाँ, स्त्री पुत्र व धन की हानि, राजकीय विभागों की ओर से असहयोग या राजकीय प्रकोप, शिक्षा या योग्यता सम्बन्धी विवाद, लोगों से कलह होती है।

मृदुषष्ट्यंशगे चन्द्रे बहुभृत्यार्थपुत्रता।
विजयः सुखं च कीर्तिं च विद्यां लभते विशेषतः॥55॥

शुभ षष्ट्यंश में स्थित चन्द्रमा की दशा में अनेक नौकर, बहुत धन, पुत्रों का सुख, विजय, सुख, कीर्ति, विद्या आदि फल विशेषतया होते हैं।

पारावताद्यंशगत चन्द्रदशा

पारावताद्यंशसमन्वितस्य चन्द्रस्यदाये महतीं च कीर्तिम्।
विद्याविनोदं लभते च सौख्यं देवार्चनं पुण्यजलाभिषेकम्॥56॥

पारावतादि उत्तम अंशों में स्थित चन्द्रमा की दशा में बहुत प्रसिद्धि, विद्या का सदुपयोग, सुख, देवयजन पूजन, उत्तम तीर्थों की यात्रा का सुख व पुण्य होता है।

क्रूर द्रेष्काणगत चन्द्र दशा

क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तश्चन्द्रो दिशति रोगताम्।
कार्श्यं पापसमायोगं गोविप्रादिविगर्हणाम्॥57॥

उद्यतायुध, पाश आदि क्रूर द्रेष्काणों में चन्द्रमा गया हो तो शरीर में रोग, कमजोरी, बहुत से पाप कर्मों का उदय, गाय व ब्राह्मणों का निरादर करने की भावना होती है।

मेषादिगत चन्द्रदशा

पाके क्रियस्थस्य तुषाररश्मेर्विलासिनिनन्दनजन्मतोषः।
पुंसां विदेशाभिरतिर्व्ययः स्यात्कलिं शिरोरुक् सहजादिबाधा॥58॥

मेषराशिगत चन्द्रमा की दशा में स्त्री सुख, पुत्र सुख, विदेश के प्रति आकर्षण, व्यय की अधिकता, सिर में परेशानी व भाइयों को कष्ट होता है।

उच्चोपयातस्य विधोर्दशायां राज्योपलब्धिः स्वकुलानुमानात्।
सद्रत्नसौख्यात्मज गोतुरंगगजादिवृद्धिर्वनितावशित्वम्॥59॥

वृष राशि में उच्चगत चन्द्रमा की दशा में राज्य लाभ या अपने स्तरानुरूप पदवी मिलती है। उत्तम रत्न व धन का सुख, पशुधन वृद्धि, वाहनादि में बढ़ोत्तरी होती है। इस दशाकाल में व्यक्ति प्रायः स्त्री के वश में हो जाता है।

पाककाले तु मूलत्रिकोणे विधौ स्याद्विदेशाटनः स्त्रीयवर्गैः कलिः।
गन्धवाहात्कफात्पीडनं वै तनौ विक्रयाद्वापि कृष्यादितोऽर्थागमः॥60॥

मूल त्रिकोणी चन्द्रमा (वृष राशि में 4° से 30° तक) की दशा हो तो विदेश भ्रमण, स्त्री वर्ग से कलह या मनमुटाव, वात व कफ जनित पीड़ा, खरीद बेच या कृषि आदि व्यवसायों से लाभ होता है।

वृषस्य मध्यत्रिलवे हिमांशौर्दशाप्रवेशे धनवाहनानि।
भवेन्नराणां द्विजदेवमन्त्रभावैर्धनाप्तिर्वनिताप्रियत्वम्॥61॥

वृष राशि के मध्यम द्रेष्काण में चन्द्रमा हो तो उस की दशा में धन व वाहन का सुख, द्विजों देवों व मन्त्रादि साधना से धनप्राप्ति तथा स्त्री का प्रेम प्राप्त होता है।

पूर्वार्धगः पापयुतो हिमांशुर्वृषस्य मृत्युं कुरुते जनन्याः।
तथा परार्धे जनकस्य सौम्येक्षितो युतो मृत्युसमानरोगम्॥62॥

वृष राशि के पूर्वार्ध में पापयुक्त चन्द्रमा हो तो माता की मृत्यु सम्भव होती है। अपरार्ध में पापयुक्त चन्द्रमा हो तो पिता की मृत्यु की सम्भावना होती है। यदि वह शुभयुक्त दृष्ट हो तो क्रमशः माता-पिता को मृत्यु तुल्य कष्ट देने वाला रोग होता है।

इन्दोर्दशावैणिकसंस्थितस्य स्थानान्तरे संचालनं करोति।
देवद्विजार्चा धनभोगसंपद्वस्त्रादिलाभं धिषणा वरेण्यम्॥63॥

मिथुन राशिगत चन्द्रमा की दशा में स्थान परिवर्तन, देवद्विजों का सत्कार, धन, वैभव, भोगविलास, वस्त्रादि की प्राप्ति व बुद्धि का विकास होता है।

इन्दोः कुलीरोपगतस्य पाके भवेत्पशुद्रव्यकृषिप्रवृद्धिः।
गुप्तामयश्चापि बलाधिकत्वं वनाद्रिदुर्गाभिरुचिर्नराणाम्॥64॥

कर्क राशि गत चन्द्रमा की दशा में पशुवृद्धि, धनवृद्धि, कृषि (व्यवसाय) वृद्धि होती है। गुप्तरोग का भय भी होता है। कलाप्रेम, वन पर्वत व किलों आदि में अभिरुचि होती है।

हरिस्थितस्येन्दुदशाप्रवेशे विनष्टमर्थं लभते मनुष्यः।
बुद्ध्याधिकत्वं स्वजनाधिपत्यं वैकल्यमंगेऽपि च पंचबाणैः॥65॥

सिंह राशि स्थित चन्द्रमा की दशा में डूबे धन की वापसी, बुद्धि का कौशल, अपने लोगों में मानप्रतिष्ठा, कामवासना की अधिकता होती है।

कन्याधिरूढस्य विधोर्दशायां विदेशयानं प्रमदोपलब्धिः।
मतिश्च सत्काव्यकलापे स्वल्पार्थसिद्धिर्ननु मानवानाम्॥66॥

कन्या राशि में स्थित चन्द्रमा की दशा में विदेश यात्रा, स्त्री सुख, अच्छे काव्यों या कलाओं में रुचि, धन सम्बन्धी कार्यों में कम सफलता होती है।

पाके हिमांशोर्वणिजस्थितस्य कान्ताविलासश्चपलं मनः स्यात्।
उत्साहभंगो धनहीनता च नीचप्रसंगोऽन्यजनैर्विरोधः॥67॥

तुलागत चन्द्रमा की दशा में स्त्री सुख, मन की चंचलता, उत्साह में कमी, धन हीनता, नीच जनों का सम्पर्क, लोगों से विरोध होता है।

नीचत्वमुच्चैर्विविधामयः स्यादनल्पचिन्ता स्वजनैर्विरोधः।
सुबुद्धिमानापहतिर्नराणां नीचोपयातस्य विधोर्दशायाम्॥68॥

नीचगत चन्द्रमा की दशा में बहुत से रोग, बहुत सारी चिन्ताएँ, अपने लोगों से विरोध, मान व बुद्धि की हानि होती है।

नीचान्निवृत्तस्य कलानिधेः स्यात्पाके धनाप्तिः क्रय-विक्रयाभ्याम्।
मर्मव्यथास्त्रीजनमित्रवर्गैः सख्याल्पता धर्महतिर्नराणाम्॥69॥

वृश्चिक राशि में ही स्थित चन्द्रमा यदि अपने परम नीच से काफी आगे आ चुका हो तो उसकी दशा में क्रय-विक्रय से धन लाभ होता है। स्त्रीजनों व मित्रवर्गों के कारण हृदय पर ठेस पहुँचती है। मित्रता भंग होने के अवसर पैदा होते हैं तथा व्यक्ति का धार्मिक या वैचारिक पतन सम्भव है।

कोदण्डसंस्थस्य तुषाररश्मेः पाके भवेत्कुंजरवाजिलब्धिः।
पूर्वार्जितद्रव्यहतिर्नराणामन्यत्र वित्तगमनं सुखं च॥70॥

धनु राशि में स्थित चन्द्रमा की दशा में बड़े वाहनों की प्राप्ति, बचत संचित किए गए धन की कमी, लेकिन स्थापित स्रोतों से धन लाभ व सुख होता है।

पाके निशेशस्य मृगस्थितस्य न हर्म्यवासोऽनुदिनं कदाचित्।
सुखात्मजस्त्रीद्रविणोपलब्धिरुन्मादवातामयपीडितः स्यात्॥71॥

मकर राशि स्थित चन्द्रमा की दशा में थोड़े समय के लिए बड़ा घर छोड़ना पड़ सकता है अन्यथा, पुत्र, स्त्री, धन आदि का सुख बढ़ता है। लेकिन मनोविकार व वायुविकार से पीड़ा सम्भव होती है।

क्रोडोदशतिर्व्यसनानिपुंसामृणोपलब्धिः कृशता शरीरे।
कुस्त्रीरतिश्चंचलता नितान्तं पाके हिमांशोः कलशस्थितस्य॥72॥

कुम्भराशि स्थित चन्द्रमा की दशा में पेट में रोग, विपत्तियाँ, कर्जदारी शरीर में कमजोरी, कुस्त्री के कारण परेशानी, मन में चंचलता आदि फल होते हैं।

वर्गोत्तमस्थस्य घटे हिमांशोः पाकेऽर्थहीनो बलिभिर्विरोधः।
दन्ताक्षिकर्णामययुक्नरः स्यात् त्यक्तः स्वदारात्मजबन्धुवर्गैः॥73॥

कुम्भ राशि में वर्गोत्तम नवांश स्थित चन्द्रमा की दशा में मनुष्य को धन की

हानि व कमी, बलवान् लोगों से विरोध, दाँत आँख व कान में रोग, अपने ही निजी जनों के द्वारा निरादर होता है।

मीनोपयातस्य विधोर्दशायां भवेन्नराणां सलिलोद्भवार्थः।
शत्रुक्षयो पापमतिप्रवृद्धिः कलत्रपुत्रादि सुखानि नूनम्॥74॥

मीन राशि स्थित चन्द्रमा की दशा में जलीय पदार्थों से धनलाभ, शत्रुक्षय, कुविचारों का उदय, स्त्री पुत्रादि का सुख होता है।

मीनसंस्थस्य वर्गोत्तमे शीतगोः पाककाले भवेत्संग्रहार्थागमः।
सन्मतित्वं च पुत्रादिसौख्यं रिपोर्नाशनं कुंजराश्वादिकं मानवः॥75॥

मीन में वर्गोत्तमी चन्द्रमा की दशा हो तो विविध प्रकार से धनसंचय, उत्तम बुद्धिविचार, पुत्रादि का सुख, शत्रुओं का पराभव, बड़े वाहनों का सुख होता है।

वर्गोत्तमी चन्द्रदशा

वर्गोत्तमे शीतरुचेऽनुरक्तस्थानेष्वभीष्टार्थयुतोऽतिविद्वान्।
धीमान्नरः स्वीयकुले वरिष्ठो नीरादिसद्धर्मपरो भवेत्सः॥76॥

किसी की राशि में वर्गोत्तम चन्द्रमा की दशा में उत्तम विचार, सही दिशा की सोच, मनवांछित कार्यों में सफलता, विद्या-बुद्धि का विकास, अपने कुल में श्रेष्ठता, सद्धर्म परायणता तथा जल से उत्पन्न सुख होते हैं।

द्वादशस्थ चन्द्रदशा

व्ययोपयातस्य विधोर्दशायां पापार्जितद्रव्यसमुद्भवः स्यात्।
नीचारिगस्थे च कृशे पुरोक्तं लब्धं धनं नाशमुपैति शीघ्रम्॥77॥

द्वादश भाव में चन्द्रमा हो तो कुमार्ग से धनागम होता है। यदि वह चन्द्रमा नीचगत या क्षीण हो तो प्राप्त धन का भी शीघ्र नाश हो जाता है।

नीचगत अष्टमस्थ चन्द्रदशा

पाकेऽष्टमस्थ च नीचगस्य शीतद्युतेः संलभतेऽतिरोगम्।
ज्ञातिच्युतिं पापयुतो मृतिं वा षष्ठोपगस्य व्यसनं मनुष्यः॥78॥

अष्टम में नीचगत चन्द्रमा हो तो मनुष्य को बहुत से रोग होते हैं अथवा जाति बहिष्कार, होता है। यदि वह पापयुक्त भी हो तो मृत्यु भी सम्भव है।

षष्ठ में नीचगत चन्द्र हो तो उस की दशा में विविध मुसीबतें आती हैं।

अष्टमस्थ क्षीण चन्द्र दशा

क्षीणाष्टमस्थस्य विधोर्दशायां नानामयाद्यैः परिपीडनं च।
यद्वापि कान्ताकृतदोषहेतोर्नूनं नरेन्द्राल्लभते मनुष्यः॥79॥

अष्टम स्थान में क्षीण चन्द्रमा हो तो विविध प्रकार के शारीरिक रोगों से कष्ट अथवा स्त्री के कारण राजा की ओर से पीड़ा होती है।

अस्तंगत अष्टमस्थ चन्द्रदशा

पाकेऽष्टमस्थस्य च मूढगस्य विधोर्नरः संलभतेऽतिदुःखम्।
नानामयाद्यैः परिपीडनं च राज्यच्युतिं नीरभवं भयं च॥80॥

अमावस्या या शुक्ल प्रतिपदा का अदृश्य बिम्ब चन्द्रमा अष्टम में हो तो उसकी दशा में मनुष्य को विविध दुःखों का सामना करना पड़ता है। अनेक रोग, राज्यभ्रंश व जल से भय भी होता है।

चन्द्रदशा का विशेष फल

षष्ठोपगस्य च दशा व्यसनाभिकर्त्री
क्षीणे स्वबन्धुजननाशकरी नराणाम्।
पूर्णे तथोदयगते खलु राज्यकर्त्री
स्त्रीकर्मकृद्दशमगेऽपि च सिन्धुजाते॥81॥

षष्ठ स्थान में क्षीण चन्द्रमा हो तो उसकी दशा में अपने बन्धु-बान्धवों की हानि होती है। पूर्ण चन्द्रमा यदि लग्न में हो तो उसकी दशा में राजयोग होता है। दशम में पूर्ण चन्द्रमा हो तो स्त्री से सुख, स्त्री के अधीन होकर अधिकार भोग होता है।

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चैव केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
शुभग्रहेण संयुक्ते वृद्धिश्चन्द्रबलैर्युते॥82॥

स्वोच्च या स्वराशि का चन्द्रमा 1.4.7.10.5.9.11 भावों में हो और शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो उसकी दशा में चन्द्रमा के बलानुसार बढ़ोत्तरी होती है।

कर्मभाग्याधिपे चन्द्रे वाहनेशे बलैर्युते।
सुस्थाने तेन सम्बन्धे धनधान्यादिलाभकृत्॥83॥
गृहे तु शुभकार्याणि वाहनं राजदर्शनम्।
यत्नकार्यार्थसिद्धिः स्याद् गृहे लक्ष्मी कटाक्षवत्॥84॥
मित्रप्रभुवशाद्भाग्यं राज्यलाभो महत्सुखम्।
अश्वान्दोल्यसुखं नूनं श्वेतवस्त्रादिलाभकृत्॥85॥
पुत्रलाभादिसन्तोषो गृहे गोधनसंकुलम्।

भाग्येश या दशमेश होकर चन्द्रमा किसी उत्तम भाव में बलवान् चतुर्थेश (या केन्द्रेश) से सम्बन्ध करे तो उसकी दशा में धन-धान्य का अपूर्व लाभ होता है।

इस दशा में घर में मंगल कार्यों की सम्पन्नता, वाहन सुख, राजा से सम्बन्ध, प्रयत्नों व कार्यों की सफलता, घर में लक्ष्मी की कृपा होती है।

राजा, राजकीय पुरुष या मित्रों से विशेष सहायता मिलती है। राज्यप्राप्ति, बड़ा

सुख, वाहनादि का सुख, सफेद कपड़ों से लाभ, पुत्र प्राप्ति या सन्तान की तरक्की व घर में गोधन की बहुतायत होती है।

धनस्थानगते चन्द्रे तुंगे स्वक्षेत्रगेऽपि वा॥86॥
अनेकधनलाभश्च भाग्यवृद्धिर्महत्सुखम्।
निक्षेपराजसम्मानं विद्यालाभं च विन्दति॥87॥
नीचे वा क्षीणचन्द्रे वा धनहानिर्भविष्यति।
दुश्चिक्ये बलसंयुक्ते क्वचित्सौख्यं क्वचिद्धनम्॥88॥

उच्चगत या स्वक्षेत्री चन्द्रमा द्वितीय भाव में हो तो अनेक प्रकार से धनलाभ, भाग्य वृद्धि, सुख, राज-सम्मान, धरोहर रखने के कार्य से लाभ और विद्या वृद्धि होती है।

यदि वही चन्द्रमा क्षीण या नीचगत हो तो धनहानि होती है।

3.6.11 भावों में क्षीण या नीचगत चन्द्रमा, अन्यथा बलवान् हो तो कभी सुख कभी दुःख होता है। यदा कदा धन लाभ हो जाता है।

दुर्बले पापसंयुक्ते देहजाड्यं मनोरुजम्।
भृत्यपीडा वित्तहानिर्मातृवर्गजनाद्वधः॥89॥

निर्बल पापयुक्त चन्द्रमा कहीं भी हो तो शरीर में आलस्य, मानसिक व्यथा, कर्मचारियों से पीड़ा व धनहानि, मातृवर्ग की ओर से कष्ट होता है।

षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे दुर्बले पापसंयुते।
राजद्वेषान्मनोदुःखं धनधान्यादिनाशनम्॥90॥

6.8.12 में निर्बल या पापयुक्त चन्द्रमा हो तो राजकीय पुरुषों से विरोध के कारण मानसिक तनाव, धन-धान्य की हानि होती है।

राहुणा संयुते चन्द्रे कर्मराशिस्थिते यदि।
दारपीडामनस्तापं हेयबुद्ध्या निरन्तरम्॥91॥
आदौ भावफलं प्रोक्तं स्थानजन्यं ततः परम्।
अंशोद्भवफलं पश्चाद् ग्रहजातफलं तथा॥92॥

दशम में राहु के साथ चन्द्रमा हो तो स्त्री को कष्ट, मनस्ताप व कुविचार पैदा होते हैं।

आरम्भ में भावफल, मध्य में राशिफल, अन्त में नवांश व ग्रहयोग का फल होता है। यह बात सारी चन्द्र दशा पर लागू है।

इति श्रीदशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने चन्द्रदशा-फलाध्यायः पंचमः॥5॥
॥आदितः श्लोका 454॥

6

॥ मंगलदशाफलाध्यायः ॥

मंगलदशा : विविध मत

पाके भूमिसुतस्य शस्त्रहुतभुग्भूवाहनाद्यैर्धनं
भैषज्यान्नृपवंचनैश्च विविधैः क्रौर्यैर्धनस्यागमः।
पित्तासृग्ज्वरपीडनं तु सततं नीचांगनासेवनं
विद्वेषं सुतदारबन्धुगुरुभिर्दुष्टान्नभोगं विदुः॥1॥

जातक परिजात का मत है कि मंगल की दशा में शास्त्रास्त्रों के माध्यम से धनलाभ, अग्नि कार्य, भूमि या वाहनों से धन लाभ, चिकित्सावृत्ति, दवाइयाँ, राजकीय विभागों के साथ कपट लेख द्वारा धन लाभ, क्रूर कार्यों से धन लाभ होता है। यह फल शुभ मंगल का है।

यदि अशुभ मंगल हो तो पित्त विकार, रक्त विकार, ज्वर, नीच वृत्ति वाली स्त्री के कारण तनाव, स्त्री, पुत्र व परिवारजनों के साथ विद्वेष, खराब भोजन आदि फल होते हैं।

यही फल जातकाभरण तथा शम्भुहोराप्रकाश में भी कहा गया है।

विषाग्निशस्त्रग्रहदोषपीडां रक्तादिदोषं सुहृदां विरोधम्।
मूर्च्छाभयं बन्धुजनक्रयं च तनोति भूमिसुतदुर्दशेयम्॥2॥

चन्द्राभरणजातक का मत है कि मंगल की दशा में विषभय, अग्निभय, शस्त्रभय, ग्रहदोष के कुफल, रक्त विकार, मित्रों से विरोध, चक्कर खाकर गिर जाना या बेहोशी, किसी के अधीन काम करने का कष्ट आदि होता है। यह फल अशुभ भावेश या अशुभ राशि में स्थित मंगल का ही होना चाहिए।

परमोच्च मंगल दशा

अत्युच्चभूनन्दनदायकाले क्षेत्रार्थलाभं समरे जयं च।
आधिक्यमन्वेति नरः समानसहोदरस्त्रीसुतवाग्विलासम्॥3॥

परमोच्चगत मंगल की दशा में स्थान, जायदाद, धन का लाभ, विवाद में विजय, अपने वर्ग में अधिक बढ़ोत्तरी, भाई, स्त्री, पुत्रादि का सुख और वाणी का वैभव होता है।

उच्चगत मंगल दशा

उच्चं गतस्य हि दशा धरणीसुतस्य
प्राप्नोति राज्यमथवा क्षितिपाच्च वित्तम्।
भूमध्यदारसुतबन्धुसमागमं च
यानादिरोहणविशेषविदेशयानम् ॥4॥

उच्चगत मंगल की दशा में राज्यप्राप्ति या राजा से धन लाभ, जायदाद, स्त्री, पुत्र, बन्धुओं का सुख तथा विशिष्ट वाहनों की प्राप्ति या उनमें सवारी का सुख तथा विदेश यात्रा होती है।

आरोहिणी मंगल दशा

आरोहिणीभूमिसुतस्य सौख्यं दशा तनोत्यत्र नरेन्द्रपूजाम्।
प्रधानतां धैर्यमनोऽभिलाषं भाग्योत्तरं गोगजवाजिसंघम्॥5॥

मंगल जब अपने उच्च की ओर बढ़ रहा हो तो उसकी दशा में राजा की ओर से सम्मान, प्रतिष्ठा, प्रधानता, मन में धैर्य, मनोरथपूर्ति, भाग्यवृद्धि तथा पशुधन व वाहनों की वृद्धि होती है।

अवरोहिणी मंगल दशा

धरासुतस्याप्यवरोहकाले स्थानार्थनाशं कलिकोपदुःखम्।
विदेशवासं स्वजनैर्विरोधं चौराग्निभूपैर्भयमेति कष्टम्॥6॥

अपने नीच की ओर बढ़ते हुए मंगल, अर्थात् नीचासन्न मंगल की दशा में स्थानहानि, धनहानि कलह, क्रोध की अधिकता, दुःख, परदेश वास, अपने लोगों से विरोध, चोरभय, अग्निभय, राजभय तथा बड़े कष्ट होते हैं।

नीचगत मंगल दशा

नीचस्थितस्यापि धरासुतस्य दाये कुवृत्त्या स्वजनादिरक्षा।
कुभोजनं गोगजवाजिनाशं स्वबन्धुनाशं नृपवह्निचौरैः॥7॥

नीचगत मंगल की दशा में हीन जीविका साधनों से परिवार का पालन, साधारण भोजन, पशुधन व वाहन की हानि, बन्धुओं की हानि या उन्हें कष्ट, राजपक्ष या अन्य विपत्तियों से परेशानियाँ होती हैं।

मूल त्रिकोण मंगल दशा

मूलत्रिकोणस्थितभौमदाये मिष्टान्नपानाम्बरभूषणाप्तिम्।
पुराणधर्मश्रवणं मनोज्ञं भ्रात्रादिसौख्यं कृषिलाभमेति॥8॥

मूल त्रिकोण गत मंगल की दशा में उत्तम भोजन, उत्तम वस्त्रों का पहनावा, अच्छा रहन-सहन, कथावार्तादि धार्मिक क्रियाओं में समय यापन, भाइयों व मित्रों का सुख, कृषि आदि जीविका से लाभ होता है।

मूलत्रिकोणोपगतस्य पाके क्षोणिसुतस्यात्मजदारसौख्यम्।
अर्थोपलब्धिः खलु साहसेन रणांगणे चारुयशो विशेषात्॥9॥

मूलत्रिकोण गत मंगल दशा में स्त्री पुत्रों का सुख, साहस व दबंगता से धन लाभ, युद्ध या विवाद या शास्त्रार्थ में यश मिलता है।

स्वगृही मंगल दशा

स्वक्षेत्रगस्यापि धरासुतस्य दशाविपाके लभतेऽर्थभूमिम्।
स्थानाधिपत्यं सुखवाहनं च नामद्वयं भ्रातृसुखं सुखाप्तिम्॥10॥

स्वक्षेत्री मंगल की दशा में धन लाभ, भूमि लाभ या भूमि से धन प्राप्ति, पदवी प्रतिष्ठा, सुख, वाहन, भाइयों व सहायकों का सुख, अन्य भौतिक सुखों की प्राप्ति तथा एक से अधिक नामों से प्रसिद्धि मिलती है।

अधिमित्रक्षेत्री मंगल दशा

कुजस्य दाये त्वतिमित्रराशिं गतस्य भूपालकृतार्थभूमीः।
वस्त्रादि यज्ञादि विवाहदीक्षामुपैति देशान्तरलब्धभाग्यम्॥11॥

अतिमित्र क्षेत्री मंगल दशा में राजा की ओर से स्थान व भूमि या धन की प्राप्ति होती है। यज्ञ सम्पादन के अवसर, विवाद योग, उत्तम वस्त्राभूषण, देशान्तर में भाग्यवृद्धि होती है।

मित्रक्षेत्री मंगल दशा

मित्रर्क्षगस्यापि कुजस्य दाये मित्रत्वमायाति सपत्नसंघैः।
चौराग्निमान्द्याक्षिविषादभूमिः कृषेर्विनाशं कलिकोपदुःखम्॥12॥

मित्रक्षेत्री मंगल की दशा में शत्रुओं के साथ भी मित्रता हो जाती है। चोरभय, भूख की कमी, पाचन प्रक्रिया के विकार, कृषि की हानि, कलह, दुःख व क्रोध की अधिकता होती है।

समक्षेत्री मंगल दशा

धरासुतस्यापि समर्क्षगस्य गृहोपकार्यं त्वधनप्रमाणात्।
स्त्रीपुत्रभृत्यात्मसहोदराणां शत्रुत्वमाप्नोति नृपाग्निपीडाम्॥13॥

समक्षेत्री मंगल की दशा में विपत्तियाँ, धन की कमी, घरेलू खर्चों की आकस्मिकताएँ, परिजनों व परिवारजनों से विरोध व विभागीय परेशानियाँ आती हैं।

शत्रुक्षेत्री मंगलदशा

भूनन्दनस्यापरिराशिगस्य दशाविपाके समरे च पीडाम्।
शोकाग्निभूपालविषैः प्रमादं पीडातिकृच्छ्रादिगुदाक्षिरोगम्॥14॥

शत्रुक्षेत्री मंगल की दशा में युद्ध, विवाद या कलह से पीड़ा, शोक प्राप्ति, राजपक्ष या विषैले संक्रमण से कष्ट, गुदाद्वार या नेत्र में रोग पैदा होते हैं।

अतिशत्रुक्षेत्री मंगल दशा

धरासुते शत्रुगते तदानीं प्राप्नोति दाये कलहादिदुःखम्।
नरेशकोपस्वजनैर्विरोधं भूम्यर्थदारात्मजमित्ररोगम्॥15॥

अतिशत्रु की राशि में मंगल की दशा में कलह के कारण दुःख, राजप्रकोप, अपने लोगों से विरोध, जायदाद, स्थान, स्त्री, पुत्र व मित्र की ओर से तनाव या कष्ट होते हैं।

नीचयुक्त मंगल दशा

नीचग्रहेणापि समन्वितस्य धरासुतस्यातिमनोविकारम्।
प्रेष्यत्ववृत्तिं परकीयमन्नं स्त्रीपुत्रनाशं नृपवह्निचौरैः॥16॥

किसी नीचगत ग्रह के साथ स्थित मंगल की दशा में मनोविकार, उदासी, चाकरी से जीविका, पराये अन्न पर आश्रय, स्त्री पुत्रों तथा परिवारजनों की हानि, राजभय, अग्निभय व चोरभय सम्भव होता है।

उच्चग्रहयुक्त मंगलदशा

किंचित् सुखं भोजनवस्त्रपानं कृच्छ्रेण वृत्तिं नृपपूजनं च।
उच्चतान्वितेनापि समन्वितस्य भौमस्य दाये सुतदारपीडाम्॥17॥

किसी उच्च क्षेत्री ग्रह से युक्त मंगल की दशा में साधारण सुख, साधारण भोजन व वस्त्र अर्थात् साधारण रहन सहन, जीविका सम्बन्धी कष्ट, राज सम्मान, परिवारजनों को पीड़ा होती है।

उच्चनवांशगत मंगल दशा

उच्चांशसंयुक्तधराजकाले मनोभिलाषं विजयं सुखं च।
प्रचण्डदासीगमनं नृपस्य प्रधानतां याति सुगन्धपद्यम्॥18॥

उच्चनवांश में स्थित मंगल की दशा में मनोरथ पूर्ति, सुख, तेज तर्रार स्त्री कर्मचारी से मित्रता, राजा के यहाँ प्रधान पद, उत्तम कवित्व वाले पद्यों से प्रशंसा या सुगन्ध प्रयोग के योग या सुगन्धित पदार्थों के व्यवसाय से लाभ होता है।

नीचनवांशगत मंगल दशा

नीचांशभौमदाये नीचयुतेऽत्यन्तकर्मवैकल्यम्।
धनहानिभूपदण्डशिश्नोदरपरायणोऽशीलः ॥19॥

नीच नवांशगत या किसी नीचग्रह से युक्त मंगल की दशा में कार्य व्यवस्था में शिथिलता, प्रबन्ध की कमजोरी, धनहानि, राजदण्ड, चरित्र में सदाचार की कमी, परस्त्री सम्पर्क व स्वयं के सुख पर ही अधिकांश व्यय होता है।

उच्चराशि नीचनवांशगत मंगल दशा

उच्चस्थोऽपि धरासूनुर्नीचांशकसमन्वितः।
तत्पाके भ्रातृमरणं नृपवह्निविषाद्भयम्॥20॥

उच्चगत मंगल यदि नीच नवांश में स्थित हो तो उसकी दशा में भाई को विशेष कष्ट, राजपक्ष से भय, अग्नि या विष से कष्ट होता है।

नीचराशि उच्चनवांशगत मंगल दशा

भूमिपुत्रेऽपिनीचस्थः स्वोच्चभागसमन्वितः।
तत्पाके भूमिदारार्थपुत्रमित्रादिवर्धनम्॥21॥

नीचगत मंगल यदि उच्च नवांश में स्थित हो तो उसकी दशा में भूमि, स्त्री, धन, पुत्र व मित्र की वृद्धि होती है।

शुभयुक्त मंगलदशा

शुभान्विते भूमिसुते भवन्ति दाये सुखं देहकृशांगरोगम्।
भूपैर्विवादः समरेजयश्च विद्याविवादः परदेशवासः॥22॥

शुभ ग्रह से युक्त मंगल की दशा में अन्य सुख बरकरार रहते हैं, लेकिन शरीर में कमजोरी या रोग होता है। राजकीय विवादों में व कलह युद्ध आदि में जीत, विद्या की प्रशंसा तथा परदेशवास होने के योग होते हैं।

पापयुक्त मंगलदशा

पापान्वितस्यापि कुजस्य दाये पापानि कर्माणि करोति नित्यम्।
देवद्विजानां पशुदेवतानां सहोदराणां च कुमार्गवृत्त्या॥23॥

पापयुक्त मंगल की दशा में पापकर्मों में रति, देवताओं, ब्राह्मणों का अपमान तथा भाइयों व परिवार के पालन के लिए कुमार्ग से धनोपार्जन करना पड़ता है।

शुभदृष्ट मंगलदशा

शुभेक्षितधरासूनोर्दाये भूम्यर्थनाशनम्।
शुभगोचरसंयुक्ते त्वत्यन्तं शोभनं भवेत्॥24॥

शुभ दृष्ट मंगल की दशा में विशेष शुभ फल नहीं होते हैं। अपि च धन सम्पत्ति सम्बन्धी परेशानियाँ बढ़ती दिखती हैं। यदि उस दशा काल में मंगल गोचर में अच्छे स्थानों में, अच्छे ग्रहों से युत दृष्ट हो तो विशेष शुभ, केवल उस गोचर काल में होता है।

पापदृष्ट मंगलदशा

आरस्य पापग्रहवीक्षितस्य प्राप्तौ दशायां बहुदुःखकष्टम्।
जनैः परित्यक्त कलत्रमित्रो देशान्तरस्थः क्षितिपाल कोपात्॥25॥

पापदृष्ट मंगल की दशा में बहुत से दुःख व कष्ट होते हैं। अपने लोगों का सहयोग नहीं मिलता। स्त्री व मित्र भी विरोध करते हैं। भय के कारण किसी अन्य स्थान पर शरण लेनी पड़ती है।

भावानुसार मंगलदशा

केन्द्रगतभौमदाये चौरविषाभ्यामुपैति दुःखानि।
कलहो वासविरोधो यानं देशान्तरे भवति॥26॥

केन्द्र में स्थित मंगल की दशा में शरीर कष्ट, दुष्टजनों से भय, दुःखों की प्राप्ति, कलह, रहने के स्थान सम्बन्धी विरोध या विवाद, परदेशवास होता है, अर्थात् स्थान परिवर्तन होता है।

वित्तगभौमदशायां सम्प्राप्तौ तस्य वृद्धिमुपयाति।
स्वकुलादूयत्वं लभते नृपहतवित्तं मुखाक्षिरोगं च॥27॥

द्वितीय भावगत मंगल की दशा में धनवृद्धि होती है। मनुष्य अपने परिवारजनों व परिचितों की अपेक्षा अधिक उन्नति करता है। राजकीय मसलों में धन खर्च होता है तथा मुख या नेत्र में रोग होना सम्भव है।

भ्रातृस्थानगतश्च सौख्यफलदो भूनन्दनोऽरातिहा
धैर्यं वित्तसुतार्थदारसहजैः संगं नृपात्पूज्यताम्।

पुत्रस्थानगतस्य पुत्रमरणं बुद्धिभ्रमं जाड्यतां
शत्रुक्षेत्रगतस्य भूमिसहजैर्दुःखं महारोगभाक्॥28॥

तृतीय स्थान में मंगल स्थित हो तो उसकी दशा में सुख, उत्तम फल, शत्रुनाश, धीरता, धन, स्त्री पुत्रादि व भाइयों का सुख, राजमान्यता प्राप्त होती है।

पंचमस्थान में स्थित मंगल की दशा में बुद्धिविभ्रम, जड़ता, पुत्रशोक सम्भव है। षष्ठ स्थानगत मंगल की दशा में जायदाद व भाइयों के विषय में कष्ट, कलह विवाद तथा कोई रोग सम्भव होता है।

चतुर्थराशिस्थितभौमदाये स्थानच्युतिं बन्धुविरोधितां च।
चौराग्निपीडां नृपतेः सकाशाद्भीतिं परं दुर्गपदं प्रयाति॥29॥

अन्यत्र कहा गया है कि चतुर्थ स्थान में स्थित मंगल की दशा में स्थान परिवर्तन, बन्धुओं से विरोध विपत्तियों से पीड़ा, राजपक्ष से भय व कहीं पर छिपे तौर पर आश्रय लेना पड़ सकता है।

पंचमस्थ धरासूनोर्दाये कीर्तिर्विवेकता।
नेत्ररोगं त्वर्थनाशं दद्यात्कलहमेव वा ॥30॥

पंचम स्थानगत मंगल की दशा में कीर्ति व विवेक बुद्धि बढ़ती है। कदाचित् नेत्ररोग, धनहानि, या कहल सम्भव होते हैं।

षष्ठगभौमदशायां दधाति शोकं स्त्रिया विरोधं च।
राज्याच्च्युतिर्विपक्षाद्देशाद्देशान्तरं याति ॥31॥

षष्ठस्थान में खराब राशि में स्थित मंगल की दशा में शोक, स्त्रीजनों से विरोध, राज्य से च्युति, प्रबल विरोध के कारण स्थान त्याग करना पड़ता है।

कलत्रभावस्थकुजस्य दाये कलत्रहानिर्गुदमूलकृच्छ्रम्।
अगोचरस्थस्य च तादृशं फलं तदन्यथा चेत्फलमन्यथैव॥32॥

सप्तम स्थानगत मंगल की दशा में, यदि मंगल गोचर में अशुभ हो, तो स्त्रीहानि, गुप्तांगों में रोग, मूत्ररोग होते हैं। यदि शुभ गोचर में रहे तो उक्त फल नहीं होते हैं।

मरणपदस्थो भौमः करोति दुःखं महद्भयं पाके।
स्फोटकमन्नविरोधः स्थानविनाशं विदेशयानं च॥33॥

अष्टमस्थ मंगल की दशा में दुःख व कोई बड़ा भय उपस्थित होता है। शरीर पर फोड़े फुंसी, भोजन न पच पाना, स्थान हानि व स्थान परिवर्तन होते हैं।

नवमस्थ धरासूनोर्दशापाके पदच्युतिः।
गुरुणां च तथा कष्टं तपोविघ्नं महद्भयम्॥34॥

नवम स्थानगत मंगल की दशा में पदच्युति, परिवार के बुजुर्गों को कष्ट, तपस्या या पुण्य कार्यों में विघ्न, भय होता है।

कर्मस्थितस्यापि कुजस्य पाके कर्मादिवैकल्यमुपैति दुःखम्।
उद्योगभंगं त्वपकीर्तिमेति विद्यासुतस्त्रीधनमानहानिः॥35॥

दशम स्थान में स्थित मंगल की दशा में कार्यों में बाधाएँ, काम से आलस्य, दुःख, परिश्रम की असफलता, अपकीर्ति, मानहानि, ज्ञान, बुद्धि, स्त्री व धन की हानि होती है।

आयस्थभौमदाये करोति राज्यार्थभूपसन्मानम्।
समरे जयप्रतापं वागुपकारं मनोजवं कीर्तिम्॥36॥

एकादश स्थानगत मंगल की दशा में राज्यलाभ, धनलाभ, राजकीय सम्बन्ध या सम्मान, युद्ध में विजय, प्रताप वृद्धि, उत्तम सहयोग के वचन की प्राप्ति, काम वृद्धि, कीर्ति वृद्धि होती है।

व्ययगतभौमदशायां प्राप्तौ धनहृतिं नृपाद्भीतिम्।
स्थानसुतदारनाशं भ्रातॄणां विदेशवासं च॥37॥

द्वादश भावगत मंगल की दशा में धनहानि, राजपक्ष से भय, स्थानहानि, परिवार में कष्ट, भाइयों को कष्ट, विदेशवास आदि फल होते हैं।

स्थान बली मंगल दशा

भौमस्य संस्थानबलान्वितस्य दशाविपाकेऽर्थकलत्रसौख्यम्।
स्थानादिलाभं सुखकीर्तिशौर्यमुद्योगसिद्धिस्त्वनयादुपैति॥38॥

स्थान बली मंगल की दशा में धन, स्त्री व परिवार का सुख, स्थान लाभ, पद लाभ, मन में शक्ति, सुख, कीर्ति, शूरता वृद्धि, चतुराई से अपने कार्यों में सिद्धि मिलती है।

स्थानबलविहीनस्तु कुरुते स्वपदच्युतिम्।
कुजः कुसीदवृत्त्या च करोति ध्रुवजीवनम्॥39॥

स्थानबलहीन मंगल की दशा में मनुष्य को अपने पद सम्बन्धी परेशानी होती है। ब्याज की आमदनी से जीवन में स्थिरता रहती है।

दिग्बली मंगल दशा

दिग्वीर्ययुक्तस्य कुजस्य दाये नृपात् सुलब्धार्थ ऊरुप्रातपः।
गोभूमिकृष्यम्बरयानलाभः दिगन्तराक्रान्तयशः प्रतापः॥40॥

दिग्बली मंगल की दशा में राजपक्ष से धनलाभ, प्रताप, वृद्धि, गोधन, भूमि, कृषि, वाहनादि का लाभ, सब तरफ यश का प्रसार होता है।

काल बली मंगल दशा

कालवीर्ययुतभौमदशायां काम्यलब्धिरतिसौख्यमुपैति।
पट्टवस्त्रमणिमौक्तिकलाभं चित्रवस्त्रकृषिगोगजसौख्यम्॥41॥

काल बली मंगल की दशा में मनोरथ प्राप्ति, बहुत सुख, उत्तम वस्त्र, आभूषणों

की प्राप्ति, कृषि से लाभ, गोधन वाहन का सुख होता है।

चेष्टा बली मंगलदशा

चेष्टाबलाढ्यः प्रकरोति भौमः नरं प्रचेष्टं सततं कुचेष्टम्।
हितानुकूलं सुहृदां सतां च नैपुण्ययुक्तं सकलक्रियासु॥42॥

चेष्टाबली मंगल की दशा में मनुष्य अत्यधिक क्रियाशील, ऊर्जावान्, तीव्रता से काम करने वाला, कार्यसम्पादन में सदसत् मार्ग का कम विवेक करने वाला, मित्रों व सज्जनों के अनुकूल आचरण करने वाला, सभी कार्यों में कुशल होता है।

निसर्ग बली मंगल दशा

निसर्गवीर्यान्वितभौमदाये कृपाकटाक्षेण महीपतीनाम्।
समस्तभाग्यात्मजमित्रबन्धुगोभूमिभूषाम्बरदेहसौख्यम् ॥43॥

निसर्ग बली मंगल की दशा में राजाओं व समर्थ पुरुषों की कृपा से भाग्यवृद्धि, कामों में सफलता, पुत्र, मित्र सहायकों का योग, धन-सम्पत्ति की वृद्धि व शरीर सुख होता है।

वक्री मंगल दशा

वक्रान्वितस्य भौमस्य दशाकाले महद्भयम्।
चौराग्निसर्पपीडा च वनवासः पदच्युतिः॥44॥

वक्री मंगल की दशा में बड़ी विपत्ति, भय, चोर, अग्नि, सर्प से पीड़ा, वनवास जैसे दुःख तथा पदच्युति होती है।

षष्ट्यंशानुसार मंगल दशा

सौम्यषष्ट्यंशयुक्तस्य भौमदाये शुभं भवेत्।
विवाहदीक्षा यज्ञं च सर्वेषामुपकारकम्॥45॥
क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्तभौमदायेऽतिपीडनम् ।
कारागृहप्रवेशश्च समस्तविभवक्षयम्॥46॥

शुभ षष्ट्यंशगत मंगल की दशा में बहुत से शुभकार्य सम्पन्न होते हैं। विवाहादि मंगल कृत्य व यज्ञ तथा जनोपकारी कृत्य होते हैं।

क्रूरषष्ट्यंश गत मंगल की दशा में बहुत तरह की पीड़ा, सजा, सब तरह के सुख साधनों का क्षय होता है।

पारावतादिसंयुक्तभौमदाये महत्सुखम्।
भूम्यर्थदारसम्पत्तिधनवाहनभोजनम् ॥47॥

परावतादि अच्छे अंशों में गए मंगल की दशा में बहुत सुख, भूमि लाभ, धन

लाभ, परिवार का सुख, सम्पत्ति-वृद्धि, उत्तम वैभव होता है।

क्रूरद्रेष्काणगत मंगल दशा

क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तकुजदाये मनोव्यथा।
निगडं विषभीतिं च पाशबन्धनमेव च॥48॥

क्रूर द्रेष्काण गत मंगल की दशा में मानसिक कष्ट, हथकड़ी बेड़ियों का बन्धन, विषसंक्रमण का भय, कहीं पर फंस जाने पर बलपूर्वक रोके जाने के योग होते हैं।

राश्यनुसार मंगल दशा

मेषोपयाते कुसुते भवन्ति तद्दायकाले बहुमंगलानि।
सुसन्ततिः साहसमग्निबाधा नानाविधारातिसमुद्भवः स्यात्॥49॥

मंगल मेष में हो तो उसकी दशा में बहुत से मंगल कार्य होते हैं। अच्छी सन्तान का जन्म या सन्तान की तरक्की, साहस वृद्धि, अग्निभय, बहुत से व्यक्तियों का द्वेषभाजन होना पड़ता है।

वृषस्थितस्यावनिनन्दनस्य पाकप्रवेशे पुरुषः सहर्षः।
अनल्पजल्पो गुरुदेवभक्तः परोपकारादरतासमेतः॥50॥

वृषराशि गत मंगल की दशा में मनुष्य को बहुत-सी खुश खबरियाँ प्राप्त होती हैं। बहुत बोलने की प्रवृत्ति पैदा होती है तथा गुरुओं व देवताओं के प्रति भक्ति बढ़ती है। परोपकार की भावना तथा आदर की प्राप्ति होती है।

युग्मस्थितस्योर्वीतनयस्यपाके प्रवासशीलोऽनिलपित्तकोपः।
बहुव्ययः स्यात्स्वजनैर्विरोधो नरः कलाज्ञो बधिरो विधिज्ञः॥51॥

मिथुन राशि गत मंगल की दशा में मनुष्य को प्रायः घर से बाहर रहना पड़ता है। वायु व पित्त का प्रकोप बढ़ता है, व्यय अधिक होता है। अपने ही लोग विरोधी होते हैं। कलाओं में रुचि या काम में विशेष कुशलता होती है। कान में विकार, नीति या कानून का ज्ञान होता है।

वृथाटनत्वं विगताधिकत्वं नीचत्वमुच्चैर्मनसो विषादः।
फलोन्मुखं कार्यमतीव दूरे भौमस्य नीचांशगतस्य पाके॥52॥

नीचगत मंगल यदि नवांश में भी नीच में ही हो तो व्यर्थ की भागदौड़ अधिक हानि, लाभ कम, मन में हीन भावना, मन में बड़ा विषाद, खिन्नता, कामों की सफलता में बाधा होती है।

संत्यक्तनीचांशकुजस्य पाके ख्यातः पुमान् सर्वगुणोपपन्नः।
चतुष्पदाढ्यो बलवानकस्मात् प्रजायते गुह्यरुजाभिभूतः॥53॥

कर्कराशि में स्थित मंगल यदि नीच नवांश में न हो तो उसकी दशा में मनुष्य

को प्रसिद्धि गुणवृद्धि, चौपाये धन की वृद्धि, अचानक गुप्त रोग से पीड़ा होती है।

सिंहाश्रितक्ष्मातनयस्य पाके नूनं भवेन्नायकता बहूनाम्।
कान्तासुताद्यैश्च वियोगतापो बाधाभवेच्छस्त्रहुताशजाता॥54॥

सिंहगत मंगल की दशा में बहुत से लोगों का नेतृत्व प्राप्त होता है। स्त्री पुत्रादि से वियोग का सन्ताप तथा शस्त्र या अग्नि से भय होता है।

कन्यानुयातावनिनन्दनस्य पाके सदाचारपरो नरः स्यात्।
यज्ञः क्रियायामपि सादरत्वं दारात्मजोर्वीधनधान्यसौख्यम्॥55॥

कन्या में स्थित मंगल की दशा में सदाचार की भावना का उदय, धार्मिक क्रियाओं के प्रति आदर, स्त्री, पुत्र धन-सम्पत्ति का सुख होता है।

तुलागते भूमिसुते नराणां स्याद्द्रव्यभार्यावियुतिस्तदानीम्।
चतुष्पदाभावकलिप्रसंगैर्हतोत्सवो वै विकलांगयष्टिः॥56॥

तुलाराशि में स्थित मंगल की दशा में धन व परिवार से वियोग, चौपाये धन की हानि, कलह के कारण रंग में भंग तथा शरीर में विकलता होती है।

पुत्रान्भवेद् वृश्चिकराशिगस्य भौमस्य पाके कृषिकर्मकर्ता।
सुसंग्रहोजात मनः प्रवृत्तिर्द्वेषी बहूनामतिजल्पकश्च॥57॥

वृश्चिक राशिगत मंगल की दशा में कृषि कार्य या स्वरोजगार का आरम्भ, संग्रहशीलता, मन में उत्साह, बहुत से लोगों का ईर्ष्यापात्र तथा बहुत बोलने का अवगुण आ जाता है।

धनुर्धरस्थस्य धरासुतस्य पाकप्रवेशे द्विजदेवभक्तिः।
नरो नरेन्द्राप्तमनोरथः स्यात् कलिप्रसंगोपहतोत्सवश्च॥58॥

धनुराशि गत मंगल की दशा में द्विजों व देवताओं के प्रति भक्ति, राजकीय विभाग से उत्तम सहयोग, कलह के कारण बनते कामों में बाधा उपस्थित होती है।

वक्रस्य नक्रोपगतस्य पाके राज्योपलब्धिः स्वकुलानुमानात्।
युद्धे विवादे विजयो नितान्तं सद्रत्नचामीकरवाजिसौख्यम्॥59॥

मकर राशि गत मंगल के पाक काल में अपने स्तरानुरूप राज्य लाभ, युद्ध व विवाद में विजय, उत्तम रत्न, वाहन व सुवर्ण की प्राप्ति होती है।

उच्चांशयुक्तस्य महीसुतस्य पाके प्रयत्नात्खलु कार्यसिद्धिः।
शस्त्राद्भवेच्छवापदतोऽपि भीतिः सन्तोषजाल्पत्वमिहाप्रयासः॥60॥

उच्चराशि में उच्चनवांश से आगे बढ़ा हुआ मंगल अपनी दशा में खूब कोशिशों से कामों में सफलता देता है। शस्त्र या पशु से भय, सन्तोष के कारण प्रयत्नों व महत्त्वाकांक्षाओं का परिसीमन होता है।

कुजस्य कुम्भोपगतस्य पाके दुर्मार्गताचारविहीनता च।
दारिद्र्यदुःखामयजातपीडा व्ययामयत्वं हि विदेशवासः॥61॥

कुम्भगत मंगल की दशा में कुमार्गगमन, आचार विहीनता, दरिद्रता, दुःख, रोग पीड़ा तथा अधिक व्यय के साथ परदेशवास भी होता है।

मीनोपयातावनिनन्दनस्य दशाप्रवेशे हि सुतादिचिन्ता।
व्ययामयत्वं च ऋणोपलब्धिर्विचर्चिकादद्रुविदेशवासः॥62॥

मीनगत मंगल की दशा में परिवारजनों, पुत्रादिकों की चिन्ता, अधिक खर्च की चिन्ता, ऋणवृद्धि, शरीर में दाद आदि त्वचारोग तथा परदेशवास होता है।

मंगल दशा के विशेष नियम

संग्रामसम्प्राप्तजयाधिशाली बलान्वितोऽत्यन्तगुणाभिरामः।
वर्गोत्तमांशस्थितभूसुतस्य पाके च नानाविधवस्तुलब्धिः॥63॥

वर्गोत्तम नवांश में स्थित मंगल की दशा में संग्राम में विजय, शक्ति वृद्धि, अनेक गुणों का उदय, अनेक मार्गों से धनलाभ होता है।

मूलत्रिकोणोच्चगृहस्थितस्य कुजस्य कर्मायगतस्य पाके।
राज्योपलब्धिर्विजयो रिपुभ्य सद्वाहनालंकरणादिसौख्यम्॥64॥

मेष या मकर राशि का मंगल यदि दशम या एकादश स्थान में हो तो उसकी दशा में राज्यलाभ, शत्रुओं पर विजय, उत्तम वाहनों व अलंकारों की प्राप्ति होती है।

परमोच्चगते भौमे स्वोच्चे मूलत्रिकोणगे।
स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा॥65॥
सम्पूर्णबलसंयुक्ते शुभदृष्टे शुभांशके।
राज्यलाभो भूमिलाभो धनधान्यादि लाभकृत्॥66॥
आधिक्याद्राजसम्मानं वाहनाम्बरभूषणम्।
विदेशे स्थानलाभश्च सोदराणां सुखं भवेत्॥67॥

परमोच्च, स्वोच्च, मूलत्रिकोण या स्वक्षेत्र में स्थित मंगल, 1.4.7.10.5.9.2.11 भावों में कहीं हो।

अथवा इन्हीं भावों में शुभयुक्त दृष्ट हो या अच्छी मात्रा में बल मिला हो। या उत्तम नवांश में हो तो उसकी दशा में राज्यलाभ, भूमिलाभ, धनधान्यवृद्धि, राजसम्मान, वाहनों व वस्त्रों का उत्तम सुख, विदेश से सम्बन्ध तथा भाइयों का सुख होता है।

केन्द्रस्थिते यदा भौमे दुश्चिक्ये बलसंयुते।
पराक्रमाद् वित्तलाभो युद्धे शत्रुजयो भवेत्॥68॥
कलत्रपुत्रविभवं राजसम्मानमेव च।
दशादौ सुखमाप्नोति दशान्ते कष्टमादिशेत्॥69॥

केन्द्र या तृतीय स्थान में बलवान् मंगल हो तो परिश्रम व पराक्रम से धनलाभ

होता है। युद्ध में विजय होती है।

स्त्री-पुत्रों का वैभव, राज-सम्मान भी होता है। परन्तु ऐसा मंगल दशान्त में कष्ट देता है।

नीचारिदुःस्थगे भौमे बलाबलविवर्जिते।
पापयुक्ते पापदृष्टे सा दशा नेष्टदायिका॥70॥

नीचगत, अस्तंगत, शत्रुक्षेत्री मंगल यदि दुःस्थानों में हो और बलहीन हो या पापयुक्त दृष्ट हो तो उसकी दशा में कष्ट होते हैं। इष्ट वस्तुओं की प्राप्ति में बाधाएँ होती हैं।

ताराग्रहों का विशेष नियम

स्वोच्चस्वराश्यादिनवांशसंस्था विलोमगाश्चास्तगता यदि स्युः।
ताराग्रहाः स्वीयफलं विमिश्रं यच्छन्ति नूनं निजपाककाले॥71॥

उच्च, स्वराश्यादि या वैसे ही नवांशों में स्थित मंगलादि शनि पर्यन्त 5 ग्रह यदि वक्री या अस्त हों तो अपना पूर्वोक्त फल मिश्रित रूप से देते हैं।

वक्रानुवक्रं तरणेश्च पूर्वापरं च षट्कं द्वितयं समीक्ष्य।
ताराग्रहाणामपि नीचतुंगे विचार्य सम्यक् फलमत्र वाच्यम्॥72॥

सभी ताराग्रहों की वक्र मार्ग गति, सूर्य से आगे या पीछे स्थिति और नीचोच्च स्थिति का विचार कर फल की उत्कटता कहें। वक्री, नीच, सूर्य के पीछे 6 राशियों स्थित ताराग्रह अपना शुभ फल कम कर लेते हैं।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
मंगलदशाध्यायः षष्ठः॥6॥
॥आदित श्लोकाः 526॥

7
॥ राहुदशाफलाध्यायः ॥

सामान्यतः राहुदशा फल

सौख्यादि वित्तस्थितिनाशनं च कलत्रपुत्रादिवियोगदुःखम्।
अतीव रोगं परदेशवासं विवादबुद्धिं कुरुते फणीशः॥1॥

जातक पारिजात में कहा गया है कि राहु की दशा में सामान्यतः सुख में कमी, धन व शान्ति का ह्रास, स्त्रीपुत्रादि के वियोग से उत्पन्न दुःख, रोग, परदेशवास व वृथा विवाद होने सम्भावित हैं।

दरिद्रतां मानससौख्यहानिं सन्तोषहीनत्वमतीवरोगम्।
सन्तापमर्थक्षयवैरिवादो महाऽऽपदं राहुदशा विधत्ते॥2॥

चन्द्राभरण जातक में बताया गया है कि राहु की दशा में दरिद्रता, मन में असन्तोष, रोगोत्पत्ति, सन्ताप, धनहानि, कलह व कोई बड़ी मुसीबत सम्भावित होती है।

राहु केतु का राशीशत्व

राहो वृषोच्चं केतोस्तु वृश्चिकं तुंगसंज्ञितम्।
मूलत्रिकोणं कुम्भं च क्रियं मित्रभमुच्यते॥3॥
एतत्सप्तमराशिस्तु केतोर्मूलत्रिकोणभम्।
षष्ठाष्टरिःफगोराहुस्तद्दाये मृत्युदो भवेत्॥4॥

राहु वृष में व केतु वृश्चिक में उच्चगत होता है। राहु का कुम्भ मूल त्रिकोण, मेष मित्र क्षेत्र है। केतु का सिंह में मूलत्रिकोण होता है। 6.8.12 स्थानों में स्थित राहु अपनी दशान्तर्दशा में मृत्यु दे सकता है।

उच्चस्थः सैंहिकेयस्तु तत्पाके सुखदो भवेत्।
राज्यं करोति मित्राप्तिं धनधान्याभिवर्धनम्॥5॥

उच्चगत राहु की दशा में सुख, राज्य प्राप्ति, मित्रों का सहयोग, धन-धान्य की वृद्धि होती है।

नीचस्थितस्य दाये तु चौराग्निर्नृपभीतिदः।
उद्बन्धनं विषाद्भीतिं कुरुते सिंहिकासुत;॥6॥

नीचगत अर्थात् वृश्चिकगत राहु की दशा में चोरों, अग्नि व राजपक्ष से भय सम्भव है। गला घुटने, दम घुटने से मृत्यु, विष संक्रमण भी होता है। हमारे विचार से 6.8.12 भावगत होने पर, कारक ग्रहों से रहित रहने पर राहु ऐसा फल दे सकता है।

कुलीरगोमेषयुतस्य राहोर्दशाविपाके धनलाभमेति।
विद्याविनोदं नृपमाननं च कलत्रभृत्यात्मसुखं प्रयाति॥7॥

1.2.4 राशिगत राहु यदि अच्छे भावों में स्थित हो तो उसकी दशा में धन लाभ, विद्या का सुख, राजमान, स्त्री-पुत्रों व अपने शरीर का सुख होता है।

पाथोनमीनाश्वयुतस्यराहोर्दशाविपाके सुतदारलाभः।
देशाधिपत्यं नरवाहनं च दशावसाने सकलं विनष्टम्॥8॥

6.9.12 राशियों में स्थित राहु की दशा में स्त्री पुत्रादि का सुख, राजयोग, वाहनों व सेवकों का सुख होता है। लेकिन दशा के अन्त में ये सब सुख प्रायः नष्ट हो जाते हैं या इनमें विघ्न पैदा होता है।

मृगपतिवृषकन्याकर्कटस्थस्य राहो-
र्भवति च परिपाके राजतुल्यो नृपो वा।
गजतुरगचमूपः सर्वजीवोपकारी
बहुधनसुखशीलः पुत्रदारानुरक्तः॥9॥

2.4.5.6 राशियों में स्थित राहु की दशा में राजतुल्य सुख होता है या वास्तव में राजपद की प्राप्ति होती है। हाथी घोड़ों से युक्त सेना का अधिकर अथवा आधुनिक सन्दर्भ में बहुत से अनुयायियों व समर्थकों का सहयोग, सब का भला करने की सामर्थ्य, बहुत धन, सुख व परिवार में शान्ति रहती है।

पापक्षेत्री राहुदशा

पापर्क्षसंयुक्तफणीन्दुदाये देहस्य कार्श्यं स्वकुलस्य नाशम्।
भूपाद्भयं वंचनतोऽरिभीतिः प्रमेहकासक्षयमूत्रकृच्छ्रम्॥10॥

पूर्वोक्त राशियों के अतिरिक्त किसी पापराशि में स्थित राहु की दशा में शरीर में कमजोरी, अपने कुल में विघ्न बाधाएँ, राजपक्ष से हानि, धोखाधड़ी, शत्रुभय, मधुमेह, खाँसी, टी.बी. या कमजोरी लाने वाले किसी रोग से पीड़ा या मूत्रदोष पैदा होते हैं।

शुभदृष्ट राहुदशा

शुभदृष्टियुतो राहुः करोति सफल क्रियाम्।
राजमानमथोऽर्थाप्तिं बन्धूनां मरणं ध्रुवम्॥11॥

यदि पापक्षेत्री या पापयुत राहु पर शुभ फलदायक ग्रहों की दृष्टि भी हो तो व्यक्ति को कामों में सफलता, राजकीय मान-सम्मान, धनलाभ होता है, लेकिन उसके दशा काल में मित्रों व परिजनों की मृत्यु सम्भव होती है।

पापदृष्ट राहु दशा

पापदृष्टियुतो राहुः कर्मनाशं च पीडनम्।
उद्योगभंगं देहार्तिं चौराग्निनृपजां व्यथाम्॥12॥

पापदृष्ट राहु की दशा में कार्य में बाधा, पीड़ा, परिश्रम की असफलता, शरीर कष्ट, चौरादि से या राजकीय विभागों से परेशानियाँ होती हैं।

उच्च युक्त राहु दशा

उच्चग्रहयुतो राहुः राज्यलाभं करोति च।
स्त्रीपुत्रधनसम्पत्तिवस्त्राभरणलेपनम् ॥13॥

उच्चगत किसी ग्रह के साथ स्थित राहु की दशा में राज्यलाभ, स्त्री-पुत्रों का सुख, सम्पत्ति सुख, अनेक भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

नीचान्वित राहुदशा

नीचग्रहयुतो राहुर्नीचवृत्त्यानुजीवनम्।
कुभोजनं कुदारं च कुपुत्रं लभते तदा॥14॥

नीचग्रह के साथ स्थित राहु की दशा में घटिया कामों से या स्तरविहीन कार्यों से जीविका कमाना, साधारण भोजन, अयोग्य स्त्री व कुपुत्र से परेशानियाँ होती हैं।

भावानुसार राहु दशा

लग्नगतराहुदाये बुद्धिविहीनं विषाग्निशस्त्राद्यैः।
बन्धुविनाशं लभते दुःखार्तिं च पराजयं समरे॥15॥

पूर्वोक्त शुभ राशियों के अतिरिक्त किसी राशि में लग्नगत राहु हो तो उसकी दशा में बुद्धि की कमजोरी, शरीर में रोग या चोट, बन्धुओं व सहायकों में कमी, दुःख तथा प्रायः पराजय का सामना करना पड़ता है।

राहोर्दशायां धनराशिगस्य राज्यं च वित्तं हरते विशेषात्।
कुभोजनं कुत्सितराजसेवां मनोविकारं त्वनृतप्रकोपम्॥16॥

द्वितीय भावगत राहु की दशा में पदप्रतिष्ठा में कमी, धनहानि, कुसमय भोजन, घटिया अफसर या स्वामी के अधीन सेवा के योग, मन में विकार या बिना कारण ही क्रोध होता रहता है या अकारण ही व्यक्ति बड़े लोगों का कोपभाजन बनता है।

तृतीय राशिस्थितराहुकाले पुत्रार्थदारात्मजसोदराणाम्।
सुखं कृषेर्बाधनमाधिपत्यं विदेशयानं नरपालपूजाम्॥17॥

तृतीयस्थ राहु की दशा में स्त्री, पुत्र, धन, बन्धु-बान्धवों का सुख, कृषि कार्य में बाधा, अधिकारप्राप्ति, विदेशयात्रा, बड़े लोगों द्वारा आदर सत्कार प्राप्त होता है।

चतुर्थराशिस्थितराहुकाले मातुर्विनाशं त्वथवातदीयम्।
क्षेत्रार्थनाशं नृपतेः प्रकोपं भार्यादिपातित्यमनेकदुःखम्॥18॥

चतुर्थ भाव में स्थित राहु की दशा में माता को कष्ट या स्वयं को कष्ट, जायदाद की हानि या क्रय-विक्रय में नुकसान, राजकीय परेशानियाँ, अपनी पत्नी की अयोग्यता से उत्पन्न दुःख होते हैं।

चौराग्निबन्धार्तिमनोविकारा दारात्मजानामपि रोगपीडा।
चतुर्थराशिस्थितराहुकाले प्रभग्नसंसारकलत्रपुत्रम्॥19॥

चतुर्थस्थ राहु की दशा में चोर या अग्नि से पीड़ा, बन्धन योग, स्त्री पुत्रों को रोगादि से कष्ट, सारा संसार ही असार लगे, ऐसी स्थिति पैदा होती है।

बुद्धिभ्रमं भोजनसौख्यनाशं विद्याविवादं कलहं च दुःखम्।
नरेन्द्रकोपं स्वसुतस्य नाशं राहोः सुतस्थस्य दशाविपाके॥20॥

पंचमस्थ राहु की दशा में बुद्धिमत्ता में कमी, खाने-पीने में बाधा, विद्यामार्ग में विवादजन्य बाधा, कलह, दुःख, राजकीय प्रकोप, पुत्र हानि आदि फल होते हैं।

यहाँ ध्यातव्य है कि केन्द्र त्रिकोण में पूर्वोक्त 1.2.3.4.6.9.12 राशियों में स्थित राहु या किसी शुभ भावेश के साथ स्थित राहु शुभ फल देता है। सर्वत्र पूर्वोक्त शुभ राशियों के अलावा राशि में स्थित राहु का ही यह अशुभ फल समझें।

दशाविपाके त्वरिराशिगस्य चौराग्निभूपैर्भयमाप्तनाशः।
प्रमेहगुल्मक्षयपित्तरोगं त्वग्दोषरोगं त्वथवा मृतिश्च॥21॥

षष्ठस्थ राहु की दशा में अशुभ राशिगत होने पर चोराग्नि व राजा से कष्ट तथा संचित धन का नाश, मधुमेह, भीतरी फोड़ा, रसौली, पित्त रोग या त्वचाविकार एवं मृत्यु भी सम्भव होती है।

कलत्रराशिस्थित राहुदाये कलत्रनाशं समुपैति शीघ्रम्।
विदेशयानं कृषिभाग्यहानिं सर्पाद्भयं मृत्युसुतार्थनाशम्॥22॥

सप्तमस्थ राहु की दशा में स्त्रीहानि, विदेशयात्रा, कृषि का नाश, भाग्य की कमजोरी, सर्पादि जन्तुओं से भय, धन, पुत्र की हानि तथा मृत्यु हो सकती है।

राहोर्दशायां निधनस्थितस्य यमालयं याति सुतार्थनाशम्।
चौराग्निभूपैः स्वकुलोद्भवैश्च भयं मृगैर्वा वनवासदुःखम्॥23॥

अष्टम भावगत राहु की दशा में स्वयं की मृत्यु, पुत्र व धन की हानि, अपने लोगों (परिवारजनों) या अन्य के कारण विशेष कष्ट, पशु से चोट, भय तथा घर से बाहर रहने की मजबूरी होती है।

राहोर्दशायां नवमस्थितस्य पित्रोर्विनाशं लभते मनुष्यः।
विदेशयानं गुरुबन्धुनाशं स्नानं समुद्रस्य सुतार्थनाशम्॥24॥

नवम भावगत राहु की दशा में माता-पिता का वियोग, विदेशयात्रा, बुजुर्गों व बन्धुओं की हानि, समुद्री क्षेत्रों की यात्रा तथा परिवार में शोक होता है।

मानस्थितस्यापि दशाविपाके राहोः प्रवृत्तिं लभते मनुष्यः।
पुराणधर्मश्रवणादिभिश्च गांगेयतोयैरपि शुद्धदेहः॥25॥
पापक्षेत्रगतो राहुः कर्मस्थः पापसंयुतः।
तद्दशान्तर्दशाकले पुत्रदाराग्निपीडनम्॥26॥

शुभ राशि में दशमस्थ राहु की दशा में गंगा स्नान, तीर्थ यात्रा, पुराण कथा श्रवण में प्रवृत्ति आदि होती है।

पापराशिगत दशमस्थ राहु की दशा में या पापयुक्त राहु की दशा में परिवार में विशेष पीड़ा होती है।

आयराशिगतो राहुस्तत्पाके नृपमाननम्।
धनाप्तिं दारलाभं च गृहक्षेत्रादि सम्पदः॥27॥
व्ययगतराशिदशायां देशभ्रंशं मनोरुजं कुरुते।
विच्छिन्नदारपुत्रं कृषिपशुधनधान्यसम्पदां नाशम्॥28॥

एकादश स्थानगत राहु की दशा में राज-सम्मान, स्त्री सुख, जायदाद वृद्धि होती है। द्वादश गत राहु की दशा में स्थान परिवर्तन, मनोविकार, स्त्री पुत्र, धन-धान्य सम्पत्ति की हानि होती है।

राहु का विशेष फल

सौम्यर्क्षगश्चेच्छुभमेव नूनं पापर्क्षगश्चेन्न तथा फलं स्यात्।
शुभैर्युतश्चापि तथा विधत्ते राहोर्दशायां सविशेषमेतत् ॥29॥

शुभ राशि (पूर्वोक्त उच्चादि राशि) व शुभ ग्रहों से युक्त राहु शुभ फल करता है तथा पापयुक्त या पाप राशिगत हो तो अशुभ फल होता है, यह बात राहु के विषय में विशेष होती है।

राहूत्कृष्टदशा करोति सकलं श्रेयो महद्राज्यकृद्
धर्मार्थागमपुण्यतीर्थचलनं ज्ञानप्रभावोच्छ्रयान्।
राहोः पापदशाऽहिभीति विषभीः सर्वांगरोगार्तिकृत्।
शत्रूत्थं च विरोधकृद्द्रुपतनारातिप्रपीडोदयान्॥30॥

शुभ भावगत, शुभ राशिगत व शुभ ग्रह युक्त राहु की दशा में सब तरह से कल्याण, राज्यलाभ, धर्मवृद्धि, तीर्थयात्राएँ, विद्या या बुद्धि का प्रभाव तथा उन्नति होती है।

अशुभ भावगत, पाप राशिगत व पाप ग्रह युक्त राहु दशा में सर्पभय, विषभय, शरीरपीड़ा, शत्रुभय, वृक्षादि से पतन के योग होते हैं।

1.2.3.4.6.8.9.12 राशियाँ राहु की शुभ राशियाँ हैं तथा अन्य राशियाँ 5.7.10 अशुभ हैं। कुम्भ मध्यम राशि है, ऐसा अन्यत्र कहा गया है। यही मत अधिक उपयुक्त है।

शुभ राहु दशा में विशेष

मित्रप्रभुवशादिष्टं वाहनं पुत्रसम्भवम्।
नूतनगृहनिर्माणं धर्मचिन्तामहोत्सवः॥31॥
विदेशे राजसम्मानं वस्त्रालंकारभूषणम्।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे योगकारकसंयुते॥32॥
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा दुश्चिक्ये शुभराशिगे।
महाराजप्रसादेन सर्वसम्पत्सुखावहम्॥33॥
यवनप्रभुसम्मानं गृहे कल्याणसम्भवम्।

शुभ युक्त, शुभग्रह भावगत, विशेषतया केन्द्र त्रिकोणगत, योगकारक से युक्त, 3.6.11 में पूर्वोक्त शुभ राशि में हो तो राहु की दशा में—

सहयोगी राजा, मन्त्री या अफसर की सहायता से कार्यसिद्धि, वाहनसुख, पुत्रसुख, नूतन जायदाद की प्राप्ति, धार्मिक अभिरुचि, उत्सव का माहौल; विदेश में मानवृद्धि, उपाधि या मानपत्र प्राप्ति, वस्त्रालंकार की प्राप्ति, सब तरह की सुख-सम्पत्ति, यवन राजा से सम्मान तथा घर में मंगल कार्य होते हैं।

रन्ध्रे वा व्ययगे राहौ तद्दाये कष्टदो भवेत ॥34॥
पापग्रहेणसंयुक्ते मारकग्रहसंयुते।
नीचग्रहयुते वापि स्थानभ्रंशं मनोरुजम्॥35॥
विनाशो दारपुत्राणां कुत्सितान्नस्य भोजनम्।
दशादौ देहपीडा च धनधान्य परिच्युतिः॥36॥
दशामध्येतु सौख्यं स्यात्स्वदेशे धनलाभकृत्।
दशान्ते कष्टमाप्नोति स्थानभ्रंशं मनोरुजम्॥37॥

8.12 भावगत राहु की दशा में कष्ट होता है।

पापयुक्त या मारक ग्रहयुक्त या नीचग्रह के साथ स्थित राहु की दशा में अवनति, स्थान परिवर्तन, मानसिक विकार होते हैं। साथ ही खराब भोजन, परिवार में शोक भी सम्भव है।

शुभ राहु की दशा में, शुरू में शरीर कष्ट, धन हानि। बीच में थोड़ा सुख व अपने स्थान पर ही लाभ, दशान्त में कष्ट व मानसिक पीड़ा होती है।

वृश्चिके मकरे जन्म नृणां राहुर्मृतिप्रदः।
तथाविधफणीन्द्रस्य दशादौ शोभनं भवेत्॥38॥
शुभयुक्ते च दृष्टे च कीर्तिविद्याधनान्वितम्।
यथा कालं तथा राहुर्मृत्युं चापि प्रयच्छति॥39॥

मकर व वृश्चिक लग्न वाले लोगों को सम्भव होने पर राहु मारक भी हो जाता है। मारक होने पर भी राहु की दशा का आरम्भ शुभ होता है। यदि वैसा राहु शुभ युक्त दृष्ट भी हो तो कीर्ति, विद्या व धन भी देता है और समय आने पर मृत्यु फल भी देता है।

गुरुस्थाने फणीन्द्रस्य दाये धनमवाप्नुयात्।
लक्ष्मीं कीर्तिं च वृद्धिं च कलत्रस्थानवाहनम्॥40॥

9.12 राशिगत राहु की दशा में धन, लक्ष्मी, कीर्ति, उन्नति, स्त्री सुख, पदप्राप्ति व वाहन सुख होता है।

भाग्याधिपेन संयुक्ते शत्रुनाशो जयं भवेत्।
उद्योगसुतसन्मानं दानहोमादिसंग्रहम्॥41॥
केन्द्रत्रिकोणगे राहौ सत्पुत्रधनसम्भवम्।
दशादौ दुःखमाप्नोति दशामध्ये महत्सुखम्॥42॥
दशान्ते स्थाननाशं च पितृनाशं पदच्युतिम्।
यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेशसंयुतौ।
तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ॥43॥
यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवसेतां तमोग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणाढ्यौ भवेतां योगकारकौ॥44॥

नवमेश व राहु का योग हो तो राहु की दशा में शत्रुनाश, विजय की सफलता, पुत्रसुख, सज्जनों द्वारा मान्यता, दान होमादि का पुण्य होता है।

केन्द्र या त्रिकोण में स्थित राहु की दशा में पुत्र व धन का सुख होता है।

सामान्यतः राहु की दशा में शुरू में दुःख, मध्य मे सुख तथा अन्त में पदच्युति, स्थान परिवर्तन व माता-पिता को कष्ट होता है।

लघुपाराशरी में कहा गया है कि राहु या केतु जिस भावेश के साथ हों, उसी ग्रह का फल विशेषतया देते हैं।

केन्द्र त्रिकोण में यदि केन्द्रेश या त्रिकोणेश के साथ राहु केतु स्थित हों तो योगकारक हो जाते हैं।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
राहुदशाध्यायः सप्तमः॥7॥
॥आदितः श्लोकाः 570॥

8
॥ गुरुदशाध्यायः ॥

सामान्य फल :

स्थानप्राप्तिं वित्तयानाम्बराप्तिं राजस्नेहं चित्तशुद्धिं विभूतिम्।
ज्ञानाचारं पुत्रदारादिलाभं देवाचार्यः स्वे विपाके करोति॥1॥

सामान्यतः गुरु दशा में पद प्रतिष्ठा प्राप्ति, स्थान प्राप्ति, धन वाहन व वस्त्रादि का सुख राजकीय पुरुषों से स्नेह सम्बन्ध, मन में स्थिरता, ऐश्वर्य, ज्ञानपूर्वक आचरण करना, स्त्रीपुत्रादि का सुख, होता है। यह जातकपारिजात का मत है।

वृत्रारिपूज्यस्य दशाप्रवेशे सद्धर्मशास्त्रनुरतो विनीतः।
भूपप्रसादाप्तमनोरथाप्तः सत्कर्मयज्ञादिरुचिः सुशीलः॥2॥
देवद्विजाचार्यविभुतासमेतो धनान्वितोऽत्यन्तधनैः प्रपूर्णः।
सुवर्णरत्नाम्बरवाहनाद्यैः कलत्रपुत्रादिसुखैः समेतः॥3॥
सत्संगयुक्स्वीयकुलेवरिष्ठोऽत्यर्थं नरः सत्त्वगुणान्वितः स्यात्।
गुल्मोदरप्लीहगलामयाद्यैः प्रपीडितश्चिन्त्यमिदं विरुद्धात्॥4॥

शम्भुहोरा प्रकाश में बताया गया है कि शुभ फलदायी गुरु की दशा में धर्म व शास्त्राचार में रति, विनीत स्वभाव, राजा के सहयोग से सिद्धि, सत्कर्मों व यज्ञों में रुचि, सुशीलता, देवों व द्विजों की पूजा अर्चना, सामर्थ्य वृद्धि, खूब धन का सुख, रत्न, वस्त्र व आभूषणों का उपभोग, स्त्री पुत्रादि का सुख।

सत्संगति अपने कुल में श्रेष्ठता, मनोबल की वृद्धि होती है। अशुभ बृहस्पति की दशा में पेट व गले में रोग, जिगरतिल्ली बढ़ना, भीतरी रोगवृद्धि से पीड़ा होती है।

शुभ भावेश होकर शुभ भाव में स्थित हो तो गुरु शुभ तथा अशुभ भावेश होने पर अशुभ फलदायक समझें।

उच्चस्थ वृहस्पति दशा

गुरोर्दशायां परमोच्चगस्य राज्यं महत्सौख्यमुपैति कीर्तिम्।
मनोविलासं गजवाजिसंघं नृपाभिषेके स्वकुलाधिपत्यम्॥5॥

परमोच्चगत वृहस्पति की दशा में राज्यप्राप्ति, खूब सुख, कीर्ति वृद्धि, भोगविलास, बड़े वाहनों का सुख, राजकुलोत्पन्न हो तो राजपदप्राप्ति अन्यथा अपने कुल में मुख्यता प्राप्त होती है।

कुलीरगस्यापिगुरोर्दशायां भाग्योत्तरं भूपतिमाननं वा।
विदेशयानो महदाधिपत्यं दुःखैः परिक्लिन्नतनुर्मनुष्यः॥6॥

परमोच्च के अतिरिक्त कर्क राशिगत गुरुदशा में भाग्यवृद्धि, राजसम्मान, विदेश यात्रा व अधिकार प्राप्ति होती है। लेकिन इस दशा में मनुष्य को शारीरिक शिथिलता व मानसिक चिन्ताओं का सामना भी करना पड़ता है।

आरोहिणी गुरुदशा

आरोहिणी देवगुरोर्महत्वं दशा प्रपन्ना कुरुतेऽर्थभूमिः।
गानक्रियास्त्रीसुतराजपूज्यं स्ववीर्यतः प्राप्तयशः प्रतापम्॥7॥

वृहस्पति जब अपने उच्च के निकट हो तो उसकी दशा में महत्त्ववृद्धि, धनलाभ, भोगविलास में वृद्धि, राजपूज्यता अपने परिश्रम व पराक्रम से यशोवृद्धि होती है।

अवरोहिणी गुरुदशा

देवेन्द्रपूज्यस्य दशावरोहा करोति सौख्यं सकृदेव नाशः।
सकृद्यशः कीर्तिविशेषजालं नरेश्वरत्वं सकृदेव याति॥8॥

नीच राशि के निकट की राशियों में स्थित वृहस्पति की दशा एक बार बड़ा सुख, बड़ा यश, बड़ी कीर्ति, व पद प्राप्ति या राजयोग का सुख देती है, लेकिन शीघ्र ही सब सुख लुप्त हो जाते हैं।

परम नीचगत गुरुदशा

अतिनीचभागभाजो गुरोर्दशायां निष्प्रभता पपपुंजः।
अन्योन्यहृदयवैरं कृषिनाशं याति परभृत्यः॥9॥

परम नीचगत वृहस्पति की दशा में प्रभावहानि, प्रतिष्ठा में कमी, मुसीबतें, दूसरों के हृदय में अपने प्रति वैरभाव, रोजगार हानि व दूसरों की अधीनता के योग होते हैं।

मूलत्रिकोणी गुरुदशा

मूलत्रिकोणनिलयस्थ गुरोर्दशायां राज्यार्थभूमिसुतदारविशेषसौख्यम्।
मानाधिरोहणमपि स्वबलाप्तवित्तं यज्ञादिकर्मजनपूजितपादपीठम्॥10॥

मूलत्रिकोणी गुरुदशा में राज्यलाभ, धनलाभ, जायदाद प्राप्ति, पुत्र स्त्री का सुख, वाहन सुख, अपने बाहु बल से धनलाभ, धार्मिक लोगों द्वारा विशेष आदर सत्कार मिलता है।

स्वक्षेत्री गुरुदशा

गुरोर्दशायां स्वगृहं गतस्य राज्ञोऽर्थभूधान्यसुखाम्बरं च।
मिष्टान्नदो वाजिमनोविलासं काव्यादिपुण्यागमवेदशास्त्रम्॥11॥

स्वक्षेत्री वृहस्पति की दशा में राजा की सहायता से धन, धान्य, सुख, वस्त्राभूषण व भूमि की प्राप्ति, उत्तम भोजन, वाहनों का सुख, पुण्य वृद्धि, शास्त्र व काव्यादि में रुचि होती है।

अति मित्र क्षेत्री गुरुदशा

प्राप्तौ दशायामतिमित्रराशिं गतस्य जीवस्य नरेन्द्रपूज्यम्।
मृदंगभेरीरवयानघोषं दिगम्बराक्रान्तसमस्तभाग्यम्॥12॥

अतिमित्र क्षेत्री गुरुदशा में राजपूज्यता, वाहनों का सुख, गाजे बाजे के साथ सवारी निकलने का सुख भाग्यवृद्धि तथा चारों दिशाओं में यशोवृद्धि होती है।

मित्रक्षेत्री गुरुदशा

मित्रर्क्षगस्यापि गुरोर्दशायां नरेशमैत्रीं समुपैति कीर्तिम्।
विद्याविवादे जयम् सौख्यं सुगन्धमृद्वस्त्र परोपकारम्॥13॥

मित्रक्षेत्री गुरुदशा में राजा से मैत्री, कीर्तिवृद्धि, विद्या प्राप्ति, विवाद के योग, विजय, भोजन की उत्तमता, सुगन्धादि सेवन, वस्त्रादि का सुख तथा परोपकार करने की योग्यता होती है।

समराशिगत गुरुदशा

समर्क्षगस्यापि गुरोर्दशायां सामान्यतो भूपतिदत्तभाग्यम्।
कृष्यार्थगोभूमिमनोविलासं मित्राम्बरालंकृतिभूषणाप्तिम्॥14॥

समराशि में स्थित गुरुदशा में सामान्यतः राजकीय विभागों में कार्यगति, रोजगार में सामान्य वृद्धि, पशुधन व जायदाद की सामान्य स्तर से वृद्धि, मित्रों का सम्पर्क, वस्त्राभूषणों का सुख होता है।

शत्रुक्षेत्री गुरुदशा

गुरोर्दशायामरिराशिगस्य क्षेत्रादिवित्तं शयनाम्बरं च।
नरेशसन्मानमुपैति नित्यं स्त्रीपुत्रभृत्यात्मसहोदरार्तिम्॥15॥

शत्रु क्षेत्री गुरुदशा में धन, सुख भोग, जगह जायदाद का मध्यम सुख, शासकों की अनुकूलता होती है, लेकिन परिवारजनों व स्वयं को मध्यम कष्ट होता रहता है।

अतिशत्रु क्षेत्री गुरुदशा

गुरोर्दशायामतिशत्रुराशिं गतस्य दुःखं समुपैतिशोकम्।
विषादभूम्यर्थकलत्रनाशं नृपाग्निचौरैर्बहुदुःखपीडाम्॥16॥

अति शत्रु क्षेत्री वृहस्पति की दशा में बहुत दुःख व शोक होते हैं। मन में विषाद, जायदाद, की हानि, स्त्री को कष्ट तथा अनेक प्रकार से पीड़ाएँ होती हैं।

उच्चग्रहयुक्त गुरुदशा

उच्चखेचरसंयुक्तगुरुदाये महत्सुखम्।
अनेकगोपुरादीनां निर्माणं नृपपूज्यताम्॥17॥

किसी उच्चगत ग्रह के साथ स्थित वृहस्पति की दशा में बहुत सुखप्राप्ति, भवन निर्माण तथा राजा की ओर से आदर सत्कार मिलता है।

नीचयुक्त गुरुदशा

नीचखेचरसंयुक्तजीवदाये मनोरुजम्।
परप्रेष्यापवादं च पुत्राणां च विरोधिता॥18॥

नीचग्रह के साथ स्थित वृहस्पति की दशा में मनोविकार, मनोरोग, दूसरों की अधीनता, बदनामी व पुत्रों से विरोध होता है।

शुभयुक्त गुरुदशा

शुभान्वितस्यापि गुरोर्दशायां नरेशयानं मृदुलाम्बरं च।
दानेन वित्तं नृपमाननाद्वा यज्ञादिसन्मार्गविशेषलाभम्॥19॥

शुभ ग्रह से युक्त गुरु दशा में राजकीय सवारी का सुख, उत्तम कीमती वस्त्रों का भोग, दान या राजसम्मान से धनलाभ, यज्ञादि सन्मार्ग से विशेष लाभ होता है।

शुभदृष्ट गुरुदशा

शुभेक्षितस्यापि गुरोर्दशायां देशान्तरे वित्तमुपैति भूपात्।
देवार्चनभूसुरतर्पणं च तीर्थाभिषेकं गुरुपूज्यतां च॥20॥

शुभ दृष्ट गुरुदशा में देशान्तर से धनलाभ, राजकीय सहायता से लाभ, देवों व ब्राह्मणों की पूजा सत्कार, तीर्थ यात्रा, बड़े बुजुर्गों व माननीय लोगों द्वारा भी मान्यता मिलती है।

पापयुक्तदृष्ट गुरुदशा

पापान्वितस्यापि गुरोर्दशायां करोति पापं हृदयान्तरस्थम्।
गूढं बहिः पुण्यफलं विशेषात् भूम्यर्थदारात्मजसौख्यमेति॥21॥
पापेक्षितस्यापि गुरोर्दशायां प्राप्तं सुखं किंचिदुपैति धैर्यम्।
क्वचिद्यशः कुत्रचिदाप्तसौख्यं क्वचिद्धनं नाशमुपैति चान्ते॥22॥

पापयुक्त बृहस्पति की दशा में मन में भीतरी चिन्ता व पाप भावना या उदय, मानसिक ऊहापोह, ऊपरी तौर पर वृद्धि होती दिखती है तथा जायदाद व परिवार का सुख प्राप्त होता है।

पापदृष्ट गुरु दशा में कभी-कभी फुटकर सुख मिलता है, कभी-कभी यश या नेकनामी कभी, मनस्तोष, कभी धन होता है, लेकिन वह सब स्थायी नहीं रह पाता है।

उच्च नवांशगत गुरुदशा

उच्चांशसंयुक्तगुरोर्दशायां भाग्योत्तरं राजसम्मानमेति।
प्रवालमुक्तामणिरत्नलाभं सर्वेषु सख्यं समुपैति सौख्यम्॥23॥

उच्च नवांशगत गुरुदशा में भाग्यवृद्धि, राजपक्ष से प्रशंसा व सम्मान, मूंगा मोती आदि रत्नों का लाभ, बहुत से लोगों से सम्पर्क तथा सुख होता है।

नीच नवांशगत गुरुदशा

नीचांशसंयुक्तगुरोर्विपाके भूपाद्भयं गुल्मविचर्चिकादीन्।
स्थानच्युतिं बन्धुविरोधितां च नृपाग्निचौरः स्वकुलोद्भवैश्च॥24॥

नीच नवांशगत गुरु दशा में राजभय, गुल्म (भीतरी फोड़ा आदि) चेचक आदि का भय, स्थानभ्रष्ट होने के योग, बन्धुओं से वैर, अपने ही कुल के लोगों के कारण परेशानियां व विविध भय होता है।

उच्चराशि नीचनवांशस्थ गुरुदशा

उच्चस्थोऽपि गुरुर्नीचराश्यंशकसमन्वितः।
महाभाग्ये तु सम्प्राप्तस्तत्क्षणादेव नश्यति॥25॥

उच्च राशि में स्थित बृहस्पति यदि नवांश में नीचगत हो तो अचानक भाग्य साथ तो देता है, लेकिन वह शुभ स्थिति शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

नीचस्थो देवपूज्योऽपि स्वोच्चांशक समन्वितः।
भाग्यक्षये तु सम्प्राप्ते भाग्यं याति तदा नरः॥26॥

नीच राशिगत गुरु यदि नवांश में उच्च हो तो सामने दिखने वाली मुसीबत व कष्ट से भी मनुष्य भाग्य से बच जाता है, अर्थात् मुसीबत अती तो है; परन्तु टल जाती है।

नीचांशोपगतः स्वतुंगभवने जीवस्य पाके भयं,
चौरारातिनृपैः कलत्रतनयद्वेषं करोत्यश्रियम्।
नीचे तुंगनवांशके यदि महाराजप्रसादं सुखं
विद्याबुद्धियशो धनादि विभवं देशाधिपत्यं तु वा॥27॥

अन्यत्र भी कहा गया है कि उच्चगत गुरु यदि नवांश में नीच हो तो अपनी दशा में चोर, राजा या शत्रु से भय, स्त्री पुत्रों से द्वेष तथा मान-सम्मान प्रतिष्ठा में कमी होती है।

नीचराशिगत गुरु नवांश में उच्च हो तो बड़े लोगों या राजाओं की प्रसन्नता, सुख, विद्या-बुद्धि-वृद्धि, यशोलाभ, धनवृद्धि, वैभव व कभी-कभी राजयोग भी होता है।

वक्री गुरुदशा

वक्रं गतस्यापि गुरोर्दशायां महार्थतां याति सुतार्थदारान्।
युद्धे जयं भूपतिमित्रतां च सुगन्धजात्यम्बरवाग्विलासम्॥28॥

वक्री वृहस्पति की दशा में बहुत धन, स्त्री पुत्र व परिवार का अच्छा सुख, युद्ध में विजय, राजकीय पुरुषों से मित्रता, उत्तम वस्त्राभूषण तथा वाणी की सुन्दरता होती है।

षष्ट्यंशानुसार गुरुदशा

सौम्यषष्ट्यंशसंयुक्तगुरोर्दायेऽतिसौख्यताम्।
वाहनं बन्धुसम्मानं यज्ञवैवाहिकं शुभम्॥29॥
क्रूरषष्ट्यंशसंयुक्तगुरोर्दायेऽपि सौख्यताम्।
राजकोपावमानादीन् लभते नात्र संशयः॥30॥

शुभ षष्ट्यंश में स्थित वृहस्पति की दशा में सुख, वाहन सुख, बन्धुओं में मान्यता, घर में यज्ञ या विवाहादि पुण्य कार्य होते हैं।

क्रूर षष्ट्यंश गत गुरु की दशा में भी सुख होता है, लेकिन राजकोप, अपमान आदि भी होते हैं।

पारावतादिगत गुरुदशा

परावतांशयुक्तस्य गुरोर्पाके महत्सुखम्।
मृदुवन्नपट्टवस्त्रं च हेमविक्रमभूषणम्॥31॥

पारावतादि उत्तम अंशों में गए हुए वृहस्पति की दशा में बहुत सुख, उत्तम भोजन, उत्तम वस्त्र, सोने की खरीद बेच तथा आभूषणों की प्राप्ति होती है।

पाशद्रेष्काणगत गुरुदशा

पाशद्रेष्काणयुक्तस्य गुरोर्दाये च बन्धनम्।
कारागृहप्रवेशं च निगडं दारविग्रहम्॥32॥

पाशद्रेष्काणों में स्थित गुरुदशा में बन्धन, सजा, जेल, हथकड़ी अपहरण व स्त्री से विवाद होता है।

वृश्चिक राशि का दूसरा द्रेष्काण पाश है तथा मकर का पहला निगड द्रेष्काण है। पाश का अर्थ जाल या बन्धन तथा निगड का अर्थ हथकड़ी या बन्धन ही है। अतः श्लोकोक्त पाश शब्द से निगड का भी ग्रहण होता है।

भावानुसार गुरुदशा

लग्नं गतस्य हि दशा पुरुषं करोति
जीवस्य सौख्यममलाम्बरभूषणाप्तिम्।
यानाधिरोहणमृदंगपणारवैश्च
मत्तंगवाजिभटसंघयुतं करोति॥33॥

लग्नस्थ गुरु की दशा में बहुत सुख, उत्तम स्वच्छ वस्त्रों का सुख, आभूषण प्राप्ति, वाहन सुख, गीत संगीत वाद्यों का सुख, हाथी घोड़ों व समर्पित समर्थक का साथ भी मिलता है।

धनस्थितस्यापि गुरोर्विपाके धनायतिं भूपतिमाननं च।
विद्याविवादांकितराजगोष्ठीं सर्वोपकारं विजयं सुखं च॥34॥

द्वितीयस्थ गुरु की दशामें धन वृद्धि, राज पक्ष से सम्मान, सेमिनार, शास्त्रीय गोष्ठियों में विशेष प्रशंसा, सब के उपकार की भावना, विजय व सुख होता है।

तृतीयस्थ गुरोर्दाये भ्रातृणां च सुखं धनम्।
नृपदत्तधनं सौख्यं गन्धमाल्याम्बरादिकम्॥35॥
चतुर्थकेन्द्रस्थितजीवदाये नामत्रयं भूपतिमित्रभावम्।
भूपालयोगे सति भूपतित्वं नोचेत्तदा तत्सदृशं करोति॥36॥

तृतीय वृहस्पति की दशा में भाइयों का सुख, धन, राजा से धनलाभ, सुख, उत्तम रहन-सहन होता है।

चतुर्थस्थ गुरु दशा में कई नामों से प्रसिद्धि, राजकीय पुरुषों से मित्रता, राजा के समान वैभव होता है। यदि राजयोग हो तो राज्य भी हो सकता है।

पंचमस्थगुरोर्दाये मन्त्रोपास्तिर्महत्सुखम्।
सुताप्तिं राजपूजां च वेदान्तश्रवणादिकम्॥37॥
नीरोगतां पुत्रकलत्रलाभं लग्नाद् रिपुस्थस्य गुरोर्दशायाम्।
आदौ भवेद् दैवमथान्त्यपाके दारार्थचौरादिभयं सरोगम्॥38॥

पंचमस्थ गुरु दशा में मन्त्रों की उपासना, बहुत सुख, पुत्र लाभ, राज मान्यता, शास्त्रों की विचार गोष्ठियों में समय बीतता है।

षष्ठस्थ गुरुदशा में स्त्री पुत्र की प्राप्ति होती है। दशा के आरम्भ में भाग्य अच्छा साथ देता है लेकिन अन्त में स्त्री व धन हानि, शत्रुभय तथा रोग सम्भव होते हैं।

कलत्रराशिस्थितजीवदाये दारार्थपुत्रादि सुखं प्रयाति।
विदेशयानं समरे जयं च ध्यानं परब्रह्मणि पुण्यकर्मा॥39॥
जीवो मरणपदस्थः करोति सौख्यं स्वबन्धुजनहानिम्।
स्थाच्युतिं विदेशं प्रान्ते स्त्रीराजसम्मानम्॥40॥

सप्तमस्थ गुरुदशा में स्त्री पुत्र, धन आदि का सुख होता है। विदेश यात्रा सम्भव होती है तथा विवाद व युद्ध में विजय और आध्यात्मिक रुचियाँ जागती हैं।

अष्टमस्थ गुरुदशा में सामान्यतः मिश्रित फल होते हैं। बन्धुओं की हानि, स्थानच्युति, विदेशवास होता है। दशा के अन्त में स्त्री सुख व राज सम्मान मिलना भी सम्भव होता है।

नृपकृतं बहुमानं भ्रातृभिः भूमिलाभं
परयुवतिजनैर्वादत्त गोभूमिवित्तम्।
अशनवसनभूषागन्धमाल्याम्बराणि
परकृतमुपकारं वृद्धितामेति शौर्यम्॥41॥

नवमस्थ गुरुदशा में राजकीय सम्मान, भाइयों से समुचित सहयोग, भूमिलाभ, स्त्रीवर्ग से धन सम्पत्ति की प्राप्ति, ऐश आराम में वृद्धि, दूसरों द्वारा बहुशः उपकार, शौर्य वृद्धि होती है।

कर्मस्थितस्यापि गुरोर्विपाके राज्याप्तिमाहुर्मुनयस्तदानीम्।
भूपालयोगे त्वथवार्थपुत्रकलत्रसत्कर्मसु राजयोगम्॥42॥

दशमस्थ वृहस्पति की दशा में राजयोग होने पर राज्यप्राप्ति तथा सामान्यतः धन, पुत्र, स्त्री, व्यापार में वृद्धि से राजतुल्यता मिलती है।

लाभगजीवदशायां सम्प्राप्तौ राज्यलाभमुपयाति।
बह्वर्थदारपुत्रान् भूपविरोधं स्वबन्धुविद्वेषम्॥43॥

व्ययगतजीवदशायां प्राप्तौ वाहनादि समुपयाति।
लभते विदेशयानं नानाक्लेशैश्च परिभूतः॥44॥

एकादश स्थानगत गुरुदशा में राज्यप्राप्ति, स्त्री पुत्र व धन का अच्छा सुख, कभी-कभी राजकीय विभागों से विरोध तथा बन्धुओं से द्वेष होता है।

द्वादशस्थ गुरु दशा में वाहनादि का सुख, विदेश यात्रा होती है। अशुभ राशिगत गुरु हो तो अनेक प्रकार के क्लेश झेलने पड़ते हैं।

सूर्ययुक्त गुरुदशा

अर्कगजीवदशायां सहसा ज्वरपीडितो भवेत्क्षीणः।
उर्ध्वांगरोगतप्तो दुःशीलत्वप्रभग्नसंसारः॥45॥

अस्तंगत बृहस्पति की दशा में ज्वरादि से पीड़ा, शरीर में कमजोरी, कमर से ऊपर शरीर में कष्ट तथा चारित्रिक शिथिलता के कारण बसी दुनियां उजड़ने के योग होते हैं।

षड्बली गुरुदशा

पाके स्थानबलान्वितस्य च गुरोः क्षेत्रार्थदारात्मजान्
सम्प्राप्नोति गजाश्ववस्त्रकनकं चित्राम्बरं भूषणम्।
दिग्वीर्यान्वितदेवनायकगुरौ लोके प्रसिद्धं तथा
जीवे कालबलाधिके नृपवधूसम्मानतां याति सः॥46॥

स्थान बली बृहस्पति की दशा में स्थान लाभ, जायदाद का सुख, स्त्री पुत्रों का सुख, हाथी घोड़े आभूषणादि का सुख होता है।

दिग्बली गुरु दशा में संसार में प्रसिद्धि तथा काल बली गुरुदशा में राजा रानियों द्वारा सम्मान मिलता है।

चेष्टाबलेनान्वितजीवदाये सुचेष्टितं संजनयेन्मनुष्यः।
तन्त्रान्वितं लब्धविशालसौख्यं शौर्यं धनाप्तिं क्षमयासहिष्णुम्॥47॥

चेष्टाबली गुरुदशा में मनुष्य अच्छे कार्यों को करता है, तान्त्रिक शक्तियां प्राप्त होती हैं तथा विशाल वैभव व सुख, शूरता, धन, क्षमाभाव तथा सहनशीलता बढ़ती है।

निसर्गवीर्यान्वितजीवदाये निसर्गतश्चापि सुखं महत्त्वम्।
विद्याविलासं रतिकेलिसौख्यं भागीरथीतोयकृताभिषेकम्॥48॥
दृग्वीर्ययुक्तस्य गुरोर्विपाके कृपाकटाक्षेण महीपतीनाम्।
समस्तभाग्यं समुपैति नित्यं देशान्तरे भ्राम्यति किंचिदेव॥49॥

निसर्गबली गुरु दशा में स्वाभाविक रूप से ही सुख व महत्त्व बढ़ता है। विद्या का वैभव, सांसारिक सुख, गंगादि तीर्थों में स्नान का अवसर मिलता है।

दृग्बली गुरु दशा में राजाओं की कृपा से भाग्योदय होता है तथा देशदेशान्तरों में घूमने के योग बनते हैं।

वर्गोत्तमी गुरुदशा

वर्गोत्तमांशस्थितजीवपाके लोकेऽतिपूज्यः सुतदारसौख्यः।
अत्यर्थसम्पत्तियुतः सहर्षो भवेद् विनीतो मनुजः कृशांगः॥50॥

वर्गोत्तमी वृहस्पति की दशा में सर्वत्र प्रतिष्ठा स्त्री-पुत्रादि का सुख, खूब धन सम्पत्ति, मन में हर्ष, विनयशीलता की वृद्धि तथा शरीर में पतलापन रहता है।

द्वादश राशिगत गुरुदशा

मेषोपयातस्य दशाप्रवेशे भवेन्नराणां त्रिदशार्चितस्य।
धनं धनेशाद्बहुनायकत्वं कलत्रपुत्रादिसुखोपलब्धिः॥51॥
वृषोपयातस्य च गीस्पतेः स्याद्दशाप्रवेशे पुरुषोऽतिदुःखी।
विदेशवासी बहुसाहसश्च वित्ताल्पता चित्तगतोत्सवश्च॥52॥

मेषगत वृहस्पति की दशा में धनवृद्धि, बहुत से लोगों का नेतृत्व अर्थात् अग्रगण्यता, स्त्री पुत्रादि का भरपूर सुख होता है।

वृषगत गुरुदशा में बहुत से सन्ताप, विदेशवास, दुःसाहस भावना का उदय, धन की कमी, मन में हर्ष की कमी होती है।

युग्मोपयातस्य वृहस्पतेश्च दशाप्रवेशे पुरुषोऽशुचिः स्यात्।
मात्रा च गोत्रप्रभवैर्विरोधी कलत्रवादातिविषादतप्तः॥53॥

मिथुनगत वृहस्पति की दशा में मनुष्य का अपवित्र आचरण, साफ-सफाई में कम रुचि, माता व अपने परिजनों के साथ विरोध, स्त्री के साथ कलह से विशेष विषाद होता है।

वाचस्पतेस्तूच्चसमाश्रितस्य स्यात्पाककाले कुलराज्यलब्धिः।
विशिष्टनाम्ना प्रथितत्वमुच्चैरुच्चैश्च सख्यं बहुवैभवं च॥54॥
वाचस्पतेरुच्चपरिच्युतस्य पाकप्रवेशे पितृमातृदुःखी।
पूर्वार्जितद्रव्यपरिक्षयेण तप्तश्च नानाव्यसनारिभूतः॥55॥

परमोच्च के निकट स्थित गुरु दशा में अपने कुलस्तरानुसार राज्यप्राप्ति, विशेष प्रसिद्धि, बड़े लोगों से मित्रता, बहुत वैभव होता है।

कर्क राशि में परमोच्च से दूर स्थित गुरु दशा में पीछे बताए गए उच्चस्थ फल के अलावा माता-पिता के कारण दुःख, संचित धन की कमी व अनेक अचानक आने वाली परेशानियों से कष्ट भी हो सकता है।

सिंहस्थितस्यामरपूजितस्य पाकप्रवेशे धनवान्वदान्यः।
नृपाप्तमानो ननु मानवः स्याज्जायातनूजानुजजातहर्षः॥56॥

कन्याधिरूढस्य गुरोर्दशायां भेवन्मनुष्यो नृपलब्धमानः।
कान्तासुतावाप्तसुखं कदाचिछूद्रादि नीचैः कलहप्रसक्तः॥57॥

सिहंगत वृहस्पति की दशा में धनी, उदार, प्रसिद्ध, राजसम्मानित, स्त्री पुत्रादि के हर्ष से युक्त होता है।

कन्यागत गुरु दशा में राजा द्वारा सम्मान, स्त्री पुत्रों का सुख, कभी-कभी नीचजनों से विवाद होना सम्भव होता है।

तुलास्थदम्भोलिभृदीज्यपाके विवेकहीनः प्रमितान्नभोक्ता।
कलत्रपुत्रैः कृतशत्रुभावश्चोत्साहहीनो ननु मानवः स्यात्॥58॥
वृहस्पतेर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे मतिमान्समर्थः।
प्राज्ञः सुतोत्साहयुतो विनीतोऽनृणीभवेन्नानियमेनहीनः॥59॥

तुलागत गुरुदशा में विवेक बुद्धि में कमी, कम भोजन की प्रवृत्ति, स्त्री पुत्रों या परिजनों से विरोध, उत्साह में कमी होती है।

वृश्चिकगत गुरुदशा में बुद्धिमान, सामर्थ्ययुक्त, विद्वान्, सन्तान के कारण उत्साहित, विनीत, ऋण से मुक्त परन्तु विशेष आदर्शों व सिद्धान्तों में कम रुचि वाला होता है।

प्रागृदिग्लवेषु धनुषि स्थित गीष्पतेश्च मूलत्रिकोणभवने च भवेद्दशायाम्।
मन्त्री पुमान् मतिवरस्त्वथमंडलीको पित्रादिकः स्वयुवतीवचनानुरक्तः॥60॥
तथा परस्तात् कृषिगोधनानि यज्ञादिसिद्धिं च सुखं प्रवासात्।
लोके प्रभावत्वमवाप्तवित्तः भूयानजातं च सुखं मनुष्यः॥61॥

धनुराशि में पहले 10 अंशों तक स्थित गुरु की दशा में अर्थात् मूल त्रिकोणांशों तक स्थित गुरुदशा में सलाहाकार की स्थिति या मन्त्रीपद, बुद्धिमत्ता की प्रशंसा, मंडल या बस्ती में प्रमुखता, माता-पिता व अपनी पत्नी की मनोनुकूलता होती है।

उन अंशों से आगे स्थित गुरु दशा में कृषि से लाभ, चौपाये धन की वृद्धि, यज्ञादि कार्यों की सिद्धि, प्रवास से सुख, प्रभाव का विस्तार, धन लाभ, भूमि व वाहन का सुख होता है।

नक्रे च नीचांशगतस्य पाके वृहस्पतेर्वै परकार्यकर्ता।
भवेन्नरो जाठरकर्णगुह्यामयी विशेषान्मतिवित्तहीनः॥62॥
गुरोर्दशा नीचलवच्युतस्य कुर्यान्निषादात्कृषितोपलब्धिम्।
स्ववाक्यदोषाज्जनवंचनाद्वा वृथा कलिं वै पिशुनत्वमुच्चैः॥63॥

मकर के 5 अंशों तक स्थित गुरु दशा में दूसरों के अधीन काम करने के योग, पेट, कान या गुप्तांगों में रोग, बुद्धि व धन में कमी होती है।

परम नीच से आगे स्थित वृहस्पति की दशा में नीच जाति पुरुषों से धनलाभ, कृषि से लाभ, अपने वचन या किसी के द्वारा ठगे जाने से व्यर्थ की कलह और चुगलखोरी की आदत बढ़ जाती है।

दशा गुरोः कुम्भधरस्थितस्य सद्बुद्धिविद्यानुरतं कलाज्ञम्।
कलत्रवित्तादि सुखोपलब्धिं करोति मर्त्यं नृपलब्धमानम्॥64॥
मीनस्थितस्यामरपूज्यपाके कलाधिकः स्यान्मनुजोऽतिधीमान्।
विद्याप्रसंगाप्तधनो विनीतो विलासिनीप्रेमभरः सहर्षः॥65॥

कुम्भगत गुरुदशा में विद्या, बुद्धि व कलाप्रेम में वृद्धि, स्त्रीपुत्र व धन का सुख तथा राजपक्ष से प्रतिष्ठा मिलती है।

नीचगत गुरुदशा में बुद्धि की प्रखरता, बुद्धिमत्ता से या विद्वानों की संगत से धन लाभ, स्त्री से प्रेम प्राप्ति होती है।

विशेष फल

जीवोत्कृष्टदशा करोति विपुलग्रामाधिकारात्मज
श्रीसौभाग्यगुणाकराश्रितजनाद्यान्दोलिकावैभवान्।
जैव्या पापदशा महीश्वरभयं व्याधींश्च धैर्यच्युतिं
धान्यान्यर्थमहीसुतार्तिं जनकक्षोभाशनार्तिं भयम्॥66॥

अच्छी राशि, अच्छे भाव में बलवान् होकर स्थित गुरु की दशा में अपने क्षेत्र में अधिकार, पुत्रप्राप्ति, सौभाग्यवृद्धि, श्रीवृद्धि, गुणवृद्धि, सेवकों का सुख, वाहन सुख होता है।

पापभावराशिगत गुरु दशा में राजभय, रोग, धैर्यहीनता, धन जायदाद व पुत्र की हानि, पिता के क्षोभ का कारण बनने का योग तथा भोजन की विषमता से कष्ट होता है।

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे जीवे केन्द्रलाभत्रिकोणे।
मूलत्रिकोणे लाभे वा तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥67॥
राज्यलाभो महत्सौख्यं राजसम्मानकीर्तनम्।
गजवाजिसमायुक्तं देवब्राह्मणपूजनम्॥68॥
दारपुत्रादिसौख्यं च वाहनाम्बरलाभदम्।
यज्ञकर्मादि सिद्धिः स्याद् वेदान्तश्रवणादिकम्॥69॥
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहम्।
आन्दोलिकादिलाभश्च कल्याणं च महत्सुखम्॥70॥

उच्चगत, मूलत्रिकोणी, स्वक्षेत्री, स्व या उच्चनवांशगत गुरु यदि केन्द्र त्रिकोण या लाभ स्थान में स्थित हो तो उसकी दशा में राज्यलाभ, बहुत सुख, राजसम्मान व प्रशंसा होती है। हाथी घोड़ों की सवारी, देवों व ब्राह्मणों का अर्चन-सत्कार करने के योग।

स्त्रीपुत्रादि का सुख, वाहन व वस्त्राभूषण का सुख, यज्ञादि कर्मों की सफलता, वेदान्तादि शास्त्र दर्शनों के प्रति अनुराग।

समर्थ पुरुषों या राजा के प्रसाद से कार्यसिद्धि, सुखप्राप्ति, कल्याण, सुख व पालकी आदि (प्रतिष्ठित वाहन) की प्राप्ति होती है।

अपि च स्त्रीपुत्र का सुख और बड़े लोगों का स्नेह प्राप्त होता है।

नीचास्तपापसंयुक्ते जीवे रिःफाष्टसंयुते॥71॥
स्थानभ्रंशो मनस्तापः पुत्रपीडा महद्भयम्।
पश्वादिधनहानिश्च तीर्थयात्रादि सम्भवेत्॥72॥

नीचगत अस्तंगत पापयुक्त गुरु यदि 8.12 भावों में हो तो उसकी दशा में स्थान भ्रष्टता, मन में सन्ताप पुत्रपीड़ा, बड़ा भय या बड़े लोगों से भय, पशु आदि धन की हानि, परन्तु तीर्थयात्रादि होती हैं।

आदौ गुरुदशाकाले नृपपूजा महत्सुखम्।
मध्ये स्त्रीपुत्रलाभादि चान्ते कष्टं विनिर्दिशेत्॥73॥

सामान्यतः गुरु की दशा के आरम्भ में सम्मान व सुख, मध्य में स्त्रीपुत्रादि का लाभ और अन्त में कष्ट होता है। सामान्यतः सभी लम्बी दशाएँ अन्त में अनमना फल देती हैं।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
गुरुदशाध्यायोऽष्टमः॥8॥
॥आदितः श्लोकाः 643॥

9
॥ शनिदशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

शनेर्दशायामजगर्दभोष्ट्रवृद्धांगना पक्षिकुधान्यलाभम् ।
श्रेणिपुरग्रामजनाधिकाराद्धनं वदेन्नीचकुलाधिपत्यम्॥1॥

जातक पारिजात का मत है कि शनि की दशा में सामान्यतः बकरी, गधा ऊँट आदि के द्वारा लाभ, उम्र में बड़ी दिखने वाली स्त्री से लाभ या उससे संयोग, पक्षी व मोटे अनाज के व्यापार से लाभ होता है। मण्डल, बस्ती, कॉलोनी, गाँव आदि का अधिकार तथा उससे धन लाभ और निम्न श्रेणी के लोगों का आधिपत्य मिलता है।

दैन्यं विवादं स्वकुले विदेशे यानं च मानं क्षितिमर्थहानिम् ।
रोगार्तिमापद्भयतापपीडां दशा शनेर्दुःखमिदं करोति॥2॥

चन्द्राभरण जातक का मत है कि शनि दशा में सामान्यतः दीनता, अपने परिवार में विवाद, विदेश गमन, कहीं कहीं सम्मान, कभी भूमि लाभ, धन हानि, रोगभय, मनस्ताप व दुःख होते हैं।

भवेद्दशायां हि शनैश्चरस्य नरः पुरः ग्रामकृताधिकारः ।
धीमांश्च दानाधिकतातिशाली नाना कलाकौशलसंयुतश्च॥3॥
तुरंगहेमाम्बरकुंजराद्यैः सम्पन्नतां याति विनीततां च ।
देवद्विजार्चाभिरतो विशेषात्पुरातनस्थानसुलब्धसौख्यः॥4॥
देवद्विजेन्द्रालयकृत्सुशीलो विशालकीर्तिः स्वकुलावतंसः ।
आलस्यनिद्राकफवातपित्तजनांगनादद्रुविचर्चिकार्तिः ॥5॥

जातकाभरण में कहा गया है कि शनि की शुभदशा में मनुष्य को पुर या गाँव का अधिकार या अपने क्षेत्र में सम्मान, बुद्धिमत्ता, दान की शक्ति, कला कौशल, वाहन, वस्त्र, सुवर्णादि का लाभ, विनय भाव, सम्पन्नता, देवों ब्राह्मणों का सत्कार, पुराने स्थान (अपनी पुरानी जगह या क्षेत्र) से लाभ व सुख।

देवालय आदि बनाने के योग, सुशीलता, कीर्ति व अपने कुल में अग्रगण्यता मिलती है।

अशुभ शनि में आलस्य, निद्रा, कफ वात पित्त दोष, अन्य लोगों, स्त्री जनों व त्वचा रोगों से पीड़ा होती है।

परमोच्चगत शनि दशा

मन्दात्युच्चदशायां ग्रामसभामंडलाधिपत्यं स्यात्।
लभते विनोदशीलं पितृनाशं बन्धुकलहं च॥6॥
स्वोच्चदशायां कुरुते देशभ्रंशं मनोरुजं दुःखम्।
वाणिज्यहानिसत्वं कृषिहानिं नृपविरोधं च॥7॥

परमोच्चगत शनि दशा में ग्राम, सभा या मंडल का अधिकार, विनोदप्रियता, पितृहानि, बन्धुओं से कलह होता है।

केवल उच्चगत शनिदशा में स्थान त्याग, मनो विकार, दुःख, व्यापार में हानि, कृषि हानि व राजकीय लोगों से विरोध होता है।

आरोहिणी शनि दशा

आरोहिणी वासरनाथसूनोर्दशाविपाके नृपलब्धभाग्यम्।
वाणिज्यलाभं कृषिभूमिलाभं गोवाजियानं सुतदारलाभम्॥8॥

उच्चराशि के निकट बढ़ते हुए शनि की दशा में राजा की सहायता से भाग्योदय, व्यापार में लाभ, कृषि व भूमि में लाभ, वाहन धन की प्राप्ति, स्त्रीपुत्रादि का सुख होता है।

अवरोहिणी शनि दशा

दिनेशसूनोस्त्वरोहकाले राज्यच्युतिं दारसुतार्थनाशम्।
भाग्यक्षयं भूपतिकोपयुक्तं प्रेष्यत्वमायाति गुदाक्षिरोगम्॥9॥

नीचराशि के निकट पहुँचने वाले शनि की दशा में राज्य से च्युत होना, स्त्री पुत्रादि व धन की हानि भाग्य की क्षीणता, राजकोप, गुदा व नेत्रों में रोग तथा दूसरों का दबाव बढ़ता है।

नीचगत शनि दशा

नीचस्थितस्यापि दिनेशसूनोर्दाये कलत्रात्मजसोदाराणाम्।
नाशं महत्कष्टतरां कृषिं च नीचानुवृत्त्या समुपैति वृत्तिम्॥10॥

नीचगत शनि दशा में स्त्री पुत्रों व भाइयों की हानि, खेती बाड़ी में या रोजगार में बड़ा कष्ट, स्तर से नीचे जाकर रोजगार करने के योग होते हैं।

मूल त्रिकोणी शनि दशा

मूलत्रिकोणनिलयस्थशनेर्दशायां
देशान्तरादि वनवासमुपैति काले।
नामद्वयं यदि सभानगराधिपत्यं
विद्वेषणं सुतकलत्रजनादिभिर्वा॥11॥

मूल त्रिकोणी शनि दशा में देशान्तरों में भ्रमण, एक तरह से वनवास जैसी स्थिति, दो नामों से प्रसिद्धि, सभा या नगर की अध्यक्षता, स्त्री पुत्रों या अन्य जनों से वैर भाव होता है।

स्वक्षेत्री शनि दशा

स्वक्षेत्रगस्य च दशा दिवासेशसूनोर्द्वेषं करोति बलपौरुषकीर्तिजालम्।
राजाश्रयंकनकभूषणभूमिलाभं धैर्यं स्वनामसदृशानुगुणं च सौख्यम्॥12॥

स्वक्षेत्री शनि दशा में लोगों से द्वेष भाव, बल, पुरुषार्थ व कीर्ति में वृद्धि, राजा का आश्रय, सुवर्णाभूषण व जायदाद का लाभ, धैर्य, अपने स्तरानुरूप सुख होता है।

अधिमित्रक्षेत्री शनि दशा

अधिमित्रमन्ददाये ददाति सौख्यं नरेशसन्मानम्।
सुतधनदारविशेषात् पशुकृषिमहिषादिवाणिज्यम्॥13॥

अधिमित्रक्षेत्री शनि की दशा में सुख, राज सम्मान, पुत्रों का सुख, पशु धन, कृषि धन, व भैंस आदि के व्यापार से लाभ होता है।

मित्र क्षेत्री शनि दशा

मित्रक्षेत्रदशायां मन्दस्य तु शिल्पकर्मगुणवेत्ता।
ज्ञानं बलं प्रतापं ददाति दुःखं महत्त्वं च॥14॥

मित्रक्षेत्री शनि दशा में कला कौशल, व्यवसाय कला में निपुणता, ज्ञान वृद्धि, बलवृद्धि, प्रताप वृद्धि, महत्ता तथा कभी कभी दुःख भी होता है।

समक्षेत्री शनि दशा

समर्क्षगस्यापि शनेर्दशायां समानबुद्धि सुतदारमित्रे।
भृत्यापदं बन्धुजनेषु वैरं देहस्य कष्टं क्षयवातपित्तैः॥15॥

समक्षेत्री शनि दशा में पुत्र स्त्री मित्रों से स्नेह वृद्धि, स्थिर विचार, नौकरों के कारण परेशानी, बन्धुओं में कलह, देह कष्ट तथा क्षय, वात पित्तादि रोग होते हैं।

शत्रु क्षेत्री शनि दशा

दिनेशसूनो स्वरिराशिगस्य वैश्याद्धनं विन्दति भूमिनाशम्।
कृषेर्विनाशं स्वपदच्युतिं च वैरं समायाति शरीरकृच्छ्रम्॥16॥

शत्रुक्षेत्री शनि की दशा में वैश्य वर्ग से धन प्राप्ति, भूमि में हानि, कृषि या रोजगार में हानि, पद से मुक्ति, वैरभाववृद्धि होती है तथा शरीर में कमजोरी होती है।

अतिशत्रुक्षेत्री शनिदशा

शनर्दशायामतिशत्रुगस्य स्थानच्युतिं बन्धुविरोधितां च।
चौरादिभूपैर्भयमत्रविघ्नो भृत्यार्थदारात्मजकोपमेति॥17॥

अति शत्रु क्षेत्री शनि दशा में स्थान च्युति, बन्धुओं से विरोध, चोरभय, राजभय, कार्य में विघ्न, स्त्रीपुत्र व सेवकों का कोप होता है।

उच्चयुक्त शनि दशा

उच्चखेचरसंयुक्तशनेर्दाये महत्सुखम्।
किंचिद्राज्यं कृषेर्लाभो भृत्यवर्गार्थनाशनम्॥18॥

किसी उच्च ग्रह के साथ स्थित शनि की दशा में बहुत सुख, थोड़ा बहुत राज्य लाभ, कृषि कार्य से लाभ, भृत्यों व धन की हानि होती है।

नीचयुक्त शनि दशा

नीचखेचरसंयुक्तशनेर्दाये महद्भयम्।
विप्रलम्भोपवासश्च नीचवृत्यानुजीवनम्॥19॥

नीचयुक्त शनि की दशा में बहुत भय, वियोग, उपवास रखने की नौबत, नीच वृत्ति से जीवन यापन होता है।

शुभयुक्त शनि दशा

शुभान्वितस्यापि शनेर्दशायां विशेषतो ज्ञानमुपैति काले।
परोपकारं नृपलब्धभाग्यं कृष्णादिधान्यान्ययशसश्च लाभम्॥20॥

शुभ ग्रह युक्त शनि दशा में ज्ञान वृद्धि, बुद्धि की प्रकाशकता, परोपकारवृत्ति, राजा के सहयोग से लाभ व भाग्यवृद्धि, काले अनाज व लोहे से लाभ होता है।

पापयुक्त शनि दशा

पापान्वितस्यापि शनेर्दशायां पापानि गूढानि करोति काले।
नीचस्त्रिया संगमनं विशेषाच्चौरादिनीचैः कलहं विदारम्॥21॥

पापयुक्त शनि दशा में गुप्त पाप कर्मों के प्रति अभिरुचि, नीच स्त्री का संग, चोरादि नीच जनों से कलह व स्त्री हीनता होती है।

शुभदृष्ट शनि दशा

शुभेक्षितस्यापि शनेर्दशायां स्त्रीपुत्रभृत्यार्थमुपैति काले।
पश्चादुपैत्यत्र च भूरिकष्टं गोभूमिवाणिज्यकृषेर्विनाशम्॥22॥

शुभयुक्त शनि दशा में स्त्री, पुत्र, नौकर व धन का सुख होता है। बाद में अर्थात् दशा के अन्त में बहुत परेशानियाँ होती हैं तथा गोधन, भूमि व व्यवसाय में हानि होती है।

पापदृष्ट शनि दशा

पापेक्षितस्यापि शनेर्दशायां भृत्यार्थदारात्मजसोदराणाम्।
नाशं समायाति परापवादं कुभोजनं कुत्सितगन्धमाल्यम्॥23॥

पापदृष्ट शनि दशा में नौकरों, स्त्री, पुत्र व भाइयों की हानि, बदनामी, रहन सहन के स्तर में गिरावट होती है।

उच्चनवांशगत शनि दशा

उच्चांशमन्ददाये विविधसुखानन्दभोगभाग्यादीन्।
कुरुते विदेशयानं ग्रामसभामण्डलाधिपत्यं वा॥24॥

उच्चनवांश गत शनि दशा में विविध सुख, आनन्द, भोग, भाग्य वृद्धि, विदेशयात्रा, किसी सभा सोसायटी का आधिपत्य प्राप्त होता है।

नीचनवांश गत शनि दशा

नीचांशमन्ददाये नीचाचारेण जीवतं लभते।
सर्वेषां प्रेष्यत्वं धनसुतदारैश्च विग्रहं दुःखम्॥25॥

नीच नवांशगत शनि की दशा में निम्न श्रेणी का आचरण व स्तर विहीन कार्य जीविका, बहुत से लोगों का दबाव, धन, पुत्र व स्त्री जनों से मनमुटाव होता है।

उच्चराशि नीच नवांशगत शनि दशा

उच्चराशिगतो मन्दो नीचांशकसमन्वितः।
दशादौ सुखमाप्नोति दशान्ते कष्टमाप्नुयात्॥26॥
नीचराशिगो मन्दः स्वोच्चांशकसमन्वितः।
दशादौ दुःखमाप्नोति दशान्ते सुखदो भवेत्॥27॥

उच्चराशि गत शनि यदि नीच नवांश में हो तो दशा के आरम्भ में सुख तथा दशा के अन्त में कष्ट होता है। इसके विपरीत नीचगत शनि नवांश में उच्च में हो तो दशा के पूर्वार्ध में दुःख तथा दशा के उत्तरार्ध में सुख होता है।

वक्री शनि दशा

वक्रचारयुतो मन्दः करोति विफलां क्रियाम्।
उद्योगभंगं दुःखं च सोदराणां च नाशनम्॥28॥

वक्री शनि की दशा में सभी कामों में बाधाएँ तथा असफलताएँ, परिश्रम की असफलता, दुःख व भाइयों को विशेष कष्ट होता है।

शुभाशुभ शष्ट्यंशगत शनि दशा

सौम्यषष्ट्यंशसंयुक्तशनिदाये महत्सुखम्।
दारपुत्रार्थसम्पत्तिं लभते बन्धुविग्रहम्॥29॥
क्रूरषष्ट्यंश संयुक्तशनिदाये महद्भयम्।
नृपकोपं पदभ्रंशं कारागृहनिवेशनम्॥30॥

शुभ षष्ट्यंशगत शनि की दशा में बहुत सुख, स्त्री, पुत्र, धन का सुख और बन्धुओं से विरोध होता है। क्रूर षष्ट्यंश में स्थित शनि दशा में बहुत भय, राजकोप, पदच्युति, सजा आदि भी हो सकती हैं।

वैशेषिकांशगत शनि दशा

वैशेषिकांशं संयुक्तः शनिः सौख्यं करोति च।
विशेषाद् राजसम्मानं विचित्राम्बरभूषणम्॥31॥

वैशेषिकांशगत शनि की दशा में बहुत सुख, खासतौर में राज सम्मान, विचित्र, अनोखे कलात्मक वस्त्राभूषणों की प्राप्ति होती है।

क्रूर द्रेष्काणगत शनि दशा

क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तशनिदाये महद्भयम्।
उद्बन्धनं विषाद्भीतिं नृपचौराग्निजं भयम्॥32॥

क्रूर द्रेष्काण में स्थित शनि दशा में बहुत भय, गला घुटने से मृत्यु, या कष्ट, विषभय, राजा, चोर व अग्नि से भय होता है।

कर्क में 2.3, वृश्चिक में 1.2.3 मीन का 3 मकर का 1, ये सब क्रूर द्रेष्काण हैं। अपि च बाईसवाँ द्रेष्काण होने से क्रूर ही हैं।

अस्तंगत शनि दशा

तुल्यं व्ययायं प्रकरोति मूढः शनिः स्वपाके रणभंगुरं च।
सन्तोषकीर्त्यावियुतं मनुष्यं क्लेशैरनेकैः परितप्तचित्तम्॥33॥

अस्तंगत शनि दशा में धनागम व व्यय बराबर, युद्ध में पराजय, सन्तोष में कमी, कीर्ति की हानि, अनेक कलेशों से मन में उदासी होती है।

द्वादशभावगत शनि दशा

लग्नगतशनेर्दाये देहकृच्छ्रमुपैति च।
स्थानच्युतिं प्रवासं च राजकोपं शिरोरुजम्॥34॥

अशुभ राशि में स्थित लग्नगत शनि की दशा में देहकष्ट, स्थान हानि, प्रवास, राजकोप व सिर में रोगादि अशुभ फल होते हैं।

द्वितीयस्थ शनेर्दाये वित्तनाशमथाक्षिरुक्।
राजकोपं मनस्तापमन्नशेषं मनोरुजम्॥35॥

अशुभ राशि में द्वितीयस्थ शनि की दशा में धनहानि, नेत्ररोग, राजकोप, मन में सन्ताप, भूख में कमी, मनोरोग होते हैं।

तृतीयस्थशनेर्दाये कृषिगोधनसम्पदः।
मनोजाड्यं समुत्साहं भ्रातृतद्वर्गनाशनम्॥36॥

शुभ राशिस्थ तृतीयगत शनि की दशा में विशेषतया खेती, पशुधन व सम्पत्ति बढ़ती है; लेकिन मन में अनमनापन, सन्देह, उत्साह वृद्धि, भाइयों व उनके परिवार में कष्ट होता है।

चतुर्थस्थशनेर्दाये मातृतद्वर्गनाशनम्।
गृहदाहं पदभ्रंशं चौरार्तिं नृपपीडनम्॥37॥

चतुर्थस्थ अशुभ शनि की दशा में माता व मातृवर्ग को कष्ट, घर में अग्निभय, पदच्युति, चोर पीड़ा व राजपक्ष से कष्ट होता है।

पंचमस्थ शनेर्दाये पुत्रनाशं मनोरुजम्।
राजकोपं भृत्यनाशं बन्धुस्त्रीवित्तविभ्रमम्॥38॥

पंचमगत अशुभ राशिस्थ शनि दशा में पुत्रहानि, मनोरोग, राजकोप, सेवकों से सन्ताप, बन्धुओं व स्त्री से परेशानी और धन का व्यर्थ व्यय होता है।

षष्ठस्थरविसूनोस्तु दशाकालेऽरिपीडनम्।
व्याधिचौरविषैर्बाधां गृहक्षेत्रादिनाशनम्॥39॥

दारराशिगतस्यापि शनेर्दायेऽरिपीडनम्।
मूत्रकृच्छ्रं महाद्वेषं स्त्रीहेतोर्मरणंतु वा॥40॥

षष्ठस्थ अशुभ शनि की दशा में शत्रु पीड़ा, रोग, चोर विष व शत्रुओं से भय, जमीन, जायदाद या मकान की हानि होती है। सप्तमस्थ अशुभ शनि की दशा में शत्रु पीड़ा, मूत्ररोग, बहुत शत्रुता, स्त्री के कारण विशेष कष्ट होता है।

मरणपदस्थो मन्दः करोति नित्यं सुतार्थदाराणाम्।
नाशं भृत्यजनानां गोमहिषीभूमिदारनाशं च॥41॥
नवगतमन्ददाये पित्रोर्नाशं गुरोस्तथैवापि।
लभते विदेशयानं स्वकुलजातैर्विनाशमुपयाति॥42॥

अष्टमस्थ शनि की अशुभ स्थिति से स्त्री पुत्र व धन की हानि, सेवकों की हानि, पशुधन, जायदाद व स्त्री की हानि होती है।

नवमस्थ शनि की दशा में माता-पिता को विशेष कष्ट, गुरुजनों को कष्ट विदेशयात्रा, अपने ही कुल के लोगों द्वारा विशेष हानि होती है।

दशमस्थ शनेर्दाये कर्मनाशमुपैति च।
देशान्तरं पदभ्रंशं निगडं राजपीडनम्॥43॥

दशमस्थ अशुभ शनि की दशा में कार्यहानि, देशान्तरवास, पदच्युति, बन्धन, व राजपीड़ा होती है।

लाभगमन्ददशायां लभते विविधार्थसौख्यसन्मानम्।
सुतदारभृत्यसौख्यं मनोविलासं कृषेश्च लब्धधनम्॥44॥
व्ययगतमन्ददशायां स्वजनद्वेषं परस्त्रियं लभते।
भृत्यापत्यविरोधं महोद्यमं द्वेषपरिभूतम्॥45॥

एकादशस्थ शुभ शनि की दशा में विविध प्रकार से धनागम, सुख, सम्मान, स्त्री पुत्रों व भृत्यों का सुख, मन में खुशी, रोजगार से अच्छा धनागम होता है।

व्ययस्थ अशुभ शनि की दशा में अपने लोगों से द्वेष, परस्त्री सम्पर्क, नौकरों व सन्तान से विरोध, बहुत परिश्रम, द्वेष से पीड़ा होती है।

सूर्ययुक्त शनिदशा

अर्कगमन्ददशायां भीतिं चौराग्निभूपसंघैश्च।
विविधापदं च दुःखं विदेशयानं स्वबन्धुनाशश्च॥46॥

सूर्य के साथ स्थित शनि की दशा में भय, चौरों व अग्नि से पीड़ा, राजपक्ष से कष्ट, विविध आपत्तियाँ, दुःख, विदेश पलायन, स्वबन्धुओं की हानि होती है।

स्थानबली शनि दशा

स्थानवीर्ययुतमन्ददशायां दारपुत्रधनकीर्तिमुपैति।
चौरशत्रुनृपवह्निभयं वा बन्धुनाशमथवाक्षिगुदार्तिम्॥47॥

स्थानबली शुभ शनि की दशा में स्त्री पुत्र, धन व कीर्ति का लाभ होता है। साथ ही वह चोरादि से भय, बन्धुहानि, नेत्र रोग या गुदाद्वार में रोगादि भी करता है।

दिग्बली शनि दशा

मन्दस्य दिग्वीर्ययुतस्य दाये दिगन्तरादाप्तसुखार्थकीर्तिम्।
भूगूढदारात्मजसोदाराणां विनाशनं बन्धुजनैर्विरोधम्॥48॥

दिग्बली शनि की दशा में दूर दूर तक कीर्ति वृद्धि, सुखोपलब्धि व धन लाभ, गुप्त सम्बन्धों वाले व्यक्तियों की हानि, बन्धुओं से विरोध, जमीन में हानि होती है।

कालबली शनि दशा

कालवीर्ययुतमन्ददशायां कालकूटविषभीतिमुपैति।
दारपुत्रनृपचौरभयं वा धान्यभूमिकृषिवाहनलाभम्॥49॥

कालबली शनि की दशा में विषादि मारक पदार्थों से भय, स्त्री पुत्रादि को कष्ट, सरकारी विभागों व दुष्टों से कष्ट, लेकिन वाहन, व्यवसाय व भूमि का लाभ होता है।

चेष्टाबली शनि दशा

चेष्टाबलैः संयुतमन्ददाये नरं सुचेष्टं सुतरां सदैव।
सत्यान्वितं देवगुरुप्रभावं सुतीर्थयुक्तं पितृभक्तिहीनम्॥50॥

चेष्टाबली शनि की दशा में मनुष्य उत्साही, प्रयत्नशील, सत्यप्रिय, देवों व गुरुजनों की प्रसन्नता का पात्र, उत्तम पुत्र या शिष्य से युक्त अथवा अच्छी विद्या की प्राप्ति, माता-पिता की कम सेवा करने वाला होता है।

निसर्ग बली शनि दशा

निसर्गवीर्येणयुतोऽर्कसूनुर्नरं करोति वपुवीर्ययुक्तम्।
परैरधृष्यं वनितास्वभीष्टं प्रियंवदं सर्वकलासुदक्षम्॥51॥

निसर्ग बली शनि की दशा में उत्तम स्वास्थ्य, दबंगता में वृद्धि, स्त्री प्रियता, प्रियवचन बोलने का स्वभाव व कार्यकुशलता प्राप्त होती है।

दृग्बली शनि दशा

दृग्वीर्ययुक्तस्य शनेर्विपाके नरं महोग्रं कुरुते सरोषम्।
कृषिक्रियालब्धहिरण्यसस्यं वराश्वयुक्तं सुखिनं सुशीलम्॥52॥

दृग्बली शनि की दशा में मनुष्य का स्वभाव उग्र, क्रोध की अधिकता, व्यवसाय में लाभ, सुवर्ण लाभ, उत्तम फसल (उत्पादन), उत्तम वाहन, सुख, सुशीलता होती है।

द्वादश राशिगत शनि दशा

मेषस्थितस्यार्कसुतस्य पाके प्रवासशीलो मनुजः स्वतन्त्रः।
स्यान्मर्मचर्मामयपीडितांगस्त्यक्तः स्वमात्रा निजबन्धुवर्गैः॥53॥

मेषगत शनि की दशा में मनुष्य को प्रायः घर से बाहर रहने के योग, इधर-उधर भ्रमण करने का काम, हृदय या चर्मरोग, कोई भीतरी रोग, अपने बन्धुओं व माता से वियुक्त होता है।

पाके वृषस्थस्य खरांशुसूनोर्भूपालसन्मानविराजमानः।
रणांगणप्राप्तयशो विशेषो मेधान्वितो धर्मरतो नरः स्यात्॥54॥

वृषस्थ शनि की दशा में राजमान्यता, युद्ध या विवाद में यश, विशेष बुद्धि का उदय, धार्मिक विचार आदि अच्छे फल होते हैं।

द्वन्द्वोपयातस्य शनेर्दशायां सुतार्थभोगाभिरतस्त्वशान्तः।
रणाभिघातः परकार्यरक्तः स्त्रीचौरतः स्यात्पुरुषोऽतिनिःस्वः॥55॥
कर्काधिरूढस्य शनेर्दशायां नरः स्वतन्त्रो धिषणावरेण्यः।
चिन्तातुरो वा सुतबन्धुहीनः कर्णाक्षिपीडामयतः कृशांगः॥56॥

मिथुन राशिस्थ शनि दशा में स्त्री, पुत्र धन का खूब सुख, मन में थोड़ी अशान्ति, युद्ध में पराजय या हानि, दूसरों के काम में व्यस्तता, किसी स्त्री या चोर से बड़ी हानि के कारण असहाय स्थिति पैदा हो सकती है।

कर्कगत शनि दशा में मनुष्य स्वावलम्बी, बुद्धिमान, कभी-कभी चिन्तायुक्त, पुत्रों व सहायकों से हीन, कान या आँख में रोग से पीड़ित होता है।

पंचाननस्थस्य शनेर्दशायां रोगाधिबाधा बहुधा नराणाम्।
कलिः कलत्रात्मजबन्धुवर्गैश्चतुष्पदैर्दासजनैरसौख्यम्॥57॥
पाथोनसंस्थस्य शनेर्दशायां भूनीरगेहादि विधानचित्तः।
विद्याप्रसंगाप्तधनस्तथोच्चप्रदेशतः स्याद् द्विजदेवभक्तः॥58॥

सिंहस्थ शनि दशा में रोग पीड़ा होने की प्रायः सम्भावना रहती है। स्त्री पुत्रों या परिजनों से कलह, चौपाये पशु व नौकरों से सुख कम होता है।

कन्यागत शनि दशा में भूमि, मकान, जायदाद बनाने में अधिक समय खर्च

होता है। किसी देश-प्रदेश से अपनी विद्या के कारण अच्छा धन प्राप्त होता है और द्विजों व देवों के प्रति आदरभाव पैदा होता है।

पाके तुलाश्रितशनेर्गजवारत्न
हेमाम्बराद्यभिगमः स्वकुलानुमानात्।
ख्यातिं जनेषु विजयो वनिताविलासः
सौख्यं भवेच्च विविधं खलु मानवानाम्॥59॥
कौर्प्योपयातस्य शनेर्दशायां वृथाटनः साहसकर्मयुक्तः।
दयाविहीनो कृपणोऽनृतश्च नीचानुयातः परजीवनः स्यात्॥60॥

तुलागत शनि दशा में हाथी घोड़ें जैसे राजसी वाहन, सुवर्णवस्त्रादि का लाभ, अपने कार्य के स्तर के अनुसार विशेष उन्नति, प्रसिद्धि, विजय, स्त्री सुख, विविध सुख होते हैं।

वृश्चिकगत शनि दशा में व्यर्थ परिश्रम, साहसिक कार्य करने की प्रवृत्ति, निर्दयता, झूठा आचरण, नीच लोगों का सहयोग, दूसरों पर आश्रित रहने के योग होते हैं।

शरासनस्थस्य शनेर्दशायां नरेन्द्रमन्त्री चतुरन्घ्रियुक्तः।
कान्तासुतानन्दभरी नरः स्याद् रणांगणप्राप्तयशो वरेण्यः॥61॥
नक्रोपयातस्य शनेर्दशायां श्रमाप्तवित्तं सुभगत्वमुच्चैः।
वृद्धांगनाक्लीवजनैः सखित्वं विश्वासघातेन धनच्युतिर्वा॥62॥

धुनराशिगत शनि दशा में मन्त्रीपद, सलाहकारी रोजगार वृद्धि, चौपाये वाहन से युक्त, स्त्री पुत्रादि की ओर से आनन्द, विवाद या मुकाबले में यश तथा श्रेष्ठता प्राप्त होती है। मकरगत शनि दशा में परिश्रम से धनलाभ, लोकप्रियता, वृद्ध स्त्री या नपुसंकों की ओर से सहयोग समर्थन लेकिन विश्वासघात से धनहानि होती है।

शनेर्दशायां कलशस्थितस्य महाप्रतिष्ठा स्वकुले वरिष्ठः।
कृषिक्रियापुत्रधनादियुक्तो नरो भवेत्सर्वसुखैः प्रपूर्णः॥63॥
मीनस्थितस्यार्कसुतस्य पाके श्रेणीपुरग्रामकृताधिकारः।
भवेन्नराणां द्रविणागमश्च सुखं तथोत्साहविनीतता च॥64॥

कुम्भगत शनि दशा में बहुत प्रतिष्ठा, अपने कुल में श्रेष्ठता, रोजगार में लाभ, पुत्रों व धन का सुख, सभी प्रकार से सुखवृद्धि होती है।

मीनगत शनि दशा में गाँव, बस्ती, सभा, सोसायटी का अधिकार, धनागम, सुख, मन में उत्साह विनीत स्वभाव होता है।

विशेष फल

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे मन्दे मित्रक्षेत्रेऽथवा यदि।
मूलत्रिकोणे भाग्ये वा तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥65॥

दुश्चिक्ये लाभगे चैव राजसम्मानवैभवम्।
सत्कीर्तिधनलाभश्च विद्यावादविनोदकृत्॥66॥
महाराजप्रसादेन गजवाहनभूषणम्।
राजयोगं प्रकुर्वन् वै सेनाधीशान्महत्सुखम्॥67॥
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि राज्यलाभं करोति च।
गृहे कल्याणसम्पत्तिदारपुत्रादिलाभकृत्॥68॥

शनि, स्वोच्च, स्वक्षेत्र, मित्रराशि, मूलत्रिकोण, नवम भाव में स्थित, स्व या उच्च नवांश में हो।

3.6.11 भावों में स्थित हो तो राज-सम्मान, वैभव, सत्कीर्ति, धनलाभ, विद्यावृद्धि, विनोद प्रियता।

बड़े लोगों के सहयोग से बड़े वाहनों व आभूषणों की प्राप्ति, राजयोग के सुख, बड़े अधिकारी से बहुत सहयोग।

लक्ष्मी की भरपूर कृपा, राज्यलाभ, घर में कल्याण व मंगल, स्त्री पुत्रादि का लाभ होता है।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वास्तंगतेऽपि वा।
विषशस्त्रादिपीडा च स्थानभ्रंशं महद्भयम्॥69॥
पितृमातृवियोगं च दारपुत्रादिपीडनम्।
राजवैषम्यकार्याणि द्युनिशं बन्धनं तथा॥70॥

6.8.12 भावगत, नीचगत, अस्तंगत, शनि हो तो उसकी दशा में विष या शस्त्रपीड़ा, स्थानहानि, भय, माता-पिता का वियोग, स्त्री पुत्र को पीड़ा, अधिकारी के कठोर रवैये से बन्धन या सख्त ड्यूटी निभानी पड़ती है।

शुभयुक्तेक्षिते मन्दे योगकारकसंयुते।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा मीनगे कार्मुके शनौ॥
राज्यलाभं महोत्साहं गजाश्वाम्बरसंकुलम्॥71॥

शनि यदि शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो (और शुभ राशि भाव में हो) या योग कारक ग्रह के साथ स्थित हो, केन्द्र त्रिकोण में शुभ राशियों में हो, 9.12 राशियों में कहीं भी हो तो राज्यलाभ, बहुत उतसाहजनक परिणाम, विविध वाहन सौख्य समन्वित, उत्तम रहन-सहन होता है।

इति श्रीदशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने शनि-
दशाफलाध्यायो नवमः॥9॥
॥आदितः श्लोकाः॥714॥

10
॥ बुधदशाफलाध्यायः ॥

सामान्य दशाफल

स्वकीयदाये गुरुबन्धुमित्रैरर्थार्जनं कीर्तिसुखं करोति।
दौत्यं च सत्कर्महिरण्यपण्यैर्धनायतिं वातरुजं कुमारः॥1॥

जातक पारिजात का मत है कि बुध की दशा में सामान्यतः गुरुजन, बन्धुजन, मित्रों की सहायता से धनागम, कीर्ति वृद्धि, शुभ कार्य, मध्यस्थता या दूत कार्य करने की योग्यता, सुवर्ण के व्यापार से धन वृद्धि, साधारण वातरोग, नसों नाड़ियों में जकड़न अकड़न होती है।

दिव्याहारविहारयानजनतापत्यार्थमानाम्बर—
श्रेणीग्रामवनालयेन्दुवदनालाभं विशेषादिह।
सद्भिः संगमनंगरंगमतुलं प्रोत्तुंगमातंगजं
सौख्यं संतनुते दशा सुयशसो वृद्धिं च सिद्धिं विदः॥2॥

भावकुतूहल में बताया गया है कि बुध की दशा में उत्तम खान-पान, उत्तम भोग, अच्छा वाहन सुख, जनप्रियता, सन्तान सुख, धन सुख, वस्त्राभूषण सुख, नगर या मंडलादि में मान्यता, जायदाद वृद्धि, स्त्री-सुख, सत्संगति, कामोपभोग, ऊँचे हाथी की सवारी (बड़ा वाहन) यशोवृद्धि, सिद्धि व वृद्धि होती है।

चन्द्राभरण जातक में भी प्रायः इन्हीं बातों का समर्थन किया गया है।

शम्भुहोराप्रकाश का मत

विद्याविवेकविभुताकृषिकर्मयुक्तो धर्मक्रियाविविधयज्ञविधानचितः।
वित्तान्वितश्च विविधोद्यमवृत्तियोगाच्छिल्पादिकर्मकुशलो विविधोत्सवाढ्यः॥3॥

बुध दशा में विद्यालाभ, विवेकबुद्धि का उदय, सामर्थ्य वृद्धि, उत्पादक कार्यों में व्यस्तता, धार्मिक आचरण, विविध यज्ञों का सम्पादन, धन लाभ, विविध प्रयत्नों से लाभ व सफलता, कार्यकुशलता, अनेक उत्सवों का दर्शन होता है।

संगीतनर्तनकुतूहलहास्यहर्षैः कालक्रमत्वमतिसद्विनयोपलब्धिः।
आचार्यसज्जनमहत्त्वमथो नवान्नसद्भाण्डभूषणगृहादि विनिर्मितिश्च॥4॥

बुध दशा में हास-परिहास, प्रमोद, संगीत का सुख, क्रमशः वर्धमान विनय, आचार्यों व सज्जनों द्वारा मान, नया अन्न भक्षण, उत्तम वस्त्राभूषण, बर्तन व नए घर का निर्माण आदि होता है।

पुंसां कलत्रतनयादिसुखोपलब्धिर्पाके बुधस्य कफपित्तसमीरपीडा।
हानिर्धनस्य सुधियात्र बलाबलत्वं पूर्वं विचिन्त्य सदसत्फलमेव वाच्यम्॥5॥

बुध दशा में स्त्री, पुत्रादि का सुख, पाप प्रभाव होने पर वात पित्त कफ विकृति अर्थात् स्वास्थ्य चिन्ता, धन हानि आदि होती है। विद्वानों को बुध की स्थिति व बलाबल तथा शुभाशुभत्व का विचार कर फल कहना चाहिए।

उच्चगत बुध दशा

अत्युच्चसोमात्मजदायकाले धनान्वितख्यातिमुपैतिसौख्यम्।
ज्ञानं च कीर्तिं जननायकत्वं स्त्रीपुत्रभूम्यर्थमहोत्सवं च॥6॥
उच्चस्थितस्यापि शशांकसूनोर्दशामहत्त्वं कुरुतेऽर्थसौख्यम्।
देहस्य पुष्टिं धन-धान्यपुत्रगोवाजिमत्तेभमृदंगवाद्यम्॥7॥

परमोच्चगत बुध दशा में धनवृद्धि, यशोवृद्धि, सुख, ज्ञानवृद्धि, जननायकता, स्त्री, पुत्र भूमि व बड़े उत्सवों का सुख होता हैं।

उच्चगत बुध दशा में महत्त्ववृद्धि, धन सुख, शरीर सुख, धन-धान्य, पशु धन, चौपया धन, वाहन व गीत वाद्यादि का सुख होता है।

आरोहिण्यादि दशाफल

अरोहिणी सौम्यदशाप्रपन्ना यज्ञोत्सवं गोवृषवाजिसंघम्।
मृद्वन्नभूषाम्बरयानलाभं वाणिज्यभूम्यर्थपरोपकारम्॥8॥
शशांकसूनोरवरोहिणी या दशा महत्कष्टतरं च दुःखम्।
विज्ञानहीनं परदारसंगं नृपाग्निचौरैर्भयमत्र कष्टम्॥9॥

उच्च राशि के निकट स्थित बुध दशा में यज्ञादि उत्सव, पशु धन व वाहन वृद्धि, उत्तम भोजन, अच्छा रहन-सहन, व्यापारवृद्धि, भूमि व धन वृद्धि तथा परोपकार की सामर्थ्य पैदा करती है। नीच राशि के निकट स्थित बुध दशा में बहुत कष्ट व दुःख, बुद्धि की महता, परस्त्री संग, विविध आपदाएँ तथा भय होता है।

नीचगत बुध दशा

नीचस्थचन्द्रात्मजदायकाले ज्ञानेन हीनं स्वजनैर्वियुक्तम्।
पदच्युतिं बन्धुविरोधितां च विदेशयानं वनवासदुःखम्॥10॥

नीचगत बुध दशा में ज्ञान विवेक बुद्धि में कमी, अपने लोगों से दूरी, पदच्युति, बन्धुओं से विरोध, विदेशवास, वनवास जैसा दुःख होता है।

मूलत्रिकोणी बुध दशा

मूलत्रिकोणान्वितसौम्यदाये राज्यं महत्सौख्यकरं च कीर्तिम्।
विद्याविशालं निगमान्तशीलं पुराणधर्मश्रवणादिपूतः॥11॥

मूल त्रिकोणी बुध दशा में राज्य प्राप्ति, बहुत सुख, कीर्तिवृद्धि, विद्या वृद्धि, वेदान्तशास्त्रोक्त आचरण, पुराणों व धर्मशास्त्रों की कथाओं का श्रवण होता है।

स्वक्षेत्री बुध दशा

स्वक्षेत्रगस्यापि शशांकसूनोः प्राप्तौ दशायां धनधान्यसम्पत्।
वाणिज्यगोभूमिसुतार्थदारमृद्वन्नपानाम्बरभूषणाप्तिम् ॥12॥

स्वक्षेत्री बुधदशा में धन-धान्य सम्पत्ति की वृद्धि, व्यापार में लाभ, परिवार सुख, जायदाद का निर्माण, उत्तम भोजन, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति होती है।

अति मित्रक्षेत्री व मित्रक्षेत्री बुध दशा

अतिमित्रराशिगस्य दशां प्रपद्यमहत्त्वमधिशेते।
भूपतिमैत्रीं सौख्यं धनसुतदारांश्च बन्धुसम्मानम्॥13॥
मित्रक्षेत्रदशायां शशांकसूनोर्धनायतिः सौख्यम्।
नामद्वयसम्प्राप्तिः स्वनामांकितगद्यपद्यानि॥14॥

अति मित्र क्षेत्री बुध दशा में मनुष्य को महत्त्व प्राप्त होता है। राजाओं से मैत्री, सुख, धन पुत्र व स्त्री का सुख, बन्धुओं में सम्मान मिलता है।

मित्रक्षेत्री बुध दशा में धनवृद्धि, सुख, पृथक नामों से प्रसिद्धि होती है तथा उसकी प्रशंसा में गद्य-पद्यमय प्रशंसापत्र लिखे जाते हैं।

समक्षेत्री बुध दशा

समर्क्षगस्यापि शशांकसूनोर्दशासुखं धान्यसुताम्बराणि।
करोति राज्यच्युतिमत्रविघ्नं विज्ञानहीनं पिटिकादिरोगम्॥15॥

समक्षेत्री बुध दशा में सुख, धान्य-वृद्धि, सन्तोषजनक रहन-सहन होता है, लेकिन पाप प्रभाव हो तो राज्यच्युति, विघ्न, बुद्धिमन्दता, त्वचा रोग होते हैं।

शत्रु क्षेत्री बुध दशा

शशांकसूनोस्वरिराशिगस्य शत्रोर्भयं भूपतिकोपजातम्।
विद्याविहीनं कुलहीनसेवा कुभोजनं दारसुतार्थनाशम्॥16॥

शशांकसूनोरतिशत्रुराशिं गतस्य पाके विपदं च दुःखम्।
उद्योगभंगं स्वजनैर्विरोधं यज्ञादिविघ्नं शुभकर्मनाशम्॥17॥

शत्रुक्षेत्री बुध दशा में शत्रुभय, राजकोप, विद्याहानि, कुलहीन लोगों का सम्पर्क, साधारण रहन-सहन, स्त्री पुत्र व धन के सुख में कमी होती है।

अति शत्रुक्षेत्री बुध दशा में दुःख, विपत्तियाँ, परिश्रम की विफलता, जन-विरोध, शुभ कार्यों में विघ्न बाधाएँ होती है।

उच्चादियुक्त बुध दशा

उच्चखेचरसंयुक्तसौम्यदाये महत्सुखम्।
भाग्योत्तरं सुविद्यां च वाणिज्यं गोकृषिक्रियाः॥18॥
नीचखेचरसंयुक्तसौम्यदायेऽतिकष्टताम्।
पदभ्रंशं बन्धुनाशं कर्मनाशं मनोरुजम्॥19॥

उच्चग्रह से युक्त बुध दशा में बहुत सुख, भाग्यवृद्धि, विद्याप्राप्ति, व्यापार, कृषि, पशुपालन आदि से लाभ होता है, अर्थात् नया, व्यापार व सभी नए पुराने व्यापारों में लाभ होता है।

नीचयुक्त बुध दशा में कष्टवृद्धि, पदच्युति, सहायकों में कमी, काम में विफलता मन में उदासी होती है।

शुभाशुभ युत दृष्ट बुध दशा

विदः सौम्ययुतस्यापि परिपाके महत्सुखम्।
राज्ययोगं सुखं कीर्तिं दारपुत्रनृपात्सुखम्॥20॥
विदः पापान्वितस्यापि दाये पापमुपैति च।
क्षेत्रार्थदारपुत्रादिकृषिगोभूमिनाशनम्॥21॥

शुभयुक्त बुध दशा में बहुत सुख, राजयोग, कीर्ति, परिजनों व राजादि से सुख होता है। पापयुक्त बुध दशा में पापवृद्धि, जायदाद, स्थान, धन, स्त्री-पुत्रादि व व्यवसाय में हानि होती है।

सौम्येक्षितस्यापि शशांकसूनोर्दशाविपाके महती च कीर्तिम्।
विद्याविलासोद्भवराजपूज्यं कान्तिप्रतापं यशसासमेतम्॥22॥
पापेक्षितस्यापि शशांकसूनोर्धान्यक्षयं बन्धुजनैर्वियुक्तम्।
विदेशयानं स्वपदच्युतिं च प्रेष्यानुवृत्त्या कलहोऽत्रकृच्छ्रम्॥23॥

शुभ दृष्ट बुध दशा में अच्छी कीर्ति, विद्या का विलास, विद्वत्ता के कारण राज-सम्मान, कान्ति वृद्धि, प्रताप व यश होता है।

पापदृष्ट बुध दशा में धन-धान्य की हानि, बन्धु वियोग, विदेश यात्रा, पदच्युति, निचले पद पर काम करना, कलह व कष्ट होते हैं।

उच्च-नीच नवांशगत बुध दशा

उच्चांशसंयुक्त शशांकसूनोर्दशाविशेषे सुतभूषणाप्तिः।
मनोविलासं मदनाभिराममुत्साहधैर्यं च जलाभिषेकम्॥24॥
नीचांशकयुतः सौम्यो नीचवृत्त्यानुजीवनम्।
प्रेश्यत्वं परिहासं च दशायां विदधाति तत्॥25॥

उच्च नवांशगत बुध दशा में पुत्रों व भूषणादि की प्राप्ति, मन में प्रसन्नता, स्वस्थ शरीर, भोगविलास उत्साह, धैर्य, जलक्रीड़ा का सुख मिलता है।

नीच नवांशगत बुध दशा में स्तर से नीचे के काम से जीवनयापन, उपहास का पात्र बनने के योग तथा अधीनता के अवसर होते हैं।

राशि नवांश भेद से फल

उच्चराशिगतः सौम्यो नीचभागगतो यदि।
राज्यं सुखं महत्कीर्तिं विनाशयति तत्क्षणात्॥26॥
उच्चराशिगतः सौम्यो नीचांशकसमन्वितः।
करोति कर्मवैकल्यं निजदाये च वर्धनम्॥27॥

उच्च राशिगत बुध यदि नीच नवांश में हो तो उसकी दशा में प्रतिष्ठा, पद, कीर्ति प्रायः नष्ट हो जाती है।

अन्यत्र कहा गया है कि इस स्थिति में सभी काम देर से बनते हैं, लेकिन कुल मिलाकर बढ़ोत्तरी होती है।

चन्द्रात्मजः स्वनीचस्थः स्वोच्चभागसमन्वितः।
अशुभं फलमादौ तु शुभमन्त्ये प्रयच्छति॥28॥

नीचगत बुध नवांश में उच्च हो तो अपनी दशा में शुरू में अशुभ फल देकर, उत्तरार्ध में शुभ फल देता है।

षष्ट्यंशानुसार बुध दशा

क्रूरषष्ट्यंशसौम्यस्य दशापाके महद्भयम्।
चौराग्निभूपैर्भीतिः स्याच्छुभदृग्योगवर्जिते॥29॥
मृद्वंशादियुते सौम्ये राज्यलाभं महत्सुखम्।
मार्दवं सर्वभूतेषु कृषिपुत्रार्थसम्पदम्॥30॥

क्रूर षष्ट्यंश में स्थित बुध दशा में बहुत भय, विविध आपत्तियाँ होती हैं। यदि वह बुध शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो अशुभ फल नहीं होता है।

मृदुषष्ट्यंश में स्थित बुध दशा में राज्यप्राप्ति, सुख, प्राणियों पर दयाभाव, धन सम्पत्ति व उत्तम सन्तान होती है।

वैशेषिकांशगत बुध दशा

सौम्ये वैशेषिकांशस्थे विशेषाद्राज्यपूज्यताम्।
सुगन्धाम्बरमाल्यं च विद्यागोष्ठिरहस्यताम्॥31॥

वैशेषिकांशादि उत्तम वर्गों में गया बुध अपनी दशा में राज्यमान्यता, उत्तम रहन सहन व सेमिनारों, गोष्ठियों की सदारत देता है।

क्रूर द्रेष्काणगत बुध दशा

क्रूरद्रेष्काणसंयुक्तश्चन्द्रसूनुर्यदा तदा।
चौराग्निभूपतिभयं स्थाननाशं महद्भयम्॥32॥

क्रूर द्रेष्काण में स्थित बुध की दशा में विविध मुसीबतें, स्थानहानि तथा भय होते हैं।

वर्गोत्तमी बुध दशा

वर्गोत्तमस्थे हिमरश्मिपुत्रे शुभाशुभैर्युक्तनिरीक्षते च।
दशाफलं मध्यममेव तत्र सर्वत्र सौम्यस्य दशा विमिश्रा॥33॥

वर्गोत्तमी बुध यदि शुभदृष्ट-युक्त हो तो उत्तम फल, पापदृष्ट-युक्त या शुभ पाप दोनों से युक्त-दृष्ट हो तो अपनी दशा में मध्यम फल देता है। प्रायः ऐसा बुध मिला-जुला ही फल देता है।

अस्त बुध दशा

अस्तोपयातस्य बुधस्य पाके हित्वा निजर्क्षं मनुजोऽतिदुःखी।
कासामयाद्यैः परिपीडितः स्याच्छ्रमान्वितो वै द्रविणेन हीनः॥34॥

3.6 राशियों के अतिरिक्त राशियों में स्थित बुध यदि अस्त हो तो अपनी दशा में खाँसी, दमा आदि रोग, अत्यधिक परिश्रम, धन की कमी व दुःख देता है।

द्वादश भावगत बुध दशा

लग्नं गतस्य हि दशा शशिनन्दनस्य भूलाभमानमधिकं कृषिलब्धभाग्यम्।
भेरीरवादिपरिघोषितयानमार्गं तीर्थाभिषेकमथवा जगति प्रसिद्धिम्॥35॥
वित्तगसौम्यदशायां विद्याप्राप्तिं महत्वकीर्तिश्च।
भूपतिभाग्यसम्मानो राजस्थाने प्रधानतां याति॥36॥

लग्नस्थ बुध दशा में भूमि लाभ, व्यवसाय वृद्धि, भाग्यवृद्धि, सम्मानित ढंग से यात्रा, गाजे बाजे के साथ चलना, तीर्थयात्राएँ या बहुत प्रसिद्धि मिलती है।

द्वितीयस्थ बुध दशा में विद्या, महत्त्व, कीर्ति खूब बढ़ती हैं। मनुष्य का भाग्य

राजा के समान होता है अथवा राजदरबार में प्रधानता प्राप्त होती है।

तृतीयराशिस्थितचन्द्रसूनोर्दशाविपाके जडतां समेति।
उद्गानमाजीवनमुग्ररोगं सद्दृष्टयुक्ते नृपमाननं च॥37॥
शशांकसूनोर्हिबुधस्थितस्य दशाप्रपन्ना गृहधान्यनाशम्।
सौख्यादिहीनं प्रकरोति मृत्युमुद्योगभंगं च पदच्युतिर्वा॥38॥

तृतीयस्थ बुध दशा में बुद्धि में जड़ता, उग्र रोग होते हैं। यदि वह शुभ ग्रह से युक्त-दृष्ट हो तो राज-सम्मान व प्रशंसा होती है।

चतुर्थ में अशुभ स्थिति में बुध हो तो उसकी दशा में जायदाद, मकान व धन-धान्य की हानि होती है। सुख में कमी, मृत्यु तुल्य कष्ट, परिश्रम में असफलता या पदच्युति करता है।

पंचमस्थशशिनन्दनस्य वा क्रूरबुद्धिरतिकष्टता भवेत्।
हीनवृत्तिरपिराजसेवया कृच्छ्रलब्धधनमेतिसम्पदः॥39॥
षष्ठाष्टमान्त्यस्थितसौम्यदाये त्वगदोषजातं बहुरोगमेति।
विचर्चिकां पैत्तिकपाण्डुरोगनृपाग्नि चौरैर्मरणं कृशत्वम्॥40॥

पंचमस्थ बुध दशा में क्रूर बुद्धि, कष्ट, हीन स्तर की जीविका, नौकरी, कष्टपूर्वक धनादि का लाभ होता है।

6.8.12 भावों में स्थित बुध की दशा में त्वचा रोगों की अधिकता, चेचक, खसरा, पीलिया, कमजोरी, कभी-कभी मृत्यु की सम्भव होती है।

दारस्थितस्यापि शशांकसूनोर्दशाविपाके सुतदारवित्तम्।
विद्याविनोदं विमलाम्बरं च नामद्वयं भूपतिमित्रतां च॥41॥
भाग्यस्थितस्यापि शशांकसूनोर्भाग्योत्तरं दारसुतार्थलाभम्।
तीर्थाभिषेकं जपहोमदानं यज्ञादिकर्माणि लभेन्मनुष्यः॥42॥

सप्तम भावगत बुध दशा में स्त्री, पुत्र व धन का सुख, विद्या वृद्धि, उत्तम वस्त्राभूषण, राजाओं से मैत्री व प्रसिद्धि होती है। नवमस्थ बुध दशा में भाग्योदय, धन-लाभ, परिवार सुख, तीर्थयात्रा, जप होमदानादि कार्य, शुभ कार्य करता है।

कर्मस्थितस्यापि शशांकसूनोर्दशाविपाके नृपतौल्यमेति।
सौख्यं स्वनामांकितगद्यपद्यं नामद्वयं दारसुतार्थलाभम्॥43॥
प्रपूजनं देवमहीरुहाणां साम्राज्यलाभं जननायकत्वम्।
कवित्वमार्गं समुपैति काले यज्ञादिदीक्षां स्वजनैर्विशेषैः॥44॥

दशमस्थ बुध दशा में राजा के समान जीवन स्तर, सुख वृद्धि, सर्वत्र प्रशंसा, स्त्री-पुत्र-सुख, धन, वृक्षों का संरक्षण, साम्राज्य प्राप्ति या जनता का नेतृत्व, कवित्व का उदय, यज्ञादि कर्मों में दीक्षा होती है।

उपान्त्यराशिस्थितसौम्यदाये त्वनेकधावित्तमुपैति काले।
दानेन वा भूपतिमाननाद्वा कृषेश्च वाणिज्यविचारतो वा॥45॥

देहांगवैकल्यकलत्रबन्धुविद्वेषणं भूपतिदत्तकोपम्।
आकस्मिकं मृत्युभयं प्रमादं रिःफस्थितस्यापि शशांकसूनोः॥46॥

एकादश भावगत बुध दशा में अनेक मार्गों से धनलाभ, दान से या राजा से या व्यवसाय व्यापारादि से धन प्राप्त होता है।

द्वादशस्थ बुधदशा में शरीर में विकलता, स्त्री व बन्धुओं से द्वेष, राजपक्ष का कोप, अचानक मृत्युभय, आलस्य होता है।

बलानुसार बुध दशा

स्थानवीर्ययुते सौम्ये तत्पाके कीर्तिराज्यदः।
मनोधैर्यं समुत्साहं तथा कल्याणसन्ततिम्॥47॥
तद्विहीनो बुधः स्थानदारपुत्रेषु भीतिदः।
विदेशवासं दुःखं च नानापरिभवक्रियाः॥48॥

स्थान बली बुध की दशा में कीर्ति व राज्य प्राप्ति, मन में धैर्य व उत्साह तथा बहुत तरह से कल्याण देने वाला होता है।

स्थानबल रहित बुध की दशा में स्थान (जगह), स्त्री, पुत्रादि के विषय में चिन्ता, विदेशवास, दुःख तथा अनेक प्रकार से पीड़ा व पराभव होता है।

दिग्वीर्यसहिते सौम्ये दिगन्ताद्धनिकः सुखी।
सामन्तराजमित्रत्वं गन्धमाल्यस्य लेपनम्॥49॥
कालवीर्ययुतसौम्यदशायां देहसौख्यकलहादिवियोगम्।
दारपुत्रनृपमाननमेति गांगतोयपरिपूरिततनुः स्यात्॥50॥

दिग्बली बुध की दशा में देश देशान्तरों से या चारों ओर से धनागम, सामन्तों या राजाओं से मित्रता, अच्छा जीवन स्तर होता है।

काल बली बुध की दशा में देह सुख, शान्ति, कलह शान्ति, स्त्री पुत्र सुख, राज-सम्मान, गंगादि तीर्थों की यात्रा होती है।

चेष्टाबलान्विते सौम्ये भाग्यदारसुतार्थभाक्।
तथा पुराणदानादि समुद्रस्नानमाचरेत्॥51॥
निसर्गवीर्यान्वितसौम्यदाये निसर्गतश्चापि शुभादिकर्म।
विद्याविवादं स्वजनैर्विरोधं मातुर्वियोगं त्वथवा तदीयम्॥52॥
दृग्बलेन युते सौम्ये सर्वभूतेषु सौम्यताम्।
करोति रतिकेलिं च राज्यभाग्यसमन्वितम्॥53॥

चेष्टाबली बुध की दशा में भाग्यवृद्धि, स्त्री-पुत्रादि का सुख, धनवृद्धि, पुराणादि या पुस्तकों का दान, समुद्र स्नान के योग होते हैं।

निसर्ग बली बुध की दशा में स्वाभाविक रूप से शुभकर्म होते चलते हैं। विद्या के विषय में बहस, सेमिनार या गोष्ठियाँ, अपने ही लोगों का विरोध, माता का

वियोग या अपने प्रिय व्यक्ति का वियोग होता है।

दृग्बली बुध की दशा में सब जीवों पर दयाभाव, उत्तम सांसारिक भोग, राज्यसुख, भाग्यवृद्धि होती है।

द्वादश राशिगत बुध दशा

मेषस्थितस्येन्दुसुतस्य पाके धीमान् सभंगः परभाग्यनिष्ठः।
द्यूतानृतस्तेयशठत्वयुक्स्यात् संयुक्तसौजन्यधनेन हीनः॥54॥
वृषस्थितस्येन्दुसुतस्य पाके मातुस्वनिष्टश्च धनी यशस्वी।
गुणान्वितः स्यान्मनुजः कलत्रात्मजादिचिन्ता गरलातियुक्तः॥55॥

मेषगत बुध की दशा में बुद्धिमानी; परन्तु प्रायः असफलता, दूसरों के भाग्य के कारण उत्थान, पतन, जूआ, झूठ, चोरी व छल कपट में रुचि, सज्जनता व धन से रहित होता है।

वृषगत बुध दशा में माता को कष्ट, धन, यश में वृद्धि, गुण वृद्धि, स्त्री पुत्रादि के सम्बन्ध में चिन्ता तथा कठोर व क्रूर भाषण या विषसंक्रमण का भय होता है।

नृयुग्मसंस्थस्य बुधस्य पाके त्वनेककर्माभिरतोऽतिजल्पः।
स्त्रीपुत्रमित्रादिसुखोपपन्नो नरो भवेन्मातृसुखेन हीनः॥56॥
कुलीरसंस्थस्य बुधस्य पाके मित्रैश्च सत्काव्यकलार्जितार्थः।
विदेशवासी व्यवसाययुक्तः सौख्याल्पको बन्धुजनैर्विरोधी॥57॥

मिथुन स्थित बुध दशा में अनेक प्रकार के कामों में व्यस्तता, बहुत बोलने की आदत, स्त्री पुत्रादि व मित्रों का सुख, माता के सुख में कमी होती है।

कर्कगत बुध दशा में मित्रों से, काव्य से, कला से, धन लाभ, विदेशवास, व्यवसाय वृद्धि, कम सुख तथा बन्धुओं का विरोध होता है।

हरिस्थितस्येन्दुसुतस्य पाके पुंसां भवेद् ज्ञानयशोऽर्थनाशः।
स्वबन्धुमित्रात्मजकामिनीभिः सौख्याल्पता सन्मतिहीनता च॥58॥

सिंहगत बुध दशा में ज्ञान बुद्धि, यश, धन की हानि, अपने मित्रों व परिवारजनों से सुख में कमी, एवं मतिहीनता पैदा होती है।

सुलिपिलेखनकाव्यकलान्तरं प्रकुरुते बहुवैभवयुङ्नरम्।
विनयनीतिपरं जितवैरिणं बुधदशा निजतुंगगतस्य च॥59॥
मूलत्रिकोणस्य च सौम्यपाके विदेशयात्रानुरतो विधिज्ञः।
पराक्रमेणाप्तधनो नरः स्यात्क्षमान्वितो ख्यातिगुणैः प्रपूर्णः॥60॥
उच्चत्रिकोणांशपरिच्युतस्य ज्ञपाककाले पशुसौख्यहानिः।
कलिप्रसंगो विकलत्वमंगे स्वबन्धुवैरं च भवेन्नराणाम्॥61॥

कन्या राशि में 15° अंश तक बुध हो तो उसकी दशा में उत्तम लेखन, काव्य

लेखन, कला कौशल, बहुत वैभव, विनीत स्वभाव, नीति परायणता आदि अच्छे फल होते हैं।

तदुपरान्त 20° अंशों तक मूल त्रिकोणी बुध दशा में विदेश यात्रा, विधि विधान, कानून या नीति का ज्ञान, अपने परिश्रम व कुशलता से धन प्राप्ति, क्षमा भाव, प्रसिद्धि होती है।

इन अंशों से आगे केवल स्वगृही बुध दशा में चौपाये धन की हानि, सुख में कमी, कलह के अवसर, शरीर में विकलांगता, बन्धुओं से वैर आदि होता है।

जूकोपयातस्य बुधस्य पाके क्षीणेक्षणः श्रान्तमतिप्रचण्डः।
शिल्पादिकर्मण्यतिनैपुणत्वं वाणिज्यतोऽर्थैः पशुना वियुक्तः॥62॥
कीटस्थितस्येन्दुसुतस्य पाके प्रेष्यांगनासक्तिपरोऽल्पतुष्टः।
नरः सदाचारविवर्जितः स्याद् व्ययेन युक्तः स्वजनैर्वियुक्तः॥63॥

तुलागत बुध दशा में नेत्रों की दुर्बलता, अधिक परिश्रम, बुद्धि में उग्रता, शिल्पादि अपने कार्यक्षेत्र में विशेष निपुणता, व्यापार में हानि व पशु धन, चौपाये धन की हानि होती है। वृश्चिकगत बुध दशा में साधारण स्तर की स्त्री के प्रति आसक्ति, साधारण सफलता से सन्तोष, सदाचार हीनता, अधिक व्यय व अपने मित्रों व सहायकों से बिछोह होता है।

चापोपयातस्य बुधस्य पाके मन्त्री च नामद्वययुङ्मनुष्यः।
कृषिक्रियायाः पशुभिश्चयुक्तो वित्ती नितान्तं बहुनायकः स्यात्॥64॥
बुधस्य नक्रोपगतस्य पाके ऋणोपलब्धिर्मतिवैपरीत्यम्।
नीचैश्च सख्यं कपटत्वमुच्चैर्बहूटनं स्यान्मनुजस्य नूनम्॥65॥

धनुराशिगत बुध की दशा में सम्भव हो तो मन्त्रीपद, सलाहकारी, कई नामों से प्रसिद्धि, कृषि, व्यापार, पशु आदि से धन वृद्धि तथा मुख्यता प्राप्त होती है।

मकरगत बुध की दशा में ऋण योग, बुद्धि की विपरीतता, नीच जनों से सम्पर्क, कपटभाव, बहुत भ्रमण होता है।

चान्द्रेर्दशायां कलशस्थितस्य तेजोविहीनो व्यसनानुरक्तः।
स्वबन्धुपीडा परिपीडितात्मा विदेशयानानुरतोऽतिनिःस्वः॥66॥
बुधस्य नीचोपगतस्य पाके विदेशगः सत्त्वगुणैर्विहीनः।
कृशोऽतिनिःस्वोऽन्यगृहाश्रितः स्यान्नरो भवेद् बन्धुजनैर्विहीनः॥67॥

कुम्भगत बुध की दशा में तेज में कमी, व्यसनों से पीड़ा, अपने सहायकों व बन्धुओं को पीड़ा, मन में उदासी, विदेश यात्रा की विशेष उत्कण्ठा तथा बहुत दीन हीनता होती है। नीचगत बुध की दशा में विदेशवास, सत्त्व, मनोबल आदि गुणों से रहित, कमजोर, दीन हीन, पराये घर में आश्रय पाने वाला, बन्धुहीन होता है।

नीचान्निवृत्तस्य बुधस्य पाके विषाग्निशस्त्रैश्च चतुष्पदाद्यैः।
प्रपीडितः स्यान्मनुजो नितान्तं नित्यं कुकर्माभिरतोऽल्पतुष्टः॥68॥

परम नीच भाग से आगे लेकिन नीच राशि में स्थित बुध की दशा में विष, शस्त्र, पशु आदि से पीड़ा, कुकर्मों से रुचि, थोड़े में ही सन्तोष भावना रखने की प्रवृत्ति होती है।

विशेष फल

सौम्योत्कृष्टदशा करोति वसनानन्दादि धान्योच्छ्रयान्
श्रेयः सौख्यगृहं स्वबन्धुविजयः स्वाभीष्टवस्त्वागमान्।
बौधी पापदशा विदेशगमनं क्षोभं स्वबन्धुक्षयं
प्रज्ञाहीनमतिधनार्तिकलहं क्षेत्रार्थनाशापदान्॥69॥

उत्तम भाव राशि आदि में स्थित बुध की दशा में खान-पान का वैभव, धन-धान्य की वृद्धि, कल्याण, घर का सुख, अपने वर्ग में श्रेष्ठता, अभीष्ट वस्तुओं की प्राप्ति होती है।

हीन राशि भावगत बुध की दशा में विदेश प्रवास, क्षोभ, बन्धुहानि, बुद्धिहीनता, धन की कमी, कलह, पीड़ा, जायदाद सम्बन्धी परेशानियाँ उपस्थित होती हैं।

स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुक्ते केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
मित्रक्षेत्रसमायुक्ते सौम्यदाये महासुखम्॥70॥
धन-धान्यादिलाभश्च सत्कीर्तिर्धनसम्पदः।
ज्ञानाधिक्यं नृपप्रीतिः सत्कर्मगुणवर्धनम्॥71॥

उच्चगत, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, केन्द्रगत, त्रिकोणगत, एकादश भावगत, बुध की दशा में विशेष सुख होता है। धन-धान्य का लाभ, सत्कीर्ति, धन-सम्पत्ति, ज्ञानवृद्धि, राजाओं से सम्बन्ध, सत्कर्मों व गुणों में वृद्धि होती है।

पुत्रदारादिसौख्यं च देहारोग्यं महत्सुखम्।
क्षीरेण भोजनं सौख्यं व्यापारेण धनागमः॥72॥
शुभदृष्टियुते सौम्ये भाग्यकर्माधिपे यदा।
आधिपत्ये बलवति सम्पूर्णफलदायकः॥73॥

पुत्र-स्त्री का सुख, स्वस्थ शरीर, बहुत सुख, घी दूध युक्त भोजन, व्यापार में लाभ होता है। 9.10 भावेश होकर बुध बलवान् हो या बली बुध कहीं भी शुभयुक्त दृष्ट हो तो पूर्वोक्त सारा फल होता है।

पापग्रहयुते दृष्टे राजद्वेषं मनोरुजम्।
बन्धुजनविरोधं च विदेशगमनं तथा॥74॥
परप्रेष्यं च कलहं मूत्रकृच्छ्रं महद्भयम्।
षष्ठाष्टव्यये सौम्ये लाभभोगार्थनाशनम्॥75॥
वातपीडाऽधनं चैव पाण्डुरोगं तथैव च।
नृपचौराग्निभीतिं च कृषीगोभूमिनाशनम्॥76॥

पापयुक्त दृष्ट बुध की दशा में सरकारी विभागों से द्वेष, मनोरोग, बन्धुओं से विरोध, विदेशगमन। दूसरों के अधीन काम करने की परतन्त्रता, मूत्ररोग, कलह, भय होता है।

यदि ऐसा बुध 6.8.12 में स्थित हो तो लाभमार्ग व उपभोग की क्षमता दोनों ही प्रभावित होती हैं।

वातरोग, धन की कमी, पीलिया, राजा, अग्नि, चोर से भय, रोजगार हानि, कृषि हानि व पशु हानि व भूमि हानि होती है।

दशादौ धनधान्यं च वित्तलाभं महत्सुखम्।
पुत्रकल्याणसम्पत्तिः सन्मार्गे धनलाभकृत्॥
मध्ये नरेन्द्र सम्मानमन्ते दुःखं भविष्यति॥77॥

बुध दशा में प्रारम्भिक वर्षों में धन-धान्य प्राप्ति, विद्या लाभ, बहुत सुख, सन्तान की तरक्की, अच्छे कारणों व मार्गों से धन लाभ होता है।

दशा के मध्य में राज-सम्मान, अन्त में दुःख होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने बुध-दशाफलाध्यायो दशमः॥10॥

॥आदितः श्लोकाः 791॥

11

॥ केतुदशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

दीनो नरो भवति बुद्धिविवेकनष्टो नानामयाकुलविवर्धितदेहतापः।
पापादिवृद्धिरतिकष्टचरित्रयुक्तः किंचित्सुखी च शिखिनः परिपाककाले॥1॥

केतु की दशा में सामान्यतः दीनता, बुद्धि व विवेक की हानि, रोग वृद्धि, शरीरकष्ट पापकर्म का उदय, उलझा आचरण, थोड़ा बहुत सुख होता है।

विषादकर्त्री धनधान्यहर्त्री सर्वापदां मूलमनर्थदात्री।
भयंकरी रोगविपद्‌विधात्री केतोर्दशा स्यात् किल जीवहन्त्री॥2॥

चन्द्राभरण जातक का मत है कि केतु दशा में मनस्ताप, धन-धान्य हानि, आपत्तियाँ, अनर्थ, रोग व भयदायक कदाचित् प्राणहरण हो जाता है।

उच्चगत केतु दशा

उच्चस्थ शिखिनः पाके सुखवृद्धिर्यशोदयम्।
राज्यं करोति मित्राप्तिं धनधान्याभिवर्धनम्॥3॥

पीछे बताया गया है कि केतु की वृश्चिक उच्च राशि व वृष नीच राशि हैं। सिंह मूलत्रिकोण तथा तुला मित्र राशि है।

उच्चगत केतु की दशा में सुख वृद्धि, यशोवृद्धि, राज्य लाभ, मित्रप्राप्ति, धन-धान्य की वृद्धि होती है।

केतो नीचस्थिते दाये चौराग्नी राजभीतिदः।
उद्‌बन्धनं विषाद्‌भीतिं धन-धान्य विनाशनम्॥4॥

नीचगत केतु की दशा में चोर, अग्नि या राजपक्ष से भय, दम घुटने के योग, विष संक्रमण, धन-धान्य की हानि होती है।

हमारे विचार से 1.2.4.5.6.9.12 राशियों में स्थित केतु शुभ फलदायक होता है। कहा गया है—

मेषे वृषे कुलीरे च सिहंकोदण्डमीनभे।
कन्यायां संस्थिते केतौ गजान्तैश्वर्यमादिशेत्॥

'मेष, वृष, कर्क, सिंह, धनु, मीन, कन्यागत केतु की दशा में बहुत ऐश्वर्य प्राप्त होता है।'

पाथोनमीनाश्वयुतस्य केतो दशाविपाके सुतदारलाभम्।
देशाधिपत्यं नरवाहनं च दशावसाने सकलं विनष्टम्॥5॥
मृगपतिवृषकन्याकर्कटस्थस्य केतो-
र्भवति च परिपाके राजतुल्यो नृपो वा।
गजतुरगचमूपः सर्वजीवोपकारी
बहुधनसुखशीलः पुत्रदारानुरक्तः॥6॥

6.9.12 राशिगत केतु की दशा में स्त्रीपुत्रादि का लाभ, नेतृत्व के योग, उत्तम वाहनादि का सुख प्राप्त होता है, लेकिन दशा के अन्त में प्रायः ये सब उपलब्धियाँ शून्य हो जाती हैं।

5.2.6.4 राशिगत केतु की दशा में मनुष्य राजसी ठाट-बाट वाला या राजा, हाथी घोड़ों से युक्त (खूब वाहन सुख) सेनापति (या बहुत से समर्थक, प्रशंसक), सब का उपकार करने की सामर्थ्य, बहुत धन व सुख, परिवार का सुख होता है।

शुभाशुभ युति फल

शुभ ग्रह्युतः केतुः स्वदशायां सुखप्रदः।
यदि शोभनसंदृष्टः करोति विपुलं धनम्॥7॥
सपापः कुरुते केतुः स्वपाके दुष्टमानवैः।
भीतिं कृमिरोगाद्यैर्व्यसनं धननाशनम्॥8॥

शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट केतु की दशा में बहुत सुख व धन प्राप्ति होती है। पापयुक्त केतु की दशा में दुष्ट लोगों से भय, कीटाणु संक्रमण, रोग व धन हानि होती है।

द्वादश भावगत केतु दशा

लग्नभावगतस्यापि केतोर्दाये महद्भयम्।
ज्वरातिसारमेहं च वा स्यात्तत्र विषूचिका॥9॥
धनराशिगतस्यापि केतोर्दाये धनक्षयम्।
वाक्पारुष्यं मनोदुःखं कुत्सितान्नं मनोरुजम्॥10॥

लग्नगत केतु यदि पूर्वोक्त शुभ राशियों के अतिरिक्त राशि में हो तो, उसकी दशा में बहुत भय, ज्वरपीड़ा, दस्त, हैजा या मधुमेह होता है। द्वितीय भावगत केतु दशा में धनहानि, वाणी की कठोरता, मानसिक क्लेश, खराब भोजन आदि मिलते हैं।

तृतीयराशिगस्यापि केतोर्दाये महत्सुखम्।
मनोवै कल्यमायाति भ्रातृभिर्द्वेषजं परम्॥11॥
चतुर्थराशिगस्यापि केतोर्दाये सुखक्षयम्।
प्रभग्नदारपुत्रादि गृहधान्यप्रहर्षितः॥12॥
पंचमस्थस्य केतोस्तु दशाकाले सुतक्षयम्।
बुद्धिभ्रमं विशेषेण राजकोपं धनक्षयम्॥13॥

तृतीयगत केतु की दशा में बहुत सुख होता है, लेकिन मन में उदासी तथा भाइयों से द्वेष हो जाता है।

चतुर्थगत केतु की दशा में सुख में कमी, स्त्री-पुत्रादि के सुख में कमी; परन्तु घर में धन-धान्य की वृद्धि से सन्तोष होता है।

पंचमस्थ केतु की दशा में पुत्रहानि, बुद्धिभ्रम, राजकोप तथा धनहानि होती है।

केतोस्त्वदिगतस्यापि दशाकाले महद्भयम्।
चौराग्निविषभीतिः स्याद् धनाप्तिं समुपैति च॥14॥
कलत्रराशिसंयुक्तकेतोर्दाये महद्भयम्।
दारपुत्रार्थनाशं च मूत्रकृच्छ्रं मनोरुजम्॥15॥
केतोरष्टमयुक्तस्य दशाकाले महद्भयम्।
पितुर्मृत्युः श्वासकासग्रहणी क्षयसंयुतः॥16॥

षष्ठस्थ केतु की दशा में भय, चोर, अग्नि, विष से पीड़ा, लेकिन धन लाभ होता है। सप्तमस्थ केतु की दशा में भय, स्त्रीपुत्र व धन की हानि, मूत्ररोग तथा मनोविकार होते हैं।

अष्टमगत केतु की दशा में भी भय, कष्ट, पिता का अनिष्ट, साँस, खाँसी, संग्रहणी या क्षयरोग होता है।

नवमस्थस्य केतोस्तु दशाकाले पितुर्विपत्।
गुरोर्वा विपदं दुःखं शुभकर्मविनाशनम्॥17॥
कर्मस्थ केतोः सम्प्राप्तौ दशायां सुखमेति च।
मानहानिं मनोजाड्यमपकीर्तिं मनोरुजम्॥18॥

नवमगत केतु की दशा में पिता या गुरुजनों का अनिष्ट, दुःख, पुण्यों की हानि होती है। दशमगत केतु की दशा में सुख प्राप्ति, मान हानि, मन में जड़ता, अपकीर्ति होती है।

लाभस्थ केतोः सम्प्राप्तौ दाये सौख्यं करोति च।
भ्रातृवर्गादि सौख्यं च यज्ञदारादिवर्धनम्॥19॥
रिःफस्थकेतोः सम्प्राप्तौ दाये कष्टतरं भवेत्।
स्थानच्युतिं प्रवासं च राजपीडाक्षिनाशनम्॥20॥

एकादशस्थ केतु की दशा में सुखप्राप्ति, भाई बन्धुओं का सुख, पुण्य कार्यों का सम्पादन, परिवार सुख होता है।

द्वादशस्थ केतु की दशा में कष्ट, स्थान हानि, प्रवास, राजपक्ष से पीड़ा, नेत्रहानि आदि फल होते हैं।

विशेष फल

केतूत्कृष्टदशा करोति विजयं क्रूरक्रियार्थागमं
मलेच्छक्ष्मापति लब्धभाग्यकवन प्रारम्भ शत्रुक्षयान्।
केतोः पापदशातिकष्टविफलानर्थक्रियायोगहृच्-
छूलास्थिज्वरकम्पनं द्विजजनं द्वेषार्ति मूर्ख क्रियात्॥21॥

शुभ भावराश्यादिगत केतु की दशा में सर्वत्र विजय, कठोरता से धनागम, मलेच्छ राजा की सहायता से भाग्य वृद्धि, कविता शक्ति का उदय, शत्रु हानि होती है। अशुभ केतु की दशा में कष्ट, विफलता, अनर्थ, योगफलों में कमी, शूलरोग, ज्वर, हड्डी में विकार, उत्तम जनों से द्वेष के कारण पीड़ा व मूर्खता भरे कार्य होते हैं।

केन्द्रे लाभे त्रिकोणे वा शुभराशौ शुभेक्षिते।
स्वोच्चे वा शुभवर्गे वा राजप्रीतिं मनोरुजम्॥22॥
देशग्रामाधिपत्यं च वाहनं पुत्रसम्भवम्।
देशान्तरप्रयाणं च ह्यन्यदेशे सुखागमम्॥23॥
पुत्रदारसुखं चैव चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।

केन्द्र त्रिकोण या लाभ भवन में केतु शुभ राशि में, शुभ दृष्ट, शुभवर्गों में या उच्च में हो तो राजप्रीति, मनोविकार, देश या ग्राम का आधिपत्य, वाहन, पुत्र, सुख, विदेश गमन, विदेश में लाभ, परिवार का सुख, चौपाये जीवों से लाभ होता है।

दुश्चिक्ये षष्ठलाभे वा केतोर्दाये सुखं भवेत्॥24॥
राज्यं करोति मित्रांशे गजवाजिसमन्वितम्।
धने रन्ध्रे व्यये केतौ पापदृष्टियुतेक्षिते।
शूद्राशन्यादि लाभं च नानारोगाकुलं भवेत्॥26॥

3.6.11 भावों में केतु शुभ राश्यंशों में हो तो सुखप्रद, राज्यप्रद होता है। वाहनों का सुख प्राप्त होता है।

2.8.12 में केतु पापयुक्त दृष्ट हो तो बन्धन, बन्धु हानि, स्थान हानि, मनोरोग, निकृष्ट व्यक्तियों द्वारा भोजनादि की प्राप्ति, अनेक रोग होते हैं।

दशादौ राजयोगाश्च दशामध्ये महद्भयम्
अन्ते दूराटनं चैव देहविश्रमणं तथा॥27॥

दशादौ गुरुबन्ध्वार्तिर्दशामध्ये धनायतिः।
दशान्ते सुखमाप्नोति केतोर्दायफलं त्रिधा॥28॥

दशारम्भ में राजयोग, मध्य में बड़ा भय, अन्त में दूर प्रदेशों की यात्रा या देहान्त होता है, यह एकमत है।

अन्य मत से दशादि में गुरुजनों व बन्धुओं से पीड़ा या उन लोगों को कष्ट, दशामध्य में धनवृद्धि, दशान्त में सुख होता है। केतु दशा के ये त्रिविध फल कहे गए हैं। वास्तविक उदाहरणों में परीक्षा कर फल की गति का निश्चय करना चाहिए।

॥इति श्रीदशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने केतु-दशाफलाध्याय एकादशः॥
॥आदितः श्लोकाः 819॥

12

॥ शुक्रदशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

स्त्रीपुत्रवित्ताप्तिमतीवसौख्यं सुगन्धमाल्याम्बरभूषणाप्तिम्।
यानादिभाग्यं नरपालतुल्यं यशः स्वपाके भृगुजः करोति॥1॥

शुक्र दशा में सामान्यतः स्त्री, पुत्र, धन की प्राप्ति, सुखवृद्धि, उत्तम वस्त्राभूषणों का सुख, वाहन सुख, राजा के समान भाग्य, यश वृद्धि होती है। ऐसा **जातकपारिजात** में कहा गया है। **भावकुतूहल, चन्द्राभरण जातक** आदि में इसी बात को दोहराया गया है।

स्यात्पाके भृगुजस्य रत्नयुवतिसद्वस्त्रभूषागमः
सम्मानं विविधं जनेषु मदनस्याप्युद्गमत्वं नृणाम्।
गीते नर्तनवाद्यकेऽधिकरुचिः सच्छीलशास्त्रादिके
दाने साधुजने मतिश्च नितरां सद्विक्रये वा क्रये॥2॥

शम्भूहोरा प्रकाश में बताया गया है कि सत्फलदायक शुक्र की दशा में रत्नलाभ, स्त्री सुख, उत्तम रहन सहन, जनता में सम्मान, कामाधिक्य, संगीत वाद्यादि में रति, शास्त्र चिन्तन, सज्जन सेवा व दान में रति तथा उत्तम क्रय विक्रय होता है।

पूर्वोपार्जितवित्तलब्धिरतुला गोवाहनेभ्यः सुखं
पुत्रेभ्यश्च कलिः कुले चपलता स्थानाद् भवेन्निश्चयात्।
वैकल्यं पवनात्कफान्निजतनौ चित्तादितापं भवेद्
वैरं नीचजनैः फलसमुदितं सामान्यमेतद्भृगोः॥3॥

अपि च पूर्वसंचित धन का सुख, चौपायों व वाहन का सुख, पुत्रों से कलह, परिवार में अस्थिरता, स्थान परिवर्तन की आशंका, वात कफ से पीड़ा, मन में सन्ताप, नीच लोगों से वैर, आदि शुक्र दशा का सामान्य फल है।

उच्चगत शुक्रदशा

अत्युच्चभृगुदशायां मत्तविलासप्रियार्थभागी स्यात्।
माल्याच्छादनभोजनशयनस्त्रीपुत्रधनयुक्तः ॥4॥
स्वोच्चस्थितस्यापि भृगोर्दशायां स्त्रीसंगनष्टार्थविरुद्धधर्मम्।
पित्रोर्विनाशं समुपैति दुःखं शिरोरुजं भूपतिमाननं च॥5॥

परमोच्चगत शुक्र दशा में भोग विलास, उत्तम सांसारिक सुख, धन प्राप्ति, स्त्री सुख, धन सुख, अच्छे भौतिक सुख होते हैं।

उच्च राशिगत शुक्रदशा में स्त्री प्रसंग से धन हानि, विरुद्ध आचरण की प्रवृत्ति, माता-पिता के कष्ट, सिर में पीड़ा तथा राजसम्मान प्राप्त होता है।

आरोहिणी शुक्रदशा

आरोहिणी शुक्रदशा प्रपन्ना धन्याम्बरालंकृतिकान्तिपूज्यम्।
प्रवृत्तिसिद्धिं स्वजनैर्विरोधं मात्रादिनाशं परदारसंगम्॥6॥
भृगोः सुतस्याप्यवरोहकाले प्रचण्डवेश्यागमनं धनाप्तिम्।
स्त्रीपुत्रबन्ध्वार्तिमनोविकारं हृच्छूलरोगं मदनार्तिमेति॥7॥

शुक्र की आरोहिणी दशा में धन-धान्य, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, शोभाप्राप्ति, व्यवसायसिद्धि, स्वजनों से विरोध, माता को कष्ट, परस्त्री से प्रेम प्रसंग होते हैं।

अवरोहिणी दशा में तेज तर्रार वेश्या से सम्पर्क, धन प्राप्ति, स्त्री पुत्रों को पीड़ा, बन्धुओं से विषमता, मनोविकार, हृदय में शूल, कामाधिक्य या रति जनित रोग होते हैं।

नीचगत शुक्रदशा

उद्वेगरोगतप्तः कर्मसु विफलेषु सर्वदाभिरतः।
अतिनीचगतस्य दाये शुक्रस्यात्मार्थदारपुत्रार्तिः॥8॥

अति नीचगत शुक्र की दशा में कार्यों में असफलता, स्वयं को कष्ट, परिवारजनों को कष्ट तथा धन की कमी होती है।

मूल त्रिकोणादिगत शुक्र दशा

मूलत्रिकोणभाजो भृगोर्दशायां महाधिपत्यं स्यात्।
क्रय-विक्रयेषु कुशलो धनकीर्ति समन्वितो विधिज्ञश्च॥9॥
स्वर्क्षे शुक्रदशायां लभते स्त्रीपुत्रमित्रधनशौर्यम्।
नित्योत्साहं द्वेषं परोपकारं महत्त्वं च॥10॥

मूलत्रिकोणी शुक्रदशा में बहुत अधिकार, व्यापार में कुशलता, धनागम, प्रसिद्धि

व नीति न्याय की जानकारी होती है। स्वक्षेत्री शुक्रदशा में स्त्री, पुत्र, धन, मित्र की प्राप्ति, उत्साहवृद्धि, लोगों से द्वेष परोपकारभाव, महत्ता प्राप्त होती है।

मित्रक्षेत्रगत शुक्रदशा

अतिमित्रशुक्रदाये भूपतिसम्मानसौख्यं च।
गोधनवाजिसमेतं गजपतिसंघैः निरस्तदोषैश्च॥11॥
मित्रक्षेत्रदशायां परोपकारी कलाविधिज्ञश्च।
वाप्यारामकृषिः स्याद्देवमनुष्यैश्च वोद्धृतार्थश्च॥12॥

अति मित्र क्षेत्री में राज सम्मान, सुख, धन वाहन का उत्तम सुख, बड़े-बड़े वाहनों का सुख होता है। मित्रक्षेत्री शुक्र दशा में परोपकार करने की क्षमता, कलात्मक अभिरुचियाँ, विधि (कानून) या विशिष्ट कार्यपद्धति का ज्ञान, बावड़ी, बगीचा, कृषि आदि के योग, देवकृपा व मनुष्यों की सहायता से धनवृद्धि तथा कार्यसिद्धि होती जाती है।

समक्षेत्री शुक्रदशा

समर्क्षगस्यापि भृगोर्विपाके प्रमेहगुल्माक्षिगुदेषु रोगः।
किंचित्सुखं भूपतिवह्निचौरैर्भयं स्वनामांकितगद्यपद्यम्॥13॥

समक्षेत्री शुक्र दशा में मधुमेह, फोड़ा, नेत्र व गुदा प्रदेश में रोग, थोड़ा सुख, राजा, अग्नि व चोरों तथा दुष्टों से भय, प्रशंसा होती है।

शत्रुक्षेत्री शुक्रदशा

भृगोर्दशायामतिशत्रुराशिं गतस्यपुत्रार्थकलत्रहानिम्।
प्रभग्नसंसारविशीर्णदेहं गुल्माक्षिरोगं ग्रहणी प्रकोपम्॥14॥
शत्रुक्षेत्रिदशायां भृगोरपत्यार्थदारहानिः स्यात्।
भूपतिरोषं कुरुते मत्तविलासार्थपापकर्माणि॥15॥

अतिशत्रुक्षेत्री राशिगत शुक्र की दशा में स्त्री, पुत्र, धन की हानि, सर्वत्र उदासी, उत्साह में कमी, गुल्म (भीतरी फोड़ा) नेत्ररोग व संग्रहणी की पीड़ा होती है।

शत्रु क्षेत्री शुक्र की दशा में स्त्रीहानि, राजा का कोप, भोग विलास के कारण पापकर्म होते हैं।

उच्चादि ग्रहयुत शुक्रदशा

स्वोच्चस्थितेन सहितस्य भृगोर्विपाके
राज्यं महत्त्वसमराधिपतित्वमेव।
हेमाम्बरादिमणिभूषणयानलाभं
भेरीमृदंगपणवारववाद्यघोषैः ॥16॥

नीचखेचरसंयुक्तभृगोर्दाये महद्भयम्।
अपवादकृतं दोषं लभते पापकर्मभीः॥17॥

किसी उच्चग्रह के साथ स्थित शुक्र की दशा में राज्य लाभ, महत्त्ववृद्धि, जन नायकता, सुवर्ण, वस्त्रादि, मणिभूषणों का सुख, वाद्यसंगीत आदि का सुख होता है।

नीचगत ग्रह से युक्त शुक्रदशा में भय, बदनामी, पापकर्म आदि होते हैं।

दृष्टयुत शुक्रदशा

शुभान्वितस्यापि भृगोर्दशायां सौभाग्यमित्रात्मजधान्यलाभम्।
नरेशपूजां गजवाजिसंघं प्रवालमुक्तामणियानलाभम्॥18॥
पापान्वितस्यापि भृगोर्दशायां स्थानच्युतिं बन्धुजनैर्विरोधम्।
आचारहीनं कलहप्रियत्वं कृष्टार्थभूम्यात्मजदारनाशम्॥19॥

शुभयुक्त शुक्र दशा में सौभाग्य वृद्धि, मित्रप्राप्ति, धन-धान्य व पुत्र का लाभ, राजमान्यता, उत्तम वाहन सुख, उत्तम रत्नाभूषणों की प्राप्ति होती है।

पापयुक्त शुक्र दशा में स्थान हानि, बन्धुओं से विरोध, आचारहीनता, कलही स्वभाव, कृषि, भूमि, पुत्र, स्त्री आदि से सम्बन्धित कष्ट होता है।

पापेक्षितस्यापि भृगोर्दशायां मानार्थहानिं समुपैति दुःखम्।
स्त्रिया विरोधं स्वपदच्युतिं च विदेशवासं निजकर्महीनम्॥20॥
शुभेक्षितस्यापि भृगोर्विपाके धनाम्बरं भूपतिपूजनं च।
जनाधिपत्यं स्वशरीरकान्तिं कलत्रमित्रात्मजसौख्यमेति॥21॥

पापदृष्ट शुक्रदशा में मानहानि, धनहानि, दुःख, स्त्रियों से विरोध, पदच्युति, विदेश वास, अपने कर्मों से पतन होता है।

शुभ दृष्ट शुक्रदशा में धन, वस्त्र, राज-सम्मान, जनाधिपत्य, शरीर शोभा, स्त्री-पुत्रादि का सुख होता है।

उच्चराशि नीचनवांशगत शुक्रदशा

उच्चक्षेत्रेऽपि नीचांशयुक्तः शुक्रोऽति कष्टदः।
करोति राज्यनाशं च स्थाननाशमथापि वा॥22॥
उच्चांशे संस्थितः शुक्रो नीचराशिसमन्वितः।
कृषिगोभूमिवाणिज्यधन-धान्यविवर्धनम् ॥23॥

उच्च राशि का शुक्र यदि नीच नवांश में हो तो बहुत कष्ट देता है। उसकी दशा में राज्य या पदवी से हाथ धोना पड़ सकता है।

नीचगत शुक्र नवांश में उच्च हो तो कृषि, चतुष्पद धन, वाणिज्य, भूमि, धन-धान्य की वृद्धि अपनी दशा में करता है।

वर्गोत्तमे झषगतस्य भृगोर्दशायां मर्त्यः स्वनामगुणशौर्यधनोपपन्नः।
नीरादिकार्यकरणेऽतिकृतप्रयत्नो नूनं भवेत्कफसमीरविनिर्जितात्मा॥24॥

मीन में वर्गोत्तमी शुक्र हो तो उसकी दशा में मनुष्य को ख्याति, गुण, शूरतावृद्धि, धनवृद्धि होती है। जलसम्बन्धी कार्य करने में संलग्न रहता है, लेकिन वात व कफ से पीड़ा होती है।

गुरुराशिगत शुक्रदशा

जीवर्क्षगतस्य भृगोः स्त्रीपुत्रमहीनाशनं कुरुते।
कर्मसु नित्यं विघ्नो जननी क्लेशान्वितो मनोदुःखी॥25॥

9.12 राशि में स्थित शुक्र की दशा में स्त्री, पुत्र, जायदाद की हानि, सब कामों में बाधाएँ, मन में क्लेश तथा माता को कष्ट होता है।

सूर्ययुक्त शुक्रदशा

अर्कगशुक्रदशायां जीर्णगृहवासः शुभावरोधश्च।
लभते दारविनाशं भ्रातृवियोगं च कलहं च॥26॥

अस्तंगत शुक्रदशा में पुराने मकान में निवास, शुभ कार्यों के सम्पन्न होने में बाधा, स्त्री हानि, भाइयों से वियोग तथा कलह होती है।

सिंहगत शुक्र दशा

सिंहगशुक्रदशायां लभते विविधापदं मनोदुःखम्।
उद्योगरोगतप्तः कर्मसु विफलेषु सदाभिरतः॥27॥

सिंहस्थ शुक्रदशा में विविध आपत्तियाँ, मन में दुःख का उदय, परिश्रम की अधिकता, रोग से पीड़ा, कामों में असफलता होती है।

षष्ट्यंशानुसार शुक्रदशा

सौम्यषष्ट्यंशयुक्तस्य शुक्रदाये महत्सुखम्।
कूपारामतडागानां निर्माणं देवपूजनम्॥28॥
क्रूरषष्ट्यंशयुक्तस्य भृगोर्दाये विपद्भयम्।
चौराग्निराजभीतिः स्यात्कृषिगोभूमिनाशनम्॥29॥

शुभ षष्ट्यंश में स्थित शुक्र की दशा में बहुत सुख, जन सुविधाएँ कुआँ, बाग, तड़ाग आदि का निर्माण तथा देवपूजन के योग होते हैं।

क्रूर षष्ट्यंश में स्थित शुक्र की दशा में विपत्ति भय, व्यवसाय में हानि, सम्पत्ति हानि आदि अशुभ फल होते हैं।

वैशेषिकांशगत शुक्रदशा

वैशेषिकांशयुक्तस्य भृगोर्दाये महत्सुखम्।
वाहनं भूपसम्मानं भ्रातृस्त्रीधनसम्पदः॥30॥

वैशेषिकांश में स्थित शुक्रदशा में बहुत सुख, वाहनप्राप्ति, राज-सम्मान, भ्रातृसुख, स्त्रीसुख तथा सम्पत्ति होती है।

क्रूर द्रेष्काणगत शुक्र दशा

क्रूरद्रेष्काणसंयुक्ते भृगोर्दायेऽरिभीतिदः।
कारावासो महत्कष्टमनलं चौरपीडनम्॥31॥

क्रूर द्रेष्काणगत शुक्र दशा में शत्रुभय, जेलयात्रा, बहुत कष्ट, अग्निभय, चोरों आदि से भय होता है।

द्वादश भावगत शुक्रदशा

लग्नगशुक्रदशायां सम्प्राप्तं राजमाननं लभते।
मणिगोधनकृषिलाभं परापवादं महोत्साहम्॥32॥
वित्तगशुक्रदशायां धनहानिर्धनायतिं चापि।
अन्नसुखं वाग्विलासं परोपकारं नरेशसम्मानम्॥33॥
तृतीयराशिस्थितशुक्रदाये धैर्यं महोत्साहमदीनसत्त्वम्।
चित्राम्बरालंकृतवाहनाप्तिं सहोदराणां बहुभाग्यलाभम्॥34॥

लग्नगत शुक्र की दशा में राज-सम्मान, गोधन व कृषि लाभ, मन में बहुत उत्साह, थोड़ी बदनामी होती है।

धनगत शुक्रदशा में कभी धन हानि, कभी धनवृद्धि, खान-पान का सुख, वाणी का वैभव, परोपकार करने की सामर्थ्य, राज-सम्मान होता है।

तृतीयस्थ शुक्र की दशा में मन में धैर्य, बहुत उत्साह, साहसिक क्रिया-कलाप, उत्तम अलंकृत वाहन का सुख, भाइयों का सुख तथा भाग्योदय होता है।

चतुर्थराशिस्थितशुक्रदाये राज्यं महत्सौख्यमुपैति यानम्।
कृषिक्रियावित्तपशुप्रजानां वृद्धिं प्रतापान्वितं कीर्तिजातम्॥35॥
पंचमस्थभृगोर्दाये पुत्रावाप्तिं विनिर्दिशेत्।
कीर्तिं च राजपूज्यं च सर्वेषामुपकारकम्॥36॥
भृगोर्विपाकेऽरिगतस्य नाशं धान्यार्थबह्वात्मजसोदराणाम्।
रोगं महत्कार्यविनाशं च शत्रोर्भयं भूपतिवह्निचौरैः॥37॥

चतुर्थगत शुक्र की दशा में राज्यप्राप्ति, बहुत सुख, व्यवसायवृद्धि, धन, जनसम्पर्कवृद्धि, प्रतापवृद्धि तथा यश होता है।

पंचमस्थ शुक्र की दशा में पुत्र प्राप्ति, कीर्ति, राजमान्यता तथा बहुत से लोगों

की सहायता करने की सामर्थ्य होती है।

षष्ठस्थ शुक्र की दशा में धन-धान्य व सन्तान की हानि, रोग, बड़े कार्यों में बाधा, शत्रुभय तथा प्राकृतिक आपदाएँ होती हैं।

कलत्रराशिस्थितशुक्रदाये कलत्रनाशं त्वथवा विदेशम्।
प्रमेहगुल्मादिशरीररोगं प्रभग्नवित्तात्मजबन्धुराज्यम्॥38॥
रन्ध्रस्थितस्यापि भृगोर्विपाके शस्त्राग्निचौरक्षतमित्रविघ्नम्।
क्वचित्सुखं किंचितदुपैति वित्तं क्वचिन्नरेशाप्तयशःप्रतापम्॥39॥
धर्मस्थानतः शुक्रः करोति नृपपूज्यताम्।
यज्ञकर्मादिलाभं च गुरुपित्रोः सुखं यशः॥40॥

सप्तमस्थ शुक्र की दशा में स्त्री हानि या विदेश यात्रा, मधुमेह, गुल्म रोग या अन्य रोग, धन, पुत्र व पदवी की हानि होती है।

अष्टमस्थ शुक्र की दशा में शस्त्र या अग्नि या चोर (दुष्टादि) से शरीर पर चोट का भय, किसी क्षेत्र में सुख, कहीं पर धन, कहीं पर कभी राज-सम्मान प्राप्त होता है तथा यशोवृद्धि होती है।

नवमगत शुक्र की दशा में राज मान्यता, उत्तम धार्मिक कार्यों का सम्पादन, लाभ, माता-पिता व गुरु का सुख, यश होता है।

कर्मस्थशुक्रस्य दशाविपाके विद्याधनप्राप्तिनरेशपूज्यम्।
भाग्योत्तरं पालितदेहकान्ति दिगन्तरप्राप्तयशः प्रतापम्॥41॥
लाभस्थितस्यापि भृगोर्विपाके सुगन्धमाल्याम्बरराजपूजाम्।
पुत्रार्थसौख्यं कृषिविक्रयं च दानं स्वनामांकितपद्यजालम्॥42॥
व्ययगतशुक्रदशायां लभते धान्यार्थराजसम्मानम्।
स्थानच्युतिं प्रवासं मातृवियोगं मनोविलासं च॥43॥

दशमस्थ शुक्र दशा में विद्यालाभ, धन लाभ, राजमान्यता, भाग्योदय, शरीर सुख, सर्वत्र कीर्ति होती है।

एकादश भागवत शुक्र दशा में उत्तम वैभव, उत्तम रहन-सहन, राज मान्यता, धन व पुत्र का सुख, उत्तम उत्पादन, प्रशंसा आदि होती है।

द्वादशगत शुक्रदशा में धन-धान्य वृद्धि, राज-सम्मान, स्थान परिवर्तन, प्रवास, माता का वियोग, मन में उत्साह होता है।

षड्बली शुक्र दशा

शुक्रे स्थानबलाधिके नरपतेः सन्माननं भूषणं
विद्यावादविवादगोष्ठिरसिकं नामद्वयं सम्भ्रम्।
तस्मिन् दिग्बलसंयुते बहुयशः पुत्रार्थदाराम्बरं
शुक्रे कालबलान्विते सुखधनं कीर्तिः स्वनामांकिता॥44॥

स्थान बली शुक्र की दशा में राजाओं द्वारा आदर, भूषणप्राप्ति, उत्तमश्रेणी की गोष्ठियों, सभाओं में शामिल होना, प्रसिद्धि, भ्रमण होता है।

दिग्बली शुक्र की दशा में बहुत यश, धन, पुत्र व स्त्री सुख होता है।

कालबली शुक्र की दशा में सुख, धन व कीर्ति होती है।

चेष्टाबलेनान्वितशुक्रदाये नरं प्रसन्नद्युतिमल्पपापं
हस्त्यश्वयुक्तगुरुविप्रभक्तिं भयैर्विमुक्तिं लभते मनुष्यः॥45॥
निसर्गवीर्ययुक्तस्य भृगोर्दाये महत्सुखम्।
कृषिगोभूमिवित्तादिभ्रातृमातृसुखं भवेत्॥46॥
दृग्वीर्ययुक्तस्य भृगोर्विपाके यज्ञादि कर्माणि करोति काले।
विद्याविलासं शयनाम्बरं च नृपाभिषेकं कलहं विरोधम्॥47॥

चेष्टाबली शुक्र की दशा में उत्तम शोभावृद्धि, पापों की शान्ति, उत्तम कीमती वाहनों का सुख, गुरुजनों व ब्राह्मणों के प्रति भक्ति, भयशान्ति होती है।

निसर्गबली शुक्र की दशा में बहुत सुख, जमीन, जायदाद, उपज व धन का सुख, भाइयों व माता का सुख होता है।

दृग्बली शुक्र की दशा में धार्मिक कार्यों की यथासमय सम्पन्नता, विद्या का वैभव, उत्तम भोगविलास, पदप्राप्ति, लेकिन कलह व विरोध भी होता है।

वक्री नीचगत शुक्रदशा

वक्रं गतस्यापिभृगोःसुतस्य दशाविपाके त्वरिराजपूज्यम्।
मृदंगभेरीरवयुक्तयानं विचित्रवस्त्राभरणानि राज्यम्॥48॥
कन्यानवांशस्थितभार्गवस्य पाके नृपात्तस्करतोऽर्थहानिः।
वृथाटनं नीचजनैश्च साख्यं भिक्षाटनं वा ननु मानवानाम्॥49॥

वक्री शुक्र की दशा में शत्रु भी सम्मान करते हैं। राजा की ओर से प्रशंसा पत्र प्राप्त होते हैं। गाजे बाजे के साथ प्रस्थान का गौरव तथा उत्तम वस्त्राभूषणों का सुख होता है। राज्य लाभ भी इस दशा में सम्भव है।

किसी भी राशि में नीच नवांशगत शुक्र की दशा में विविध प्रकार से धनहानि, व्यर्थ भ्रमण, नीच जनों से मित्रता या भिक्षाटन होता है।

द्वादश राशिगत शुक्रदशा

शुक्रस्य पाके क्रियसंस्थितस्य स्त्रीवित्तसौख्यापचयो नराणम्।
सदाटनत्वं व्यसनानि नूनमुद्वेगतां चंचलचित्तवृत्तिः॥50॥
वृषोपयातोशनसोदशायां कृषिक्रियासत्पशुसौख्यवृद्धिः।
शास्त्रे मतिः स्यात्सुतरां विचित्रा दातृत्व कन्याजननं प्रसादाः॥51॥

युग्मगामिभृगुजस्य दशायां मानुष्यो भवति काव्यकलाज्ञः।
हास्यविस्मयकथारुचिरुच्चैरन्यदेशगमनोत्सुकचेतः ॥52॥

मेष राशि में स्थित शुक्र की दशा में स्त्री व धन का सुख कम होता है। सदैव भ्रमण के योग, विपत्तियाँ तथा मन में चंचलता रहती है।

वृषगत शुक्रदशा में उत्तम व्यवसाय, सुख वृद्धि, शास्त्रों के प्रति आकर्षण, दान की शक्ति, कन्या का जन्म या लड़की सम्बन्धी मंगल कार्य तथा प्रसन्नता होती है।

मिथुनगत शुक्रदशा में काव्य कला के प्रति सहज आकर्षण, हास्य व अद्‌भुत रस की चीजों के प्रति अनुराग, अन्य देश में जाने की लालसा होती है।

कर्कोपयातस्य सितस्य पाके भवेन्मनुष्यो निजकार्यदक्षः।
भार्यान्तरावाप्ति समुत्सुकोऽपि नानाप्रकारोद्यमकृत्कृतज्ञः॥53॥
दैत्येन्द्रवन्द्यस्य मृगेन्द्रगस्य पाकप्रवेशे वनिताप्तवित्तः।
नूनं भवेदन्यधनोपजीवी पश्वादिपुत्राल्पसुखो मनुष्यः॥54॥
पाके भवेद् दानववन्दितस्य कन्यास्थितस्यापचयः सुखानाम्।
वित्ताल्पता भग्नमनोरथत्वं लोलं मनः स्वीयक्रियाचलत्वम्॥55॥

कर्कगत शुक्रदशा में कार्य कुशलता, अन्य स्त्री के प्रति लालसा, अनेक प्रकार के सफल प्रयत्नों वाला तथा सन्तुष्ट होता है।

सिंहगत शुक्र की दशा में स्त्री की सहायता से धन प्राप्ति, दूसरों के धन पर ऐश करना, पुत्रादि का कम सुख होता है।

कन्यागत शुक्र दशा में सुखों में कमी, धन में कमी, अभिलाषा पूरी होने में बाधा, मन की चंचलता व कार्यों में जल्दबाजी होती है।

तुलाधरस्थासुरपूजितस्य दशाप्रवेशे कृषिकृन्मनुष्यः।
विशिष्टमानोधनवाहनाढ्यः स्वज्ञातिसम्प्राप्तमहासुखः स्यात्॥56॥
भवेद् भृगोर्वृश्चिकराशिगस्य दशाप्रवेशे पुरुषः प्रवासी।
परस्य कार्ये निरतः प्रतापी ऋणार्थयुक्तः कलहानुरक्तः॥57॥
चापोपयातासुरपूजितस्य पाके प्रकामं लभते प्रतिष्ठाम्।
कलाकलापाकलनं कलिः स्यात्क्लेशाधिकत्वं द्विषतां प्रवृद्धिः॥58॥

तुलागत शुक्रदशा में कृषिकार्य से लाभ, विशेष सम्मान, धन व वाहन का सुख, अपने बन्धु-बान्धवों से विशेष सुख होता है।

वृश्चिकगत शुक्रदशा में प्रवास के योग, पराये काम में व्यस्तता, ऋणवृद्धि तथा कलह के योग होते हैं।

धनुर्गत शुक्रदशा में प्रतिष्ठा की खूब वृद्धि, कलात्मक रुचि, कलह, क्लेश व शत्रुओं की वृद्धि होती है।

नक्रस्थशुक्रस्य दशाप्रवेशे स्यात्पूरुषः शत्रुविनाशदक्षः।
श्लेश्मानिलाभ्यां विकलः कदाचित् कुटुम्बचिन्तासहितः सहिष्णुः॥59॥

उशनसः कलशस्थितिकारिणो यदि दशा पुरुषो व्यसनाकुलः।
गदयुतो वियुतः शुभकर्मणा व्रतहतोऽप्यनृतोक्तिरतो भवेत्॥60॥
दशाप्रवेशे भृगुनन्दनस्य मीनाधिसंस्थस्य नृपप्रधानः।
स्यान्मानवोऽत्यन्तधनः प्रसन्नः कृषिक्रियाभोगभरोपपन्नः॥61॥

मकरगत शुक्र की दशा में शत्रुओं को वश में करने की स्थिति, कभी कफ वात कृत दोषों से पीड़ा, परिवार की चिन्ता व सहनशीलता में वृद्धि होती है।

कुम्भगत शुक्रदशा में विपत्तियाँ, रोगपीड़ा, शुभ कर्मों व नित्य नियम में भी विघ्न, झूठ बोलने की प्रवृत्ति होती है।

मीनगत शुक्रदशा में राजाओं के समुदाय में मान्यता, बहुत धन लाभ, प्रसन्नता, व्यवसायवृद्धि उत्तम भोग विलास होते हैं।

विशेष फल

शौक्री श्रेष्ठदशा करोति सुखसौभाग्योच्छ्रयान्दोलिका-
ष्टैश्वर्यैर्युतधर्मबुद्धिकनकारामाश्वगीतोत्सवान् ।
शौक्री पापदशा कलत्रभयकृत् नीचार्थहानिप्रदा
नृणां तिर्यग् जन्तुदोषविपुलं स्त्रीवर्गरोगोद्भवान्॥62॥

शुभ राशि वर्ग व शुभभावगत बली शुक्र की दशा में सुख सौभाग्य की विपुल वृद्धि, उत्तम वाहन सुख, सभी ऐश्वर्य, धार्मिक बुद्धि, धन वृद्धि, स्त्री सुख, गीत-संगीतादि का सुख होता है।

पापी शुक्र की दशा में स्त्री को भय, नीच लोगों के कारण धनहानि, कीट आदि के सम्पर्क से शरीर कष्ट, स्त्री को रोगपीड़ा होती है।

परमोच्चगते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
नृपाभिषेकसम्प्राप्ति वाहनाम्बरभूषणम्॥63॥
गजाश्वपशुलाभं च नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
अखण्डमण्डलाधीश राजसम्मानवैभवम्॥64॥
मृदंगवाद्यघोषं च गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्।

परमोच्चगत, उच्चगत, स्वक्षेत्री शुक्र यदि केन्द्र में हो तो राजयोग, पदप्राप्ति, उत्तम वाहन व आभूषण, उत्तम भोजन।

आधिपत्य, राज सम्मान, महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की तरह आचरण तथा घर में लक्ष्मी की कृपा होती है।

मीने त्रिकोणगे शुक्रे राज्यार्थगृहसम्पदः॥65॥
विवाहोत्सवकार्याणि पुत्रकल्याणवैभवम्॥
सेनाधिपत्यं कुरुते स्वेष्टबन्धुसमागमम्॥66॥
नष्टराज्यधनप्राप्तिः गृहे गोधनसंग्रहम्॥

त्रिकोण में मीनगत या स्वक्षेत्री शुक्र हो तो भी राज्यप्राप्ति, धन व मकान आदि सम्पत्ति की वृद्धि, घर में विवाहादि मंगल कार्य, सन्तान का कल्याण व वैभव-वृद्धि, सेना नायकत्व, इष्टजनों से सम्पर्क, नष्ट राज्य या धन की प्राप्ति, घर में पशु धन या चौपाये धन की वृद्धि होती है।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे नीचे वा न्यूनराशिगे॥67॥
आत्मबन्धुजनद्वेषं दारवर्गादिपीडनम्।
व्यवसायात्फलं नेष्टं गोमहिष्यादिहानिकृत्॥68॥
दारपुत्रादि पीड़ा वा निजबन्धुवियोगकृत्।

6.8.12 में नीचगत या हीन राशि में शुक्र हो तो उसकी दशा में अपने ही लोगों से द्वेष, स्त्री जनों को पीड़ा। व्यवसाय में साधारण लाभ, पशु धन की हानि, परिजनों को पीड़ा, अपने बन्धुओं का वियोग होता है।

भाग्यकर्माधिपत्येन लग्नवाहनराशिगे॥69॥
तद्दशायां महत्सौख्यं देशग्रामाधिपत्यताम्।
देवालयतडागादि पुण्यकर्मस्य संग्रहम्॥70॥
अन्नदानं महत्सौख्यं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
उत्साहकीर्ती सम्पत्तिः स्त्रीपुत्रधनसम्पदः॥71॥
द्वितीयद्यूननाथे तु देहपीडा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं रुद्रं वा त्र्यम्बकं जपेत्॥72॥

नवमेश या दशमेश होकर शुक्र 1.4 भाव में हो तो उसकी दशा में बहुत सुख, देश या ग्राम का अधिकार, देवालय, तड़ागादि का निर्माण करवाने से पुण्यप्राप्ति, अन्नदान के योग, नित्य उत्तम खान-पान, उत्साह, कीर्ति, सम्पत्ति, स्त्री-पुत्र व धन का सुख होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट सम्भव होता है। इस दोष की शान्ति के लिए रुद्रसूक्त या त्र्यम्बक मन्त्र का जाप करना चाहिए।

उच्चराशिगतः शुक्रो नीचांशकसमन्वितः।
स्वपाके धननाशं च करोति पदविच्युतिम्॥73॥
भार्गवो नीचराशिस्थः स्वोच्चांशकसमन्वितः।
स्वदाये कृषिवाणिज्यं धनलाभं प्रयच्छति॥74॥

उच्चस्थ शुक्र यदि नीच नवांश में हो तो उसकी दशा में धन हानि व पदच्युति होती है।

नीचगत शुक्र यदि नवांश में उच्च हो तो धनलाभ व उत्तम व्यापार करता है।

सब दशाओं का सामान्य नियम

सम्यग्बलिनः स्वतुंगभागे सम्पूर्णा बलवर्जितस्य रिक्ता।
नीचांशगतस्य शत्रुभागे ज्ञेया निष्टदशा फलप्रसूतौ॥75॥

बृहज्जातक में बताया गया है कि जो ग्रह स्थान, दिक्, काल, चेष्टादि बलों से युक्त होकर आवश्यक बल से अधिक बली हो या उच्चराशि या नवांश में हो तो उसकी दशा 'सम्पूर्णा' अर्थात् अपना सारा शुभ फल देती है।

बलहीन ग्रह की दशा 'रिक्ता' अर्थात् शुभ फल से रहित होती है।

नीचराशि या नवांशगत या शत्रु राशि नवांशगत ग्रह की दशा 'अनिष्ट' अर्थात् अनिष्ट फल देने वाली होती है।

तत्तद्भावार्थकामेशतद्युक्तेक्षणकारकैः ।
तत्तद्भावविनाशः स्यात् तद्दशान्तर्दशासु च॥76॥

वर्तमान दशापति या अन्तर्दशापति, जिस भाव से 2.7 भावों का स्वामी हो, उसकी दशान्तर्दशा में सम्बन्धित भाव की बातों की हानि होती है।

अपि च ऐसे ग्रहों से दृष्ट या युत ग्रह की दशान्तर्दशा में यह फल होता है।

माना किसी को बुध दशा चल रही है। जन्म लग्न से बुध द्वादशेश है, अतः एकादशेश भाव से द्वितीयेश हुआ तथा नवम भाव से सप्तमेश हुआ। अतः बुध दशा में 11.9 भावों से सम्बन्धित बातों—बड़ा भाई, पिता, गुरु आमदनी, पुण्य की हानि होगी। यही विधि अन्तर्दशेशों पर भी लागू होगी।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
शुक्रदशाफलाध्यायो द्वादशः॥12॥
॥आदितः श्लोकाः 895॥

13
॥ अन्तर्दशाध्यायः ॥

अन्तर्दशाओं के भेद

दशा चान्तर्दशाश्चैव तत्तदन्तर्दशास्तथा।
सूक्ष्म भुक्तिः प्राणदशाप्येवं पंचभिधाः स्मृताः॥1॥

दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्म दशा, प्राणदशा ये प्रत्येक दशा के 5 भेद होते हैं। दशा के विषय में यहाँ तक बता दिया गया है, अतः अन्तर्दशा के फल को निश्चित करने के विषय में स्फुटीकरण प्रस्तुत किया जाएगा।

अथ प्रवक्ष्ये खलु खेचराणामन्तर्दशाः सूक्ष्मफल प्रसिद्धयै।
विचारपूर्वं सदसत्प्रकल्प्यं फलं सुधीभिर्विधिनोदितेन॥2॥

सूक्ष्म फल का निश्चय करने के लिए अन्तर्दशाओं का विचार आवश्यक है। उससे पहले बुद्धिमान व्यक्ति को सब ग्रहों की शुभ फलदायकता व अशुभ फलदायकता तथा परस्पर सम्बन्ध का निश्चय पाराशरी विधि से कर लेना चाहिए।

इस विषय में पाठकों को **लघुपाराशरी** का पारायण कई बार सावधानी से करना चाहिए। दशा का फल तो लम्बे समय के लिए होता है। अन्तर्दशादि का फल ही वास्तव में व्यवहार में काम आता है। अन्तर्दशा का फल निर्धारण करने में लघुपाराशरी के नियम अकाट्य हैं। उन्हें क्रमबद्ध विधि से मस्तिष्क में स्थिर कर लेना चाहिए। ग्रन्थकार भी लघुपाराशरी के नियमों को सीधे वहीं से लेकर यहाँ यथावत् दे रहे हैं। पाठकों को हमारी **लघुपाराशरी** की विद्याधरी की व्याख्या अवश्य पढ़नी चाहिए। वहाँ विस्तार से इन नियमों का सोदाहरण खुलासा किया गया है।

अन्तर्दशा फल के मूल नियम

न दिशेयुः ग्रहाः सर्वे स्वदशासु स्वभुक्तिषु।
शुभाशुभफलं नृणामात्मभावानुरूपतः॥3॥

महादशा में जब उसी ग्रह की अन्तर्दशा होती है तो महादशेश का शुभ या

अशुभ जैसा भी फल पहले निश्चय किया गया हो, वह पूरी तरह से सामने नहीं आएगा।

अन्तर्दशा के फलनिर्धारण में यह मौलिक नियम है। सर्वप्रथम विचारणीय कुण्डली में पाराशरी मत से योगकारक, भावेशत्वादि के कारण शुभ, भावेशत्वादि के आधार पर अशुभ तथा स्वतन्त्रमारक ये 4 वर्ग ग्रहों के बना लें। इस विषय को समग्र रूप से समझने के लिए **लघुपाराशरी** की पहली 28 कारिकाओं का आशय मस्तिष्क में साफतौर पर बिठा लेना चाहिए। श्लोक का भावार्थ संक्षेप में इस तरह है–

किसी भी वर्ग का ग्रह हो, उसका शुभ या अशुभ या योगकारक का फल या मारक फल उसकी अपनी ही अन्तर्दशा के दौरान पूर्ण विकसित रूप में प्रत्यक्ष नहीं होगा। माना नवमेश सूर्य नवम में ही स्थित है। नवमेश होने से शुभ, स्वक्षेत्री होने से शुभ, भाग्यवर्धक है, यदि शुभ दृष्ट युक्त या योगकारक से युक्त भी है तो बहुत उत्तम फल सूर्य की दशा में होंगे। सूर्यदशा 6 वर्षों की है, तब क्या 6 वर्ष सारे ही उत्तम फल देंगे? समाधान है कि ऐसे सूर्य में जब सूर्य की ही अन्तर्दशा होगी तो उसका श्रेष्ठ फल उस दौरान नहीं हो सकेगा। कब होगा? इसका उत्तर अगले श्लोक में दिया जा रहा है।

आत्मसम्बन्धिनो ये च ये वा निजसधर्मिणः।
तेषामन्तर्दशास्वेव दिशन्ति स्वदशाफलम्॥4॥

प्रत्येक ग्रह अपनी दशा के दौरान, शुभ या अशुभ या मारक फल, उस ग्रह की अन्तर्दशा में देगा जो ग्रह महादशेश का सम्बन्धी हो जो गृह महादशेश के समान वर्ग में आता हो।

1. एक योगकारक की महादशा में जब दूसरे योगकारक की अन्तर्दशा होगी तो उनके बलाबलानुसार सर्वोत्तम योगफल होगा।
2. योगकारक की महादशा में जब दूसरे शुभ फलदायक ग्रह की अन्तर्दशा होगी तो भी मध्यम योगफल या शुभ फल होंगे।
3. योगकारक ग्रह की महादशा में उसके सम्बन्धी ग्रहों की अन्तर्दशा होगी तो महादशेश का योगफल उत्तम होगा। इसमें भी सम्बन्ध की श्रेणी के आधार पर फल की श्रेणी निश्चित की जाएगी।
4. कोई दो ग्रह जब एक दूसरे की राशि में हों तो सर्वश्रेष्ठ सम्बन्ध है। इसे स्थान परिवर्तन सम्बन्ध कहते हैं। जैसे मिथुन में बृहस्पति और धनु में बुध स्थित हो।

जब दो ग्रह आपस में एक दूसरे पर पूर्ण दृष्टि रखें तो यह दृष्टि सम्बन्ध भी उत्तम सम्बन्ध है, यह गुण की दृष्टि से दूसरे नम्बर पर आता है। जैसे सिंह में गुरु व कुम्भ में कोई दूसरा ग्रह स्थित हो। जब किसी ग्रह को उसका अधिष्ठित

राशीश पूर्णदृष्टि से देखे यह तीसरी श्रेणी का सम्बन्ध है। जैसे मकर में स्थित सूर्य को या बुध को शनि पूर्ण दृष्टि से देखे। जब कोई दो ग्रह एक साथ एक ही राशि में स्थित हों यह सहावस्थान या सहस्थिति सम्बन्ध चौथी श्रेणी का है।

इन सम्बन्धों में भी कोई दो सम्बन्ध एक साथ हो जाएँ तो दो तरह से रिश्तेदारी होने से विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है। जैसे मिथुन में गुरु या धनु में बुध हो तो दोनों में परस्पर स्थान परिवर्तन तथा परस्पर पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध भी बनेगा। अतः यह सम्बन्ध विशेष बलवान् हो जाएगा। इस तरह ये नियम निष्पन्न हुए–

1. योग कारक महादशा + उसी की अन्तर्दशा = सामान्य फल।
2. योग कारक महादशा + प्रबल योगकारक अन्तर्दशा = श्रेष्ठ योगफल।
3. योग कारक महादशा + साधारण योगकारक अन्तर्दशा = मध्यम योगफल।
4. योग कारक महादशा + श्रेष्ठ सम्बन्धी अन्तर्दशा = श्रेष्ठ योगफल।
5. योग कारक महादशा + साधारण सम्बन्धी अन्तर्दशा = मध्यम योगफल।
6. योग कारक महादशा + असम्बन्धी या अलगवर्गीय ग्रह की अन्तर्दशा = साधारण फल।
7. योग कारक महादशा + शुभ अन्तर्दशा = उत्तम फल।
8. योग कारक महादशा + अशुभ अन्तर्दशा = साधारण फल।

इसी तरह मारक या अशुभ ग्रह की महादशा में जब जब दूसरे मारक या अशुभ गह की अन्तर्दशा होगी तब विशेष अशुभ फल होगा। जब शुभ या योगकारक की अन्तर्दशा होगी तो साधारण फल, न शुभ न अशुभ फल होगा। जब मारक या अशुभ ग्रह की महादशा में प्रबल सम्बन्धी की अन्तर्दशा हो तो प्रबल अशुभ और साधारण सम्बन्धी की अन्तर्दशा हो तो साधारण अशुभ फल होगा।

सम्बन्ध व साधर्म्य ये दो शब्द अन्तर्दशा व दशा फल के विशेष नियामक हैं। सम्बन्ध अर्थात् आपस में पूर्वोक्त कोई सम्बन्ध होना। साधर्म्य अर्थात् महादशेश व अन्तर्दशेश का शील स्वभाव गुण पाराशरीय नियमों से एक जैसा होना। गुणशील से तात्पर्य मारक, योगकारक, शुभ या अशुभ ग्रह से है, जिसका निर्णय पाराशरीय नियमों से किया जाएगा।

महादशेश का शुभाशुभत्व या योगकारकत्व, दशा के मौलिक फल का निश्चय करता है, जबकि अन्तर्दशेश, महादशा के फल को व्यक्ति तक पहुँचाता है। सारी महादशा में फल की मूल धारा का आदेश देता है, लेकिन उस आदेश का क्रियान्वयन महादशेश के अधिक विश्वासपात्र अधिकारी अर्थात् सम्बन्धी ग्रह या अपने जैसे स्तर के ग्रह ही करते हैं।

समग्रह की अन्तर्दशा का नियम

इतरेषां दशानाथविरुद्धफलदायिनाम्।
तत्तत्फलानुगुण्येन फलान्यूह्यानि सूरिभिः॥5॥

जो ग्रह महादशेश का सम्बन्धी भी नहीं हैं और महादशेश के समान भी नहीं है, वह 'इतर' अर्थात् दूसरा, अन्य, पराया ग्रह हुआ। ऐसे इतर ग्रह की अन्तर्दशा में या विरोधी फल देने वाले ग्रह की अन्तर्दशा में सदा मिश्रित फल होता है।

आइए, बात को साफ तौर पर समझने का प्रयत्न करते हैं। महादशेश को आधार मान कर, दशाफल के सन्दर्भ में सभी अन्तर्दशेश तीन प्रकार के होते हैं–

1. समानधर्मी या सधर्मीग्रह। जैसे दो कारक ग्रह या दो मारक ग्रह या दो शुभ ग्रह या दो अशुभ ग्रह।
2. विरुद्धधर्मी अर्थात् एक कारक व दूसरा मारक या एक शुभ व दूसरा अशुभ।
3. अनुभय धर्मी या सम ग्रह। जैसे सधर्मी भी नहीं है, सम्बन्धी भी नहीं है, वैसा ग्रह अनुभयधर्मी होना ही फलानुगुणता है। अर्थात् ऐसी अन्तर्दशा में महादशेश का वास्तविक फल गुप्त रूप से रहता है। तथा अन्तर्दशेश स्वयं सम्बन्धी व सधर्मी नहीं है अर्थात् विरुद्ध धर्मी है अतः वह महादशेश के शुभ या अशुभ फल को कम आज्ञाकारी नौकर की तरह लागू करेगा। फलस्वरूप महादशा के फल का शुभ या अशुभ स्वरूप पूरे प्रभाव के साथ सामने नहीं आ सकेगा, क्योंकि अन्तर्दशेश स्वभाव से ही उदासीन है, वह ढीले ढंग से महादशेश के फल को प्रकट करेगा। परिणामतः, सारा फल मिश्रित स्वरूप वाला हो जाएगा, धूप छाँव का खेल चलेगा। कभी साधारण शुभ, कभी साधारण अशुभ, कभी न शुभ न अशुभ फल मिलता रहेगा। इसे फलानुगुणता का नियम कहते हैं। अर्थात् दोनों ही ग्रह अपनी-अपनी चलाएँगे। फलस्वरूप परिणाम सामान्य श्रेणी का रहेगा।

केन्द्रेश व त्रिकोणेश की अन्तर्दशा

स्वदशायां त्रिकोणेशभुक्तौ केन्द्रपतिः शुभम्।
दिशेत् सोऽपि तथा नोचेदसम्बन्धेन पापकृत्॥6॥

1. केन्द्रेश की महादशा में त्रिकोणेश की अन्तर्दशा हो तो शुभ फल होगा।
2. त्रिकोणेश की महादशा व केन्द्रेश की अन्तर्दशा भी शुभ देगी। ये दो सामान्य नियम हुए।
3. यदि केन्द्रेश व त्रिकोणेश का परस्पर सम्बन्ध हो तो विशेष शुभ फल होगा।

4. यदि सम्बन्ध न हो तो भी मध्यम शुभ फल होगा।
5. यदि केन्द्रेश या त्रिकोणेश में कोई दोष हो, अर्थात् उनमें से कोई साथ ही अशुभ भावेश भी हो या शुभ ग्रह केन्द्रेश हो तो, उनका परस्पर सम्बन्ध बनने पर साधारण शुभ फल होगा।
6. यदि दोषयुक्त केन्द्रेश व त्रिकोणेश का परस्पर सम्बन्ध न हो तो अशुभ फल होगा। **'असम्बन्धेन पापकृत्'** का यही आशय है कि केन्द्रेश त्रिकोणेश दोषयुक्त हों और सम्बन्ध न करें तो पापफल होगा। विस्तार हेतु हमारी **लघुपाराशरी विद्याधरी** देखें।

योगकारक व मारक अन्तर्दशा का समन्वय

आरम्भो राजयोगस्य भवेन्मारकभुक्तिषु।
प्रथयन्ति तमारभ्य क्रमशः पापभुक्तयः॥7॥
तत्सम्बन्धिशुभानां च तथापुनरसंयुजाम्।
शुभानां तु समत्वेन संयोगो योगकारिणाम्॥8॥

1. योग कारक की महादशा में मारक ग्रह की अन्तर्दशा में राजयोग के योगफल की प्राप्ति हो सकती है, बशर्त महादशेश व अर्न्दशेश में परस्पर सम्बन्ध हो।
2. योगकारक महादशा तथा सम्बन्धी अशुभ ग्रह की अन्तर्दशा में भी अच्छा राजयोग फल सम्भव होने पर मिलेगा।
3. योगकारक महादशा में सम्बन्धी शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में भी अच्छा फल प्राप्त होगा।
4. योगकारक महादशा में असम्बन्धी शुभ अन्तर्दशा हो तो **सम** या मिश्रित फल होगा।
5. योगकारक महादशा में शुभ या योगकारक की अन्तर्दशा सम्बन्ध होने पर उत्तम फल देगी ही।

आशय यह है कि सम्बन्धी मारक, पापग्रह (त्रिषडायेश, अष्टमेश, द्वादशेश, शुभ केन्द्रेश आदि) की अन्तर्दशा में राजयोग प्राप्ति का आरम्भ, सूत्रपात हो सकता है। लेकिन सम्बन्धी मारक की अन्तर्दशा व योगकारक की महादशा हो तो फलित राजयोग भी विशेष प्रभावशाली नहीं होता है, यह बात श्लोक के बाहर होते हुए, पाठकों को मस्तिष्क में रखनी चाहिए।

शुभदशा : योगकारक अन्तर्दशा

शुभस्यास्य प्रसक्तस्य दशायां योगकारकाः।
स्वभुक्तिषु प्रयच्छन्ति कुत्रचिद्योगजं फलम्॥9॥

शुभ ग्रह की महादशा में योगकारक की अन्तर्दशा हो तो महादशेश व अन्तर्दशेश का सम्बन्ध होने पर कभी-कभी योगफल होता है। नियमतः सारी अन्तर्दशा में योगफल नहीं होता। अपितु शुभ फल आवश्य होता है।

यदि सम्बन्ध न हो तो शुभ फल होगा, लेकिन कुछ कम मात्रा में रहेगा। योगफल कभी नहीं हो सकेगा।

राहु केतु की दशान्तर्दशा

तमोग्रहौ शुभारूढौ असम्बन्धेन केनचित्।
अन्तर्दशानुसारेण भवेतां योगकारकौ॥10॥

राहु केतु यदि शुभ स्थान, निर्विवाद रूप से त्रिकोण 5.9 में या केन्द्र में विशेष परिस्थितियों में अर्थात् जब शुभ राशि में हों तो वे किसी ग्रह से अर्थात् शुभस्थानेश से सम्बन्ध करें या न करें, दोनों ही परिस्थितियों में अपनी अन्तर्दशा व दशा में योग फल देते हैं।

राहु केतु जिस भाव में बैठे हों या जिस भावेश के साथ हों, उनका प्रभाव ले लेते हैं। अतः विचारपूर्वक फल कहना चाहिए।

1. 5.9 भावों में किसी के केन्द्रेश त्रिकोणेश के साथ हों तो योगकारक हैं।
2. 5.9 में अकेले हों तो भी योग कारक हैं।
3. 5.9 केन्द्रेश त्रिकोणेश के अलावा अशुभ भावेश के साथ हों तो मिश्रित फल देंगे।
4. केन्द्र (1.4.7.10) में यदि केन्द्रेश त्रिकोणेश के साथ हों तो योगकारक हैं।
5. केन्द्र में ही शुभ राशि में अकेले हों तो भी योगकारक हैं।
6. केन्द्र में अशुभ भावेश से युत हों तो अशुभ फल देंगे। शुभाशुभ भावेशों से युक्त हों तो मिश्रित फल देंगे।

पापग्रहों का फल निर्णय

पाप यदि दशानाथाः शुभानां तदसंयुजाम्।
भुक्तयः पापफलदास्तत्संयुक्तः शुभभुक्तयः॥11॥
भवन्ति मिश्रफलदा भुक्तयो योगकारिणाम्।
अत्यन्तपापफलदा भवन्ति तदसंयुजाम्॥12॥

1. पापग्रह (अशुभ फलदायी) की महादशा में असम्बन्धी शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो पाप फल होता है।
2. पापी दशेश से सम्बन्ध रखने वाले शुभ ग्रह की दशा मिश्रित फल देती है।

3. पापी दशेश से सम्बन्ध रखने वाले योगकारक की अन्तर्दशा बहुत खराब फल देती है।
4. पापी दशेश से सम्बन्ध रखने वाले योगकारक ग्रह की दशा भी मिश्रित फल देती है।

मारक दशा का विशेष नियम

सत्यपि स्वेन सम्बन्धे न हन्ति शुभभुक्तिषु।
हन्ति सत्यप्यसम्बन्धे मारकः पापभुक्तिषु॥13॥

मारक ग्रह की महादशा में सम्बन्धी शुभ अन्तर्दशा हो तो मृत्यु नहीं होती है। मारक महादशा में असम्बन्धी पाप अन्तर्दशा हो तो मृत्यु हो जाती है।

शनि शुक्र का विशेष नियम

परस्परदशायां स्वभुक्तौ सूर्यजभार्गवौ।
व्यत्ययेन विशेषेण प्रदिशेतां शुभाशुभम्॥14॥

शनि व शुक्र के विषय में अपवाद स्वरूप यह बात कही गई है कि दोनों में एक महादशेश हो व दूसरे की अन्तर्दशा हो तो परस्पर सम्बन्धी, सधर्मी, तत्तत्फलानुगुणता बने या न बने तब भी ये अपना फल आपस में बदल लेते हैं।

अर्थात् शनि का फल शुक्र दशान्तर्दशा में, शुक्र का फल शनि की दशान्तर्दशा में मिलता हुआ देखा जाता है।

शनि का विशेष शुभाशुभ फल, शुक्र की अन्तर्दशा जब शनि दशा में होगी, तब मिलेगा।

शुक्रदशा में शन्यन्तर में शुक्र का शुभाशुभ जैसा भी फल होगा, वह विशेषतया मिलेगा।

लग्नेश की दशान्तर्दशा

स्वनवांशगते लग्ननाथे स्वस्य दृकाणगे।
तस्य भुक्तिं शुभामाहुर्यवनाद्या विशेषतः॥15॥

यवनों ने कहा है कि लग्नेश यदि अपने नवांश या अपने दृक्काण में हो, अभिव्यंजना से स्वोच्च द्रेष्काण नवांश में भी हो तो उसकी अन्तर्दशा महादशेश से सम्बन्ध न होने पर भी शुभ फल देती है।

स्वद्वादशांशके लग्ननाथे वा स्वदृकाणगे।
तस्य भुक्तिं शुभामाहुर्मुनयः कालचिन्तकाः॥16॥

लग्नेश यदि द्वादशांश या द्रेष्काण में अपनी राशि में हो तो प्रायः अपनी अन्तर्दशा में शुभ फल देता है, ऐसा कालवेत्ता ऋषियों ने कहा है।

स्वत्रिंशांशेऽथवा मित्रत्रिंशांशे वा स्थितो यदि।
तस्य भुक्तिः शुभाः प्रोक्ता कालविद्भिर्मनीषिभिः॥17॥
मित्रक्षेत्रे नवांशर्क्षे मित्रस्य द्विरसांशके।
सुखराशिनवांशस्थे वाहनद्विरसांशके॥18॥
सुखद्रेष्काणगे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा।
बुद्धिराशिनवांशे वा पुत्रस्य द्विरसांशके॥19॥
तपोराशिनवांशस्थे धर्मस्य द्विरसांशके।
गुरुद्रेष्काणगे वापि तस्य भुक्तिः शुभावहा॥20॥

1. लग्नेश यदि त्रिशांश में अपनी राशि या मित्रराशि में हो तो उसकी अन्तर्दशा सर्वदा सब दशाओं में शुभ ही रहती है।
2. लग्नेश यदि नवांश या द्वादशांश में मित्र राशि में हो या लग्न से चतुर्थ राशि के नवांश या द्वादशांश में हो तो भी उसकी अन्तर्दशा शुभ है।
3. चतुर्थ भाव में जो राशि हो, द्रेष्काण में लग्नेश उसी राशि में हो तो भी शुभ अन्तर्दशा होगी।
4. 5.9 भावगत राशि या 9.12 (गुरु राशि) राशियों में लग्नेश नवांश द्रेष्काण व द्वादशांश में पड़े तो भी उसकी अन्तर्दशा शुभ है।

विलग्ननाथस्थितभांशनाथे मित्रांशगे मित्रग्रहेण दृष्टे।
सुहृत्दृकाणस्थ नवांशके वा तदास्य भुक्तिं शुभदां वदन्ति॥21॥

लग्नेश जिस नवांश में हो, व नवांशेश यदि स्वयं भी मित्रनवांश में हो या मित्रग्रह से दृष्ट हो या मित्रद्रेष्काण में हो तो उसकी भुक्ति भी सामान्यतः शुभ होती है।

अशुभ अन्तर्दशा के नियम

षष्ठाष्टमव्ययेशानां दशाकष्टप्रदायिनी।
एतद्भुक्तिषु कष्टं स्यान्मारकस्य दशा यदा॥22॥

6.8.12 भावेशों की दशा सामान्यतः कष्टप्रद होती है। 6.8.12 भावेशों की अन्तर्दशा यदि मारक दशा में आए तो भी विशेष कष्ट होता है।

मारकेशोऽथ षष्ठेशयुक्तो लग्नाधिपो यदि।
तस्य भुक्तौ ज्वरप्राप्तिरित्याहुः कालवित्तमाः॥23॥

यदि लग्नेश का मारकेश या षष्ठेश से योग हो तो 1.6 भावेशों या इन सब की परस्पर दशा-अन्तर्दशा में ज्वर आदि से पीड़ा होती है।

सलग्नेशोऽथ चन्द्रो वा, रोगेशवर्गगो यदि।
जलदोषस्तस्य भुक्तौ स्यादजीर्णो न संशयः॥24॥

लग्नेश या चन्द्रमा, यदि षष्ठेश के अधिक वर्गों में (षड्वर्ग) में हों तो इनकी

अर्थात् षष्ठेश व लग्नेश या षष्ठेश या चन्द्रमा की दशान्तर्दशा में अपच, पाचन तन्त्र सम्बन्धी विकार या पानी से उत्पन्न होने वाले रोग होते हैं।

षष्ठेशयुतलग्नेशो बुधषड्वर्गगो यदि।
कफस्तस्य भवेद्भुक्तौ वातो वा देहजाड्यकृत्॥25॥
सारिनाथो विलग्नेशो गुरुषड्वर्गसंस्थितः।
तस्य भुक्तौ भवेद्रोगः पीडा वा ब्राह्मणेन तु॥26॥

षष्ठेश व लग्नेश दोनों ही यदि बुध के षड्वर्गों में गए हों तो इनकी दशान्तर्दशा में कफ या वात रोग या शरीर में अकड़न जकड़न होती है।

षष्ठेश व लग्नेश यदि दोनों ही गुरु के षड्वर्गों में हों तो लग्नेश व षष्ठेश की परस्पर दशान्तर्दशा में रोगपीड़ा या ब्राह्मण के द्वारा कष्ट होता है।

नक्षत्रेशो विलग्नेशो भृगुषड्वर्गगो यदि।
तस्य भुक्तौ भवेत्पीडा रोगस्त्रीसंगमेन च॥27॥
सरोगेशो विलग्नेशः शनिषड्वर्गगो यदि।
तस्य भुक्तौ भवेद्वातः सन्निपातोऽथवा नृणाम्॥28॥

लग्नेश या चन्द्रमा यदि शुक्र के षड्वर्गों में हों तो इनकी भुक्ति में स्त्रीसंग से उत्पन्न रोग होते हैं।

षष्ठेश व लग्नेश यदि शनि के षड्वर्गों में हों तो उनकी दशान्तर्दशा में वात रोग या भीषण ज्वर होता है।

लग्नेश रोगेश ससंयुताः स्युश्चेत्समंदात्मजराहुकेतवः।
तदासु हिक्का सविषूचिकादिरोगो नराणामथ तस्य भुक्तौ॥29॥

लग्नेश या षष्ठेश यदि राहु केतु, मान्दि से युक्त हों तो इनकी दशान्तर्दशा में हिचकी, हैजा आदि रोग होते हैं।

एवं भ्रात्रादि भावानां नायको यत्र संस्थितः।
तस्य षड्वर्गयोगेन तत्तद्भावफलं वदेत्॥30॥

इसी प्रकार पूर्वोक्त विधि से तृतीयेश, पंचमेश, सप्तमेश, नवमेश, दशमेश आदि जिस ग्रह के षड्वर्गों में गए हों, उन सम्बन्धियों को तत्तद्दशाओं में पूर्वोक्त रोगों से पीड़ा होती है।

आशय यह है कि लग्नेश या षष्ठेश या अन्य कोई भी श्लोकोक्त ग्रह जैसे ग्रह के षड्वर्गों में हो, वैसा ही फल इन सब की दशान्तर्दशा में मिलता है। यह अनुभूत है।

जैसे श्लोक 28 में 6.1 भवेशों में कोई एक या दोनों शनि के वर्गों में हों तो जो भी ग्रह शनि के षड्वर्गों में होगा उसी की व शनि की परस्पर दशान्र्दशा में वात रोग होगा।

महादशेश अन्तर्दशेश की परस्पर भावस्थिति

दशाधिपेनापियुतस्य भुक्तौ स्त्रीपुत्रभृत्यार्थकृषे विनाशः।
उद्योगभंगः स्वजनैश्च कष्टमाकस्मिकं भूषणमेति काले॥31॥

यदि महादशेश व अन्तर्दशेश एक ही स्थान में साथ-साथ स्थित हों तो अपवादों को छोड़कर इनकी दशान्तर्दशा में प्रायः स्त्री, पुत्र, धन, व्यवसाय की हानि, परिश्रम की असफलता, स्वजनों से कष्ट और सहसा कुछ अच्छे फल भी हो जाते हैं।

दशाधिपाद्वित्तगतस्य भुक्तौ मृदुवन्नपानाम्बरगन्धमाल्यम्।
परोपकारं स्वजनस्य सख्यं स्त्रीपुत्रबन्ध्वात्ममनोविलासम्॥32॥
दशाधिपात् सोदरराशिगस्य भुक्तौ नृपाद्वित्तमुपैति सख्यम्।
सुगन्धमाल्याम्बरभूषणं च सुहृद् भवेद् भोजनसौख्यपुष्टिः॥33॥

महादशेश से द्वितीयस्थ अन्तर्दशेश होने पर दशा में उत्तम भोजन, उत्तम वस्त्र, आभूषण अपने जनों से अच्छे सम्बन्ध, स्त्री, पुत्र, बन्धु व अपने मन से प्रसन्नता होती है।

तृतीयस्थ अन्तर्दशेश हो तो राजा से धन, मित्रता, उत्तम वस्त्राभूषण, मन में उत्साह उत्तम खान-पान का वैभव होता है।

दायेश्वरादम्बुगतस्य भुक्तौ दारात्मजार्थगृहधर्मयानम्।
मिष्टान्नपानाम्बरभूषणं च शुभ ग्रहश्चेत्फलमन्यथान्यत्॥34॥
पापग्रहोऽपिशुभदः खलु दायनाथाद् बन्धुस्थितः स्वभवनोच्चबलादियुक्तः।
सौम्यग्रहोऽप्यशुभदः सुखराशियुक्तो दायेश्वरात्स्वभवनोच्चबलादिहीनः॥35॥

महादशेश से चतुर्थ में, कोई शुभ ग्रह, राशि आदि से उत्तम बली होकर स्थित हो तो उसकी अन्तर्दशा में स्त्री, पुत्र, मकान का सुख, वाहनसुख, उत्तम भोजन प्राप्त होता है।

यदि पापी अन्तर्दशेश भी, महादशेश से चतुर्थ में उच्चगत, स्वक्षेत्री, मित्र क्षेत्री, वर्गोत्तमी आदि हो तो भी बहुत शुभ फल होते हैं।

चतुर्थगत अन्तर्दशेश यदि राशिस्थिति से हीन हो तो विशेष अशुभ होता है।

दशानाथात्सुतस्थस्य भुक्तौ पुत्राप्तिमादिशेत्।
शुभग्रहस्य सौख्यं च पापभुक्तौ सुतक्षयम्॥36॥

महादशेश में पंचम में स्थित बलवान् ग्रह की अन्तर्दशा में पुत्र लाभ तथा निर्बल या पापी ग्रह की अन्तर्दशा में पुत्र कष्ट होता है।

दशेशात्षष्ठभावस्थः स्वोच्चकोणादिगो यदि।
पुत्रं मित्रं सुखं दद्यादन्यथा पदविभ्रमम्॥
चौरारिऋणदेहार्तिमशुभं कुरुते तदा॥37॥

महादशेश से षष्ठस्थ अन्तर्दशेश हो और वह उच्च या स्वक्षेत्री आदि हो तो अपनी अन्तर्दशा में स्त्री, पुत्र, मित्रादि का सुख देता है।

यदि वह नीचादिगत हो तो पद पदवी में बाधा, चोर, शत्रु भय, ऋण वृद्धि, शरीर कष्ट आदि अशुभ फल करता है।

दायेशात्सप्तमस्थस्य पापस्यापहृतौ तथा।
दारार्थपुत्रबन्धूनां नाशं भूपतितो भयम्॥38॥
सप्तमस्थशुभस्यापि हृतौ सौख्यं दशाधिपात्।
नीचशत्रुविहीनस्य सद्रत्नाम्बरभूषणम्॥39॥

दशेश से सप्तमस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में स्त्री,पुत्र, धन, बन्धु आदि का नाश तथा राजभय होता है। शुभ ग्रह हो और नीचादिगत न हो तो सुख व रत्नादि का लाभ होता है।

पाकेशादष्टमस्थस्य पापस्यापहृतौ भयम्।
निधनं कुत्सित्रं च चौराग्निनृपपीडनम्॥40॥
तथा सौम्यस्य भुक्तौ तु भुक्त्यादौ शोभनं भवेत्।
उत्तरार्धे मनुष्याणां कष्टमन्ते विशेषतः॥41॥

अच्छी राशि में स्थित अष्टमस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में साधारण श्रेणी के कष्ट तथा दुःस्थित ग्रह की अन्तर्दशा में भय, मृत्यु, खराब भोजन, चोर, अग्नि या राजपक्ष से पीड़ा होती है।

इसी तरह सुस्थ शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में दशा के पूर्वार्ध में शुभ फल तथा बाद में कष्ट, उसमें भी अन्तिम मासों में विशेष कष्ट होता है। यदि वह दुःस्थ हो तो प्रायः सदा कष्ट होता है और अन्तर्दशा काल में उत्तरोत्तर बढ़ता है।

दायेशान्नवमस्थस्य पापस्यापहृतौ यदा।
अशुभं लभते कर्मस्थानभ्रंशं मनोरुजम्॥42॥
प्रधानतः शुभस्थस्य सौम्यस्यापहृतौ पुनः।
विवाहं यज्ञदीक्षां च दानर्द्धिं लभते नरः॥43॥

नवमस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में अशुभ फल, स्थान भ्रंश, पद भ्रंश, स्थान परिवर्तन, मन में उदासी होती है।

शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में विवाह, यज्ञ कर्म, दान के सुयोग आदि शुभ फल होते हैं।

कर्मस्थ पापखेटस्य हृतौ पाकेश्वराद्यदा।
धर्मनाशमवाप्नोति दुष्कीर्तिं विविधापदम्॥44॥
तस्मात्कर्मस्थ सौम्यस्य हृतौ सौख्यं विनिर्दिशेत्।
तटाकं गोपुरादीनां पुण्यकर्मादि संग्रहम्॥45॥

महादशेश से दशमस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में कार्यहानि, बनते कामों में

रुकावट, बदनामी व विविध प्रकार की आपत्तियाँ होती हैं।

यदि वह शुभ ग्रह हो तो सुख, पुण्यों का उदय, जनसुविधार्थ निर्माण कार्य करने के योग होते हैं।

लाभस्थस्य दशानाथात् स्थानप्राप्तिं च शाश्वतीम्।
लभते पुत्रमित्रार्थान् सुखं भाग्योत्तरं भवेत्॥46॥

महादशेश से एकादश स्थान में अन्तर्दशेश की दशा में पदलाभ, स्थायी सफलता, पुत्रों, मित्रों व धन का सुख, भाग्य वृद्धि आदि उत्तम फल होते हैं।

व्ययस्थस्य हृतौ दुःखं पापस्य तु दशाधिपात्।
अर्थनाशं नृपात्क्रोधं स्थाननाशं स्मृतिभ्रमम्॥47॥
पाकेश्वरादन्त्यगतस्य भुक्तौ स्थानच्युतिं बन्धुजनैर्विरोधम्।
विदेशयानं धनहीनतां च पादाक्षिहृद्रोगमुपैति काले॥48॥
पाकेश्वराद्व्ययस्थस्य सौम्यस्यापहृतौ यदा।
वाहनं भोगभाग्यं च वस्त्राभरणभूषणम्॥49॥

महादशेश से द्वादशस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में दुःख, धनहानि, राजकीय क्रोध, स्थान हानि, मतिभ्रम होता है।

अपि च, स्थानहानि, बन्धुओं से विरोध, विदेश यात्रा, पैर, आँख, हृदय में रोग व धनहीनता होती है।

यदि वह शुभ ग्रह हो तो वाहन, भोग विलास, भाग्यवृद्धि, उत्तम रहन-सहन होता है।

दशेश अन्तर्दशेश स्थिति का सर्वसामान्य फल

त्रिकोणमेषूरणवेश्मगानामन्तर्दशा सौख्यमतीव नित्यम्।
करोति लाभं विविधं नाराणामारोग्यतां मानसमुन्नतिं च॥50॥

महादशेश व अन्तर्दशेश दोनों ही सुराशि में स्थित होकर परस्पर त्रिकोण या दशम में स्थित हों तो उस अन्तर्दशा में बहुत सुख, लाभ, स्वास्थ्य सुख, मान-सम्मान व उन्नति प्राप्त होती है।

सुखस्थितानां च नभश्चराणामन्तर्दशा सौख्यमतीव नित्यम्।
स्त्रीपुत्रमित्रद्रविणादिकानां नीरोगतां मानसमुन्नतिं च॥51॥

महादशेश से चतुर्थ स्थित ग्रह की अन्तर्दशा में बहुत सुख, स्त्री पुत्र, धन, मित्रादि की प्राप्ति, शरीर सुख, मान व उन्नति होती है।

अन्तर्दशायां मदनस्थितस्य खेचारिणः स्यान्मरणं गृहिण्यः।
रोगः कुभोगः कलहादिभंगः संगश्च निन्द्यैर्हरणं धनस्य॥52॥
खेचारिणामष्टमभावगानामन्तर्दशा संजनयेदरिष्टम्।
धनस्य नाशं व्यसनानि पुंसां षष्ठोपगस्यापि गदप्रवृद्धिम्॥53॥

महादशेश से सप्तमस्थ ग्रह की अन्तर्दशा में पत्नी या पति को कष्ट, रोग, साधारण सुख, कलह, पराजय, निन्दनीय लोगों की संगति व धनहानि होती है।

अष्टमस्थ की अन्तर्दशा में अरिष्ट, धनहानि, विपत्ति तथा षष्ठस्थ की अन्तर्दशा में रोग वृद्धि होती है।

भावेशवश अन्तर्दशा

केन्द्राधीश्वरकोणनायकदशाश्चान्तर्दशाः शोभनाः,
सामान्याश्च धनत्रिलाभभवनाधीशग्रहाणां दशा।
षष्ठाष्टव्ययभावनायकदशा कष्टाः भवेयुः सदा
नेतुर्लग्नभवेक्ष्य तत्तदधिपात् तत्तद्दशाभुक्तिषु॥54॥

—केन्द्रेश व त्रिकोणेश की परस्पर दशा अन्तर्दशा शुभ होती है।

—2.3.11 भावेशों की दशा व अन्तर्दशा साधारण फलदायक होती हैं।

—6.8.12 भावेशों की दशा अन्तर्दशा कष्टप्रद होती हैं। यह विचार लग्न से है।

—इसी विधि से महादशेश जहाँ स्थित हो उस भाव को लग्न समझकर, अन्तर्दशेश की स्थितिवशात् शुभाशुभ या सामान्य फल भी होता है।

राहु दशा में विशेष

सिंहिपुत्रेणान्वितं चेद् विलग्नं प्रोक्तस्थानेष्वन्यखेटा न चैवं।
हर्ताराहुः सौरितुल्यं फलं तद्वाच्यं नूनं तत्र चान्तर्दशायाम्॥55॥

लग्न में राहु हो तथा उसके साथ या उससे केन्द्र त्रिकोण में कोई ग्रह न ो तो वह राहु अपनी दशान्तर्दशा में वही फल करेगा जो लग्न में स्थित होने पर नि करता है।

अन्तर्दशाविभागेतु रवीन्द्वोरहिना सह।
यमतुल्यं फलं ज्ञेयं नैवान्येषां क्वचिज्जगुः॥56॥

सूर्य व चन्द्र की दशा में राहु की अन्तर्दशा हो, राहु का फल शनिवत् होता ऐसा कुछ लोगों ने कहा है।

अर्केन्दुभूमितनयार्कजेभ्यः सिंहिसुतस्यैवदशापहारे।
मृतिं रुजं मृत्युसमं शुभं चेद्दशाफलं तत्र वदेद्विमिश्रम्॥57॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि की दशा में राहु की अन्तर्दशा हो तथा राहु पाप राशि व में हो, किसी कारक ग्रह से युक्त न हो तो, मृत्यु, रोग या मृत्युतुल्य कष्ट अपनी तर्दशा में करता है। यदि राहु में थोड़ी शुभता हो तो मिश्रित फल होता है।

यस्मिन्भावे सैंहिकेयस्तु यस्य पुंसः सूतौ स्यात्तदीशस्य पाके।
मृत्युर्वाच्यस्तद्विषोऽन्तर्दशायां होराविद्भिः निश्चितं तस्य यद्वा॥58॥

जन्म कुण्डली में राहु जहाँ स्थित हो, उस भावेश की दशान्तर्दशा में जब

भावेश के शत्रु ग्रह की अन्तर्दशा आएगी तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होगा, ऐसा होराविदों ने कहा है।

यद्यद्भावगतो राहुः केतुश्च जनने नृणाम्।
यद्यद् भावेशसंयुक्तस्तत्फलं प्रदिशेदलम्॥59॥

राहु व केतु, जन्मसमय में जिस भाव में हों या जिस भावेश से युक्त हों, वैसा ही फल अपनी दशान्तर्दशा में करते हैं।

भावेशानुसार पुनर्विचार

पापो विलग्नग्रहपो यदि तद्दशायां
पापापहारसमये बहुशोकरोगम्।
वित्तक्षयं नृपसपत्नभयं नराणां
सौम्यस्य मिश्रमखिलं प्रवदन्ति सन्तः॥60॥

निसर्ग पापी लग्नेश की दशा में, पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो बहुत शोक व रोग, धनहानि, शत्रु या राजा से भय होता है। यदि निसर्ग शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो मिश्रित फल होते हैं।

लग्नाधिपदशाकाले मन्दभुक्तौ धनक्षयम्।
इष्टबन्धुविरोधश्च भविष्यति न संशयः॥61॥

लग्नेश की दशा में शनि की अन्तर्दशा या शनि दशा में लग्नेश की अन्तर्दशा हो तो धनहानि, स्वजनों से विरोध होता है।

धनाधिपः पापखगो यदि स्याच्छन्यारभोगीशदिनेश्वराणाम्।
अन्तर्दशायां धननाशमाहुः पापान्विते तद्भवने तथैव॥62॥

धनेश यदि पापग्रह हो तो उसकी महादशा में शनि, मंगल, राहु व सूर्य की अन्तर्दशा में धन हानि होती है।

अपि च धन स्थान में पापग्रह हो तो उस पापग्रह की अन्तर्दशा में भी धनहानि होती है। धन से तात्पर्य कोष, बचत, जमा पूंजी, जायदाद से है। अतः कोष में कमी होती है। ऐसा अर्थ समझना चाहिए।

वित्ते शुभे शोभनखेचरेशे तत्पाककाले धनलाभमेति।
शुभग्रहाणामपहारकाले तथा भवेदात्मजवाग्विलासः॥63॥

धनस्थान में शुभ ग्रह हो, धनेश स्वयं शुभ हो तो उसकी महादशा में सभी शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा के दौरान धन लाभ, वाणी का वैभव तथा पुत्रादि का सुख होता है।

पापग्रहे विक्रमभावनाथे पापान्विते पापवियच्चराणाम्।
अन्तर्दशायामनलास्त्रचौरैर्दुःखं समायाति शुभप्रदेऽपि॥64॥

तृतीयेश पापग्रह हो या तृतीय में पापग्रह हो तो उसकी अन्तर्दशा में निसर्ग पापी व पाराशरीय नियमों से पापग्रह की अन्तर्दशा आए तो अग्नि, शस्त्र, चोर

आदि से दुःख होता है। अपि च या तृतीयेश की महादशा में, तृतीय पापयुक्त होने पर, शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में भी साधारण कष्ट होता है।

कलिप्रकोपानलचोरभूपैर्दुःखं मनोजाड्यमतीव कष्टम्।
सोत्थेशपापग्रहदायकाले शुभेक्षिते तादृशमत्रनास्ति॥65॥

पापी तृतीयेश की महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो कलह, अग्नि चोर, राजभय, दुःख, मन में जड़ता, बहुत कष्ट होता है। यदि वह ग्रह, दशेश या अन्तर्दशेश, शुभ दृष्ट हो तो उतना भीषण फल नहीं होता है।

दुश्चिक्यभावाधिपदायकाले सौम्येतराणामपहारकाले।
नाशं वदेत्तत्र सहोदराणां भवेद् विरोधः सहजै विशेषात्॥66॥

तृतीयेश की महादशा में पापी ग्रह की अन्तर्दशा हो तो भाइयों की हानि तथा भाइयों के साथ वैर विरोध होता है। शुभ तृतीयेश की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो भ्रातृवृद्धि, पराक्रम वृद्धि व सुख होता है, यह अन्यथा सिद्ध है।

क्षेत्राधिपस्येव शुभेतरस्य पापग्रहाणामपहारकाले।
स्थानच्युतिं बन्धुविनाशमेति नीचस्तगानामपहारकेऽपि॥67॥

पापी चतुर्थेश की महादशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्थान परिवर्तन, बन्धु-बान्धवों की कमी होती है। यही फल नीच व अस्तंगत ग्रह की अन्तर्दशा में भी होता है। अपि च व्यवसाय में हानि, सुख में कमी, जायदाद सम्बन्धी या वाहन सम्बन्धी कष्ट होता है।

पापापहारसमये सतुराशिपस्य पाके नृपालभयमिष्टसुतार्तिमाहुः।
सौम्यापहारसमये सुतवित्तलाभमूर्वीशबन्धुजनलालनमिष्टसिद्धिम्॥68॥

पंचमेश की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजभय, इष्ट हानि, पुत्र कष्ट होते हैं। शुभान्तर्दशा में पुत्र, धन की प्राप्ति, राजा व बन्धुजनों का सहयोग तथा इष्टसिद्धि होती है।

बुद्धिभ्रमं कुत्सितभोजनं च पापग्रहाणां हि सुतेशकाले।
अन्तर्दशायां प्रवदेन्नराणां शुभग्रहश्चेन्न तथा भवेत् तु॥69॥
पंचमेशदशायां हि धर्मपस्य दशा भवेत्।
अतीव शुभदा प्रोक्ता कालविद्भिर्मुनीश्वरैः॥70॥

पापी पंचमेश की दशा में पापीग्रह की अन्तर्दशा हो तो बुद्धिभ्रम, खराब भोजन, पेट की खराबी, पुत्र कष्ट आदि फल होते हैं।

यदि अन्तर्दशेश शुभ ग्रह हो तो विशेष हानि नहीं होती है। पंचमेश व नवमेश की परस्पर दशान्तर्दशा कालवेत्ता मुनियों ने बहुत श्रेष्ठ कही है।

राजाग्निचौरैर्व्यसनं व्रणेशदशाविपाके तु शुभेतराणाम्।
अन्तर्दशायामपिकष्टमेति प्रमेहगुल्मक्षयपित्तरोगैः॥71॥

पापी षष्ठेश में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजभय, चोरभय, अग्निभय,

बहुत कष्ट, मधुमेह, क्षय, गुल्म पित्तादि बड़े रोगों से कष्ट होता है।

दारेशपापग्रहदायकाले स्त्रिया विरोधं मरणं च तस्याः।
विदेशयानं च पुरीषमूत्रकृच्छ्रं भवेद् भूपतिकोपमत्र॥72॥

पापी सप्तमेश की दशा में किसी पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्त्री से विरोध स्त्री की हानि, विदेश पलायन, मूत्र व गुदाद्वार के कष्ट व राजकोप होता है।

रन्ध्रेशकाले फणिनाथभौमशनैश्चराणामपहारकाले।
आयुर्यशोवित्तविनाशनं च दारात्मबन्ध्वीष्टसहोदराणाम्॥73॥

अष्टमेश की महादशा में मंगल, शनि राहु की अन्तर्दशा हो, और ये सब किसी दृष्टि से कारक या योग कारक न हों तो आयु, यश, धन की हानि, स्त्री, बन्धु-बान्धवों से कष्ट, भाइयों से विवाद और कार्य में बाधाएँ पैदा होती हैं।

कारागृहप्राप्तिरनेकदुःखं दुःस्वप्नशोकानलदग्धदेहम्।
कर्मेश्वरस्यान्तर्भुक्तिकाले पापग्रहाणामपकीर्तिमेति॥74॥
कर्मेशस्य खलस्य पाकसमये भुक्तौ यदा पापिना-
मिष्टार्तिपदविच्युतिं सुखयशोहानिं च वित्तक्षयम्॥74½॥

दशमेश की महादशा में यदि पाप फलदायी ग्रह की अन्तर्दशा हो तो दुःख, बन्धन, दुःस्वप्न दर्शन, शोक, अपकीर्ति आदि फल होते हैं।

दशमेश भी स्वयं यदि पापग्रह हो तो उसकी दशा में पापान्तर्दशा में इष्ट कार्य में बाधा, पदहानि, सुखहानि, यशोहानि, धनहानि होती है।

मन्दारार्कफणीशभुक्तिसमये लाभेशदाये सुखं
कृष्यादिप्रविनाशनं नृपभयं वित्तस्य नाशं विदुः॥75॥
व्ययेशदाये रविसूनुभुक्तौ दिनेशभूम्यात्मजयोर्विरोधः।
कलिक्षयौ मानधनक्षयं च राहोस्तु भुक्तावरिसर्पपीडा॥76॥

व्ययेश की महादशा में शनि सूर्य मंगल की भुक्ति हो तो वैर विरोध, कलह, मान व धन की हानि होती है। यदि राहु की अन्तर्दशा हो तो शत्रुभय, सर्पभय या विषभय होता है।

विशेष अनिष्टकारक दशा

तत्कालशत्रोरशुभं फलं तन्मित्रे यदि स्यात्फलमर्धमाहुः।
अन्योन्यषष्ठाष्टदायकाले स्थानच्युतिर्वा मरणं विशेषात्॥
एकस्थयोरन्तरदायकाले मृत्युं वदेद्दुर्बलशालिनस्तु॥77॥

महादशेश व अन्तर्दशेश का पूर्वोक्त नियमों से जैसा भी शुभाशुभ फल प्रतीत होता हो, वह अशुभ फल पूर्ण होगा तथा शुभ फल कम होगा, यदि वे दोनों परस्पर तत्काल शत्रु या पचंधा में अति शत्रु हों।

महादशेश व अन्तर्दशेश यदि परस्पर तत्काल मित्र हों तो जैसा भी फल हो,

वह अधी मात्रा में होता है।

नियमतः शुभ फल दशा में भी महादशेश व अन्तर्दशेश यदि परस्पर षडष्टक (6.8) में हों तो स्थानहानि, मृत्यु आदि फल हो सकते हैं।

महादशेश व अन्तर्दशेश यदि एक साथ स्थित हों तो उनमें से जो निर्बल हो, उसकी दशान्तर्दशा में भय, अपमान, हानि या मृत्यु सम्भव होती है।

क्रूरग्रहदशाकाले क्रूरस्यैव दशागमे।
मरणं तस्य जातस्य भविष्यति न संशयः॥78॥
क्रूरराशिगताः पापाः शत्रुखेटनिरीक्षिताः।
शत्रुखेचरसंयुक्तास्तद्दशायां मृतिर्भवेत्॥79॥

अशुभ फलदायक (पाराशरी नियमों से क्रूर) ग्रहों की परस्पर दशान्तर्दशा हो तो मृत्यु सम्भव होती है।

क्रूर राशि, अशुभ भाव में स्थित ग्रहों, शत्रु ग्रह से दृष्टयुक्त ग्रहों की परस्पर दशान्तर्दशा में मृत्यु सम्भव होती है।

दशाधिपस्य यः शत्रुस्तस्यभुक्त्यन्तरान्तरे।
मृत्युकालो भवेन्नूनं पापखेटस्य निश्चयः॥79½॥

महादशेश व अन्तर्दशेश परस्पर शत्रु हों तथा पापी भी हों तो उनकी दशान्तर्दशा में मृत्यु सम्भव होती है।

लग्नार्थसोत्थगस्यापि पापस्यापहृतौ तदा।
पाकेशाद्दुःखमाप्नोति सौम्यभुक्तौ शुभं भवेत्॥80॥

दशेश से 1.2.3 स्थानों में स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा में भी दुःख होते हैं। यदि वे शुभ ग्रह हों तो शुभ फल होता है।

सौम्यभुक्तौ पापदाये त्वादौ सौख्यं परं भयम्।
सौम्यदाये पापभुक्तौ त्वादौ कष्टं ततो भयम्॥81॥

पापग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो पूर्वार्ध में सुख व उत्तरार्ध में कष्ट होता है।

शुभ दशा में पाप अन्तर्दशा हो तो शुरू में कष्ट तथा बाद में भय होता है।

यत्र संवादबाहुल्यं योजायित्वा फलं वदेत्।
शीर्षोदयर्क्षगाः खेटा आदौ चान्त्येऽन्यत्रक्षगाः॥82॥

शीर्षोदय राशियों (3.5.7.8.6.11) में स्थित ग्रहों की दशा का विशेष फल दशा के प्रारम्भ में होता है। पृष्ठोदय (1.2.4.9.10) राशियों में स्थित ग्रह का फल दशा के अन्त में होता है। इस प्रकार बहुत से नियमों से देखकर जो फल कई प्रकार से पुष्ट होता हो, उस फल की प्राप्ति कहें।

लग्नस्याधिपतेः शत्रुर्लग्नस्यान्तर्दशां गतः।
करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्येण भाषितम्॥83॥

लग्नेश की महादशा में (राशि दशा में लग्न दशा) लग्नेश के शत्रु ग्रह की अन्तर्दशा आए तो अकस्मात् मृत्यु या बड़ी हानि हो सकती है, ऐसा सत्याचार्य ने कहा है। लेकिन लग्न में शुभ ग्रह हों, लग्न बलवान् हो तो मृत्यु नहीं होती, केवल परेशानियाँ होती है।

अन्तर्दशा चेदशुभग्रहाणामेकर्क्षगानां कुरुते सदैव।
गदं विवादं रिपुभूपभीतिं दैन्यं धनस्यापचयं विशेषात्॥84॥

साथ में स्थित दो पापग्रहों की दशान्तर्दशा में रोग विवाद, शत्रुभय, राजभय, धनहानि, दीनता होती है।

अन्तर्दशा चैकगृहस्थितानां सतां निजोच्चर्क्षविवर्जितानाम्।
प्रेष्यं मनुष्यं द्रविणेन हीनं करोति दीनं च विरोधयुक्तम्॥85॥

स्वक्षेत्री या स्वोच्च, मित्रक्षेत्री ग्रहों के अतिरिक्त, एक स्थान में बैठे ग्रहों की दशान्तर्दशा में मनुष्य को धनहीनता, आधीनता, दीनता व विरोध सहना पड़ता है।

जन्मर्क्षनाथो निजलग्ननाथशत्रोर्दशायां मतिविभ्रमं स्यात्।
रिपोर्भयं राज्यपरिच्युतिश्च कलिः खलैः स्याद्बलहीनता च॥86॥

जन्म राशीश व लग्नेश के शत्रु ग्रहों की दशान्तर्दशा में बुद्धि विभ्रम, शत्रुभय, राज्य हानि, दुष्ट लोगों के साथ कलह तथा सामर्थ्यहीनता होती है।

क्रूरराशिस्थितः पापः षष्ठे वा निधनेऽपि वा।
सितेन रविणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदो ग्रहः॥87॥

क्रूरग्रह की राशि में स्थित स्वयं पापग्रह 6.8 भावों में सूर्य या शुक्र से दृष्ट हो तो इनकी दशान्तर्दशा में प्रायः मृत्यु होती है।

अन्योन्यमिष्टग्रहयोर्दशायां भुक्तौ शुभं षड्बलशालिनोस्तु।
शत्रुग्रहौ दुर्बलशालिनौ चेत् पाकापहारे तु तयोरनर्थः॥88॥

महादशेश व अन्तर्दशेश दोनों परस्पर मित्र हों व षड्बली हों तो उनकी दशान्तर्दशा में शुभ फल होते हैं। दोनों निर्बल हों व शत्रु भी हों तो विशेष अनर्थ होता है।

प्रवेशे बलवान् खेटः शुभैर्वासन्निरीक्षितः।
सौम्याधिमित्रवर्गस्थोऽरिष्टभंगस्तदा भवेत्॥89॥

दशाप्रवेश के समय महादशेश तथा अन्तर्दशा प्रवेश के समय अन्तर्दशेश यदि बलवान्, शुभयुक्त शुभ दृष्ट, शुभ या अधिमित्र के वर्गों में हो तो दशा का अशुभ व अनिष्ट फल काफी हद तक कम हो जाता है और शुभ फल बढ़ता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने-
ऽन्तर्दशाध्यायस्त्रयोदशः॥13॥
॥आदितः श्लोकाः 984॥

14
॥ सूर्यान्तर्दशाध्यायः ॥

द्वादशभावस्थ सूर्य में अन्तर्दशाएँ

लग्नगस्थ रवेः पाके भौमार्किशिखिभोगिनाम्।
अन्तर्दशायां दुःखं स्याद् राज्यार्थगृहनाशनम्॥1॥
तेषामगोचरस्थानां दिनेशे तादृशं फलम्।
गोचरस्थे फलं सौख्यं सर्वस्मिन्पाकपाद्ग्रहे॥2॥

लग्नस्थ सूर्य यदि स्वयं शुभभावेश न हो तो उसकी महादशा में मंगल, शनि, राहु, केतु की अन्तर्दशा में दुःख, राज्यहानि, अर्थहानि, जायदाद की हानि होती है।

यदि अन्तर्दशेश 'ओगचरस्थ' हो अर्थात् स्वक्षेत्र, मूलत्रिकोण, स्वोच्च, मित्रक्षेत्र में न हो, तभी उक्त अशुभ फल होता है।

यदि गोचरस्थ हो तो सभी ग्रह अपनी दशान्तर्दशा में शुभ फल करते हैं।

'अगोचर' का स्पष्टीकरण

अस्तगो नीचगो वापि स्वर्क्षमूलविवर्जितः।
षष्ठाष्टमव्ययस्थो वा यः खेटोऽयमगोचरः॥3॥

जो ग्रह अस्तंगत, नीचगत हो, स्वक्षेत्री, मूल त्रिकोणी, स्वोच्च में न हो, महादशेश से या लग्न से 6.8.12 भाव में हो, वह 'अगोचर' कहलाता है। आगेचरस्थ ग्रह सर्वदा अशुभ है, गोचरस्थ ग्रह शुभ है, यह बात सर्वत्र ध्यान रखें।

लग्नस्थ वासरेशस्य दशायामीज्यशुक्रयोः।
शशांकसौम्ययोर्भुक्तौ कृषिगोसुतदारभूः॥4॥

लग्नस्थ सूर्य दशा में गुरु, शुक्र, चन्द्र, बुध की अन्तर्दशा में, यदि वे गोचरस्थ हों तो कृषि, गोधन, स्त्री पुत्रादि का सुख तथा भूमि सुख होता है।

धनस्थवासरेशस्य पापभुक्तौ धनक्षयम्।
वाक्पारुष्यं मनोदुःखं नेत्ररोगो महद्भयम्॥5॥

सौम्यभुक्तौ रवेः पाके धनस्थस्य महत्सुखम्।
विद्यालाभो नृपात्प्रीति वस्त्रवाहनभूषणम्॥6॥

द्वितीयस्थ सूर्य दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो धनहानि, वाणी की कठोरता, मन में उदासी, नेत्ररोग व भय होता है।

शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में सुख, विद्या लाभ, राज सम्बन्ध, वस्त्र, वाहन, आभूषण का सुख होता है।

तृतीयस्थ रवेः पाके पापस्यान्तर्दशा यदा।
गोचरस्थे महत्सौख्यं नोचेत्पापफलं वदेत्॥7॥

तृतीयस्थ सूर्य दशा में गोचरस्थ पापग्रह की अन्तर्दशा में बहुत शुभ फल होते हैं। यदि अन्तर्दशेश गोचरस्थ न हो तो अशुभ फल होता है।

तत्रस्थभानुपाके च शुभभुक्तौ महत्सुखम्।
धैर्यं वित्तं सुताप्तिं च समरे जयमाप्नुयात्॥8॥

तृतीय भावस्थ सूर्य की दशा में शुभ ग्रह की भुक्ति हो तो बहुत सुख, धीरता, धन, सुतप्राप्ति व विवाद आदि में विजय होती है।

दिनेशस्य सुखस्थस्य दशायां पापिनां हृतौ
मातृनाशो मनोदुःखं चौराग्निनृपपीडनम्॥9॥

चतुर्थस्थ सूर्य की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा होने पर मातृ कष्ट, मानसिक कष्ट, चोर, नृप व अग्नि से पीड़ा होती है।

तत्रस्थस्य शुभे पाके सुखं राज्यार्थसम्पदः।
पुत्रदारादिसौख्यं च वस्त्रमाल्यानुलेपनम्॥10॥

चतुर्थस्थ सूर्य की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में सुख, राज्य, धन सम्पत्ति, स्त्री पुत्र का सुख वस्त्राभूषण का सुख होता है।

पंचमस्थ रवेः पाके शन्यारशिखिभोगिनाम्।
अन्तर्दशायां पुत्रार्तिश्चौरभूपाग्निपीडनम्॥11॥
शुभ ग्रहाणां भुक्तौ च रवेः पंचमगस्य तु।
परिपाके सुताप्तिश्च राज्यवाहनभूषणम्॥12॥

पंचमस्थ सूर्यदशा में शनि, मंगल, केतु, राहु की अन्तर्दशा हो तो पुत्र कष्ट, विभिन्न कोणों से पीड़ा होती है।

शुभ भुक्ति हो तो सुतप्राप्ति, राज्य लाभ, वाहनादि सुख होता है।

षष्ठस्थ सूर्यदायस्तु पापदः पापिनां हृतौ।
ऋणचौराग्निभूपैस्तु भीतिरावश्यकी तथा॥13॥
सौम्यानामपहारे तु भास्करस्यारिगस्य च।
परिपाके सुखं पूर्वं पश्चाद्दुष्टं विनिर्दिशेत्॥14॥

षष्ठस्थ सूर्य दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो पापफल, ऋणवृद्धि, चोरों

व प्राकृतिक विपत्तियों से पीड़ा, आकस्मिक पीड़ा होती है।

शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा में पहले सुख तथा बाद में कष्ट होता है।

सप्तमस्थ रवेः पाके शुक्रेज्याब्जविदां हृतौ।
दारलाभो मनोत्साहं यानाम्बरविभूषणम्॥15॥
तथाविध रवेः पाके दुःखं स्यात्पापिनां हृतौ।
ज्वरातिसारपित्तं च मेहकृच्छ्रारिपीडनम्॥16॥

सप्तमस्थ सूर्य की दशा में चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र की अन्तर्दशा हो तो स्त्री प्राप्ति, मन में उत्साह, वाहन सुख, वस्त्राभूषणों का सुख होता है।

इसी सूर्य में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो ज्वर, दस्त, पित्तरोग, मधुमेह, शत्रुपीड़ा आदि होती है।

अष्टमस्थ रवेः सौम्ये किंचिद्दुःखं शुभाधिकम्।
पापभुक्तौ व्याधिपीडा परप्रेष्यत्वमेव वा॥17॥

अष्टमस्थ सूर्य की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो थोड़ा कष्ट, शुभ फल अधिक होता है। पाप ग्रह की अन्तर्दशा में व्याधि, दूसरे के दबाव व अधीनता में काम करने के अवसर होते हैं।

शुभे सौम्यहृतौ सूर्ये दानयज्ञमहोत्सवम्।
पापे दुःखबाहुल्यं गुरुपित्रादिनाशनम्॥18॥

नवमस्थ सूर्य की दशा में शुभ अन्तर्दशा के दौरान दान, यज्ञ व महान् उत्सव होते हैं तथा पापान्तर्दशा में गुरु या माता-पिता को कष्ट होता है।

कर्मस्थे पापभुक्तौ तु कर्मशोकार्तिपीडनम्।
शुभायां विपुलं राज्यं कीर्तिराचन्द्रतारकम्॥19॥

दशमस्थ सूर्य की दशा में पापन्तर्दशा के अन्तर्गत कार्य में बाधाएँ, शोक व विविध पीड़ा होती है। शुभभुक्ति में राज्यलाभ, अक्षुण्ण कीर्ति मिलती है।

लाभे पापास्य पाके तु वेशे दुःखं ततः सुखम्।
शुभे धनाप्तिः सम्मानोः दारपुत्रनृपात् प्रियम्॥20॥
रवौ रिःफगते पापे भीतिः कोपः विमानता।
शुभे गोभूमिवस्त्रादिमणिविद्रुमभूषणम्॥21॥

एकादशस्थ सूर्य दशा में पापान्तर्दशा में प्रवेश के समय कष्ट, बाद में सुख होता है। शुभ भुक्ति में धन लाभ, सम्मान, स्त्री पुत्र व राजपक्ष का स्नेह प्राप्त होता है।

द्वादशस्थ सूर्य दशा में पापान्तर्दशा हो तो भय, राजकोप से अपमान होता है। शुभ भुक्ति में पशुधन, भूमि, वस्त्राभूषणादि की प्राप्ति होती है।

सूर्य में सूर्यान्तर्दशा

उच्चक्षेत्रगते सूर्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
रविदाये स्वभुक्तौ च धनधान्यादि लाभकृत्॥22॥
देहसौख्यं वित्तलाभो राजप्राप्तिकरं शुभम्।
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्याद् विवाहं राजदर्शनम्॥23॥
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत्॥24॥

सूर्य यदि शुभ राशि, शुभ भाव, केन्द्र, लाभ स्थान, त्रिकोण में हो तो उसकी अन्तर्दशा में धन-धान्य का लाभ, शरीर सुख, राज्यलाभ, सर्व कार्य में सफलता, विवाह योग, राजा से भेंट होती है।

सूर्य 2.7 भावेश हो तो कष्ट व दुर्घटना का भय होता है। तब मृत्युंजय जप कराना चाहिए।

पंके रुहेशस्य दशान्तराले यस्तीव्ररश्मिः कुरुते नराणाम्।
सन्मित्रपुत्रद्रविणादिसौख्यं कान्ताविलासं शुभदा दशा चेत्॥25॥

यदि सूर्य शुभ स्थिति में हो तो सूर्य दशा में सूर्यान्तर्दशा के समय उत्तम मित्रों से संयोग, धन सुख, स्त्री सुख होता है।

यदि सूर्य अशुभ भावेश हो तो अशुभ फल होते हैं, यह बात स्वतः सिद्ध है।

सूर्यदशा चन्द्रभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते चन्द्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
विवाहः शुभकार्यं च धनधान्यसमृद्धिकृत्॥26॥
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च पशुवाहनसम्पदः।
तुंगे वा स्वर्क्षगेवापि दारसौख्यं धनागमम्॥27॥
पुत्रलाभसुखं चैव सौख्यं राज्यसमागमम्।
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहम्॥28॥

शुभ फलद सूर्य दशा में चन्द्रान्तर्दशा के बीच विवाह, शुभ कार्य, धन-धान्य वृद्धि आदि होती है, यदि चन्द्रमा भी लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो।

जमीन जायदाद की वृद्धि, वाहनों की वृद्धि, पशुधन होता है।

चन्द्रमा यदि स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो तो स्त्री सुख व धन लाभ होता है। पुत्र लाभ, सुख, राज्यप्राप्ति, बड़े समर्थ व्यक्ति की सहायता से इष्टसिद्धि होती है।

क्षीणे वा पापसंयुक्ते दारपुत्रादिपीडनम्।
वैषम्यं जनसंवादे भृत्यवर्गविनाशनम्॥29॥

विरोधं राजकलहं धनधान्यपशुक्षतिः।
षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे जलभीतिः मनोरुजम्॥30॥
बन्धनं रोगपीडा च स्थानविच्युतिकारकः।
धनक्षयं कुत्सितान्नं देहपीडाक्षयं रुजः॥31॥
मूत्रकृच्छ्रादिरोगं च लभते पीडां नृपादितः॥31½॥

यदि चन्द्रमा क्षीण या पापयुक्त हो तो स्त्री पुत्र को पीड़ा, जनसम्पर्क में विरोध या अप्रसन्नता, कर्मचारियों की हानि।

विरोध, राजकीय विवाद, धन-धान्य वाहनादि की हानि होती है। 6.8 में स्थित चन्द्र से जलभय व मनोरोग भी होते हैं।

बन्धन, रोगपीड़ा, स्थानपरिवर्तन, धन हानि, खराब भोजन, शरीरकष्ट रोग, मूत्रदोष, राजकीय कष्ट भी होता है।

दायेशाल्लाभभाग्ये च केन्द्रे वा शुभसंयुते॥32॥
भोगभाग्यादि सन्तोषो दारपुत्रादिवर्धनम्।
राज्यप्राप्तिर्महत्सौख्यं स्थानप्राप्तिं च शाश्वतीम्॥33॥
विवाहं यज्ञदीक्षां च लभते सुखवर्धनम्।
वाहनं पुत्रपौत्रादि महर्घाम्बरभूषणम्॥34॥

महादशेश से केन्द्र, 9.11 भाव में स्थित चन्द्रान्तर्दशा में या शुभयुक्त चन्द्र होने पर, भोग वृद्धि भाग्य वृद्धि, मन में शान्ति, स्त्री पुत्रों की वृद्धि।

राज्य लाभ, बहुत सुख, पद या स्थानप्राप्ति। विवाह, यज्ञादि शुभकार्य, सुखवृद्धि, वाहन, पुत्र पौत्रों का सुख, कीमती वस्त्राभूषणों का उपभोग होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये व बलवर्जिते।
अकाले भोजनं चैव देशाद् देशं गमिष्यति॥35॥
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
श्वेतां गां महिषीं दद्याच्छान्तिं कुर्यात्तथैन्दवीम्॥36॥

महादशेश से 6.8.12 में स्थित क्षीण या निर्बल चन्द्र हो तो असमय में भोजन के योग, स्थान-स्थान पर परिभ्रमण होता है।

चन्द्रमा यदि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्युभय होता है। तब सफेद गाय या दुधारु भैंस का दान व चन्द्रशान्ति करानी चाहिए।

रिपुजयं च धनस्य समागमं स्वजनसंगतिमंगनीरोगताम्।
वितनुते शुभमंगभृतामसौ रविदशान्तरगा शशिनो दशा॥37॥

होरारत्न में कहा गया है कि सूर्य दशा में शुभ चन्द्र की अन्तर्दशा में रिपुविजय, धनलाभ, स्वजनों से अच्छे सम्बन्ध, स्वस्थ शरीर होता है। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो धनहानि, पराजय, रोगादि होते हैं, यह स्वतः सिद्ध है।

सूर्यदशा मंगलभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते भौमे स्वोच्चे स्वक्षेत्रलाभगे।
लग्नात्केन्द्रे त्रिकोणे वा शुभकार्यं शुभं फलम्॥38॥
भूलाभं कृषिलाभं च धनधान्यादि वृद्धिकृत्।
गृहक्षेत्रादिलाभं च रक्तवस्त्रादि लाभकृत्॥39॥

मंगल यदि उच्च या स्वक्षेत्र में या लाभ स्थान, केन्द्र त्रिकोण में हो तो शुभकार्य होते हैं। शुभ फल मिलते हैं।

भूमिलाभ, कृषिलाभ, धन-धान्य की वृद्धि, जायदाद प्राप्ति, लाल वस्त्रों की प्राप्ति या लाल वस्त्रों या मंगल के पदार्थों के व्यवसाय में लाभ होता है।

लग्नाधिपेन संयुक्ते सौख्यं राजप्रियं सुखम्।
भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते लाभं चैव भविष्यति॥40॥
बहुसेनाधिपत्यं च शत्रुनाशं मनोदृढम्।
आत्मबन्धुसुखं चैव भ्रातृवर्धनकं तथा॥41॥

यदि मंगल लग्नेश से युक्त हो तो सुख, राजा की प्रीति होती है। 9.11 भावेश से युक्त हो तो लाभ होता है तथा शत्रुनाश, सेनापतित्व, अपने बन्धु-बान्धवों का सुख व उनकी वृद्धि होती है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे पापयुक्ते च वीक्षिते।
आधिपत्यबलैर्हीने क्रूरबुद्धिर्मनोरुजम्॥42॥
सुवस्त्रजपदानं च अनड्वाहं तथैव च।
शान्तिं कुर्वीत विधिवदायुरारोग्यसिद्धिदाम्॥43॥

महादशेश से 6.8 भावों में मंगल हो, पापयुक्त दृष्ट हो या शुभ भावेशत्वादि बल से हीन हो तो क्रूर बुद्धि का उदय, मन में विकृति होती है।

तब अच्छे वस्त्र का दान, जप, सांड छोड़ना, शास्त्रोक्त शान्ति विधिवत् करानी चाहिए। तब आरोग्य व सफलता होती है।

सूर्यदशा राहुभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते राहौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
आदौ द्विमासपर्यन्तं धननाशं महद्भयम्॥44॥
चौराहिव्रणभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम्।
तत्फलं शुभमाप्नोति शुभयुक्ते शुभांशके॥45॥
देहारोग्यं मनस्तुष्टिं राजप्रीतिकरं सुखम्।

राहु यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तथा शुभयुक्त, शुभ नवांश में न हो तो पहले 2 मास तक धन हानि, भय, चोरभय, चोटभय, सर्पभय, स्त्रीपुत्र को पीड़ा होती है।

यदि राहु शुभयुक्त या शुभनवांश में हो तो शरीर सुख, राजप्रीति व सुख होते हैं।

लग्नाद्युपचये राहौ योगकारकसंयुते॥46॥
दायेशाच्छुभराशिस्थे राजसम्मानकीर्तिदः।
भाग्यवृद्धिं यशोलाभं दारपुत्रादिपीडनम्॥47॥
पुत्रोत्सवादिसन्तोषं गृहे कल्याणशोभनम्।

लग्न से 3.6.10.11 भाव में राहु स्थित हो या योगकारक ग्रह से युक्त हो या महादशेश से शुभ स्थानों में हो तो राज-सम्मान, कीर्ति, भाग्यवृद्धि, स्त्री पुत्र को साधारण पीड़ा होती है। घर में पुत्र सम्बन्धी उत्सव, घर में कल्याणकारी बातें होती हैं।

दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा बलवर्जिते॥48॥
बन्धनं स्थाननाशं च कारागृहनिवेशनम्।
चौराहिव्रणभीतिश्च दारपुत्रादिवर्धनम्॥49॥
चतुष्पाज्जीवनाशं च गृहक्षेत्रादिनाशनम्।
गुल्मक्षयादिरोगश्च ह्यतिसारादिपीडनम्॥50॥

महादशेश से 6.8.12 में राहु हो या स्थितिवशात् निर्बल हो तो बन्धन, स्थानहानि, जेल, चोर सर्पादि से पीड़ा, कर्ज, स्त्री-पुत्रों की वृद्धि होती है।

चौपाये जन्तुओं से जीवन संकट, गृह या जायदाद में हानि, गुल्म, क्षयादि रोग या दस्तों से पीड़ा होती है।

द्विसप्तस्थे तथा राहौ तत्स्थानाधिपसंयुते।
अपमृत्युभयं चैव सर्वभीतिश्च सम्भवेत्॥51॥
दुर्गाजपं च कुर्वीत छागदानं समाचरेत्।
कृष्णां गां महिषीं दद्याच्छान्तिमाप्नोत्यसंशयम्॥52॥

राहु यदि 2.7 भावों में हो या 2.7 भावेश से युक्त हो तो अपमृत्यु का भय या अन्य भय होते हैं।

शान्ति हेतु दुर्गापाठ, बकरी का दान, काली गाय का दान या भैंस का दान करें।

सूर्यदशा : गुरुभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे मित्रर्क्षवर्गस्थे विवाहं राजदर्शनम्॥53॥
धनधान्यादिलाभश्च पुत्रलाभो महत्सुखम्।
महाराजप्रसादेन इष्टकार्यार्थलाभकृत्॥54॥
ब्राह्मणप्रियसम्मानं प्रियवस्त्रादि लाभकृत्।

भाग्यकर्माधिपवशाद् राज्यलाभो महोत्सवम्॥55॥
नरवाहनयोगश्च स्थानाधिक्यं महत्सुखम्।

वृहस्पति यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो या उच्च स्वक्षेत्र में हो या मित्र क्षेत्री हो या इन्हीं के वर्गों में हो तो सम्भव होने पर विवाह, राजा से भेंट।

धन-धान्य का लाभ, पुत्र प्राप्ति, बहुत सुख, महाराज या समर्थ व्यक्ति के सहयोग से अभीष्ट कार्यों की सिद्धि व लाभ।

ब्राह्मणों के प्रिय व्यक्तियों द्वारा सम्मान, उत्तम वस्त्राभूषणों की प्राप्ति होती है।

यदि गुरु 9.10 भावेशों के साथ सम्बन्ध करे या स्वयं 9.10 भावेश हो तो राज्यप्राप्ति, महोत्सव का वातावरण होता है।

अपि च पालकी या ड्राइवर सहित वाहन का सुख, बड़ा पद, बड़ा सुख होता है।

दायेशाच्छुभराशिस्थे भाग्यवृद्धिः शुभावहम्॥56॥
दानधर्मक्रियायुक्तो देवताराधनात्प्रियः।
गुरुभक्तिः मनःसिद्धिः पुण्यकर्मादिसंग्रहम्॥57॥

दशेश से उत्तम भावों में स्थित गुरु हो तो उसकी अन्तर्दशा में भाग्योदय, शुभ फल, दान धर्मादि कार्य, देव पूजन से सम्मान, गुरुभक्ति, मानसिक संकल्पों की सफलता तथा पुण्योदय होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे नीचे वा पापसंयुते।
दारपुत्रादिपीडा च देहपीडामहद्भयम्॥58॥
राजकोपं प्रकुरुते इष्टवस्तुविनाशनम्।
पापमूलाद्धननाशं देहकष्टं मनोरुजः॥59॥
स्वर्णदानं प्रकुर्वीत इष्टजाप्यं च कारयेत्।
गवां कपिलवर्णानां दानेनारोग्यमादिशेत्॥60॥

सूर्य से 6.8 में स्थित हो तो नीचगत पापयुक्त हो तो गुरु अन्तर्दशा में स्त्री-पुत्रादि को पीड़ा, बड़ा भय, राजकोप, अभीष्ट वस्तु की हानि, पापोदय, धन हानि देह कष्ट, मानसिक व्यथा होती है।

तब सोने का दान, इष्ट मन्त्र का (गुरु का) जप, भूरी पीली गायों का दान करें तो शुभ होता है।

सूर्यदशा : शनिभुक्ति

सूर्यास्यान्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणे।
शत्रुनाशोमहत्सौख्यं स्वल्पधान्यार्थलाभकृत्॥61॥
विवाहोत्सवकार्याणि शुभकार्यं शुभावहम्
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे मन्दे सुहृद्ग्रहसमन्वितेऽ॥62॥

गृहे कल्याणसम्पत्तिविवाहादिषु सत् क्रियाम्।
राजसम्मानकीर्तीश्च नानावस्त्रधनागमः॥63॥

लग्न से केन्द्र त्रिकोण में शनि हो तो सूर्य दशा में शान्यन्तर में शत्रुनाश, सुख, धान्य में कमी, सामान्य धन लाभ। घर में विवाहादि उत्सव, शुभ कार्य, मंगल वृद्धि होती है।

शनि यदि उच्च या स्वक्षेत्र में हो या मित्र ग्रहों से युक्त हो तो घर में कल्याणकारी बातें होती हैं। उत्सव में सम्मान मिलता है, राज-सम्मान, यश व अनेक तरह से धन व उपहार प्राप्त होते हैं।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
वातशूलमहाव्याधिः ज्वरातीसारपीडनम्॥64॥
बन्धनं कार्यहानिश्च वित्तनाशोमहद्भयम्।
अकस्मात्कलहं चैव दायाद्यजनविग्रहम्॥65॥
भुक्त्यादौ मित्रहानिः स्यान्मध्ये किंचित्सुखावहम्।
अन्ते क्लेशकरं चैव गमनागमनं तथा॥66॥
पितृमातृवियोगश्च नीचैः कलहं तथा।

महादशेश सूर्य से 6.8.12 में शनि हो या पापसंयुक्त हो तो वायुशूल, वातरोग, सन्धियों में पीड़ा, ज्वर, पतले दस्तों से पीड़ा होती है।

बन्धन, कार्य में रुकावट, धनहानि, भय, अचानक कलह, उत्तराधिकार के झगड़े, प्रारम्भ में मित्रहानि, मध्य में थोड़ा सुख, अन्त में क्लेश, व्यर्थ परिभ्रमण, माता-पिता से वियोग तथा दुष्टों से कलह होती है।

द्वितीयद्यूननाथे तु अपमृत्युभयं भवेत्॥67॥
कृष्णां गां महिषीं दद्यात् मृत्युंजयजपं चरेत्।
छागदानं प्रकुर्वीत् सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥68॥

यदि शनि 2.7 भावेश भी हो तो अपमृत्यु का भय होता है। तब काली गाय, या भैंस या बकरी का दान करना चाहिए। मृत्युंजय जप भी कराएं। ऐसा करने से सब सुख होते हैं।

सूर्यदशा : बुधभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते सौम्ये स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे ऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणलाभस्थे बुधे वर्गबलैर्युते॥69॥
राज्यलाभोमहोत्साहं दारपुत्रादिसौख्यकृत्।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्॥70॥
पुण्यतीर्थफलावाप्तिर्गृहेगोधनसंकुलम्।
भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते लाभवृद्धिकरो भवेत्॥71॥

स्वक्षेत्र, स्वोच्च, केन्द्र, त्रिकोण, लाभ स्थान में स्थित बुध हो या वर्गों में शुभ हो तो सूर्य दशा बुधान्तर रहने पर राज्यप्राप्ति, मन में उत्साह, स्त्री-पुत्रादिकों का सुख, राजकीय सहयोग से वाहन वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, पुण्य लाभ, तीर्थयात्रा का पुण्य, घर में गोधन वृद्धि होती है।

नवमेश व लाभेश से युक्त बुध हो तो लाभ में अच्छी वृद्धि होती है।

भाग्यपंचमकर्मस्थे सम्मानो भवति ध्रुवम्।
स्वकर्मधर्मबुद्धिश्च गुरुदेवद्विजार्चनम्॥72॥
धनधान्यादिसंयुक्तं विवाहः पुत्रसम्भवम्।
दायेशाच्छुभराशिस्थे सौम्यभुक्तौ महात्सुखम्॥73॥
वैवाहिकं यज्ञकर्म दानधर्मजयादिकम्।
स्वनामांकितपद्यानि नामद्वयमथापि वा॥74॥
भोजनाम्बरभूषाप्तिनरिशत्वं भवेन्नरे।

5.9.10 भावगत बलवान् बुध हो तो निश्चय से मान-सम्मान मिलता है। धर्म कर्म से बुद्धि, देवों द्विजों का सत्कार, धन-धान्य वृद्धि, विवाहोत्सव, पुत्र जन्म होता है।

सामान्यतः महादशेश से शुभ भावगत बुध की अन्तर्दशा में अच्छे सुखों की प्राप्ति होती है। विवाह, यज्ञ, प्रसिद्धि, प्रशंसा, वस्त्राभूषण की प्राप्ति व राजयोग होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे रिःफगे नीचगेऽपि वा॥75॥
देहपीडामनस्तापो दारपुत्रादिपीडनम्।
भुक्त्यादौ दुःखमाप्नोति मध्ये किंचित्सुखावहम्॥76॥
अन्ते तु राजभीतिश्च गमनागमनं तथा।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं ज्वरादिकम्॥77॥
विष्णोर्नामसहस्रं च भोज्यदानं च कारयेत्।
राजतप्रतिमादानं कुर्यादारोग्यमादिशेत्॥78॥

महादशेश से 6.8 भावगत बुध हो, नीचगत हो तो सूर्यदशा बुधान्तर में शरीर कष्ट, मानसिक कष्ट, स्त्री-पुत्रादि को कष्ट होता है।

अन्तर्दशा के आरम्भ में दुःख, मध्य में थोड़ा सुख, अन्त में राजभय व व्यर्थ भ्रमण होता है। यदि बुध 2.7 भावेश हो तो देह में रोग, ज्वरादि प्रकोप होता है।

इसकी शान्ति के लिए विष्णु सहस्र नाम का पाठ, भोज्य वस्तुओं या अन्न का दान, चाँदी की बुधप्रतिमा का दान करने से सुख होता है।

सूर्यदशा : केतुभुक्ति

सूर्यास्यान्तर्गते केतौ देहपीडा मनोव्यथा।
अर्थव्ययं राजकोपः स्वजनादेरुपद्रवः॥79॥

सूर्य दशा में केतु का अन्तर हो तो शरीर कष्ट, मानसिक व्यथा, धन का व्यय, राजकोप, अपने परिजनों में उपद्रव होता है।

लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमः।
मध्ये तत्क्लेशमाप्नोति मृतवार्तागमो भवेत्॥80॥
षष्ठाष्टमव्यये चैव दायेशात्पापसंयुते।
कपोलदन्तरोगश्च मूत्रकृच्छ्रस्य सम्भवः॥81॥
स्थानविच्युतिरर्थक्षयमित्रहानिः पितुर्मृतिः।
विदेशगमनं चैव शत्रुपीडामहद्भयम्॥82॥

यदि केतु लग्नेश से युक्त हो तो प्रारम्भ में सुख व धनलाभ, मध्य में क्लेश और किसी की मृत्यु का सामाचार मिलता है।

दशेश से 6.8.12 में केतु हो या पापयुक्त हो तो गाल, मुँह, दाँत में रोग, मूत्र रोग, स्थानच्युति, मित्रहानि, पितृशोक, विदेशयात्रा, शत्रुपीड़ा का भय होता है।

लग्नादुपचये केतौ योगकारकसंयुते।
शुभांशे शुभवर्गे च शुभकर्मफलप्रदः॥83॥
पुत्रदारादिसौख्यं च सन्तोषः प्रियवर्धनम्।
विचित्रवस्त्रलाभश्च यशोवृद्धिः सुखावहम्॥84॥
द्वितीयद्यूनभावेतु ह्यपमृत्युफलं भवेत्।
दुर्गाजपं प्रकुर्वीत छागदानं तथैव च॥85॥
महामृत्युञ्जयोजाप्यः कृत्वा शान्तिमवाप्नुयात्।

लग्न से 3.6.10.11 में केतु हो या किसी योगकारक ग्रह से युक्त हो, शुभ नवांश या शुभ वर्गों में हो तो सब शुभ फल होते हैं।

स्त्री-पुत्रादि का सुख, सन्तोष, प्रिय पात्रों की उन्नति, उत्तम वस्त्रलाभ, यशोवृद्धि, सुख होता है।

यदि केतु 2.7 भावों में हो तो अपमृत्यु का भय होता है। तब दुर्गापाठ, बकरीदान महामृत्युंजय जप करने से शान्ति होती है।

रविदशा : शुक्रभुक्ति

सूर्यस्यान्तर्गते शुक्रे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा॥86॥
स्वोच्चे मित्रस्ववर्गस्थे हीष्टस्त्रीभोग्यसम्पदाम्॥
ग्रामान्तरप्रयाणं च ब्राह्मणप्रभुदर्शनम्॥87॥
राज्याप्तिश्च महोत्साहः छत्रचामरवैभवम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥88॥
विद्रुमादिरत्नलाभो मुक्तावस्त्रादिलाभकृत्।

चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद्बहुधान्यधनादिकम्॥89॥
उत्साहः कीर्तिसम्पत्ती नरवाहन सम्पदः।

यदि शुक्र केन्द्र त्रिकोण में हो, स्वोच्च, स्वक्षेत्र में या अच्छे वर्गों में हो तो रवि दशा में शुक्रान्तर में प्रिय स्त्री का सुख, सम्पदा, अन्य बस्ती या कॉलोनी में निवास, ब्राह्मणों व राजा का दर्शन, राज्यलाभ, उत्साह, छत्र चंवर से युक्त वैभव, घर में उन्नति, नित्य उत्तम भोजन, रत्नप्राप्ति उत्तम रत्नजड़ित वस्त्रों का उपहार, चौपाये धन से लाभ, धन-धान्य समृद्धि होती है।

अपि च, मन में उत्साह, कीर्ति, सम्पत्ति उत्तम वाहन का सुख होता है।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे दायेशाद् बलवर्जिते॥90॥
राजकोपो मनः क्लेशः पुत्रस्त्रीधननाशनम्।
भुक्त्यादौ वाहनं मध्ये लाभः शुभकरो भवेत्॥91॥
अन्ते च यशोहानिः स्थानभ्रंशमथापि वा।
बन्धुद्वेषं मनोजाड्यं स्वकुलाद्भोगनाशनम्॥92॥

दशेश से 6.8.12 में शुक्र हो और बलहीन हो तो राजकोप, व्यथा, पुत्र-स्त्री व धन की हानि, प्रारम्भ में वाहन, मध्य में शुभ लाभ, अन्त में यशोहानि, बदनामी या स्थानच्युति होती है।

अपि च बन्धुओं में द्वेषभाष, अपने परिवार की प्रतिष्ठा व स्थिति में उतार होता है।

भार्गवे द्यूननाथे तु देहपीडा भविष्यति।
रन्ध्ररिःफसमायुक्ते ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥93॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्रुद्रजाप्यं च कारयेत्॥94॥

शुक्र सप्तमेश हो तो शरीर कष्ट होता है। 8.12 भाव में हो तो अपमृत्यु का भय होता है। दोष शान्ति के लिए मृत्युंजय व रुद्र का पाठ करें तथा सफेद गाय का दान करें।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
सूर्यान्तर्दशाफलाध्यायश्चतुर्दशः॥14॥
॥आदितः श्लोकाः 1078॥

15
॥ चन्द्रदशान्तर्दशाध्यायः ॥

सामान्य फल

मूर्तिस्थचन्द्रदाये तु शुक्रेज्याब्जविदां हृतौ।
देहारोग्यं नृपात्प्रीतिं वाहनाम्बरभूषणम्॥1॥
तथाविधस्य चाब्जस्य परिपाके शुभेतरा।
हृतिः करोति दुःखं च कृषिगोभूमिनाशनम्॥2॥

लग्नस्थ चन्द्र दशा में चन्द्रमा, गुरु, बुध, शुक्र की अन्तर्दशा शरीर सुख, राज्यप्रीति, वाहन, वस्त्राभूषण आदि प्रदान करती है।

उसी चन्द्रमा में पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो दुःख व्यवसाय हानि, सम्पत्ति बाधा पैदा करती है।

द्वितीयस्थ निशानाथपरिपाके शुभेतरा।
कलत्रपुत्रबन्धूनां नृपाद्भीतिं करोति च॥3॥
सौम्यहृति द्वितीयस्थचन्द्रदाये महत्सुखम्।
भोजनाम्बरपानं च सोत्साहं कुरुते मनः॥4॥

द्वितीयस्थ चन्द्रदशा में पापान्तर्दशा में स्त्रीपुत्र बन्धुओं व राजपक्ष से भय होते हैं।

शुभान्तर्दशा में सुख, वस्त्राभूषण, उत्तम रहन-सहन, मन में उत्साह होता है।

तृतीयस्थ निशानाथपरिपाके महत्सुखम्।
शुभ ग्रहाणां भुक्तौ तु करोति नृपमान्यताम्॥5॥
तथाविधनिशानाथपरिपाके शुभतेरा।
हृतिः करोति वैकल्यं भ्रातृधैर्यविनाशनम्॥6॥

तृतीयस्थ चन्द्रमा की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा के मध्य राजमान्यता होती है तथा पापग्रह की अन्तर्दशा में विकलता, भाई की हानि व मन में बेचैनी होती है।

चतुर्थस्थ निशानाथपरिपाके महासुखम्।
शुभभुक्तौनृपात्प्रीतिर्जायते विविधं सुखम्॥7॥
पापभुक्तौ महत्कष्टं गृहदारार्थनाशनम्।
चौराग्निनृपभीतिश्च तादृगब्जदशान्तरे॥8॥

चतुर्थस्थ चन्द्रमा की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजप्रीति व विविध सुख प्राप्त होते हैं। पापान्तर्दशा में स्त्री पुत्र, जायदाद की हानि, विविध भय पैदा होते हैं।

पंचमस्थनिशानाथपरिपाके महत्सुखम्।
सौम्यभुक्तौ कलत्रार्थपुत्रमित्राम्बराणि च॥9॥
तथाविधनिशानाथदाये पापहृतौ भवेत्।
बुद्धिक्षोभो मनस्तापः पुत्रदारनृपाद्भयम्॥10॥

पंचमस्थ चन्द्रदशा में शुभ भुक्ति में स्त्री, पुत्र, मित्र, धन, वैभव प्राप्त होते हैं। जबकि पापभुक्ति में बुद्धि में क्षोभ, मनस्ताप, परिजनों व राजा से भय होता है।

कृषिनाशऋणाधिक्यं षष्ठस्थितनिशाकरात्।
स्यात्पापिनां हृतौ दुःखं प्रमेहक्षयपाण्डुभिः॥11॥
रिपुस्थयामिनीनाथे सौम्यानां तु यदा हृतिः।
करोति सर्वतो मैत्रीं चौराग्निभयनाशनम्॥12॥

षष्ठस्थ चन्द्रमा की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा रहने पर मधुमेह, क्षयादि रोग, ऋण की अधिकता, व्यवसाय हानि होती है।

शुभ ग्रह की अन्तर्दशा में सब से मैत्री भाव, विविध भयों की निवृत्ति होती है।

कलत्रस्थनिशानाथे यदासौम्याहृतिर्भवेत्।
कलत्रपुत्रसम्पत्तिर्वाहनाम्बरभूषणम् ॥13॥
तथाविधदशानाथात्पापिनां तु यदा हृतिः।
विदेशयानं पुत्रार्थदारबन्धुविनाशनम्॥14॥

सप्तमस्थ चन्द्रमा की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्त्री, पुत्र, सम्पत्ति वैभव होता है। पापान्तर्दशा में विदेशयात्रा, पुत्र, स्त्री, धन, बन्धुओं की हानि होती है।

अष्टमस्थ निशानाथात् पापभुक्तौ महद्भयम्।
मरणं दारपुत्राणां कुत्सितान्नं पराजयः॥15॥
सौम्यभुक्तौ महाकीर्ति धैर्यवाहनभूषणम्।

अष्टमस्थ चन्द्रमा में पापभुक्ति हो तो भय, स्त्री पुत्रादि की मृत्यु, खराब भोजन, पराजय होती है। शुभ भुक्ति में कीर्ति, धैर्य, वाहन व आभूषणों का सुख होता है।

धर्मस्थनिशानाथाच्छुभभुक्तौ पितुःसुखम्॥16॥
धर्मो यज्ञं विवाहश्च राज्यस्त्रीधनसम्पदः।
पापिनां धर्महानिर्दुःखं राज्यार्थनाशनम्॥17॥

नवमस्थ चन्द्रमा में शुभान्तर्दशा हो तो पिता का सुख, धर्म वृद्धि, यज्ञ, विवाह, राज्य, स्त्री व सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

पापान्तर्दशा में धर्महानि, दुःख, राज्य व धन की हानि होती है।

कर्मस्थचन्द्रदाये तु शुभे दानपरायणाम्।
कुरुते कर्मनिरतं कर्महानिस्तु पापिनाम्॥18॥
अपकीर्तिर्भयं नित्यं भुक्तौ नृणां प्रजायते॥

दशमस्थ चन्द्रमा में शुभ ग्रह की भुक्ति हो तो मनुष्य दानपरायण, कार्य में व्यस्त, यशोभागी होता है। पापान्तर्दशा में अपकीर्ति, भय, कर्महानि होती है।

लाभस्थे चन्द्रगे सौम्ये धनधान्याम्बराणि च॥19॥
वाहनं राज्यलाभश्च करोति विविधं सुखम्।
पापे धान्याक्षिदेहार्तिं धननाशमुपैति च॥20॥

लाभस्थ चन्द्रमा में शुभ अन्तर्दशा रहने पर धन-धान्य का सुख, वाहन, राज्य लाभ, विविध सुख होते हैं। पापान्तर्दशा में धान्यहानि, शरीरकष्ट, नेत्रपीड़ा, धनहानि होती है।

रिःफगे चन्द्रगे सौम्ये वस्त्रमाल्यविभूषणम्।
दारार्थपुत्रमित्राणां वर्धनं वाहनं सुखम्॥21॥
पापभुक्तौ महत्कष्टं शत्रुत्वं चार्थनाशनम्।

द्वादशस्थ चन्द्रमा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो वस्त्राभूषणों का सुख, स्त्री पुत्रादि का सुख, धन लाभ, वाहनादि होते हैं। पापभुक्ति में बहुत कष्ट, शत्रुता व धनहानि होती है।

चन्द्रदशा : चन्द्रभुक्ति

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चन्द्रे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥22॥
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते गजाश्वाम्बरसंकुलम्।
देवतागुरुभक्तिश्च पुण्यश्लोकादिकीर्तनम्॥23॥
राज्यलाभो महत्सौख्यं यशोवृद्धिसुखावहम्।
पूर्णचन्द्रे पूर्णफलं सेनाधीशात्महत्सुखम्॥24॥

चन्द्रमा यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र, त्रिकोण या लाभस्थान में हो, अथवा 9.10 भावेशों से युक्त हो तो हाथी घोड़े आदि उत्तम वाहनों का सुख, देवताओं व गुरुओं में भक्ति, यश प्राप्ति, राज्य लाभ, बहुत सुख, विविध सुख होता है। यदि चन्द्रमा पूर्णबिम्ब वाला हो तो पूरा फल, अन्यथा अनुपात से समझें। अपि च चन्द्र दशा में चन्द्र भुक्ति में सेनापतियों से भी सम्पर्क होने से सुख मिलता है।

पापयुक्तेऽथवाचन्द्रे नीचारिरिःफषष्ठगे।
तत्काले धननाशःस्यात् स्थानच्युतिमथापि वा॥25॥
देहालस्यं मनस्तापः राजमन्त्रिविरोधकृत्।
मातृक्लेशं मनोदुःखं निगडं बन्धुनाशनम्॥26॥
द्वितीयद्यूननाथे तु रन्ध्ररिःफसमन्विते।
देहजाड्यं महाभंगमपमृत्युभयं भवेत्॥27॥
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमाप्नुयात्॥27॥

चन्द्रमा पापयुक्त, नीचगत, तत्कालशत्रुक्षेत्री, 6.8.12 भावगत हो तो तुरन्त धन हानि, स्थानभ्रंश, शरीर में आलस्य, मन्त्रियों से विरोध, माता को कष्ट, मनस्ताप, कैद, बन्धन, बन्धुहानि होती है।

यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो शरीर में शिथिलता, पराजय, अपमृत्यु का भय होता है। दोष निवारण के लिए सफेद गाय, भैंस का दान करें तो सुख होता है।

चन्द्रदशा : मंगलभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
सौभाग्यं राज-सम्मानं वस्त्राभरणभूषणम्॥28॥
यत्नेन कार्य सिद्धिः स्याद् भविष्यति न संशयः।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च व्यवहारे जयो भवेत्॥29॥
कार्यावाप्तिर्महत्सौख्यं स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे फलम्।

चन्द्रदशा में मंगलान्तर्दशा में, मंगल यदि स्वोच्च या स्वक्षेत्रादि में हो या लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो सौभाग्यवृद्धि, राज-सम्मान, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, यत्नपूर्वक कार्यसिद्धि, जायदाद वृद्धि, मुकद्दमे या विवाद में विजय, काम की बहुतायत, सुख होता है।

षष्ठाष्टमव्यये भौमे पापयुक्तेऽथवा यदि॥30॥
दायेशादशुभस्थाने देहार्तिपदवीक्षतिः॥
गृहक्षेत्रादिहानिश्च व्यवहारे तथैव च॥31॥
भृत्यवर्गेषु कलहं भूपालस्य विरोधनम्।
आत्मबन्धुवियोगश्च नित्यं निष्ठुरभाषणम्॥32॥
द्वितीयद्यूननाथे तु रन्ध्रे रन्ध्राधिपो यदि।
तद्दोषपरिहारार्थं ब्राह्मणस्यार्चनं चरेत्॥33॥

मंगल यदि 6.8.12 भाव में हो, पापयुक्त हो, दशेश से अशुभ स्थानों में हो तो शरीर कष्ट, पदहानि, जायदाद की हानि, मकान सम्बन्धी परेशानी, व्यवसाय में परेशानी, नौकरों, कर्मचारियों में कलह, राजा से विरोध, अपने सहायकों-बन्धुओं से वियोग, कठोर भाषण, चिड़चिड़ा स्वभाव होता है।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो या अष्टमेश होकर अष्टम में ही बैठा हो तो भी उक्त फल होता है। दोष निवारण के लिए ब्राह्मण का सत्कार करना चाहिए।

चन्द्रदशा : राहुभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते राहौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
आदौ स्वल्पफलं ज्ञेयं शत्रुपीडाभहद्भयम्॥34॥
चौराहिराजभीतिश्च चतुष्पाज्जीवपीडनम्।
बन्धुनाशो मित्रहानिर्मानहानिर्मनोव्यथाम्॥35॥

राहु यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो चन्द्र दशा राहु भुक्ति के दौरान, शुरू शुरू में थोड़ा शुभ फल तथा बाद में शत्रु पीड़ा, भय, चोरभय, सर्पभय, राजभय, चौपाये जानवरों से भय, बन्धुहानि, मित्रहानि, मानहानि, मानसिक व्यथा होती है।

शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे लग्नादुपचयेऽपि वा।
योगकारकसम्बन्धे यत्र कार्यार्थसिद्धिकृत्॥36॥
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते।
स्थानभ्रंशं मनोदुःखं पुत्रक्लेशं महद्भयम्॥37॥
राजकार्यकलापं च दारपीडा महद्भयम्।
वृश्चिकादि विषाद्भीतिश्चौराहिनृपपीडनम्॥38॥

यदि राहु शुभयुक्त, शुभ दृष्ट हो या 3.6.10.11 भावों में हो या योगकारक ग्रह से सम्बन्ध करे तो कामों में सफलता मिलती है।

महादशेश से 6.8.12 में निर्बल हो तो स्थानहानि मनोव्यथा, पुत्रकष्ट, भय, सरकारी कामों का दबाव, स्त्रीकष्ट, बिच्छू आदि से भय, सर्पभय, राजभय होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।
पुण्यतीर्थफलावाप्तिर्देवतादर्शनं महत्॥39॥
परोपकारधर्मादि संग्रहं राजदर्शनम्।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे देहबाधा भविष्यति॥40॥
छागदानं प्रकुर्वीत देहारोग्यं भविष्यति॥40॥

महादशेश चन्द्रमा से केन्द्र, त्रिकोण, 3.11 भावों में राहु स्थित हो तो उसकी अन्तर्दशा में पुण्यप्राप्ति, तीर्थयात्रा, देवदर्शन, परोपकार भावना, धर्म-कर्म का संग्रह, राजा से भेंट होती है।

यदि राहु 2.7 भावों में स्थित हो तो शरीर कष्ट होता है। तब बकरे का दान करना चाहिए।

चन्द्रदशा : गुरुभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वगेहे लाभगे स्वोच्चे राज्यलाभं महोत्सवम्॥41॥
वस्त्रालंकारभूषाप्तिं राजप्रीतिं धनागमम्।
इष्टदेवप्रसादेन गर्भाधानादिकं फलम्॥42॥
पुण्यशोभनकार्याणि गृहे लक्ष्मी कटाक्षकृत्।
राजाश्रयं धनं भूमिगजवाजिसमन्वितम्॥43॥
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहा।

चन्द्र दशा में गुरु का अन्तर हो और गुरु लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में, 11वें भाव में, स्वक्षेत्री या स्वोच्च हो तो राज्यप्राप्ति, घर में उत्सव का माहौल, वस्त्रालंकार व भूषण प्राप्ति, राजाओं से प्रीति, धन लाभ, इष्ट देव की कृपा सन्तानोत्पत्ति के अवसर, घर में पुण्य शुभ कार्य, लक्ष्मी की कृपा, राजा का आश्रय, धन, भूमि, हाथी घोड़े आदि वाहन, समर्थ पुरुष के सहयोग से इष्ट सिद्धि व सुख होता है।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वास्तंगते यदि॥44॥
पापयुक्ते स्थानभ्रंशः गुरुपुत्रादिनाशनम्।
गृहक्षेत्रादिनाशश्च वाहनाम्बरनाशनम्॥45॥

गुरु यदि 6.8.12 भावों में हो, नीचगत या अस्तंगत, पापयुक्त हो तो स्थान-भ्रंश, गुरुजनों या सन्तान की हानि, जमीन जायदाद की हानि, वाहनादि की हानि होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।
भोजनाम्बरपश्वादिं महोत्साहं करोति च॥46॥
भ्रात्रादि सुखसम्पत्तिं धैर्यं वीर्यपराक्रमम्।
यज्ञकर्मविवादश्च राज्यस्त्रीधनसम्पदः॥47॥

महादशेश चन्द्रमा से केन्द्र, त्रिकोण में, 3.11 भाव में हो तो उत्तम भोजन, पशु धन वृद्धि, मन में उत्साह, भाइयों का सुख, सम्पत्ति, धैर्य, पराक्रम, यज्ञादि कार्य, विवाह, राज्य, स्त्री व धनादि प्राप्त होता है।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते।
करोति कुत्सितान्नं च विदेशगमनं तथा॥
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तं सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥48॥

महादशेश से 6.8.12 भावों में हो या निर्बल हो तो खराब भोजन, विदेश पलायन होता है। अन्तर्दशा के आरम्भ में थोड़ा शुभ फल व सम्पत्ति आदि हो जाया करती है।

चन्द्रदशा : शनिभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वक्षेत्रस्वांशगे चैव मन्दे तुंगांशसंयुते॥49॥
शुभदृष्टियुते वापि लाभे वा बलसंयुते।
पुत्रमित्रार्थसम्पत्तिः शूद्रप्रभुसमागमः॥50॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं गृहक्षेत्रादिवृद्धिदः।
पुत्रलाभश्च कल्याणं राजानुग्रहवैभवम्॥51॥

चन्द्रमहादशा में केन्द्रगत, त्रिकोणगत, स्वक्षेत्री, स्वनवांशगत, उच्चनवांशगत, शुभयुक्तदृष्ट, लाभगत, बलवान् शनि की अन्तर्दशा हो तो पुत्र सुख, मित्र सुख, सम्पत्ति, किसी हीनजाति के समर्थ व्यक्ति का सहयोग, व्यवसाय में लाभ, जमीन जायदाद की वृद्धि, पुत्रोत्सव, कल्याण वैभव व राजा की कृपा होती है।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वा सूर्यगेऽपिवा।
तद्भुक्तौ पुण्यतीर्थे च पूर्वं भवति जन्मिनाम्॥52॥
ततोऽनेकविधस्त्रासः शस्त्रपीडा भविष्यति।
दायेशात्केन्द्रकोणे षड्बलैः संयुते तथा॥53॥
क्वचित्सौख्यधनाप्तिः स्याद्दारपुत्रविरोधकृत्।
द्वितीयद्यूनरन्ध्रस्थे देहबाधाभविष्यति॥54॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत्।
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमाप्नुयात्॥55॥

शनि यदि 6.8.12 भावों में या अस्तंगत हो या नीचगत हो तो शुरू में पुण्य तीर्थ यात्रा होती है। बाद में अनेक प्रकार के भय, शस्त्रपीड़ा होती है।

महादशेश से केन्द्र त्रिकोण में शनि हो या षड्बल युक्त हो तो फुटकर रूप में धन व सुख होता है। साथ ही परिवार में कलह का वातावरण रहता है।

2.7.8 भावगत शनि हो तो शरीर कष्ट होता है। तब मृत्युंजयजप, काली गाय या भैंस का दान करने से सुख होता है।

चन्द्रदशा : बुधभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वर्क्षेनवांशके सौम्ये तुंगे वा बलसंयुते॥56॥
धनागमो राजमानः प्रियवस्त्रादिलाभकृत्।
विद्याविनोदसद्गोष्ठिज्ञानवृद्धिसुखावहः ॥57॥
सन्तानप्राप्तिसन्तोषो वाणिज्याद्धनलाभकृत्।
वाहनछत्रसंयुक्तं नानालंकारभूषितम्॥58॥

चन्द्रदशा में बुधान्तर रहने पर, बुध यदि केन्द्र त्रिकोण में हो, लाभभाव में हो, स्वराशि, स्वनवांश, उच्चराशि या नवांश में हो, बली हो तो धनागम, राज-सम्मान, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, विद्यागोष्ठियों में ज्ञानवृद्धि, सुखप्राप्ति, सन्तानप्राप्ति, सन्तोष, व्यापार से धनलाभ, वाहन व प्रतिष्ठा का सुख, अनेक अलंकारों की प्राप्ति होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपिवा।
विवाहयज्ञदीक्षां च दानधर्मशुभादिकम्॥59॥
राजप्रीतिकरं चैव विद्वज्जनसमागमम्।
मुक्तामणिप्रवालानि वाहनाम्बरभूषणम्॥60॥
अरोग्यं प्रीतिसौख्यं च सोमपानादिकं सुखम्।

महादशेश चन्द्रमा से केन्द्र, त्रिकोण में 2.11 में बुध हो तो विवाह, यज्ञ-दीक्षा, दान-धर्म, शुभ-कर्म, राजाओं व बड़े लोगों से सम्पर्क, विद्वानों का समागम, मुक्ता आदि मणियों की प्राप्ति, वाहन वस्त्राभूषण का सुख, उत्तम स्वास्थ्य, अच्छी पानगोष्ठियों का सुख होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा नीचगेऽपि वा॥61॥
तद्भुक्तौ देहबाधा च कृषिगोभूमिनाशनम्॥
कारागृहप्रवेशश्च दारपुत्रादिपीडनम्॥62॥
द्वितीयद्यूनाथे तु ज्वरपीडामहद्भयम्।
छागदानं प्रकुर्वीत विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥63॥

महादशेश चन्द्र से 6.8.12 में स्थित, नीचगत, बुध की अन्तर्दशा में शरीर कष्ट, व्यवसाय, खेती-बाड़ी, जायदाद की हानि, जलयात्रा, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा होती है।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो ज्वरपीड़ादि होती है। शान्ति के लिए विष्णुसहस्रनाम का जप व दुधारू पशु (बकरी) का दान करें।

चन्द्रदशा केतुभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते केतौ केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
दुश्चिक्ये बलसंयुक्ते धनलाभो महत्सुखम्॥64॥
पुत्रदारादिसौख्यं च कर्मविघ्नं करोति च।
भुक्त्यादौ धनहानिः स्यान्मध्यगे सुखमाप्नुयात्॥65॥
दायेशात्केन्द्रलाभे वा त्रिकोणे बलसंयुते।
क्वचित्फलं दशादौ तु ह्यल्पसौख्यं धनागमम्॥66॥
गोमहिष्यादिलाभं च भुक्त्यन्ते चार्थनाशनम्।

चन्द्रदशा में केतु की भुक्ति हो और केतु लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ,

तृतीय में बली हो तो धनलाभ, सुख, स्त्री पुत्रादि का सुख, कामों में रुकावट, भुक्ति के प्रारम्भ में धनहानि तथा मध्य में सुख होता है।

महादशेश से केतु, त्रिकोण व लाभ में केतु हो तो दशारम्भ में कभी कभी अच्छे फल, थोड़ा सुख, धनागम, पशुधन की प्राप्ति, भुक्ति के अन्त में हानि होती है।

पापयुक्तेऽथवादृष्टे दायेशाद्रन्ध्ररिःफगे॥67॥
हीनशत्रुत्वकर्माणि ह्यकस्मात्कलहं ध्रुवम्।
द्वितीयद्यूनराशिस्थे ह्यनारोग्यं महद्भयम्॥68॥
मृत्युञ्जयं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥68॥

यदि केतु पापयुक्त दृष्ट हो या महादशेश से 8.12 भावों में हो तो छोटे-छोटे मनमुटाव या घटिया लोगों के साथ शत्रुता, कलह होती है।

2.7 भावों में केतु हो तो शरीर में रोग, भय होता है। शान्ति हेतु मृत्युंजय जप करें तो सब तरह से सुख होता है।

चन्द्रदशा : शुक्रभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि राज्यलाभं करोति च॥69॥
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् दारपुत्रादिवर्धनम्॥70॥
नूतनगृहनिर्माणं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
सुगन्धपुष्पदायादि रम्यस्त्र्यारोग्यसम्पदः॥71॥

चन्द्रदशा में शुक्र भुक्ति होने पर शुक्र लग्न से 1.4.5.7.9.10 भावों में या स्वक्षेत्री स्वोच्च में हो तो राजप्राप्ति, समर्थ व्यक्ति के सहयोग से वाहन व भौतिक सुख, चौपाये धन की वृद्धि, स्त्री पुत्रादि की वृद्धि, नये घर का निर्माण, उत्तम भोजन, गन्धपुष्पादि का, रमणीय स्त्री का सुख तथा अच्छा स्वास्थ्य सम्पत्ति होती है।

दशाधिपेन संयुक्ते देहसौख्यं महासुखम्।
सत्कीर्तिः सुखसम्पत्तिगृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत्॥72॥

चन्द्रमा व शुक्र साथ स्थित हों तो चन्द्रदशा शुक्र भुक्ति में शरीर सुख, भौतिक सुख, सत्कीर्ति, सुख-सम्पत्ति जायदाद की वृद्धि होती है।

नीचे वास्तंगते शुक्रे पापग्रहयुतेक्षिते।
भूनाशोपुत्रमित्रादिनाशनं पत्निनाशनम्॥73॥
चतुष्पाज्जीवहानिः स्याद् राजद्वारे विरोधकृत्।

शुक्र यदि नीच, अस्त, पापयुक्त-दृष्ट हो तो भूमि की हानि, पुत्रों मित्रों व

पत्नी की हानि, चौपाये धन में कमी, सरकारी वाद-विवाद होते हैं।

धनस्थानगते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते॥74॥
निधिलाभो महत्सौख्यं भूलाभः पुत्रसम्भवः।
भाग्यलाभाधिपैर्युक्ते भाग्यवृद्धिकरो भवेत्॥75॥
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धिः सुखावहम्।
देवब्राह्मणभक्तिश्च मुक्ताविद्रुमलाभकृत्॥76॥

यदि शुक्र उच्च या स्वक्षेत्र में धन स्थान में हो तो बहुत धन, सुख, जायदाद वृद्धि, पुत्रप्राप्ति होती है। 9.11 भावेश से युक्त हो तो भाग्यवृद्धि होती है। समर्थ व्यक्ति के सहयोग से मनोरथ सिद्धि, सुख, देवों व ब्राह्मणों का सत्कार, मोतियों आदि मणियों की प्राप्ति होती है।

दायेशाल्लाभगे शुक्रे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च वित्तलाभो महत्सुखम्॥77॥
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
विदेशवासो दुःखार्तिर्मृत्युश्चौराहिपीडनम्॥78॥
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत्।
तद्दोषनिवृत्त्यर्थं रुद्रजाप्यं च कारयेत्॥
श्वेतां गां रजतं दद्याच्छान्तिमाप्नोत्यसंशयम्॥79॥

चन्द्रदशा में लाभगत, केन्द्र त्रिकोणगत, शुक्र की अन्तर्दशा हो तो जमीन जायदाद की वृद्धि, धनलाभ बहुत सुख होता है।

महादशेश से 6.8.12 में स्थित या पापयुक्त दृष्ट शुक्र की अन्तर्दशा में विदेशवास, दुःख, पीड़ा, मृत्युभय, चोरों व सर्प से भय होता है।

दोषशान्ति हेतु रुद्रपाठ, अभिषेक, सफेद गाय, चाँदी का दान करें।

चन्द्रदशा : सूर्यभुक्ति

चन्द्रस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा धने वा सोदरे बली॥80॥
नष्टराज्यधनप्राप्तिर्गृहे कल्याणवर्धनम्।
मित्रराज्यप्रसादेन ग्रामभूम्यादिलाभकृत्॥81॥
गर्भाधानफलप्राप्तिर्गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्।
भुक्त्यन्ते देहालस्यं ज्वरपीडा भविष्यति॥82॥

सूर्य यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो, केन्द्र, त्रिकोण, 2.3.11 में बलवान् हो तो नष्ट राज्य व धन की प्राप्ति, घर में समृद्धि मित्रों व राजा के सहयोग से मुख्यता, ग्रामाधिपत्य व भूमि आदि का लाभ होता है। सन्तान जन्म, लक्ष्मीवृद्धि भी होती है। अन्त में शरीर में आलस्य, ज्वरादि पीड़ा होती है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
नृपचौरादिभीतिश्च ज्वररोगादिसम्भवम्॥83॥
विदेशगमनं चार्तिं लभते नात्र संशयः।
द्वितीयद्यूननाथे तु ज्वरपीडा भविष्यति॥
तद्दोषपरिहारार्थं शिवपूजां च कारयेत्॥84॥
आदौ भावफलं मध्ये राशिस्थानफलं विदुः।
पाकावसानसमये चांगजं दृष्टिजं फलम्॥85॥

महादशेश से 6.8.12 में सूर्य हो, पापयुक्त हो तो राजादि से भय, ज्वर रोग, विदेश पलायन, कष्ट होते हैं।

2.7 भावेश सूर्य हो तो शरीर कष्ट होता है। दोषशान्ति के लिए शिव-पूजा करनी चाहिए। दशान्तर्दशा का स्वामी शुरू में भाव फल, मध्य में राशि स्थिति का फल तथा अन्त में दृष्टि तथा अस्तंगत या छोटे बड़े बिम्ब का फल देता है।

॥इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
चन्द्रदशान्तर्दशाफलाध्यायः पंचदशः॥15॥
॥आदितः श्लोकाः॥1163॥

16
॥ भौमान्तर्दशाध्यायः ॥

सामान्य फल

लग्नस्थितधरासूनोः परिपाके व्रणक्षतम्।
पापभुक्तौ महत्कष्टमजीर्णादेर्महद्भयम्॥1॥
शुभभुक्तौ नृपात्प्रीतिं भ्रातृवर्गभवं सुखम्।
तथाविधधरासूनोर्दशायां क्षेत्रवाहनम्॥2॥

लग्नस्थ मंगल दशा में पापग्रह की भुक्ति हो तो चोट, घाव, कष्ट, अपच व भय आदि होते हैं। शुभभुक्ति में राजपक्ष से सहयोग, स्नेह, भाइयों का सुख, वाहन व जायदाद होती है।

द्वितीयस्थधरासूनोः परिपाकेऽशुभाहतिः।
पूर्ववित्तविनाशं च राजकोपं ज्वराग्निभीः॥3॥
तृतीयस्थे पापभुक्तौ भ्रातृवर्गविनाशनम्।
मनोवैकल्यमाप्नोति शुभे भूषणवाहनम्॥4॥
भोजनाम्बरसौख्यं च नृणां सर्वं प्रजायते।

द्वितीयस्थ मंगल दशा में पापभुक्ति हो तो संचित धन की हानि, राजकोप, अग्निभय, रोगभय होता है।

तृतीयस्थ मंगल में पापभुक्ति हो तो भाइयों को कष्ट, मन में अधीरता तथा शुभ भुक्ति हो तो भूषण, वाहन, अच्छा रहन-सहन होता है।

हिबुकस्थधरासूनोः पाके सौम्यहतिर्यदा॥5॥
भोजनाम्बरसौख्यं च कृषिभूषणवाहनम्।
क्षेत्राम्बरसुखावाप्तिः क्रूरभुक्तौ महद्भयम्॥6॥
गृहक्षेत्रविनाशश्च नृपचौराग्निपीडनम्।

चतुर्थस्थ मंगल की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो भोजन वस्त्रादि का अच्छा सुख, व्यवसाय वृद्धि, वाहन सुख, जायदाद का सुख होता है।

पापभुक्ति में भय, मकान जायदाद की हानि, विभिन्न प्रकार से पीड़ा होती है।

पंचमस्थ धरासूनोर्पाके पापहतिर्यदा॥7॥
कृषिगोधनधान्यार्थसुतदारविनाशनम् ।
शुभभुक्तौ सुताप्तिं च मानं मन्त्रं च शोभनम्॥8॥
षष्ठात्पापे स्फोटकादि प्रमेहक्षयमादिशेत्।
रिपुस्थात्सौम्यभुक्तौ च राजमैत्रीं मनोव्यथा॥9॥
बन्धुनाशं ततो नृणां पश्चात्सौख्यमादिशेत्।

पंचमस्थ मंगल की दशा में पापान्तर्दशा में कृषि, पशु धन, व्यवसाय, धन, स्त्री, पुत्रादि की हानि होती है।

शुभभुक्ति में पुत्र प्राप्ति, मन्त्र प्राप्ति तथा शुभ फल होते हैं।

षष्ठस्थ मंगल दशा में पापान्तर्दशा होने पर फोड़े, फुंसी, प्रमेह, क्षयरोग तथा शुभ भुक्ति में राजा से मैत्री बन्धु हानि, पश्चात् सुख होता है।

कलत्रस्थ कुजात्पापभुक्तौ स्त्रीसुतराजभीः॥10॥
शुभभुक्तौ महासौख्यं नृपवाहनभूषणम्।
अष्टमस्थ कुजाद्भुक्तौ पापिनां मरणं तथा॥11॥
सौम्यभुक्तौ महत्सौख्यं कृषिगोनृपपूजनम्।

सप्तमस्थ मंगल दशा में पापभुक्ति रहने पर स्त्रीकष्ट, पुत्रपीड़ा, राजभय तथा शुभ भुक्ति में खूब सुख, राजकीय वाहन व उपाधि आदि मिलती है।

अष्टमगत मंगल में पापभुक्ति हो तो मृत्यु तथा कष्ट, शुभ भुक्ति में सुख, सम्पदा, वाहन व मान वृद्धि होती है।

नवमस्थधरासूनोः पापभुक्तौ मनोव्यथा॥12॥
पित्रोर्नाशं गुरोर्नाशं धर्महानिश्च संभ्रमम्।
सौम्यभुक्तौ विवाहं च तथा गोधनसम्पदः॥13॥
विवाहं यज्ञदीक्षां च देवभूसुरतर्पणम्।
खेगतस्यधरासूनोर्दुःखं स्यात्पापिनां हृतौ॥14॥
विदेशयानं दुष्कीर्तिं लभते च पराजयम्।

नवमस्थ मंगल दशा में पापान्तर्दशा होने पर मनोव्यथा, माता-पिता या गुरु को कष्ट, धर्महानि, तथा मन में हड़बड़ी होती है।

शुभान्तर्दशा में विवाहादि व धन सम्पत्तियाँ होती हैं।

दशमस्थ मंगल दशा में शुभ भुक्ति हो तो भी विवाह, यज्ञदीक्षा, देवों व ब्राह्मणों का सत्कार होता है। पाप भुक्ति में दुःख, विदेश पलायन, अपकीर्ति, पराजय होती हैं।

लाभस्थपापभुक्तौ च गन्धमाल्यविभूषणम्॥15॥
करोति विपुलं राज्यं शुभभुक्तौ महत्सुखम्।

द्वादशस्थधरासूनोः पाके पापहृतिर्यदा॥16॥
करोति दुःखबाहुल्यं कारागृहनिवेशनम्।
शुभापहारे सौख्यं च पानाम्बरविभूषणम्॥
भुक्त्यन्ते राजकोपं च पदभ्रंशं मनोरुजम्॥17॥

लाभस्थ मंगल में पापान्तर्दशा हो तो उत्तम सुखभोग, राज्यप्राप्ति होती है। शुभ भुक्ति हो तो भी उत्तम सुख मिलते हैं।

द्वादशस्थ मंगल की दशा में पापान्तर्दशा हो तो दुःखों दी अधिकता, जेल भय होता है। शुभभुक्ति हो तो सुख, खान-पान का वैभव तथा अन्त में मनोव्यथा, पदावनति होती है।

मंगलदशा : मंगलभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
लाभे वा धनसंयुक्ते दुश्चिक्ये बलसंयुते॥18॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते राजानुग्रहवैभवम्।
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि नष्टराज्यार्थलाभकृत्॥19॥
पुत्रोत्सवादिसन्तोषं गृहेगोक्षीरसंकुलम्।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे भौमे स्वांशे वा बलसंयुते॥20॥
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च गोमहिष्यादि लाभकृत्।
महाराजप्रसादेन इष्टसिद्धि सुखावहम्॥21॥

मंगलदशा में मंगल की भुक्ति होने पर मंगल यदि लग्न से 1.2.3.4.5.7. 10.11 भावों में हो या लग्नेश से युक्त हो तो वैभव, ऐश्वर्य, लक्ष्मी की बहुतायत, नष्ट अधिकार की प्राप्ति, घर में दूध की अधिकता होती है।

यदि वैसा मंगल उच्च, स्वक्षेत्र, स्वनवांश में हो या षड्बली हो तो जायदाद की वृद्धि, पशुधन वृद्धि, समर्थ लोगों का सहयोग तथा मनोरथ सिद्धि होती है।

षष्ठाष्टमव्यये भौमे पापदृग्योगसंयुते।
मूत्रकृच्छ्रादिरोगश्च कष्टाधिक्यं व्रणाद्भयम्॥22॥
चौराहिराजपीडा च धनधान्यपशुक्षयः।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहजाड्यं मनोरुजः॥23॥
रुद्रजाप्यमनड्वाहं प्रदद्याच्च निवृत्तये।
आरोग्यं कुरुते पश्चात् सर्वसम्पत् प्रदायकः॥24॥

मंगल यदि 6.8.12 में हो या पापयुक्त दृष्ट हो तो मूत्ररोग, चोटभय, कष्ट, सर्पादि से पीड़ा धन-धान्य की हानि होती है।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए रुद्रपाठ तथा साँड छोड़ना चाहिए। तब सब सुख मिलते हैं।

मंगलदशा : राहुभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते राहौ स्वोच्चे मूलत्रिकोणगे।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे केन्द्रलाभत्रिकोणगे॥25॥
तत्काले राजसम्मानं गृहभूम्यादिलाभकृत्।
कलत्रपुत्रलाभः स्याद् व्यवसायात्फलाधिकम्॥25A॥
गंगास्नानफलावाप्तिर्विदेशगमनं तथा।

मंगल में राहु भुक्ति होने पर, राहु यदि उच्च या मूलत्रिकोणादि में हो या केन्द्र, त्रिकोण व लाभस्थान में हो तो तत्काल राजामन्यता, जमीन जायदाद का लाभ होता है।

स्त्रीपुत्रादि का सुख, व्यवसाय वृद्धि, गंगास्नान का फल, विदेशयात्रा होती है।

षष्ठाष्टमव्यये राहौ पापयुक्तेऽथवीक्षिते॥26॥
चौराहिव्रणभीतिश्च चतुष्पाज्जीवनाशनम्॥
वातपित्तक्षयं चैव कारागृहनिवेशनम्॥27॥
धनस्थानगते राहौ धनार्तिं कुरुते भयम्।
द्वितीये सप्तमे वापि ह्यपमृत्युभयं भवेत्॥28॥
नागदानं प्रकुर्वीत देवब्राह्मणभोजनम्।
मृत्युंजयजपं कुर्यादायुरारोग्यमाप्नुयात्॥29॥

राहु यदि 6.8.12 भावों में हो या पापयुक्त दृष्ट हो तो चोर, सर्प से भय, चोट भय, चौपाये पशुओं की हानि या चौपाये पशु से भय, वात पित्त रोग, जेल होती है।

द्वितीयस्थ राहु से धननाश भय होता है। अपि च 2.7 भावों में राहु हो तो अपमृत्युभय भी होता है। वैसा होने पर नागमूर्ति का दान, देव ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजयजप करने से सुख होता है।

मंगलदशा : गुरुभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते जीवे त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
लाभे वा धनसंयुक्ते तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥30॥
सत्कीर्तीराजसम्मानं धनधान्यसमृद्धिकृत्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिदारपुत्रादिलाभकृत्॥31॥

मंगल में गुरु भुक्ति हो तो गुरु केन्द्र, त्रिकोण, 2.11 भावों में हो, या स्वांश या उच्चांश में हो तो सत्कीर्ति, राजमान, धन-धान्य वृद्धि होती है। घर में मंगलमय बातें, स्त्री पुत्रों का सुख होता है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते वाहनाधिपसंयुते॥32॥

लग्नाधिपसमायुक्ते शुभांशे शुभवर्गगे।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च गृहे कल्याणसम्पदा॥33॥
देहारोग्यं महत्कीर्तिं गृहे गोकुलसंकुलम्।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् व्यवसायात्फलाधिकम्॥34॥
कलत्रपुत्रविभवं राजसम्मानमेव च।

महादशेश मंगल से केन्द्र त्रिकोण या लाभ में गुरु हो या 9.10 भावेशों से युक्त हो या 1.4 भावेशों से युक्त हो, या शुभ नवांश में हो, या शुभवर्गों में हो तो जायदाद वृद्धि, घर में सम्पत्ति व मंगल, शरीर सुख, कीर्ति, गोधन समृद्धि, चौपाये पशुओं से लाभ, व्यवसाय में वृद्धि, स्त्री व पुत्रों का वैभव तथा राज-सम्मान होता है।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वास्तंगते यदि॥35॥
पापग्रहेणसंयुक्ते दृष्टे वा दुर्बले यदि।
चौराहिनृपभीतिश्च पित्तरोगादिसम्भवम्॥36॥
प्रेतबाधा भृत्यनाशः सोदराणां विनाशनम्।
द्वितीयधूनाथेतु ह्यपमृत्युर्ज्वरादिकम्॥
तद्दोषपरिहरार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्॥37॥

वृहस्पति 6.8.12 भावों में हो या नीचगत, अस्तंगत हो या पापयुक्त दृष्ट हो या निर्बल हो तो विभिन्न प्रकार के भय, पित्तरोग, प्रेतबाधा, कर्मचारियों की कमी, भाइयों की हानि होती है।

गुरु यदि 2.7 भावेश हो तो ज्वर व अपमृत्यु का भय होता है। दोषशान्ति के लिए शिव सहस्रनाम या सहस्ररुद्राभिषेक करें।

मंगलदशा : शनिभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते मन्दे स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणगे।
मूलत्रिकोणे स्वोच्चे वा तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥38॥
लग्नाधिपयुते वापि शुभदृष्टियुते बले।
राजसौख्यं यशोवृद्धिः स्वग्रामे धान्यवृद्धिकृत्॥39॥
पुत्रपौत्रसमायुक्तो गृहे गोधनसंग्रहः।
स्ववारे राजसम्मानं स्वमासे पुत्रवृद्धिकृत्॥40॥

मंगलदशा में शनि की अन्तर्दशा होने पर, शनि यदि स्वोच्च, स्वराशि, स्वांश या उच्चांश में हो या शुभ राशि में केन्द्र त्रिकोण में गया हो या मूल त्रिकोणी हो या लग्नेश से युक्त हो, या शुभयुक्त दृष्ट हो और बली हो तो राज्य का सुख, अपने क्षेत्र में यशोवृद्धि, धान्य वृद्धि, पुत्रों पौत्रों का सुख, घर में धन-धान्य वृद्धि। शनिवार को विशेष मान-सम्मान, शनिवार से शुरू होने वाले मास में घर

में सन्तानोत्पत्ति या सन्तान की उन्नति होती है।

नीचादिक्षेत्रगे मन्दे षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
म्लेच्छवर्गप्रभोर्भीतिः धनधान्यादिनाशनम्॥41॥
निगडैर्बन्धनं रोगमन्ते क्षेत्रविनाशकृत्।
द्वितीयद्यूननाथे तु पापयुक्ते महद्भयम्॥42॥
धननाशं च संचारं राजद्वेषमकारणम्।
सहोदरविनाशश्च पुत्रदारादिपीडनम्॥43॥
बन्धुद्वेषकरं चैव जीवहानिश्च जायते।
कारागृहादिभीतिश्च राजदण्डाद् भवेद् भयम्॥44॥
अकस्मान्मरणं पुत्रदारवर्गादिपीडनम्।

शनि नीचगत हो या 6.8.12 भावों में हो तो हीनवर्ण के राजा से भय, धन-धान्य की हानि, हथकड़ी या अन्य बन्धन, रोग, जायदाद की हानि होती है।

शनि 2.7 भावेश हो और पापयुक्त भी हो तो भय, धननाश, व्यर्थ भ्रमण, राजा से द्वेष भाव, भाइयों की हानि, स्त्री पुत्रादि की पीड़ा, बन्धुओं से द्वेष, जीवों की हानि, कारागृह का भय, राजदण्ड, अचानक मृत्यु का भय होता है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे लाभस्थे वा त्रिकोणगे॥45॥
विदेशयानं लभते दुष्कीर्तिं विविधानि च।
पापकर्मरतो नित्यं बहुजीवादिहिंसकः॥46॥
क्रयविक्रयहानिश्च स्थानभ्रंशं मनोव्यथा।
युद्धेष्वजयं चैव मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम्॥47॥

महादशेश मंगल से केन्द्र, त्रिकोण या लाभ स्थान में शनि हो तो विदेश पलायन, अपकीर्ति, पापकर्म में रति, जीवहिंसा, खरीद बेच में हानि, स्थानभ्रंश, मनोव्यथा, युद्ध में पराजय, मूत्र रागे से पीड़ा होती है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा पापसंयुते।
तद्भुक्तौ मरणं ज्ञेयं नृपचौराग्निपीड़नम्॥48॥
वातपीडा च शूलादिज्ञातिशत्रुभयं भवेत्।
द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युभयं भवेत्॥49॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत्।
कृत्वा शान्तिविधिं सर्वमायुरारोग्यमाप्नुयात्॥50॥

महादशेश मंगल से पापयुक्त हो 6.8.12 में हो या कहीं भी पापयुक्त हो तो शनि की अन्तर्दशा में मृत्यु, विविध पीड़ाएँ, वातरोग, शूल रोग, निकटवर्ती जनों से शत्रुता, होती है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु भय सम्भव होता है। तब मृत्युंजय जप करने से आयु व आरोग्य की सुरक्षा रहती है।

मंगलदशा : बुधभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते सौम्ये लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
सत्कथाश्च जपोदानं धर्मबुद्धिर्महद्यशः॥51॥
नीतिमार्गप्रसंगश्च नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
वाहनाम्बरपश्वादि राजकर्मसुखानि च॥52॥
कृषिकर्मफलं सिद्धिर्वारणाम्बरभूषणम्।

मंगल दशा में बुधान्तर्दशा के दौरान, बुध यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो तो उत्तम बातें, कथा-वार्ता, जप-दान, धार्मिक बुद्धि, यश, नीति-सम्मत आचरण, उत्तम भोजन, वाहन, वस्त्रादि का सुख, राजकीय कार्यों का सुख, व्यवसाय में वृद्धि आदि होती है।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययगेऽपि वा॥53॥
हृद्रोगं मानहानिश्च निगडं बन्धुनाशनम्।
दारपुत्रार्थनाशः स्याच्चतुष्पाज्जीवनाशनम्॥54॥
दशाधिपेनसंयुक्ते शत्रुवृद्धिर्महद्भयम्।
विदेशगमनं चैव नानारोगस्तथैव च॥55॥
राजद्वारे विरोधः स्यात्कलहं सौम्यभुक्तिषु।

बुध यदि नीचास्तंगत हो, 6.8.12 में हो तो हृदयरोग, मानहानि, बन्धन, बन्धुहानि, स्त्री, पुत्रों व धन की हानि, चौपाये पशुओं से भय होता है।

यदि मंगल व वैसा बुध साथ हों तो शत्रु बढ़ जाते हैं तथा भय होता है। विदेशगमन, अनेक रोग, राजद्वार, कचहरी में विरोध, कलह होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा स्वोच्चे युक्तार्थलाभकृत्॥56॥
अनेकधननाथत्वं राजसम्मानमेव च।
भूपालयोगं कुरुते धनाम्बरविभूषणम्॥57॥
भूरिवाद्यमृदंगादि सेनापत्यं महत्सुखम्।
विद्याविनोदविमला वस्त्रवाहनभूषणम्॥58॥
दारपुत्रादिविभवं गृहे लक्ष्मी कटाक्षकृत्।

महादशेश मंगल से बुध यदि केन्द्र त्रिकोण में हो या स्वोच्च स्वक्षेत्र में हो तो लाभकरक, बहुत धनयोग, राज-सम्मान, राजयोग, धनवाहन, आभूषण प्राप्ति, सेनाधिपतित्व, सुख, उत्तम गीत वाद्यों का सुख, अच्छी विद्या, स्त्री-पुत्रों का सुख, वैभव, घर में लक्ष्मी जी कृपा होती है।

दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा पापसंयुते॥59॥
तद्दाये मानहानिः स्यात्क्रूरबुद्धिस्तु क्रूरवाक्।
चौराग्निनृपपीडा च मार्गे चौरभयादिकम्॥60॥

अकस्मात्कलहश्चैव बुधभुक्तौ न संशयः।
द्वितीयद्यूननाथे तु महाव्याधिभयंकरम्॥61॥
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्।
सर्वसम्पत्प्रदं सौख्यं सर्वारिष्टप्रशान्तिदम्॥62॥

महादशेश से 6.8.12 में या पापयुक्त हो तो बुधान्तर्दशा में मानहानि, बुद्धि में क्रूरता, क्रूर भाषण, विविध पीड़ाएँ, यात्रामार्ग में चोरी का भय, अचानक कलह होती है।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो कोई बड़ा रोग होता है। तब विष्णु सहस्रनाम का पाठ करने से सब अरिष्ट दूर होते हैं।

मंगलदशा : केतुभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते केतौ त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
दुश्चिक्ये लाभगे वापि शुभयुक्ते शुभेक्षिते॥63॥
राजानुग्रहशान्तिश्च बहुसौख्यं धनागमम्।
किंचित्फलं दशादौ तु भूलाभः पुत्रलाभकृत्॥64॥
राजसलाभकार्याणि चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
योगकारकसंयुते बलवीर्यसमन्विते॥65॥
पुत्रलाभयशोवृद्धिर्गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्।
भृत्यवर्गाद्धनप्राप्तिः सेनापत्यं महत्सुखम्॥66॥
भूपालमित्रतायोगो यानाम्बरविभूषणम्।

मंगल दशा में केतु की अन्तर्दशा होने पर, केतु यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण, 3.11 में हो, या शुभयुक्त, शुभदृष्ट हो तो राजा की कृपा व शान्ति, बहुत सुख, धनलाभ होता है। दशारम्भ में साधारण फल होकर बाद में जमीन, जायदाद, सन्तान का लाभ होता है। राजकीय कार्यों से लाभ, चौपाये धन की वृद्धि होती है।

यदि केतु अन्यथा बलवान् हो अथवा योगकारक ग्रह से युक्त हो तो पुत्र-लाभ, यशोवृद्धि, भरपूर लक्ष्मी, कर्मचारियों का उत्तम सहयोग, उस सहयोग से अच्छा लाभ, सामर्थ्य, सुख, राजा से मित्रता के योग, वाहनादि का सुख होता है।

दायेशात्षष्ठरिःफस्थे रन्ध्रे वा पापसंयुते॥67॥
कलहो दन्तरोगश्च चौरव्याघ्रादिपीडनम्।
द्वितीयसप्तमस्थे तु देहव्याधिर्भविष्यति॥68॥
सन्मानं जनसन्तापं धनधान्यस्य प्रच्युतिः।
मृत्युंजयजपं कुर्यात् सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥69॥

महादशेश से 6.8.12 में केतु हो या पापयुक्त हो तो कलहागम, दाँतों में रोग, चोरों व हिंसक जानवरों से कष्ट होता है।

2.7 भावों में केतु हो तो धन-धान्य की हानि होती है। शान्त्यर्थ मृत्युंजय जप करें।

मंगलदशा : शुक्रभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि शुभस्थानाधिपोऽथवा॥70॥
राज्यलाभं महत्सौख्यं गजाश्वाम्बरभूषणम्।
लग्नाधिपेन सम्बन्धे पुत्रदारादिवर्धनम्॥71॥
आयुर्वृद्धिर्महैश्वर्यं भाग्यवृद्धि सुखं भवेत्।

मंगल दशा में शुक्र भुक्ति होने पर शुक्र यदि केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में हो या स्वोच्च स्वराशि में हो या शुभस्थानेश हो तो राज्याधिकारप्राप्ति, बहुत सुख, हाथी घोड़े आदि वाहन होते हैं।

यदि वह लग्नेश से सम्बन्ध करे तो स्त्री पुत्रादि की वृद्धि होती है। आयुर्वृद्धि, ऐश्वर्य व भाग्यवृद्धि तथा सुख होता है।

दायेशात्केन्द्रलाभस्थे त्रिकोणे धनगेऽपि वा॥72॥
तत्कालः श्रियमाप्नोति पुत्रलाभं महत्सुखम्।
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यं श्वेतवस्त्राश्वलाभकृत्॥73॥
महाराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
भुक्त्यन्ते फलमाप्नोति गीतनृत्यादिलाभकृत्॥74॥
पुण्यतीर्थस्नानलाभं कर्माधिपसमन्विते।
कर्मधर्मदयापुण्यं तडागं कारयिष्यति॥75॥

दशेश मंगल से केन्द्र, लाभ, त्रिकोण या धनस्थान में शुक्र हो तो तत्काल लक्ष्मी प्राप्ति होती है। पुत्रलाभ, बहुत सुख, अपने अधिकारी या स्वामी से विशेष सुख, श्वेत अश्व (वाहन) का लाभ, समर्थ, व्यक्ति या राजा की प्रसन्नता से अधिकार, जायदाद, जागरी की प्राप्ति होती है। दशान्त में विशेष उत्कट फल होता है। गीत-संगीतादि की गोष्ठी में मनोरंजन होता है।

यदि वह शुक्र दशमेश से युक्त हो तो बड़ी तीर्थयात्रा, पुण्योदय, सार्वजनिक सुविधा का निर्माण कराने की सामर्थ्य होती है।

दायेशाद्रन्ध्ररिःफस्थे षष्ठे वा पापसंयुते।
करोति दुःखबाहुल्यं देहपीडाधनक्षयम्॥76॥
राजचौरादिभीतिश्च गृहे कलहमेव च॥
दारपुत्रादिपीडा च गोमहिष्यादिनाशकृत्॥77॥
द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यमादिशेत्॥78॥

दशेश मंगल से 6.8.12 में शुक्र हो या पापयुक्त हो तो बहुत दुःख, शरीर कष्ट, धनहानि राजा या चोर आदि से भय, घर में कलह, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा, पशुधन की हानि होती है।

2.7 भावेश होने पर शरीर बाधा होती है। दोष शान्ति के लिए सफेद गाय या दुधारू भैंस का दान करने से शान्ति, आयु व आरोग्य होता है।

मंगलदशा : सूर्यभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
मूलत्रिकोणे लाभे वा भाग्यकर्मेशसंयुते॥79॥
तद्भुक्तौ वाहनं कीर्तिः पुत्रलाभं च विन्दति।
धन-धान्यसमृद्धिः स्याद् गृहे कल्याणसम्पदः॥80॥
क्षेमारोग्यं महद्धैर्यं राजपूज्यं महत्सुखम्।
व्यवसायात्फलाधिक्यं विदेशे राजदर्शनम्॥81॥

मंगल महादशा में सूर्य भुक्ति हो और सूर्य उच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्रगत, लाभस्थान, मूल त्रिकोण में हो, या 10.11 भावेश से युक्त हो तो उसकी अन्तर्दशा में वाहन सुख, कीर्ति, पुत्रलाभ, धन-धान्य समृद्धि, घर में मंगलवृद्धि, कुशलता, आरोग्य, मन में धैर्य, राजपूज्यता, सुख, व्यवसायवृद्धि, विदेश में किसी बड़े व्यक्ति या राजकीय पुरुष से भेंट होती है।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते।
देहपीडा मनस्तापं कार्यहानिर्महद्भयम्॥82॥
शिरोरोगं ज्वरादिश्च ह्यतिसारमथापि वा।
द्वितीय द्यूननाथे तु सर्पज्वरविषाद्भयम्॥83॥
सुतपीडाकरं चैव शान्तिं कुर्याद्यथाविधि।
देहारोग्यं प्रकुरुते धन-धान्यसमृद्धिदम्॥84॥

महादशेश मंगल से 6.8.12 में सूर्य हो या पापयुक्त हो तो शरीर कष्ट, मन में सन्ताप, कार्यहानि, भय, सिर में रोग, ज्वरादि रोग, दस्त होते हैं।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो सर्पभय, विषभय, ज्वरभय, पुत्र को कष्ट होता है। तब यथाविधि शान्ति विधान करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है।

मंगलदशा : चन्द्रभुक्ति

कुजस्यान्तर्गते चन्द्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
भाग्यवाहनकर्मेशलग्नाधिपसमन्विते ॥85॥
करोति विपुलं राज्यं गन्धमाल्याम्बरादिकम्।
तडागं गोपुरादीनां पुण्यधर्मादिसंग्रहम्॥86॥

विवाहोत्सवकर्माणि दारपुत्रादिसौख्यकृत्।
पितृमातृसुखावाप्तिं गृहे लक्ष्मीकटाक्षकृत्॥87॥
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहम्।
पूर्णचन्द्रे पूर्णफलं क्षीणे स्वल्पफलं भवेत्॥88॥

मंगल में चन्द्रान्तर रहने पर चन्द्रमा यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्रगत, 4.9 भावेश से युक्त हो या लग्नेश से युक्त हो तो राजयोग का सुख, उत्तम वस्त्राभूषण, तडागादि या पुरद्वारादि का निर्माण, पुण्यकार्य, विवाहोत्सव, पुत्रादि का सुख, माता-पिता का सुख, लक्ष्मी वृद्धि, महाराज के सहयोग से इष्टसिद्धि व सुख होता है। यदि चन्द्रमा पूर्ण बिम्ब वाला हो तो पूर्ण फल तथा छोटे बिम्ब वाला हो तो तदनुसार कम से कमतर फल होता है।

नीचारिस्थेऽष्टमे षष्ठे दायेशाद्रिपुरन्ध्रके।
मरणं दारपुत्राणां कष्टं भूपतिनाशनम्॥89॥
पशुधान्यक्षयं चैव चौराहिरणभीतिकृत्।
द्वितीयद्यूननाथेतु ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥90॥
देहजाड्यं मनोदुःखं दुर्गालक्ष्मीजपं चरेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद् दानेनारोग्यमाप्नुयात्॥91॥

चन्द्रमा यदि नीचगत 6.8.12 भावगत या दशेश से 6.8.12 में हो तो स्त्री पुत्रों को कष्ट, राजा का कोप, धनधान्य हानि, युद्ध विवाद का भय, चोरादि का भय होता है।

यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो अपमृत्युभय, शरीर में शिथिलता, मन में दुःख होते हैं। शान्ति के लिए दुर्गापाठ व लक्ष्मी जी की जप पूजा करें। सफेद गाय या भैंस का दान करने से शान्ति होती है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेश मिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
भौमान्तर्दशाध्यायः षोडशः॥16॥
॥आदितः श्लोकाः1254॥

17

॥ राहोरन्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

लग्नस्थसैंहिकेयस्य दाये पापहतिर्यदा।
करोति दुःखबाहुल्यं नृपचौराग्निपीडनम्॥1॥
तत्रस्थभोगिनः पाके शुभभुक्तौ शुभं भवेत्।
गृहक्षेत्राभिवृद्धिश्च भोजनाम्बरभूषणम्॥2॥

लग्नस्थ राहु की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा होने पर बहुत से दुःख व विविध प्रकार की पीड़ाएँ होती हैं।

उसी राहु की दशा में शुभान्तर्दशा हो तो जायदाद आदि की वृद्धि, उत्तम रहन-सहन होता है।

षडष्टान्त्यगतस्याहौ परिपाके शुभेतरा।
हतिः कलहरोगाग्निनृपचौरविषारिभिः॥3॥
श्वासक्षयप्रमेहादि शूलनिद्रादिभाग्भवेत्।
कुभोजनं कुवस्त्रं च स्थाननाशं महद्भयम्॥4॥
दुःस्थस्य चाहिनाथस्य परिपाके शुभहतिः।
आदौ सुखं महत्सौख्यं नृपमानधनागमम्॥5॥
अन्तेतु राजभीतिः स्यात्स्थानभ्रशं मनोरुजम्।
कृषिगोभूमिवस्त्रादि बन्धुपुत्रार्थनाशनम्॥6॥

6.8.12 भावगत राहु में पापान्तर्दशा हो तो कलह, रोग, विविध प्रकार के भय, साँस सम्बन्धी रोग, क्षय रोग, प्रमेह (मधुमेह), दर्द, अधिक नींद या नींद सम्बन्धी विकार होते हैं। अपि च खराब रहन-सहन, स्थान हानि, भय होता है।

6.8.12 भावगत राहु में शुभान्तर्दशा हो तो प्रारम्भ में सुख, राजमान्यता व धन तथा अन्त में राजभय, स्थान परिवर्तन, मनोमालिन्य, व्यवसाय, व सम्पत्ति तथा धन पुत्रादि की हानि होती है।

केन्द्रत्रयस्थितस्याहौ पापिनां तु हतिर्यदा।
गृहदाहाक्षिरोगादि दारपुत्रमहद्भयम्॥7॥
स्थानच्युतिं मनोदुःखं निजाचारविवर्जितम्।
अकस्मात्कलहं चैव विविधापत्पीडनम्॥8॥
चतुष्टयगतस्याहौ परिपाके शुभाहतिः।
क्वचित्कीर्तिः क्वचिद्धर्मं क्वचित्सौख्यं क्वचिद्धनम्॥9॥
एवमादौ तु भुक्त्यन्ते राजकोपाद्धनक्षयम्।
युद्धे पराजयं चैव विद्यावादं महद्भयम्॥10॥

4.7.10 भावगत राहु में पापान्तर्दशा हो तो घर में अग्निभय, नेत्ररोग, स्त्री पुत्रों को विशेष कष्ट, पदावनति, मन में मलिनता, आधारहीनता, अचानक कलह, विविध आपत्तियाँ होती हैं।

शुभान्तर्दशा में कभी कीर्ति, कभी धन, कभी धर्म, कभी सुख होता है। ऐसा फल दशा के आरम्भ में तथा दशा के अन्त में राजकोप से धनहानि, पराजय, भय व विद्या के क्षेत्र में विवाद होता है।

त्रिकोणस्थ फणीन्द्रस्य दशापाके महत्कृशम्।
पापभुक्तौ महत्कष्टं पापाचारसमन्वितम्॥11॥
अपकीर्तिः कुभोज्यं च कृषिगोभूमिनाशनम्।
नृपभीतिं च शौर्यं च मौल्यादिपतनं भवेत्॥12॥
तथाविधफणीन्द्रस्य शुभभुक्तौ शुभक्रिया।
सुतदारधनाप्तिं च भुक्त्यन्ते फलमीदृशम्॥13॥
किंचित्सौख्यं तदादौ तु विदेशगमनं तथा।
मन्त्रोपास्तिर्मनोत्साहं कलत्रात्मजदूषणम्॥14॥

5.9 भावगत राहुदशा में पापान्तर्दशा हो तो बहुत कष्ट, पापाचार, कमजोरी होती है। अपकीर्ति, खराब भोजन, खेती बाड़ी व व्यवसाय की हानि, राजभय, शूरता, ऊँचे स्थान से पतन का भय होता है।

शुभान्तर्दशा में मंगलकार्य, स्त्री पुत्रों का सुख, अन्तर्दशा के अन्त में होता है। शुरू में साधारण सुख व विदेश यात्रा होती है।

तृतीयलाभगस्याहौ परिपाके महत्सुखम्।
पापभुक्तौ नृपप्रीतिः फलमीदृशमादितः॥15॥
अन्ते भयं विनिर्देश्यं विविधानि कष्टानि च।
तथाविध फणीन्द्रस्य शुभभुक्तौ तु भोजनम्॥16॥
क्रयविक्रयवित्ताप्तिर्वाग्दूषणमथापि वा।
वस्त्रवाहनभूषाप्तिं क्रयविक्रयदूषणम्॥17॥
उद्योगभंगं देहार्तिं गूढपापं लभेन्नरः॥

3. 11 भावगत राहु दशा में पापान्तर्दशा हो तो सुख, राजप्रीति, दशारम्भ में होती है। अन्त मे विविध कष्ट व भय होता है।

शुभान्तर्दशा में उत्तम भोजन, क्रय-विक्रय में बाधा व बाधा के उपरान्त धनागम, वाणी के दोष के कारण हानि, वस्त्रवाहनादि का सुख, उद्योग परिश्रम में कष्ट, गूढ़ पापभाव का उदय होता है।

राहुदशा : राहुभुक्ति

कुलीरे वृश्चिके चैव कन्यायां चापगेऽपिवा॥18॥
तद्भुक्तौ राजसम्मानं वस्त्रवाहनभूषणम्।
व्यवसायात्फलाधिक्यं चतुष्पाज्जीवलाभकृत्॥19॥
प्रयाणं पश्चिमे भागे वाहनाम्बरलाभकृत्।

4.6.8.9 राशिगत राहु में राहु की अन्तर्दशा हो तो राज-सम्मान, वस्त्राभूषण, वाहन, व्यवसाय में वृद्धि, चौपाये धन का लाभ, पश्चिम दिशा में यात्रा, विविध लाभ होते हैं।

लग्नाद्युपचये राहौ शुभदृष्टियुतेक्षिते॥20॥
मित्रांशे तुंगलाभेशयोगकारकसंयुते।
राज्यलाभं महोत्साहं राजप्रीतिः शुभावहम्॥21॥
गृहे कल्याणसम्पत्तिः दारपुत्रादिवर्धनम्।

लग्न से 3.6.10.11 भावगत राहु पर शुभयोग या दृष्टि हो, स्वयं यह मित्र नवांश में हो या किसी उच्च ग्रह या लाभेश से युक्त हो तो राज्य-प्राप्ति, उत्साह, राजप्रीति, शुभ फल, घर में सब तरह से वृद्धि होती है।

षष्ठाष्टमे व्यये राहौ पापयुक्तेऽथवीक्षिते॥22॥
चौरादिव्रणपीडा च सर्वत्र जनपीडनम्।
राजद्वारे जनद्वेषमिष्टबन्धुविनाशनम्॥23॥
दारपुत्रादिपीडा च सर्वत्र विविधं भयम्।
द्वितीयद्यूनभावस्थे विशेषात्सप्तमाश्रिते॥24॥
तदा रोगो महाकष्टं शान्ति कुर्याद्यथाविधि।
आरोग्यं सम्पदश्चैव भविष्यति न संशय॥25॥

यदि राहु पापयुक्त दृष्ट होने पर 6.8.12 भावों में हो तो राहुदशा राहु अन्तर्दशा में चोटभय, सर्वत्र विविध क्षेत्रों में पीड़ा, राजद्वार (कचहरी) में द्वेषभाव, अभीष्ट जनों की हानि, स्त्रीपुत्रादि को पीड़ा, भय, होते हैं।

यदि 2.7 भाव में, विशेषतया सप्तम में, राहु हो तो रोग व कष्ट होते हैं। तब शान्ति करने से शरीर व धन सुख होता है।

राहुदशा : गुरुभुक्ति

राहोरन्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि तुंगे स्वोच्चांशगेऽपि वा॥26॥
स्थानलाभं मनोधैर्यं शत्रुनाशं महत्सुखम्।
राजप्रीतिकरं सौख्यं सिते पक्षे शशी यथा॥27॥
वाहनादिधनं भूरि गृहे गोधनसंकुलम्।
नैऋत्याः पश्चिमे भागे प्रयाणं राजदर्शनम्॥28॥
युक्तकार्यस्य सिद्धिः स्यात् स्वदेशे पुनरेष्यति।
उपकार्यं ब्राह्मणानां तीर्थयात्रादि कर्मणाम्॥29॥
वाहनं ग्रामलाभं च देवब्राह्मणपूजनम्।
पुत्रोत्सवादि सन्तोषं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥30॥

लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में, स्वोच्च, स्वक्षेत्र में या स्व या उच्च नवांश में वृहस्पति हो तो राहु में गुरु की अन्तर्दशा के दौरान स्थानप्राप्ति, मन में धैर्य, शत्रुहानि, सुख, राजप्रीति, शुक्लपक्ष के बढ़ते चन्द्रमा की तरह सुख वृद्धि, वाहन, खूब धन, पशु धन, सम्पत्ति, पश्चिम या नैऋत्य दिशा की यात्रा में लाभ, सफल होकर पुनः स्वदेश आगमन, ब्राह्मणों व विद्वानों के हितकारक कार्य, तीर्थयात्रादि प्रसंग, ग्राम या जायदाद का लाभ, पुत्रोत्सव, उत्तम खान-पान होता है।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
शत्रुक्षेत्रे पापयुक्ते धनहानिर्भविष्यति॥31॥
कर्मविघ्नं मनोहानिः सम्पत्तिहरणं भवेत्।
कलत्रपुत्रपीडा च हृदरोगं राजकार्यकृत्॥32॥

यदि वृहस्पति नीचगत, अस्त, शत्रुक्षेत्री, पापग्रह की राशि में हो या 6.8.12 भावों में हो तो धन हानि कार्य बाधाएँ, सम्पत्ति का नुकसान, स्त्री-पुत्रादि को कष्ट, हृदयरोग, राजा आदि की नौकरी होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा।
दुश्चिक्ये बलसम्पूर्णे गृहक्षेत्रादिवृद्धिकृत्॥33॥
भोजनाम्बरपश्वादि दानधर्मजपादिकम्।
भुक्त्यन्ते राजकोपाच्च द्विमासं देहपीडनम्॥34॥
ज्येष्ठभ्रातृविनाशं च भ्रातृपित्रादि पीडनम्।

महादशेश राहु से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या धनस्थान में गुरु हो या तृतीयस्थ गुरु हो तो जमीन जायदाद की वृद्धि, खान-पान का उत्तम सुख, धार्मिक कार्य, अन्तर्दशा के अन्त में राजकोप से दो मास का कष्ट, बड़े भाई को कष्ट, भ्राता व पिता आदि को कष्ट होता है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा रि:फे वा पापसंयुते॥35॥
तद्भुक्तौ धनहानिः स्याद् देहपीडा भविष्यति।
द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥36॥
सौवर्णप्रतिमादानं शिवपूजां च कारयेत्।
देहारोग्यं प्रकुरुते शान्तिं कुर्याद् विचक्षणः॥37॥

महादशेश से 6.8.12 में गुरु हो या पापयुक्त हो तो उसकी अन्तर्दशा में धन हानि, शरीर कष्ट होता है।

2.7 भावेश गुरु हो तो अपमृत्यु का भय होता है। शान्ति के लिए सोने की प्रतिमा का दान व शिव पूजा करने से सुख होता है।

राहुदशा : शनिभुक्ति

राहोरन्तर्गते मन्दे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे मूलत्रिकोणे वा दुश्चिक्ये लाभराशिगे॥38॥
तद्भुक्तौ वाहनं सेवा राजप्रीतिकरं शुभम्।
विवाहोत्सवकार्याणि कृत्वा पुण्यानि भूरिशः॥39॥
आरामकरणे युक्तः तडागं कारयिष्याति।
शूद्रप्रभुवशादिष्टं लाभं गोधनसंग्रहम्॥40॥
प्रयाणं पश्चिमे देशे प्रभुमूलाद् धनक्षयः।
देहायासफलाप्तिश्च स्वदेशपुरेष्यति॥41॥

शनि यदि केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय, एकादश भावों में हो या उच्च त्रिकोण में हो तो राहु दशा शनि भुक्ति में वाहन, सेवा के अवसर, राजा की प्रसन्नता, शुभ कार्य, घर में विवाहोत्सव, पुण्य कार्य, बाग आदि बनाने के योग, जल संसाधनों का निर्माण, हीन जाति राजा का सहयोग, लाभ, धनसंग्रह पश्चिम की यात्रा, यात्रा में राजकीय नियमों के कारण हानि, केवल परिश्रम के बराबर फल प्राप्ति तथा स्वदेश लौटना होता है।

नीचारिक्षेत्रगे मन्दे रन्ध्रेषड्व्ययगेऽपि वा।
नीचांशे राजभीतिश्च दारपुत्रादिपीडनम्॥42॥
आत्मबन्धोर्मनस्तापं दायाद्यजनविग्रहम्।
व्यवहारं च कलहमकस्माद्भूषणं भवेत्॥43॥
दायेशात्षष्ठरि:फे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते।
हृद्रोगो मानहानिश्च विवाहे शत्रुपीडनम्॥44॥
अन्नद्वेषमतीसारं गुल्मव्याध्यादिमाग्भवेत्।
द्वितीयद्यूननाथेतु ह्यपमृत्युभयं भवेत्॥45॥
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमादिशेत्॥45A॥

शनि यदि नीचगत, शत्रुक्षेत्री, 6.8.12 भावगत, नीच नवांशगत हो तो उसकी अन्तर्दशा में राजभय, स्त्री पुत्रादि को कष्ट, अपने व्यक्ति के कारण मन में ठेस, घर में उत्तराधिकार व बँटवारे का झगड़ा, मुकद्दमा, कलह, अचानक कोई समाधान होता है।

राहु से 6.8.12 में शनि हो, पापयुक्त हो तो हृदयरोग, मानहानि, विवाहादि मंगल कार्यों में शत्रु प्रकोप अरुचि, दस्त, भीतरी फोड़े आदि से कष्ट होता है।

शनि यदि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु निवाराणार्थ काली गाय या भैंस का दान करें।

राहुदशा : बुधभुक्ति

राहोरन्तर्गते सौम्ये भाग्ये वा स्वर्क्षगेऽपि वा।
तुंगे वा केन्द्रराशिस्थे पुत्रे वा बलगेऽपि वा॥46॥
राजयोगं प्रकुरुते गृहे कल्याणवर्धनम्।
व्यापारेणधनप्राप्तिर्विद्यावाहनमुत्तमम् ॥47॥
विवाहोत्सवकार्याणि चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
सौम्यमासे महत्सौख्यं स्ववारे राजदर्शनम्॥48॥
सुगन्धपुष्पशय्यादिस्त्रीसौख्यं चातिशोभनम्।
महाराजप्रसादने धनलाभो महद्यशः॥49॥

राहु में बुधान्तर्दशा में, बुध यदि बली हो, 5.9 भावों में या केन्द्र में हो, स्वक्षेत्री, स्वोच्च में हो तो राजयोग का भोग, घर में कल्याणकारी बातें, व्यापार बुद्धि, विद्याप्राप्ति, वाहन सुख, विवाहोत्सव, चौपाये धन का लाभ, बुधवार को शुरू होने वाले मास में या बुधवार को विशेष अच्छे फल, राजदर्शन, उत्तम शय्यासुख, स्त्री सुख, धनलाभ, यश होता है।

दायेशात्केन्द्रलाभे वा दुश्चिक्ये भाग्यकर्मगे।
दोहारोग्यं महोत्साहमिष्टसिद्धिः सुखावहम्॥50॥
पुण्यश्लोकादिकीर्तिश्च पुराणश्रवणादिकम्।
विवाहो यज्ञदीक्षा च दानधर्मदयादिकम्॥51॥

महादशेश से केन्द्र, लाभ, तृतीय, नवम भावों में बुध हो तो शरीर सुख, मन में उत्साह, मनोरथ सिद्धि, सुख, कीर्ति, कथा श्रवण के योग, यज्ञ, विवाहादि मंगल कार्य, दानधर्म होता है।

षष्ठाष्टमे व्यये सौम्ये मन्दराशियुतेक्षिते।
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा पापसंयुते॥52॥
देवब्राह्मणनिन्दा च भोगभाग्यविहीनभाक्।
सत्यहीनश्च दुर्बुद्धिश्चौरादिनृपपीडनम्॥53॥

अकस्मात्कलहं चैव गुरुपुत्रादिनाशनम्।
अर्थव्ययं राजकोषं दारपुत्रादिपीडनम्॥54॥
द्वितीये धूननाथे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥55॥
स्वगृह्योक्त विधानेन शान्तिं कुर्यात् प्रयत्नतः॥

यदि बुध 6.8.12 में शनि की राशि में हो या शनि से युत दृष्ट हो या महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त हो तो देवों व ब्राह्मणों की निन्दा, भाग्यहीनता, सुख में कमी, सत्याचरण रहित दुर्बुद्धि का उदय, विविध पीड़ाएँ, अचानक कलह, गुरुजन या स्त्री पुत्रादि की हानि, धनखर्च, राजकोप होता है।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु भय निवारणार्थ विष्णुसहस्रनाम के पाठ करें तथा अपने गृह्यसूत्र में कही गई विधि से शान्ति विधान करें।

राहुदशा : केतुभुक्ति

राहोरन्तर्गते केतौ भ्रमणं राजबन्धनम्॥56॥
वातज्वरादिरोगश्च चतुष्पाज्जीवहानिकृत्।
अष्टमाधिपसंयुक्ते देहजाड्यं मनोरुजम्॥57॥
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे देहसौख्यं धनागमम्।
राजसम्मानभूषाप्ति गृहे शुभकरं भवेत्॥58॥
लग्नाधिपेन सम्बन्धे धनलाभो भवेद्ध्रुवम्।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात् केन्द्रे वाथ त्रिकोणगे॥59॥

राहु दशा केतु अन्तर्दशा में सामान्यतः व्यर्थ भ्रमण, वातपीड़ा, ज्वरादि रोग, चौपाये धन की हानि होती है।

यदि केतु अष्टमेश से युक्त हो तो शरीर कष्ट होता है।

यदि केतु शुभयुक्त दृष्ट हो तो शरीर सुख व धनलाभ होता है। राज-सम्मान, सर्वविध कल्याण होता है।

यदि केतु लग्नेश से युक्त हो तो या केन्द्र त्रिकोण में हो तो धनलाभ, चौपाये धन का लाभ होता है।

रन्ध्रस्थानगते केतौ व्यये वा बलवर्जिते।
तद्भुक्तौ बहुरोगित्वं चौराहिव्रणपीडनम्॥60॥
पितृमातृवियोगश्च भ्रातृद्वेषं मनोरुजः।
स्वप्रभोश्च महत्कष्टं वैषम्यं मानहानिसंभवम्॥61॥
द्वितीयद्यूनभावस्थे देहपीडा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं छागदानं समाचरेत्॥62॥

निर्बल केतु यदि 12.8 भावों में हो तो उसकी अन्तर्दशा में बहुत रोग तथा

कोढ़ आदि का भय रहता है। माता पिता से वियोग, भाइयों से द्वेष, मानसिक व्यथा, अपने अधिकारी से कष्ट, विषमता, मानहानि होती है।

2.7 भावों में केतु हो तो शरीर कष्ट होता है। दोषनिवारण के लिए बकरे का दान करें।

राहुदशा : शुक्रभुक्ति

राहोरन्तर्गते शुक्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
लाभे वा बलसंयुक्ते योगप्राबल्यमादिशेत्॥63॥
विप्रमूलाद्धनप्राप्ति गोमहिष्यादि लाभकृत्।
पुत्रोत्सवादि सन्तोषं गृहे कल्याणसम्भवम्॥64॥
सम्मानं राज-सम्मानं राज्यलाभं महत्सुखम्।

राहु दशा में शुक्रान्तर्दशा रहने पर, शुक्र यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में या लाभ में बलवान् हो तो योगों का उत्तम फल मिलता है। ब्राह्मणों के सहयोग से धनलाभ, दुधारू पशुओं का लाभ, पुत्र सम्बन्धी उत्सव, मन में सन्तोष, मंगल कार्य, विविध प्रकार से मानवृद्धि तथा राज्यप्राप्ति या अधिकार प्राप्ति होती है।

स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥65॥
नूतनगृहनिर्माणं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥
कलत्रपुत्रविभवं मित्रसंयुक्तभोजनम्॥66॥
अन्नदानं प्रियं नित्यं दानधर्मादिसंग्रहम्।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्॥67॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं विवाहो मौञ्जिबन्धनम्।

यदि शुक्र स्वराशि, स्वोच्च या इन्हीं नवांशों में हो तो उसकी अन्तर्दशा में नए घर का निर्माण, नित्य उत्तम भोजन, स्त्री पुत्र व वैभव का सुख, इष्ट मित्रों के साथ सहभोज, अन्नदान दानपुण्य का फल, समर्थ व्यक्ति के सहयोग से वाहनादि प्राप्ति, व्यवसाय में वृद्धि, विवाह की सम्भावना या यज्ञोपवीत उत्सव होता है।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे नीचे शत्रुगृहस्थिते॥68॥
मन्दारफणिसंयुक्ते तद्भुक्तौ रोगमादिशेत्।
अकस्मात्कलहं चैव पितृपुत्रवियोगकृत्॥69॥
स्वबन्धुजनहानिश्च सर्वत्र जनपीडनम्।
दायादिकलहं चैव स्वप्रभोर्निजमृत्युकृत्॥70॥
कलत्रपुत्रपीडा च शूलरोगादि सम्भवम्।

यदि शुक्र 6.8.12 भाव में, या नीच में, या शत्रुयुक्त, या मंगल शनि, राहु से युक्त हो तो रोग, अचानक कलह, पिता या पुत्र का वियोग, बन्धुओं में कमी,

सर्वत्र पीड़ा या निरादर, घर में उत्तराधिकार सम्बन्धी विवाद, अपने स्वामी या स्वयं की मृत्यु, स्त्री पुत्रों को पीड़ा, शरीर में शूल रोग होता है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे व शुभान्विते॥71॥
लाभे वा धर्मराशिस्थे क्षेत्रपालमहत्सुखम्।
सुगन्धवस्त्रशय्यादि गानविद्यापरिश्रमम्॥72॥
छत्रचामरवाद्यादि गन्धपद्मसमन्वितम्।

महादशेश से केन्द्र त्रिकोण में, लाभ में शुभयुक्त शुक्र हो तो जायदाद संरक्षण का सुख, उत्तम वस्त्रालंकार, शृंगार व शय्यासुख, गानविद्या के प्रति आकर्षण, छत्र चँवरयुक्त मान होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥73॥
विषाहिनृपचौरादि मूत्रकृच्छ्रान्महद्भयम्।
प्रमेहाद्रुधिरे रोगं कुत्सितान्न शिरोरुजम्॥74॥
कारागृहप्रवेशं च राजदण्डाद् धनक्षयम्।
द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युस्तदा भवेत्॥75॥
दुर्गालक्ष्मीजपं कुर्यात् मृत्युनाशकरो भवेत्।

महादशेश से 6.8.12 में शुक्र हो या पापयुक्त हो तो विषादि भीति, राजपक्षादि से भीति, मूत्ररोग का बड़ा कष्ट, मधुमेह के कारण रक्तविकार, खराब भोजन, सिर में पीड़ा, कारागृह में प्रवेश, राजदण्ड से धनहानि होती है।

2.7 भावेश शुक्र हो तो अपमृत्यु भय होता है। तब दुर्गा या लक्ष्मी के जप पाठ करने से मृत्युभय दूर होता है।

राहुदशा : सूर्यभुक्ति

राहोरन्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे॥76॥
त्रिकोणे लाभगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा।
शुभग्रहेण संदृष्टे राजप्रीतिकरं शुभम्॥77॥
धन-धान्यसमृद्धिः स्यादल्पसौख्यं सुखावहम्।
अल्पग्रामाधिपत्यं च स्वल्पलाभो भविष्यति॥78॥

सूर्य यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र या इन्हीं नवांशों में हो या केन्द्र त्रिकोण लाभ स्थान में हो और शुभ दृष्ट हो तो राजा की प्रसन्नता, धन-धान्य वृद्धि, कम सुख, थोड़े इलाके में आधिपत्य, साधारण लाभ होता है।

भाग्यलग्नेशसंयुक्ते कर्मेशेन निरीक्षिते।
राजाश्रयोमहत्कीर्तिर्विदेशे वाहनं भवेत्॥79॥
देशाधिपत्ययोगश्च गजाश्वराम्बरभूषणम्।
मनोऽभीष्टप्रदानं च पुत्रकल्याणसम्भवम्॥80॥

यदि सूर्य लग्नेश या भाग्येश से युक्त होकर, दशमेश से दृष्ट हो तो राजा का आश्रय, खूब कीर्ति विदेश में उत्तम वाहन प्राप्ति, देशाधिपति योग, उत्तम भौतिक समृद्धि, मनोरथपूर्ति, पुत्र सम्बन्धी उत्सव होते हैं।

दायेशाद्रिःफरन्ध्रस्थे षष्ठे वा नीचगेऽपि वा।
ज्वरातिसाररोगश्च कलहो राजरोगभीः॥81॥
प्रयाणेशत्रुवृद्धिश्च नृपचौराग्निपीडनम्।

महादशेश से 6.8.12 में सूर्य हो या नीचगत हो तो ज्वरादि रोग, कोई बड़ा रोग, कलह, स्थान परिवर्तन, शत्रुवृद्धि तथा विविध पीड़ाएँ होती हैं।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥82॥
विदेशे राज-सम्मानं कल्याणं च शुभावहम्।
द्वितीयद्यूननाथे तु महारोगो भविष्यति॥83॥
सूर्यप्रमाणशान्तिं च कुर्यादारोग्यसम्भवाम्॥

महादशेश राहु से 1.3.4.5.7.9.10.11 भावों में सूर्य हो तो विदेश में सम्मान, कल्याण, मंगल होता है।

2.7 भावेश सूर्य हो तो बड़ा रोग सम्भावित है। शान्ति हेतु शास्त्रोक्त पूरी विधि से शान्ति करें।

राहुदशा : चन्द्रभुक्ति

राहोरन्तर्गते चन्द्रे स्वक्षेत्रे स्वोच्चगेऽपि वा॥84॥
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा मित्रर्क्षे क्रूरसंयुते।
राजत्वं राजपूज्यत्वं धनार्थस्य सुलाभकृत्॥85॥
आरोग्यं भूषणं चैव मित्रस्त्रीपुत्रसम्पदः।
पूर्णचन्द्रे पूर्णफलं राजप्रीतिः सुखावहम्॥86॥
अश्ववाहनलाभः स्याद् गृहक्षेत्राभिवृद्धिकृत्।

चन्द्रमा यदि उच्चगत, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री हो या क्रूरयुक्त हो, केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में हो तो राजपूज्यता या राज्याधिकार, खूब धन लाभ, उत्तम स्वास्थ्य, आभूषण, मित्रों, पुत्रों व स्त्री का सुख, राजप्रीति होती है। यदि चन्द्रमा पूर्ण बिम्ब वाला हो तभी पूरा फल होता है। अपि च घोड़ा वाहन (अच्छा वाहन), जमीन जायदाद की वृद्धि होती है।

दायेशात्सुखभाग्यस्थे केन्द्रे वा लाभगेऽपि वा॥87॥
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि गृहे कल्याणसम्भवम्।
तत्तत्कार्यार्थसिद्धिः स्याद् धनधान्यसुखावहम्॥88॥
सत्कीर्तिलाभसम्मानं नृणां तत्र प्रजायते।

महादशेश से केन्द्र त्रिकोण में चन्द्रमा हो तो लक्ष्मी की कृपा, घर में मंगल-

वृद्धि, विभिन्न कार्यों में सफलता, धन-धान्य वृद्धि, सत्कीर्ति, लाभ व सम्मान होता है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा शशिनि स्थिते॥89॥
पिशाचक्षुद्रव्याघ्रादिभयं क्षेत्रार्थनाशनम्।
मार्गे चौरभयं चैव व्रणाधिक्यं महोदरी॥90॥
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युभयं भवेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमाप्नुयात्॥91॥

महादशेश से 6.8.12 में चन्द्रमा हो तो भूतप्रेत बाधा, छोटे जानवरों से भय, जायदाद हानि, मार्ग में लुटने का भय, चोट भय, पेट बढ़ना आदि होता है।

यदि चन्द्रमा 2.7 भावेश हो तो अपमृत्युभय निवारणार्थ सफेद गाय या भैंस का दान करें।

राहुदशा : मंगलभुक्ति

राहोरन्तर्गते भौमे लग्नाल्लाभत्रिकोणगे।
केन्द्रे वा शुभसंयुक्ते स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा॥92॥
नष्टराज्यधनप्राप्तिः गृहक्षेत्राभिवृद्धिकृत्।
इष्टदेवप्रसादेन सन्तानसुखभोजनम्॥93॥
क्षिप्रभोज्यं महासौख्यं भूषणाश्वाम्बरादिकृत्।

राहु दशा में मंगल की अन्तर्दशा होने पर, मंगल यदि लग्न से लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम, पंचम, नवम, एकादश में हो और शुभयुक्त, स्वोच्चगत, स्वक्षेत्री हो तो खोए हुए अधिकारों की प्राप्ति, जायदाद वृद्धि, इष्ट देव की प्रसन्नता से उत्तम भोजन व सन्तान सुख, जल्दी भोजन करने की प्रवृत्ति, सुख, उत्तम वाहन व भूषण होते हैं।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥94॥
रक्तवस्त्रादिलाभः स्यात्प्रयाणं राजदर्शनम्।
पुत्रवर्गेषु कल्याणं स्वप्रभोश्च महत्सुखम्॥95॥
सेनापत्यं महोत्साहं भ्रातृवर्गाद्धनागमम्।

महादशेश से केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय, एकादश में मंगल हो तो लाल वस्त्रों से लाभ, यात्रा, राजा से भेंट, पुत्रों पौत्रों का कल्याण, अपने अधिकारी से बहुत सुख, सेनापतित्व, उत्साह, भाइयों के सहयोग से धन लाभ होता है।

दायेशाद्रन्ध्ररिःफे वा षष्ठे पापसमन्विते॥96॥
पुत्रदारादिहानिश्च सोदराणां च पीडनम्।
स्थानभ्रंशं बन्धुवर्गदारपुत्रविरोधनम्॥97॥
चौराहिव्रणभीतिश्च सोदराणां च पीडनम्।
आदौ क्लेशकरं चैव मध्यान्ते सौख्यमाप्नुयात्॥98॥

द्वितीयद्यूननाथे तु देहालस्यं महद्भयम्।
अनड्वाहं च गां दद्यादारोग्यं च भविष्यति॥99॥

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त मंगल हो तो स्त्री-पुत्रादि की हानि, भाइयों को पीड़ा, स्थानभ्रंश, बन्धुओं व परिवारजनों से विरोध, चोट आदि का भय होता है। यह फल प्रारम्भ में विशेष होता है। मध्य व अन्त में थोड़ा सुख होता है।

2.7. भावेश मंगल हो तो शरीर में आलस्य, भय होता है। शान्ति के लिए साँड छोड़ें या गोदान करें।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
राहोरन्तर्दशाफलाध्यायः सप्तदशः॥17॥
॥आदितः श्लोकाः 1353॥

18
॥ गुरोरन्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

केन्द्रस्थितस्य जीवस्य दशायां पापिनां हतौ।
देहार्तिं लभते दुःखं राजकोपं धनक्षयम्॥1॥
कृषिगोभूमिनाशं च विरोधं बन्धुभिः सह।
उत्साहभंगं वैकल्यमादौ चान्ते शुभं वदेत्॥2॥
शुभभुक्तौ राज्यलाभमुत्साहं वस्त्रवाहनम्।
दानहोमादिकं स्वर्णं नृपलालनमान्यता॥3॥

केन्द्रगत वृहस्पति की दशा में पापान्तर्दशा हो तो शरीर कष्ट, दुःख, राजकोप, धनहानि, व्यवसाय व सम्पत्ति की हानि, बन्धुओं से विरोध, उत्साहभंग होता है। आरम्भ में ये अशुभ फल होकर अन्त में शुभ फल होता है।

शुभान्तर्दशा में राज्यलाभ, उत्साह, वाहन, सोना, दान, हवनादिक शुभकार्य, राजा के सहयोग से मान्यता मिलती है।

त्रिकोणस्थगुरोः पाके शुभभुक्तौ महत्सुखम्।
प्राकारगोपुरादीनां निर्माणं देवतर्पणम्॥4॥
भाग्योत्तरं महाकीर्तिं दारपुत्रार्थसंग्रहम्।
विदेशयानादर्थाप्तिं यशो विद्या जयं सुखम्॥5॥
तत्रस्थितगुरोः पाके पापिनां तु हतिर्यदा।
दारपुत्रनृपक्रोधं बन्धूनां मरणं तथा॥6॥
बुद्धिभ्रंशं पदभ्रंशं कार्ये विघ्नकरं तथा।
चौराग्निदाहपीडां च कुरुते नात्र संशयः॥7॥

त्रिकोणस्थ वृहस्पति की दशा में शुभ अन्तर्दशा होने पर सुख, बड़े भवन का निर्माण, देवयजन, भाग्यवृद्धि, कीर्ति, स्त्री-पुत्र का सुख, धनसंग्रह, विदेश यात्रा से लाभ, यश, विद्या, विजय होती है।

उसी गुरु में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्त्री पुत्र व राजकीय विभागों में कलह, बन्धुओं की हानि, बुद्धिभ्रंश, पदावनति, कामों में विघ्न, विविध पीड़ाएँ होती हैं।

स्वकुलाचारहीनं च परदाराभिमर्शनम्।
चांचल्यं मानहानिश्च मणिविद्रुमनाशनम्॥8॥

अपि गुरुदशा पापन्तर्दशा में अपने कुलाचार से हीन आचरण, परस्त्री से बलात् सम्पर्क, मन की चंचलता, मानहानि, संचित रत्नों की हानि भी होती है।

षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य गुरोः पाके शुभेतरा।
करोति स्वकुलाचारं हीनं राज्यार्थनाशनम्॥9॥
आत्मार्थबन्धुमरणं विदेशान्नृपलालनम्।
भूविवादो मनोदुःखं व्याधिनां भयमेव च॥10॥

सामान्यतः 6.8.12 भावगत गुरु दशा में पापान्तर्दशा होने पर कुलान्तर से हीनता, राज्य व धन की हानि, आत्ममरण, बन्धु व धन की हानि, विदेश से किसी समर्थ व्यक्ति का सहयोग, भूमि सम्बन्धी विवाद, मन में दुःख, रोगभय होता है।

शुभ भुक्ति में शुभ फल होता है, ऐसा वक्ष्यमाण अपवाद के परिप्रेक्ष्य में समझना चाहिए।

गुरोर्नाशं गतस्यापि परिपाके महत्सुखम्।
देशग्रामाधिपत्यं च शुभभुक्तौ महद्यशः॥11॥
देहारोग्यकरं किंचित् गजाश्वाद्यम्बराणि च।
सुष्ठुभोजनमुल्लासं क्षीरदध्याज्यशर्कराः॥12॥

अष्टमस्थ वृहस्पति यदि भावेश या राशि स्थिति के अनुसार बली हो तो उसकी दशा में शुभ भुक्ति में बहुत सुख, देश या गाँव की मुख्यता व यश होता है। स्वास्थ्य साधारण तथा वाहन सुख खूब होता है। उत्तम मृदु मिष्ठान्न भोजन प्राप्त होता रहता है।

तृतीयायगतस्यापि गुरोः पाके महद्यशः।
सौम्यानां भुक्तिकाले तु वस्त्रवाहनभूषणम्॥13॥
मणिविद्रुममुक्तादि कांचनाद्यम्बराणि च।
देशाधिपत्यं मन्त्रित्वं लभते नात्र संशयः॥14॥
तादृशस्य गुरोर्दाये पापभुक्तौ महद्भयम्।
आचारहीनं कुरुते स्वकुलोद्भवनाशनम्॥15॥
विदेशवासं कष्टं च नानादुःखैःपरिभ्रमम्।
एवमादौ दशान्ते तु सुखं वाहनभोजनम्॥16॥

3.11 भावगत गुरु की दशा में शुभ भुक्ति होने पर यश, वस्त्राभूषण, वाहन, रत्नप्राप्ति, सुवर्ण प्राप्ति, देश का नेतृत्व, मन्त्रित्व होता है।

इसी गुरु में पापभुक्ति हो तो मनुष्य आचारहीन होकर अपनी परिवारीय सम्पत्ति को भी घटा देता है। विदेशवास, कष्ट, दुःखों से सर्वत्र परिभ्रमण होता है। यह फल दशा के आरम्भ में होता है। अन्त में सुख मिलता है।

धर्मस्थितगुरोर्दाये शुभभुक्तौ धनागमम्।
विद्यालाभं जयं सौख्यं दारपुत्रनृपात्सुखम्॥17॥
सर्वेषामुपकर्तृत्वं धनाधिक्यं महत्प्रियम्।
भोजनं पौष्टिकं चैव धर्मदारधनादिकम्॥18॥

नवमस्थ गुरुदशा में शुभ भुक्ति होने पर धनलाभ, विद्यालाभ, विजय, सुख, परिवार का सुख, दूसरों का भला करने की सामर्थ्य, खूब धन, लोकप्रियता या बड़े लोगों का प्यार, उत्तम खान-पान, खूब परिवार सुख होता है।

द्वितीयस्थगुरोः पाके पापभुक्तौ यदा तदा।
करोति दुःखबाहुल्यं राज्ञाहृत धनं तथा॥19॥
बन्धुद्वेषं मनोद्विग्नं वाचिकां दैन्यमेव च।
कुभोजनादि दुष्कर्म कुत्सितप्रेष्यभावताम्॥20॥

द्वितीयस्थ गुरु दशा में पापभुक्ति रहने पर यदा कदा दुःख, राजकीय विभागों की विरुद्धता के कारण धन सम्पत्ति में कर्म, बन्धुओं से द्वेष, मन में उद्विग्नता, वाणी में दीनता, कुभोजन दुष्कर्म व दूसरों की चाकरी करने के योग होते हैं।

गुरुदशा : गुरुभुक्ति

स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे जीवे लग्नात् केन्द्रत्रिकोणगे।
अनेकराजाधीशश्च सम्पन्नो राजपूजितः॥21॥
गोमहिष्यादिलाभश्च वस्त्रवाहनभूषणम्।
नूतनगृहनिर्माणं हर्म्यप्राकारसंयुतम्॥22॥
गजान्तैश्वर्यसम्पत्ति भाग्यकर्मणिसंयुते।
ब्राह्मणप्रभुसम्मानं समानप्रभुदर्शनम्॥23॥
स्वप्रभोः स्वफलाधिक्यं दारपुत्रादिलाभकृत्।

केन्द्र त्रिकोणगत, स्वोच्च, स्वक्षेत्री वृहस्पति की दशा में उसी की अन्तर्दशा होने पर अनेक राजाधिराज जैसी स्थिति बनती है। सम्पन्नता, राजाओं द्वारा सम्मान, गो महिषी आदि पशुधन की वृद्धि, उत्तम रहन-सहन, नये घर का निर्माण, घर में उत्तम सामग्री द्वारा बढ़ाव या सजावट होती है।

यदि किसी तरह से वृहस्पति का सम्बन्ध 9.10 भाव या भावेशों से बने तो हाथी पालने की सामर्थ्य देने वाला गजान्त ऐश्वर्य (बहुत धन) प्राप्त होता है। उत्तम बुद्धिजीवी श्रेष्ठ लोगों से सम्मान, अपने बराबर के लोगों से श्रेष्ठ सम्बन्ध, अपने अधिकारियों से अधिक लाभ, स्त्री पुत्रादि का लाभ होता है।

नीचांशे नीचराशिस्थे षष्ठाष्टव्ययभावगे॥24॥
नीचसंगो महादुःखं दायाद्यजनविग्रहम्।
पुत्रदारवियोगश्च धनधान्यार्थहानिकृत्॥25॥
सप्तमाधिपदोषेण देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्॥26॥
रुद्रजाप्यं च गोदानं कुर्यादिष्टं समाप्नुयात्।

यदि वृहस्पति नीच राशि, नीच नवांश में हो या 6.8.12 भाव में हो तो नीच जनों की संगति, बड़ा दुःख, परिजनों का आपसी विवाद, स्त्री पुत्रों से वियोग, धन-धान्य की हानि होती है।

सप्तमेश वृहस्पति हो तो शरीर कष्ट के योग होते हैं। जीवनरक्षा हेतु गोदान, शिव सहस्रनाम का पाठ व रुद्राभिषेक कराने से सुख होता है।

गुरुदशा : शनिभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे स्वक्षेत्रमित्रगे॥27॥
लग्नात्केन्द्रत्रिकोणस्थे लाभे वा बलसंयुते।
राज्यलाभं महत्सौख्यं वस्त्राभरणसंयुतम्॥28॥
धनधान्यादिलाभश्च स्त्रीलाभं बहुसौख्यकृत्।
वाहनाम्बरपश्वादि भूलाभं स्थानलाभकृत्॥29॥
पुत्रमित्रादिसौख्यं च नरवाहनयोगकृत्।
नीलवस्त्रादिलाभश्च नीलाश्वलाभमेव॥30॥
पश्चिमां दिशमाश्रित्य प्रयाणं राजदर्शनम्।
अनेकयानलाभं निर्दिशेन्मन्दभुक्तिषु॥31॥

गुरुदशा में शनि की अन्तर्दशा होने पर, शनि यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र में हो, लग्न से केन्द्र त्रिकोण या लाभ में बलवान् हो तो राज्यप्राप्ति, बहुत सुख, वस्त्राभूषण सुख, धन-धान्य का लाभ, स्त्री सुख, वाहन व पशुधन वृद्धि, भूमि लाभ, पदवी प्राप्ति, पुत्रों व मित्रों का सुख, सेवक व वाहन का संयुक्त सुख, काले नीले वस्त्रों से लाभ, काले घोड़े की प्राप्ति, पश्चिम दिशा की यात्रा, राजा से सम्पर्क, अनेक वाहनों का लाभ होता है।

लग्नात्षष्ठाष्टमे मन्दे व्यये नीचेऽस्तगेऽप्यरौ।
धनधान्यादिनाशश्च ज्वरपीडामनोरुजम्॥32॥
स्त्रीपुत्रादिषु पीडा वा व्रणघातादि सम्भवेत्।
गृहेत्वशुभकार्याणि भृत्यवर्गादिपीडनम्॥33॥
गोमहिष्यादिहानिश्च बन्धुद्वेषं भविष्यति।

शनि यदि 6.8.12 में हो नीचगत, शत्रुक्षेत्री, अस्तंगत हो तो धनधान्य की

हानि, शरीर व मन में विकार, स्त्री पुत्रादि को पीड़ा, चोट का भय, घर में अमंगल, नौकरों तथा कर्मचारियों को पीड़ा या उनसे स्वयं को पीड़ा, पशुधन की हानि, बन्धुओं से द्वेषभाव होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे लाभे वा धनगेऽपि वा॥34॥
भूलाभं चार्थलाभं च शूद्रमूलाद्धनप्रदः॥
दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥35॥
धनधान्यादिनाशश्च बन्धुमित्रविरोधकृत्।
उद्योगभंगो देहार्तिः स्वजनानां महद्भयम्॥36॥
द्विसप्तमाधिपे मन्दे ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥37॥
कृष्णां गां महिषीं दद्याद्दानेनारोग्यमाप्नुयात्।

शनि यदि महादशेश गुरु से केन्द्र, त्रिकोण, धन या लाभस्थान में हो तो भूमि लाभ, निम्नवर्ग से धन लाभ होता है।

यदि शनि 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो धनधान्य की हानि, बन्धुओं व मित्रों से विरोध, परिश्रम की असफलता, शरीर कष्ट, अपने ही लोगों से भय उपस्थित होता है। यदि शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। दोषशान्ति के लिए विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें, गोदान या महिषीदान करें।

गुरुदशा : बुधभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे॥38॥
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि दशाधिपसमन्विते।
अर्थलाभं देहसौख्यं राज्यलाभं महत्सुखम्॥39॥
महाराजप्रसादेन स्वेष्टसिद्धिः सुखावहम्।
वाहनाम्बरपश्वादि गृहे गोधनसंकुलम्॥40॥
महीसुतेन संदृष्टे शत्रुवृद्धिः सुखक्षयम्।
व्यवसायात्फलं नेष्टं ज्वरातीसारमेव च॥41॥

वृहस्पति दशा में बुधान्तर्दशा हो तो बुध यदि केन्द्र, त्रिकोण, लाभस्थान में हो या स्वोच्च स्वक्षेत्र में हो या गुरु के साथ हो तो धनलाभ, देहसुख, राज्यप्राप्ति, सुख, किसी बड़े व्यक्ति की सहायता से मनोरथपूर्ति, वाहन पशुधन, गोधनवृद्धि होती है।

यदि बुध पर मंगल की दृष्टि हो तो शत्रुवृद्धि व सुख में कमी तथा व्यवसाय में कमी होने के साथ शरीर में साधारण रोग भी होते हैं।

दायेशाद्भाग्यकोणे वा केन्द्रे वा तुंगराशिगे।
स्वदेशे धनलाभः स्यात् पितृमातृसुखावहम्॥42॥

गजवाजिसमायुक्तो राजमित्रप्रसादकम्।
दायेशात्षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥43॥
विदेशगमनं चैव मार्गे चौरभयं तथा॥44॥
व्रणदाहाक्षिरोगाश्च नानादेशपरिच्युतिः।

यदि बुध, महादशेश से नवम या पंचम में या केन्द्र में हो या अपनी उच्च राशि में हो तो स्वदेश में ही धनलाभ, माता-पिता का सुख, हाथी घोड़ों का सुख, राजकीय मित्र से लाभ होता है।

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त बुध हो और शुभ दृष्टि से हीन हो तो धन-धान्य की हानि, विदेश पलायन, रास्ते में चोरी का भय, शरीर पर चोट, जलन, नेत्र रोग, अनेक स्थानों से भ्रंश होता है।

लग्नात्षष्ठाष्टरिःफे वा व्यये पापसंयुते॥45॥
अकस्मात्कलहं चैव गृहेनिष्ठुरभाषणम्।
चतुष्पाज्जीवहानिः स्याद् व्यवहारात्तथैव च॥46॥
अपमृत्युभयं चैव शत्रूणां कलहो भवेत्।
शुभदृष्टे शुभैर्युक्ते दारसौख्यं धनागमम्॥47॥
आदौ शुभं देहसौख्यं वाहनाम्बरलाभदः।
अन्ते तु धनहानिः स्यात् स्वात्मसौख्यं न जायते॥48॥

लग्न से 6.8.12 में पापयुक्त बुध हो तो अचानक कलह, घर में कठोर भाषण का वातावरण, चौपाये धन की हानि, व्यवसाय में या लेन-देन में हानि, अपमृत्यु का भय, शत्रुओं से कलह होती है।

यदि वह बुध शुभ दृष्ट युक्त हो तो धन लाभ, स्त्री सुख, दशारम्भ में शुभ फल तथा अन्त में धनहानि व मन में क्लेश होता है।

द्वितीयद्यूननाथे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥49॥
बुधप्रीतिकरं चैव दानं शान्तिं च कारयेत्।
आयुर्वृद्धिकरं चैव सर्वसौभाग्यसम्पदः॥50॥

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। तब विष्णुसहस्रनाम का पाठ, बुध हेतु दान व शान्ति विधान कराना चाहिए। तब आयु व सौभाग्य बढ़ता है।

गुरुदशा : केतुभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते केतौ शुभग्रहसमन्विते।
अन्नसौख्यं धनावाप्तिः कुत्सितान्नं च भोजनम्॥51॥
परान्नं चैव श्राद्धान्नं पापमूलाद्धनानि च।

वृहस्पति की दशा में केतु अन्तर्दशा होने पर, केतु यदि शुभ ग्रह से युक्त हो तो घर में धान्य वृद्धि, धन लाभ, लेकिन पराया अन्न या श्राद्धभोजन के योग, पाप कार्यों से धन लाभ होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥52॥
राजकोषं धनच्छेदं बन्धनं रोगपीडनम्।
बलहानिः पितृद्वेषं भ्रातृद्वेषं मनोरुजः॥53॥

गुरु से 6.8.12 में पापयुक्त केतु हो तो राजकोप, धनहानि, रोग, बन्धन, शक्ति में कमी, पिता व भाइयों से द्वेष, मन में रोग होता है।

दायेशात्सुतभाग्यस्थे वाहने कर्मगेऽपिवा।
नरवाहनयोगश्च गजाश्वाम्बरसंकुलम्॥54॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं गोमाहिष्यादिलाभकृत्।
यवनप्रभुमूलाद्वा पीतवस्त्रादिलाभकृत्॥55॥
द्वितीयद्यूनभावे वा देहबाधाभविष्यति।
छागदानं प्रकुर्वीत मृत्युंजय जपं चरेत्॥56॥
सर्वदोषोपशमनं शान्तिं कुर्याद्विधानतः॥

महादशेश गुरु से 6.5.9.10 भावों में केतु हो तो सहायक या ड्राइवर समेत वाहन योग, हाथी घोड़ों व उत्तम वस्त्रादि से युक्त वैभव, व्यवसाय से प्रचुर लाभ, दुधारू पशुओं की प्राप्ति होती है।

यदि केतु 2.7 भावों में हो तो शरीर कष्ट होता है, तब बकरे का दान, मृत्युञ्जय जप तथा केतु की शान्ति करनी चाहिए।

गुरुदशा : शुक्रभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते शुक्रे भाग्यकेन्द्रेशसंयुते॥57॥
लाभे वा सुतराशिस्थे स्वक्षेत्रे शुभसंयुते।
नरवाहनयोगश्च गजाश्वाम्बरसंकुलम्॥58॥
महाराजप्रसादेन देशाधिप्यं महत्सुखम्।
नीलाम्बराणि शस्त्राणि लाभश्चैव भविष्यति॥59॥
पूर्वस्यां स्वप्रयाणेन धनलाभो भविष्यति।
कल्याणं च महत्प्रीतिः पितृमातृसुखावहम्॥60॥
देवतागुरुभक्तिश्च अन्नदानं भवेत्तथा।
तटाकं गोपुरादीनि कृत्वा पुण्यानि भूरिशः॥61॥

वृहस्पति की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा हो और नवमेश या केन्द्रेश से युक्त हो, या लाभ भाव में हो या पंचम में हो, या स्वराशि, स्वोच्च में हो या किसी शुभ ग्रह से युक्त हो तो दशाकाल में सेवक, चालक सहित वाहन का सुख, हाथी

घोड़ों व वस्त्राभूषणों का सुख होता है।

किसी समर्थ व्यक्ति की सहायता से उत्तम राजयोग, बहुत सुख, धन, वस्त्र व अस्त्र-शस्त्रों का लाभ होता है।

पूर्व दिशा की यात्रा से धन लाभ होता है। सर्वत्र कल्याण, सब से प्रेमभाव, माता पिता का सुख, देवों व गुरुजनों के प्रति भक्ति, अन्नदान की सामर्थ्य, सार्वजनिक सुख सुविधा के निर्माण (मुख्यद्वार, कुआँ आदि) तथा बहुत से पुण्य कार्य होते हैं।

षष्ठाष्टम व्यये नीचे दायेशाद् वा तथैव च।
कलहं बन्धुवैषम्यं दारपुत्रादि पीडनम्॥62॥
मन्दारराहुसंयुक्ते कलहं राजविद्वरम्।
स्त्रीमूलात्कलहं चैव श्वसुरात्कलहं तथा॥63॥
सोदरेण विवादः स्याद् धनधान्य परिच्युतिम्।

यदि शुक्र लग्न या दशेश से 6.8.12 में हो तो कलह, बन्धु-बान्धवों से विरोध, स्त्री व पुत्र को पीड़ा होती है।

यदि शुक्र मंगल, शनि, राहु से युक्त हो तो भी कलह, राजकीय विभागों से कष्ट व विरोध, स्त्री के कारण कलह, ससुराल पक्ष से मनमुटाव, भाई से मनोमालिन्य तथा धन-धान्य की हानि होती है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे धने वा भाग्यगेऽपि वा॥64॥
धनधान्यादिलाभश्च स्त्रीलाभो राजदर्शनम्।
वाहनं पुत्रलाभश्च पशुवृद्धिर्महत्सुखम्॥65॥
गीतवाद्यप्रसंगादि विद्वज्जनसमागमः।
दिव्यान्नभोजनं सौख्यं स्वबन्धुजनपोषकृत्॥66॥
द्विसप्तमाधिपे शुक्रे तदीशेन युतेक्षिते।
अपमृत्युभयं तस्य स्त्रीमूलादौषधादिभीः॥67॥
तस्य रोगस्य शान्त्यर्थं शान्तिकर्म समाचरेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धिकृत्॥68॥

महादशेश से 1.2.4.7.9.10 भावों में शुक्र हो तो धन-धान्य का लाभ, स्त्री सुख, राजा से मिलन, वाहन-पुत्र-सुख, पशुवृद्धि व बड़े सुख होते हैं।

गीत, वाद्य के प्रसंग, विद्वानों से समागम, दिव्य भोजन, अपने बन्धुओं की सहायता करने की सामर्थ्य होती है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो या द्वितीयेश सप्तमेश से युक्त दृष्ट हो तो स्त्री के कारण या रोग से अपमृत्यु का भय होता है।

शान्ति के लिए शान्ति विधान करें। सफेद गाय या दुधारू भैंस का दान करने से आयु व स्वास्थ्य की रक्षा होती है।

गुरुदशा : सूर्यभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
केन्द्रे वाथ त्रिकोणे च दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥69॥
भाग्ये वा बलसंयुक्ते दायेशाद्वा तथैव च।
तत्काले धनलाभः स्याद् राजसम्मानवैभवम्॥70॥
वाहनाम्बरपश्वादिभूषणं पुत्रसम्भवम्।
मित्रप्रभुवशादिष्टं सर्वकार्यं शुभावहम्॥71॥

वृहस्पति की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो और सूर्य स्वोच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय एकादश, नवम भाव में बलवान् हो या दशेश से इन्हीं भावों में स्थित हो तो तत्काल धन-लाभ, राज-सम्मान, वैभव, वाहन सुख, वस्त्राभूषण सुख, पुत्र सुख, हितैषी समर्थ मित्र का भरपूर सहयोग, सब कामों में शुभ फल होते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च।
शिरोरोगादिपीडा च ज्वरपीडा तथैव च॥72॥
सत्कर्मविहीनत्वं पापकर्मतथैव च।
सर्वत्रजनविद्वेषं आत्मबन्धुवियोगकृत्॥73॥
अकस्मात्कलहं चैव जीवस्यान्तर्गते रवौ।
द्वितीयद्यूननाथे तु देहपीडा भविष्यति॥74॥
तद्दोषपरिहारार्थमादित्यहृदयं जपेत्।
सर्वपीडोपशमनं सूर्यप्रीतिं च कारयेत्॥75॥

यदि लग्न या दशेश से 6.8.12 में सूर्य हो तो सिर में पीड़ा, रोग, ज्वर, सिर के रोग, सत्कर्मों की असफलता या उनमें अरुचि, पापकर्म में मति, सर्वत्र जनसामान्य का विरोध, अपने बन्धुओं व सहायकों से वियोग, अचानक कलह होती है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। तब आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें तथा सूर्य का जप-दान आदि करने से सब पीड़ाएँ नियन्त्रित होती हैं।

गुरुदशा : चन्द्रभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते चन्द्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षराशिस्थे पूर्णचन्द्रे बलैर्युते॥76॥
दायेशाच्छुभराशिस्थे राजसम्मानवैभवम्।
दारपुत्रादिसौख्यं च क्षीराणां भोजनं तथा॥77॥
सत्कर्मजनिता कीर्तिः पुत्रपौत्रादिवृद्धिकृत्।

महाराजप्रसादेन सर्वसौख्यं धनागमम्॥78॥
अनेकजनसौख्यं स्याद् दानधर्मादि संग्रहः।

बृहस्पति में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो और चन्द्रमा केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में, स्वक्षेत्र, स्वोच्च में बलवान् व पूर्ण बिम्ब वाला हो अथवा दशेश से शुभ भावों में हो तो राज-सम्मान, वैभव, स्त्री-पुत्रों का सुख, दुग्धभोजन, सत्कर्मों से यश, पुत्र-पौत्रों का सुख, सब सुख, धन-लाभ, राजकीय सहयोग, बहुत से लोगों का सुख, दान-धर्म का अर्जन होता है।

षष्ठाष्टमव्यये चन्द्रे त्रिकोणे पापसंयुते॥79॥
दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते।
मानार्थबन्धुहानिश्च विदेशपरिविच्युतिः॥80॥
नृपचौरादिपीडा च दायाद्यजनविड्वरम्।
मातुलादि वियोगश्च मातृपीडा तथैव च॥81॥
द्वितीयसप्तमाधीशै देहपीडा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गापाठं च कारयेत्॥82॥

यदि चन्द्रमा 6.8.12 में हो या त्रिकोण में पापयुक्त हो या दशेश से 6.8. 12 में निर्बल हो तो सम्मान, धन, बन्धुजनों की हानि, विदेश से पलायन करने की नौबत, राजा व चोर आदि से पीड़ा, सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद, मामा व माता को पीड़ा होती है।

यदि चन्द्र या गुरु 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। तब दुर्गापाठ कराना लाभदायक होता है।

गुरुदशा : मंगलभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशभेऽपि वा॥83॥
विद्याविवाहकार्याणि ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
जनसामर्थ्यमाप्नोति सर्वकार्यार्थसिद्धिदम्॥84॥

बृहस्पति में मंगल की अन्तर्दशा हो और मंगल लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में हो, स्वोच्च, स्वक्षेत्र, स्वनवांश या उच्च नवांश में हो तो शिक्षा, वृद्धि, विवाहादि कार्य, गाँव आदि का आधिपत्य जायदाद लाभ, जनसमर्थन, सर्व कार्य सिद्धि होती है।

दायेशात्केन्द्रलाभस्थे भाग्ये वा धनगेऽपि वा।
शुभयुक्ते शुभैर्दृष्टे धनधान्यादि सम्पदः॥85॥
मिष्टान्नदानविभवं राजप्रीतिकरं शुभम्।
स्त्रीसौख्यं च सुतावाप्तिः पुण्यतीर्थफलप्रदम्॥86॥

वृहस्पति से केन्द्र, नवम, द्वितीय या लाभ-स्थान में मंगल शुभयुक्त या शुभ-दृष्ट हो तो धन-धान्य व सम्पत्ति की वृद्धि, मिष्टान्न खिलाने के सुयोग, राजा की अनुकम्पा, स्त्रीसुख, पुत्रप्राप्ति, पुण्यदायक तीर्थों की यात्रा होती है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा नीचगेऽपि वा।
पापयुक्तेक्षिते वापि धान्यार्थगृहनाशनम्॥87॥
नानारोगभयं दुःखं नेत्ररोगादिसम्भवम्।
पूर्वार्धे क्लेशमाधिक्यमपरार्धे महत्सुखम्॥88॥
द्वितीयद्यूननाथेतु देहजाड्यं मनोरुजः।
अनड्वाहं प्रकुर्वीत सर्वसम्पात्प्रदायकम्॥89॥

महादशेश वृहस्पति से 6.8.12 में मंगल हो या नीचगत हो या पापदृष्ट युक्त हो तो धन-धान्य, जायदाद व मकान की हानि होती है।

अनेक रोगों से दुःख, नेत्र रोग, पूर्वार्ध में अधिक कष्ट, अपरार्ध में सुख होता है। यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो शरीर में शिथिलता होती है। तब साँड छोड़ना चाहिए। उससे कष्ट निवृत्ति होती है।

गुरुदशा : राहुभुक्ति

जीवस्यान्तर्गते राहौ स्वोच्चे वा केन्द्रगेऽपि वा।
मूलत्रिकोणे भाग्ये वा केन्द्राधिपसमन्विते॥90॥
शुभयुक्तेक्षिते वापि योगभुक्तिं समादिशेत्।
भुक्त्यादौ शरमासांश्च धनधान्यपरिश्रमः॥91॥
देशग्रामाधिकारं च यवनप्रभुदर्शनम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्बहुसेनाधिपत्यताम्॥92॥
दूरयात्रादिगमनं पुण्यधर्मादिसंग्रहः।
सेतुस्नानफलावाप्तिरिष्टसिद्धिः सुखावहम्॥93॥

वृहस्पति में राहु की अन्तर्दशा होने पर, राहु यदि केन्द्र, त्रिकोण में हो या अपने मूलत्रिकोण में हो या केन्द्रेश के साथ हो, या शुभ ग्रह से युक्त-दृष्ट हो तो योगकारक का फल मिलता है। लेकिन शुरू के 5 मास अधिक मेहनत करनी पड़ती है। बाद में देश या ग्राम का अधिकार, यवन राजा से भेंट, घर में कल्याणकारी बातें, बहुत से लोगों का आधिपत्य या सेनापतित्व, दूर देश की यात्रा, पुण्य वृद्धि, रामेश्वरम् आदि दूरस्थ तीर्थों की यात्रा, अभीष्ट सिद्धि तथा सुख होते हैं।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा पापसंयुते।
चौराहिव्रणभीतिश्च राजवैषम्यमेव च॥94॥
गृहकर्मकलापेन व्याकुली भवति ध्रुवम्।
सोदरेण विरोधः स्याद् दायाद्यजनविग्रहः॥95॥

गृहे त्वशुभकार्याणि दुःस्वप्नादिभयं ध्रुवम्।
अकस्मात्कलहं चैव क्षूद्रशून्यादि रोगकृत्॥96॥
द्विसप्तमस्थिते राहौ देहबाधां विनिर्दिशेत्।
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत्॥97॥
छागदानप्रकुर्वीत सर्वसौख्यादिमादिशेत्॥98॥

यदि राहु दशेश से 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो चोटभय, चोरभय, राज्य का असहयोग, घरेलू कामों से व्याकुलता, भाइयों से विरोध, उत्तराधिकार के विवाद, घर में अशुभ कार्य, दुःस्वप्न, अचानक कलह, छोटे-छोटे रोगों से पीड़ा, अकेलापन होता है।

यदि राहु 2.7 भावों में हो तो शरीर कष्ट निवृत्ति के लिए मृत्युञ्जय जप व बकरी का दान करें, तब सुख होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
गुरोरन्तर्दशाफलाध्यायोऽष्टादशः॥18॥
॥आदितः श्लोकाः 1451॥

19

॥ शन्यन्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

केन्द्रस्थस्य शनेर्दाये यदा पापहृतिस्तदा।
स्थानच्युतिः प्रवासश्च नृपचौराग्निपीडनम्॥1॥
तथाविधशनेर्दाये शुभभुक्तौ महत्सुखम्।
नृपाभिषेकमर्थाप्तिर्देशग्रामाधिपत्यता ॥2॥
फलमीदृशमादौ तु भुक्त्यन्ते रोगपीडनम्।
परापवादं बन्धूनां मरणं धननाशनम्॥3॥

केन्द्रगत शनि की दशा में जब पापग्रह की अन्तर्दशा हो तब स्थान परिवर्तन, पदच्युति, व्यर्थ का प्रवास, विभिन्न प्रकार की पीड़ाएँ होती हैं।

ऐसे ही शनि की दशा में शुभ अन्तर्दशा हो तो बहुत सुख, पदप्राप्ति, धनलाभ, आधिपत्य प्राप्त होता है।

शुभ अन्तर्दशा के आरम्भ में शुभ फल, लेकिन अन्त में रोगादि से पीड़ा होती है। बदनामी, बन्धुओं से कलह, मृत्यु तथा धन हानि सम्भव होती है।

त्रिकोणस्थशनेर्दाये पितृपुत्रविनाशनम्।
पापभुक्तौ महत्कष्टं कर्मनाशमथापि वा॥4॥
वाताक्षिमूलरोगं च स्वबन्धुकलहं तथा।
उद्योगभंगं दुःखं च स्थलधान्यविनाशनम्॥5॥
तथाविधशनेर्दाये शुभभुक्तौ महत्सुखम्।
राजपूज्यं कृषेर्लाभो धनधान्याभिवर्धनम्॥6॥

त्रिकोणस्थ शनि की दशा में पापान्तर्दशा हो तो पिता व पुत्र को कष्ट, अन्यविध कष्ट, कार्यहानि भी होती है।

वातरोग, नेत्रदोष, बन्धुओं से कलह, परिश्रम की विफलता, दुःख, चलते काम में हानि होती है।

ऐसे शनि की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो बहुत सुख, राजपूज्यता, व्यवसाय में लाभ, धन-धान्य की वृद्धि होती है।

स्वबन्धुदारपुत्राणामारोग्यं भूषणादिकम्।
भृत्यमित्रार्थसम्पत्तिं लभते धर्मसंग्रहम्॥7॥

त्रिकोणस्थ शनि की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो अपने परिवार जनों का अच्छा स्वास्थ्य, आभूषणादि की वृद्धि, धन-सम्पत्ति व धर्म वृद्धि होती है।

षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य शनेर्दाये शुभेतरा।
हृतिर्दुःखं महत्कष्टं स्थाननाशं धनक्षयम्॥8॥
गुह्यरोगं विषार्तिं च ज्वरवह्निनृपाद्भयम्।
अत्याप्तबन्धुमरणमुद्योगस्य विनाशनम्॥9॥

6.8.12 भावगत शनि की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो दुःख, कष्ट, स्थानहानि, धनक्षय, गुप्तरोग, विषभय, रोग, अग्नि व राजपक्ष से भय, किसी प्रिय सहयोगी की मृत्यु, परिश्रम की असफलता होती है।

षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य शुभपाके महत्सुखम्।
आरोग्यं कान्तिवृद्धिश्च देशग्रामाधिपत्यता॥10॥

6.8.12 भावगत शनि की दशा में शुभ भुक्ति हो तो सुख, स्वस्थ शरीर, शोभावृद्धि देश या ग्राम की प्रमुखता प्राप्त होती है।

तृतीयलाभराशिस्थशनेः शुभहृतिर्यदा।
पाके शुभ फलं प्रोक्तं नृपलालानभूषणम्॥11॥
तथाविधशनेर्दाये यदा पापहृतिर्भवेत्।
तदा धनाप्तिर्दुःखं च भ्रातृवर्गविनाशनम्॥12॥
विदेशयानं कलहं वैकल्यं भृत्यनाशनम्।
कुभोजनं परप्रेष्यं कुस्त्रीसंगमनं लभेत्॥13॥

3.11 भावगत शनि की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो शुभ फल, राजकीय जनों का सहयोग मिलता है।

उसी शनि की दशा में पापान्तर्दशा हो तो धनलाभ, अन्य प्रकार से दुःख, भ्रातृवर्ग की हानि होती है।

विदेशयात्रा, कलह, विफलता, नौकरों की कमी, खराब भोजन, दूसरों की अधीनता खराब स्त्री से सम्पर्क होता है।

धनस्थितशनेर्पाके यदा पापहृतिर्भवेत्।
राजदण्डं महाविघ्नं कारागृहनिरोधनम्॥14॥
उत्साहभंगं देहार्तिं ज्वरातीसारपीडनम्।
राज्यनाशो गवाश्वानां मरणं वाहनाद्भयम्॥15॥

द्वितीयस्थ शनि की दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजदण्ड, बहुत से

विघ्न, जेलयात्रा सम्भव होती है।

उत्साहभंग, शरीर कष्ट, रोग, राज्यहानि, पशु धन व वाहन की हानि, मृत्यु, वाहन से दुर्घटना सम्भव होती है।

द्वितीयस्थशनेर्पाके शुभभुक्तौ मनोदृढम् ।
उपकर्तृत्वमन्येशां द्यूतविद्याविनोदकम्॥16॥
गानकेलीरहस्यं च भोजनाम्बरभूषणम् ।
उद्योगसिद्धिं राज्याप्तिं मणिविद्रुमकांचनम्॥17॥

द्वितीयस्थ शनि की दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो मनोबल वृद्धि, दूसरों का उपकार करने की सामर्थ्य, जुआ आदि में मन रमना, गीत-संगीत, नृत्य गोष्ठियाँ, सुन्दरियों का सुख, उत्तम भोजन, वस्त्राभूषण, परिश्रम की सफलता, राज्यलाभ, मणिमुक्तादि का लाभ होता है।

शनिदशा : शनिभुक्ति

मूलत्रिकोणे स्वर्क्षे वा तुलायामुच्चगेऽपि वा।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा राजयोगादिसंयुते॥18॥
राज्यलाभो महत्सौख्यं दारपुत्राभिवर्धनम् ।
वाहनभयसंयुक्तं गजाश्वाम्बरसंकुलम्॥19॥
महाराजप्रसादेन अश्वान्दोल्यादिलाभकृत् ।
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद्ग्रामभूम्यादिलाभकृत्॥20॥

शनि यदि उच्च, परमोच्च, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्र में हो या अच्छी राशि में केन्द्र त्रिकोण, लाभ में हो या योगकारक ग्रह से युक्त हो तो दशान्तर्दशा में राज्यप्राप्ति, बहुत सुख, स्त्री पुत्रों की वृद्धि, कई वाहनों का सुख, हाथी घोड़ों का वैभव, बड़े समर्थ लोगों की प्रसन्नता से खास प्रतिष्ठा व समृद्धि की प्राप्ति, चौपाये पशुओं से लाभ, जायदाद प्राप्ति होती है।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे नीचे वा पापसंयुते ।
तद्भुक्त्यादौ राजप्रीतिं विषशस्त्रादिपीडनम्॥21॥
रक्तस्रावं गुल्मरोगमतीसारादिपीडनम् ।
मध्ये चौरादिभीतिश्च देशत्यागं मनोरुजम्॥22॥
अन्ते शुभकरं चैव ग्रामभूम्यादि लाभकृत् ।
द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥23॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजय जपं चरेत्॥23॥

6.8.12 भावों में खराब राशि में या नीचगत या पापयुक्त शनि हो तो ऐसे शनि की दशा में शनि की ही अन्तर्दशा रहने पर आरम्भ में राजकीय लोगों से सम्पर्क व सहयोग तथा शस्त्रादि से पीड़ा, रक्तस्राव, भीतरी फोड़े से पीड़ा, दस्त

आदि से शरीर कष्ट होता है।

मध्य में चोरादि से भय, स्थान परिवर्तन मानसिक सन्ताप होता है। अन्त में शुभ फल तथा जमीन जायदाद आदि का लाभ होता है।

यदि शनि 2.7 भवेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है। इस दोष को दूर करने के लिए मृत्युंजय जप करना चाहिए।

शनि दशा : बुधभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते सौम्ये त्रिकोणे केन्द्रगेऽपि वा।
सन्मानं च यशः कीर्तिर्विद्यालाभं धनागमम्॥24॥
स्वदेशे सुखमाप्नोति वाहनादिफलैर्युते।
यज्ञादिकर्मसिद्धिश्च राजयोगादिसम्भवम्॥25॥
देहसौख्यं समुत्साहं गृहे कल्याणसम्भवम्।
सेतुस्नानफलावाप्तिस्तीर्थयात्रादिकं भवेत्॥26॥
वाणिज्याद्धनलाभश्च पुराणश्रवणादिकम्।
अन्नदानफलं चैव नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥27॥

शनि दशा में बुध भुक्ति हो और बुध केन्द्र या त्रिकोण में हो तो सम्मान, यश, कीर्ति, विद्या व धन का लाभ होता है।

अपने स्थान पर ही व्यक्ति सम्मान व धन प्राप्त करता है। वाहन सुख होता है। यज्ञादि धर्मकार्य सिद्धि होते हैं। शरीर में सुख, मन में उत्साह, घर में अच्छी बातों का उदय, दूर की तीर्थयात्राओं का योग, व्यवसाय से धनलाभ, कथा-पुराण श्रवणादि के योग, अन्नदान की सामर्थ्य, उत्तम भोजन आदि प्राप्त होता है।

षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये नीचे वास्तंगते यदि।
रव्यारफणिसंयुक्ते दायेशाद् वा तथैव च॥28॥
नृपाभिषेकमर्थाप्तिर्देशग्रामाधिपत्यताम्।
फलमीदृशमादौ तु मध्यान्ते रोगपीडनम्॥29॥
नष्टानि सर्वकार्याणि व्याकुलं च मनोभयम्।
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति॥30॥
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्।
अन्नदानं प्रकुर्वीत सर्वसम्पत्प्रदायकम्॥31॥

6.8.12 भावों में बुध नीचगत, अस्त, सूर्य, मंगल, राहु से युक्त हो या दशेश से 6.8.12 में हो तो पदप्राप्ति, धनलाभ, आधिपत्य होता है। यह फल दशा के आरम्भ में होगा। मध्य व अन्त में रोगपीड़ा, सब कामों में असफलता, मन में व्याकुलता होती है।

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो देहबाधा सम्भव है। दोषशान्ति के लिए विष्णु

सहस्रनाम का पाठ व अन्नदान करना चाहिए। तब सब तरह से सुख होता है।

शनिदशा : केतुभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते केतौ शुभदृष्टियुतेक्षिते।
स्वोच्चे वा शुभराशिस्थे योगकारकसंयुते॥32॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमम्।
गंगादिसर्वतीर्थेषु स्नानं दैवतृदर्शनम्॥33॥

शनि में केतु अन्तर्दशा रहने पर, यदि केतु जन्म चक्र में शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो, स्वोच्च में हो या शुभ राशि में हो या योगकारक ग्रह से युक्त हो।

अथवा लग्नेश से युक्त हो तो शुरू में सुख व धन लाभ होता है। बहुत से तीर्थों की यात्रा व देवस्थानों के दर्शन पूजन का योग होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा तृतीये लाभगेऽथवा।
सामर्थ्यं धर्मबुद्धिश्च सौख्यं नृपसमागमः॥34॥

महादशेश शनि से केन्द्र, त्रिकोण, तृतीय या लाभ में केतु हो तो सामर्थ्यवृद्धि, धर्मबुद्धि सुख व राजा से समागम होता है।

मन्दस्यान्तर्गते केतौ पापग्रहयुतेक्षिते।
नीचे वा शत्रुराशिस्थे स्थानभ्रंशं महद्भयम्॥35॥
दारिद्र्यं बन्धनाद्भीतिः पुत्रदारादिनाशनम्।
स्वप्रभोश्च महाक्लेशं विदेशगमनं तथा॥36॥

केतु यदि पापयुक्त दृष्ट हो तो या शुभ राशि हो तो स्थानभ्रंश, भय, दरिद्रता, बन्धन का भय, स्त्री-पुत्रादि की हानि, अपने स्वामी से बहुत कष्ट, क्लेश, विदेश गमन आदि फल होते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये केतौ दायेशद्वा तथैव च।
अपमृत्युभयं चैव कुत्सितान्नस्य भोजनम्॥37॥
शीतज्वरातिसारश्च व्रणचौरादिपीडनम्।
दारपुत्रवियोगश्च संतापो भवति ध्रुवम्॥38॥
द्वितीयद्यूनराशिस्थे देहपीडा भविष्यति।
छागदानं प्रकुर्वीत ह्यपमृत्युभयं हरेत्॥39॥

6.8.12 भावों में केतु हो या महादशेश से 6.8.12 में स्थित हो तो अपमृत्यु भय, खराब भोजन, शीत ज्वर, दस्त, अतिसार, घाव, चोट, दुष्टजनों से पीड़ा, स्त्री-पुत्रों से वियोग, मन में सन्ताप होता है।

2.7 भावों में केतु हो तो शरीर कष्ट होता है। तब बकरे का दान करना चाहिए।

शनिदशा : शुक्रभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते शुक्रे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
केन्द्रे वा शुभसंयुक्ते त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥40॥
दारपुत्रधनप्राप्तिर्देहारोग्यं महोत्सवम्।
महाराजप्रसादेन हीष्टसिद्धिः सुखावहम्॥41॥
गृहे कल्याणसम्पत्ति राज्यलाभो महत्सुखम्।
सन्मानं प्रभुसम्मानं प्रियवस्त्रादिलाभकृत्॥42॥
द्वीपान्तराद्वस्त्रलाभः श्वेताश्वमहिषी तथा।

यदि शुक्र स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो, केन्द्र या त्रिकोण या लाभ में अच्छी राशि में शुभ ग्रह से युक्त हो तो शनि दशा व शुक्र अन्तर्दशा में स्त्रीपुत्र, शरीर का सुख, घर में विशेष उत्सव का माहौल, समर्थ लोगों का सहयोग, सुख, मनोरथ सिद्धि, कल्याणकारी बातों का उदय, राज्यप्राप्ति, सम्मान, अधिकारी की प्रशंसा, उत्तम वस्त्राभूषणों की भेंट, दूरस्थ प्रदेशों से भेंट, उपहार प्राप्ति, सफेद वाहन व दुधारू पशु की प्राप्ति होती है।

विशेष नियम

गुरुचारवशाद्भाग्यं सौख्यं च धनसम्पदः॥43॥
शनिचारान्मनुष्योऽसौ योगमाप्नोत्यसंशयम्।

शनि व शुक्र की जब परस्पर दशान्तर्दशा हो, उस दौरान जब वृहस्पति का गोचर जन्मराशि से शुभ व बलवान् हो तब अधिक उत्तम अर्थात् कहे गए फल से अधिक सुख व सम्पदा होंगी। इसी तरह जब शनि का उत्तम गोचर हो तो राजयोग व योगों से फल विशेषतया मिलेंगे।

स्पष्ट है कि इनकी दशान्तर्दशा में जब शनि व गुरु का गोचर साधारण हो तो साधारण शुभ फल तथा अनिष्टकारक गोचर हो तो अति साधारण, प्रत्युत अशुभ फल भी मिलते हैं।

उत्तरकालामृत में बताया गया है कि शनि व शुक्र ये दोनों ही उत्तम राशि व उत्तम भाव में हों तो इनकी दशान्तर्दशा में अपमान, पदच्युति आदि अशुभ फल होते हैं। इसके विपरीत इनमें से कोई एक अशुभ राशि या अशुभ भाव में हो तो विशेष उत्कट अच्छे फल होते हैं। अनुभव में भी बहुत्र ऐसा ही देखा गया है। यदि दोनों ही निर्बल हों तो भी शुभ फल देते हैं। अतः विचारपूर्वक फल कहना चाहिए।

शत्रुनीचास्तगे शुक्रे षष्ठाष्टव्ययराशिगे॥44॥
दारनाशं मनःक्लेशं स्थाननाशं मनोरुजम्।
दारादिस्वजनक्लेशं सन्तापजनविड्वरम्॥45॥

यदि शुक्र नीचगत, शत्रु क्षेत्री, अस्तंगत, 6.8.12 भावगत हो तो स्त्रीनाश, मन में क्लेश, स्थानहानि, मानसिक सन्ताप, स्वजनों को कष्ट, लोगों का प्रबल विरोध होता है।

दायेशाद्भाग्यगेनैव केन्द्रे वा लाभसंयुते।
राजप्रीतिकरं चैव मनोऽभीष्टप्रदायकम्॥46॥
दानधर्मदयायुक्तस्तीर्थयात्रादिकं फलम्।
शास्त्रार्थकाव्यरचनावेदान्तश्रवणादिकम्॥47॥
दारपुत्रादिसौख्यं च वाहनछत्रलाभदम्।

शनि से शुक्र नवम, केन्द्र, लाभ में स्थित हो तो राजकीय लोगों का स्नेह, अभीष्ट सिद्धि, दान धर्म दया की वृद्धि, तीर्थयात्रा का फल, शास्त्रों के अर्थो का मनन, काव्य विनोद, वेदान्त आदि में अभिरुचि, स्त्री पुत्रों का सुख, वाहन व प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

दायेशाद्व्ययगे शुक्रे षष्ठे वा ह्यष्टमेऽपि वा॥48॥
नेत्रपीडाज्वरभयं स्वकुलाचारवर्जितम्।
कपोले दन्तशूलादिहृदि गुह्यनिपीडनम्॥49॥
जलभीतिर्मनस्तापं वृक्षात्पतनसम्भवम्।
राजद्वारे जनद्वेषं सोदरेण विरोधनम्॥50॥
द्वितीयसप्तमाधीशे आत्मक्लेशो भविष्यति।
श्वेतां गां महिषीं दद्याद् दुर्गादेवीजपं चरेत्॥51॥

महादशेश से 6.8.12 में शुक्र हो तो नेत्रपीड़ा, ज्वरादि रोगों का भय, कुलाचार के विपरीत आदतें, दाँत में विकार, हृदय में विकार, गुप्तांगों में रोग या भीतरी रोग, जल से भय, ऊँचे स्थान से गिरने का भय, राजद्वार में वैर विरोध, भाइयों से मन मुटाव होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए श्वेत गो दान तथा दुर्गापाठ करें।

शनिदशा : सूर्यभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा।
भाग्याधिपेन संयुक्ते केन्द्रलाभत्रिकोणगे॥52॥
शुभदृष्टियुते वापि स्वप्रभोश्च महत्सुखम्।
गृहे कल्याणसम्पत्तिः पुत्रादिसुखवर्धनम्॥53॥
वाहनाम्बरपश्वादि गृहे गोक्षीरसंकुलम्।

शनि में सूर्य की अन्तर्दशा होने पर, सूर्य यदि उच्च या स्वक्षेत्र में हो, या नवमेश से युक्त हो, केन्द्र, लाभ या त्रिकोण में हो, शुभयुक्त या दृष्ट हो तो अपने अधिकारी

से विशेष सुख व अनुकूलता, घर में उत्तम बातों का उदय, पुत्रादि का सुख, वाहन, वस्त्राभूषण व पशुधन की वृद्धि तथा घर में दूध घी की बहुतायत होती है।

षष्ठाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च॥54॥
हृद्रोगो मानहानिश्च स्थानभ्रंशो मनोरुजः।
इष्टबन्धुवियोगश्च उद्योगस्य विनाशनम्॥55॥
तापज्वरादिपीडां च व्याकुलं भयमेव च।
आत्मसम्बन्धिमरणमिष्टबन्धुवियोगकृत्॥56॥
द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
सूर्यप्रीतिकरं दानं दद्यादायुर्विवृद्धये॥57॥

लग्न या महादशेश से 6.8.12 में सूर्य हो तो हृदयरोग, मानहानि, स्थानभ्रंश, मनोविकार, इष्ट बन्धुओं का वियोग, परिश्रम की असफलता, बुखार आदि से पीड़ा, व्याकुलता, भय, अपने प्रियजन का वियोग, किसी निकटवर्ती की मृत्यु होती है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो देहबाधा दूर करने हेतु, सूर्य की प्रसन्नता के लिए दान करें।

शनिदशा : चन्द्रभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते चन्द्रे जीवदृष्टिसमन्विते।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥58॥
पूर्णचन्द्रे सौम्ययुक्ते राजप्रीतिसमागमम्।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्॥59॥
सौभाग्यं सुखवृद्धिश्च भृत्यानां परिपालनम्।
पितृमातृकुले सौख्यं पशुवृद्धिः सुखावहम्॥60॥

शनि में चन्द्रमा की अन्तर्दशा हो और चन्द्रमा गुरु युक्त या दृष्ट हो या चन्द्र उच्चगत, स्वक्षेत्र में हो, केन्द्र, त्रिकोण या लाभ स्थान में हो, या पूर्ण चन्द्रमा शुभयुक्त हो तो राजकीय जनों की प्रीति, समर्थ लोगों की सहायता से वाहनादि, वस्त्राभूषणों का सुख, सौभाग्य, सुख, नौकरों का भरण-पोषण करने की सामर्थ्य, माता पिता के कुलों में वृद्धि व सुख, पशुधन की वृद्धि तथा सुख होता है।

क्षीणे वा पापसंयुक्ते पापदृष्टिस्वनीचगे॥
क्रूरांशकगते वापि क्रूरक्षेत्रगतेऽपि वा॥61॥
जातकस्य महत्कष्टं राजकोपाद्धनक्षयम्।
पितृमातृवियोगश्च पुत्रीपुत्रादिरोगकृत्॥62॥
व्यवसायात्फलं नेष्टं नानामार्गे धनव्ययः॥
अकाले भोजनं चैवमौषधस्य च भक्षणम्॥63॥
फलमीदृशमादौ तु अन्ते सौख्यं धनागमम्।

यदि क्षीणचन्द्र, पापयुक्त, क्रूर नवांशगत, क्रूर राशिगत चन्द्रमा हो तो शनि दशा चन्द्रभुक्ति में बहुत कष्ट, राजकोप से धन हानि, माता-पिता का वियोग, सन्तान को रोग व कष्ट, व्यवसाय में कम सफलता, अनेक प्रकार से धनव्यय, असमय में भोजन, दवा खाने के योग होते हैं। ऐसे फल दशा के आरम्भ में ही हो जाते हैं। अन्त में सुख व धनागम होता है।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वापि विलग्नतः॥64॥
शयनं रोगमालस्यं स्थानभ्रंशं भयावहम्।
शत्रुवृद्धिर्विरोधश्च स्वेष्टबन्धुविरोधकृत्॥65॥

लग्न या महादशेश से 6.8.12 में चन्द्र हो तो उसकी अन्तर्दशा में शयन अर्थात् अधिक नींद या रोगशय्या पर रहना, रोग, आलस्य, स्थानभ्रंश अर्थात् पदच्युति या पतन भय के भयावह योग, शत्रुवृद्धि, विरोध, स्वजनों से मन मुटाव होता है। हमारे **बृहत्पाराशर** के संस्करण से उदाहरण द्वारा इस नियम की पुष्टि की जा रही है।

शनि दशा में चन्द्र भुक्ति के दौरान, दशारम्भ में ही अचानक सड़क दुर्घटना में इन्हें चोट लगी। चलते वाहन से गिरने से कई स्थलों पर घाव, अंगभंग, रोगशय्या, दवा भक्षण आदि सब फल मिले। दशा के मध्य से ही अर्थ लाभ विशेष होना आरम्भ हो गया।

चन्द्रमा लग्न व महादशेश से क्रमशः 12 व 8 भाव में है। अष्टमेश में लग्नेश की दशा है। चन्द्रमा का षड्बल अवश्यकता से कम है। चन्द्रमा पापदृष्ट भी है। शनि के ही क्रूर नवांश व मंगल के षष्ट्यंश में है।

दायेशात्केन्द्रराशिस्थे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।
वाहनाम्बरपश्वादिभ्रातृवृद्धिः सुखावहम्॥66॥
पितृमातृसुखावाप्तिः स्त्रीसौख्यं च धनागमम्।
मित्रप्रभुवशादिष्टं सर्वसौख्यं शुभावहम्॥67॥

महादशेश या लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, लाभस्थान में चन्द्रमा हो तो उसकी अन्तर्दशा में वाहन, वस्त्र, पशुधन, स्त्रीसुख, धनागम, मित्रों व अधिकारियों के सहयोग से शुभ फल व सुख होते हैं।

शनिदशा : मंगलभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते भौमे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
तुंगे स्वक्षेत्रगे वापि दशाधिपसमन्विते॥68॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते आदौ सौख्यं धनागमम्।
राजप्रीतिकरं सौख्यं वाहनाम्बरभूषणम्॥69॥

सेनाधिक्यं नृपप्रीतिः कृषिगोधान्यसम्पदः।
नूतनस्थाननिर्माणं भ्रातृवर्गेष्टसौख्यकृत्॥70॥

शनि में मंगल की अन्तर्दशा रहने पर, मंगल यदि केन्द्र त्रिकोण, लाभ में हो या महादशेश के साथ ही हो या स्वक्षेत्र स्वोच्च में हो या लग्नेश से युक्त हो तो प्रारम्भ से ही सुख व धनागम बड़े लोगों का स्नेह, सुख, वाहन, वस्त्राभूषणों का सुख, जनसम्पर्क व जनसमर्थन की अधिकता, राजकीय जनों से मेल-मिलाप, व्यवसाय वृद्धि, धन-धान्य वृद्धि, सम्पत्ति वृद्धि, नए स्थान का निर्माण, भाई-बन्धुओं से सुख होता है।

पिछले उदाहरण में ही शनि व मंगल दोनों साथ हैं। मंगल स्वक्षेत्री त्रिकोण में है, योगकारक भी है, फलस्वरूप जातक की सम्पत्ति वृद्धि, नए स्थान का निर्माण, धनागम आदि सभी शुभ फल हुए।

नीचास्तंगते भौमे षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
पापदृष्टियुते वापि धनहानिर्भविष्यति॥71॥
चौराहिव्रणशस्त्रादि ग्रन्थिरोगादिपीडनम्।
भ्रातृपित्रादिपीडाच दायाद्यजनविड्वरम्॥72॥
चतुष्पाज्जीवहानिश्च कुत्सितान्नं च भोजनम्।
विदेशगमनं चैव नानामार्गे धनव्ययः॥73॥

यदि मंगल नीचगत, अस्तंगत हो या 6.8.12 भावों में हो या पापयुक्त दृष्ट हो तो धनहानि होती है।

चोर, सर्प, चोट, शस्त्रपीड़ा, किसी भीतरी फोड़ा या रसौली से पीड़ा, भाई व माता-पितादि को कष्ट, सम्पत्ति के हिस्सेदारों से विवाद, चौपाये धन की हानि, खराब भोजन, विदेशगमन, बहुत प्रकार से धन व्यय होता है।

पिछले उदाहरण में मंगल अन्तर्दशा में कोई भी अशुभ फल नहीं हुआ, जबकि वह सामान्य दृष्टि से पापयुक्त है। पापयोग का दोष अकेला है तथा शेष कई शुभ बातें होने से उक्त अशुभ फल स्थगित हो गया है।

अष्टमे द्यूननाथे तु द्वितीयस्थेऽथवा यदि।
अपमृत्युभयं चैव नानाकष्टपराभवः॥74॥
तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिहोमं च कारयेत्।
अनड्वाहं प्रकुर्वीत नानादोषनिवारणम्॥75॥

यदि मंगल 7.8 भावेश होकर द्वितीय में स्थित हो तो अपमृत्यु भय, अनेक प्रकार के कष्ट तथा असफलताएँ होती हैं।

दोष निवारण के लिए शान्ति होम व साँड छोड़ना चाहिए।

शनिदशा : राहुभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते राहौ कलहश्च मनोव्यथा।
देहपीडामनस्तापः पुत्रद्वेषो मनोरुजः॥76॥
अर्थव्ययं राजभयं स्वजनादेरुपद्रवः।
विदेशगमनं चैव गृहक्षेत्रादिनाशनम्॥77॥

शनि में राहु की अन्तर्दशा होने पर कलह, मानसिक क्लेश, शरीर कष्ट, पुत्र से मतभेद, मनोविकार, धनव्यय, राजभय, अपने लोगों से कलह या उपद्रव विदेशगमन, जायदाद सम्बन्धी परेशानी होती है।

लग्नाधिपेन संयुक्ते योगकारकसंगते।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे केन्द्रे दायेशाल्लाभराशिगे॥78॥
आदौ सौख्यं धनावाप्तिर्गृहक्षेत्रादिसम्पदः।
देवब्राह्मणभक्तिश्च तीर्थयात्रादिकं लभेत्॥79॥
चतुष्पाज्जीवलाभः स्याद् गृहे कल्याणवर्धनम्।
मध्ये तु राजभीतिश्च पुत्रमित्रविरोधनम्॥80॥
मेषे कुलीरे वृषभे कन्यकायामथापि वा।
मीनकोदण्डसिंहेषु गजान्तैश्वर्यमादिशेत्॥81॥
राजसम्मानभूषाप्तिं मृद्वम्बरसौख्यकृत्।

यदि राहु, लग्नेश या किसी योगकारक से युक्त हो, दशेश से एकादश में हो, केन्द्र में अच्छी राशि में हो तो दशारम्भ में प्रारम्भ में सुख, धनलाभ, जमीन जायदाद की वृद्धि, देवों व ब्राह्मणों के प्रति भक्ति, तीर्थयात्रादि फल होते हैं।

चौपाये पशुओं की वृद्धि, घर में कल्याणकारी बातें होती हैं।

दशा के मध्य में राजपक्ष से भय, पुत्रों या मित्रों से विरोध होता है।

1.2.4.5.6.9.12 राशियों में राहु केन्द्र आदि स्थानों में लग्नेश या योगकारक के साथ हो तो दशाकाल में गजान्त ऐश्वर्य, हाथी रखने की ताकत वाली आर्थिक स्थिति, निष्कर्षतः अच्छी धनवृद्धि होती है। अपि च राज-सम्मान, उत्तम वस्त्राभूषण अर्थात् आरामदायक जीवनस्तर होता है।

द्विसप्तमाधिपैर्युते देहबाधाभविष्यति॥82॥
मृत्युञ्जयं प्रकुर्वीत छागदानं च कारयेत्।
अनड्वाहं प्रकुर्वीत सर्वसम्पदसुखावहम्॥83॥

यदि राहु 2.7 भावेश से युत हो तो शरीर कष्ट सम्भव है। दोष निवारणार्थ, मृत्युंजय जप, बकरे का दान, साँड छोड़ना आदि कार्य करने चाहिएं। तब सब तरह से सुख होता है।

शनिदशा : गुरुभुक्ति

मन्दस्यान्तर्गते जीवे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
लग्नाधिपेन संयुक्ते स्वोच्चे स्वक्षेत्रगेऽपि वा॥84॥
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्याच्छोभनं भवति ध्रुवम्।
महाराजप्रसादेन धनवाहनभूषणम्॥85॥
सम्मानं प्रभुसम्मानं प्रियवस्त्रार्थलाभकृत्।
देवतागुरुभक्तिश्च विद्वज्जनसमागमः॥86॥
दारपुत्रादिलाभश्च पुत्रकल्याणवैभवम्।

शनि दशा में गुरु भुक्ति होने पर, गुरु यदि 1.4.5.7.9.10.11 भावों में हो, स्वक्षेत्र स्वोच्च में हो, लग्नेश से युक्त हो तो सब कामों में सफलता, कल्याण व मंगल होता है।

अपने अधिकारी या विभाग की सहायता से धन वाहन का सुख, सम्मान, अधिकारियों द्वारा प्रशंसा, प्रिय वस्तुओं की भेंट प्राप्ति, देवों व गुरुजनों में भक्ति, विद्वानों से समागम, स्त्रीपुत्रादि का सुख, सन्तान का भाग्योदय होता है।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे नीचे वा पापसंयुते॥87॥
आत्मसम्बन्धिमरणं धनधान्यविनाशनम्॥
राज्यस्थाने जनद्वेषः कार्यहानिर्भविष्यति॥88॥
विदेशगमनं चैव कुष्ठरोगादि सम्भवम्।

गुरु यदि 6.8.12 भावों में हो, नीचगत या पापयुक्त हो तो अपने किसी निकट सम्बन्धी का शोक, धन-धान्य की हानि, राजकीय स्थान पर विरोध, कार्यहानि, विदेशगमन तथा त्वचा विकार पैदा होते हैं।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा धने वा लाभगेऽपि वा॥89॥
विभवं दारसौभाग्यं राज्यश्रीर्धनसम्पदः।
भोजनाम्बरसौख्यं च दानधर्मादिकं भवेत्॥90॥
ब्रह्मप्रतिष्ठा सिद्धिश्च क्रतुकर्मफलोदयः।
अन्नदानं महत्कीर्तिर्वेदान्तश्रवणादिकम्॥91॥

महादशेश शनि से धन, लाभ, केन्द्र, त्रिकोण में गुरु हो तो वैभव, स्त्री सुख, राज्यलक्ष्मी का सुख, धन-सम्पत्ति की वृद्धि, खान-पान का वैभव, दान-धर्म में रति, ब्राह्मणत्व की प्रतिष्ठा या आध्यात्मिक संसिद्धि, यज्ञ, जप आदि का फल, अन्नदान का सामर्थ्य, कीर्ति व वेदान्त आदि में अभिरुचि होती है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते।
बन्धुद्वेषं ब्राह्मणपदविच्युतिः॥92॥
कुभोजनं कर्महानिः राजदण्डाद्धनव्ययम्।
कारागृहप्रवेशं च पुत्रदारादिपीडनम्॥93॥

द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधामनोरुजम्।
आत्मसम्बन्धिमरणं भविष्यति न संशयः॥94॥
तद्दोषपरिहारार्थं शिवसाहस्रकं जपेत्।
स्वर्णदानं प्रकुर्वीत ह्यारोग्यं भवति ध्रुवम्॥95॥

महादशेश शनि से 6.8.12 में गुरु हो, गुरु निर्बल हो तो बन्धुओं से द्वेष, मन में दुःख, ब्राह्मण तक के पद से च्युति, खराब भोजन, कार्यहानि, राजदण्ड के कारण धनव्यय, जेल यात्रा, स्त्री-पुत्रों को कष्ट होता है।

यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट, मनोरोग, आत्मसम्बन्धी की मृत्यु होती है। दोष शान्ति के लिए शिवसहस्रनाम के पाठ करें तथा सोने का दान करें। तब आरोग्य होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
शन्यन्तर्दशाफलाध्याय एकोनविंशः॥19॥
॥आदितः श्लोकाः 1546॥

20
॥ बुधान्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

केन्द्रस्थितस्य सौम्यस्य दशायां पापिनां हृतौ।
कर्मविघ्नं महादुःखं मनश्चांचल्यमेव च॥1॥
उत्साहभंगं गोभूमिर्हिरण्याम्बरनाशनम्।
स्थानच्युतिं महाद्वेषं विधानाशं लभेत्तदा॥2॥

केन्द्रगत बुध की महादशा में पापी ग्रह की अन्तर्दशा हो तो सामान्यतः कार्य बाधा, बड़ा दुःख, मन में चंचलता, उत्साहभंग, धन-सम्पत्ति आदि की हानि, स्थानभंग, द्वेष, विद्याहानि होती है।

शुभभुक्तौ बुधस्यापि पापकेन्द्रगतस्य तु॥
वैवाहिकं यज्ञकर्मदानधर्मजपादिकम्॥3॥
ज्ञानाधिक्यं नृपात्प्रीतिः कृषिगोभूमिवर्धनम्।
मुक्तामणिप्रवालादि वाहनाम्बरभूषणम्॥4॥

पाप राशि में केन्द्रगत बुध की दशा में शुभ ग्रह की भुक्ति हो तो विवाहादि कर्म, यज्ञ, दान, धर्म, ज्ञानवृद्धि, राजकीय जनों से स्नेह सम्बन्ध, कृषिवृद्धि, पशुधन की वृद्धि, रत्नजटित आभूषणों का प्रयोग, वाहन सुख होता है।

ज्ञस्य त्रिकोणयुक्तस्य दशायां पापिनां हृतौ।
दारपुत्रार्थनाशश्च कर्मनाशो मनोरुजः॥5॥
कृषिवाणिज्यनाशश्च बन्धुनाशोऽपि जायते।
पादभंगो मनोद्वेगो बन्धुद्वेषोऽपि लभ्यते॥6॥

त्रिकोण बुध की दशा में पापी ग्रह की अन्तर्दशा रहने पर स्त्री, पुत्र व धन की हानि, कार्य हानि, मनोद्वेग, व्यवसाय में बाधा, बन्धुओं व सहायकों में कमी, पैर में विकार, बन्धुओं से द्वेष होता है।

तथाविधज्ञस्य पाके शुभभुक्तौ नृपात् प्रियम्।
आरोग्यमतिसौख्यं च सोमपानादिकं सुखम्॥7॥
स्वनामांकितपद्यानि नामद्वयमथापि वा।
भोजनाम्बरभूषाप्तिं नरेशत्वं लभेन्नरः॥8॥

त्रिकोणगत बुध दशा में शुभ भुक्ति हो तो राजकीय सहयोग सम्बन्ध, अच्छा स्वास्थ्य, सुख, भोग विलास, गोष्ठियों का आनन्द, प्रशंसा करने वालों की प्राप्ति, वास्तव नाम के अतिरिक्त किसी अन्य सम्बोधन से पुकारे जाने के योग, खान-पान का वैभव, शाही ठाट होते हैं।

षष्ठाष्टमगतज्ञस्य परिपाके तु पापिनाम्।
हृतौ चौरारिपीडां च ज्वरातीसारपीडनम्॥9॥
स्वबन्धुमरणं क्लेशं भृत्यस्त्रीपुत्रनाशनम्॥
विवादं विग्रहं सर्वे बन्धुभिर्लभते नरः॥10॥

6.8.12 भावगत बुध दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा हो तो चोरों व शत्रुओं से पीड़ा, ज्वारादि रोग, बन्धुओं की ओर से शोक, स्त्रीपुत्र व सेवकों में कमी, विवाद, मुकद्दमा आदि फल होते हैं।

तथाविधाब्जपुत्रस्य शुभभुक्तौ महद्यशः।
आरोग्यं कान्तिलाभं च देवभूसुरतर्पणम्॥11॥
दशादौ फलमेवं स्याद् भुक्त्यन्ते सुखनाशनम्।
गोमहिष्यादिपीडां च वाक्पारुष्यं नृपाद्भयम्॥12॥

6.8.12 भावगत बुध में शुभान्तर्दशा हो तो बहुत प्रसिद्धि, आरोग्य, शोभावृद्धि, देवों व ब्राह्मणों के प्रति भक्ति आदि फल होते हैं।

दशारम्भ में प्रायः शुभ फल तथा दशान्त में सुख हानि होती है। तब पशुधन की हानि, वाणी में कठोरता, राजभय सम्भव होता है।

तृतीयायगतस्य शुभभुक्तौ शुभं भवेत्।
मनोधैर्यं महोत्साहं विदेशाद् द्रव्यसंचयम्॥13॥
विद्याजयनृपात्प्रीतिं भोजनं पौष्टिकं तथा।
यज्ञवैवाहिकं कर्म पुराणश्रवणादिकम्॥14॥
तथाविधज्ञस्य पाके पापभुक्तौ महद्भयम्।
भ्रातृवर्गविनाशं च वैकल्यं नृपपीडनम्॥15॥
चौराहिवह्निभीतिं च कुस्त्रीभूतादिसेवनम्।
कर्महानिः कृषेर्नाशः गजाश्वानां च पीडनम्॥16॥

3.11 भावगत बुध दशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो शुभ फल, मन में धैर्य, उत्साह, विदेश से धन लाभ, विद्या प्राप्ति, विजय, राजकीय पुरुषों से स्नेह, उत्तम भोजन, घर में मंगल कार्य, धार्मिक आयोजन, कथा श्रवण आदि के योग होते हैं।

इसी बुध दशा में पाप अन्तर्दशा हो तो भय, भाइयों की हानि, विफलता, राजपक्ष से पीड़ा, चोरादि भय, खराब स्त्री से कष्ट, भूतप्रेतादि बाधा, कार्यों में असफलता, व्यवसाय में हानि, वाहनों में बाधा होती है।

धनस्थिताब्जपुत्रस्य परिपाके शुभेतरा।
करोति राजदण्डं च बन्धनं निगडं तथा॥17॥
विषार्तिबन्धुविद्वेषं कृषिगोभूमिनाशनम्।
शत्रुत्वं सकलैः सार्धं नित्याचारविवर्जितम्॥18॥
शुभभुक्तौ धनलाभः स्याद् देवभूसुरतर्पणम्।
अध्वरादिमहत्कर्मदानहोमजपादिकम् ॥
बन्धुपूज्यं महोत्सहं विद्यालाभं भवेत्तदा॥19॥

धनगत बुध दशा में पापग्रह की अन्तर्दशा होने पर राजदण्ड, कैद, बन्धन, अपहरण, विषभय, बन्धुजनों से द्वेष, व्यवसाय हानि, सम्पत्ति हानि, लोगों से शत्रुता, नित्यकर्म में बाधा होती है।

शुभान्तर्दशा में धनलाभ, देवों ब्राह्मणों का सत्कार, यज्ञादि कार्य, दान-होम, जपादि में रुचि, बन्धुओं में आदर, विद्या-लाभ होता है।

बुधदशा : बुधभुक्ति

मुक्ताविद्रुमलाभश्च ज्ञानकर्मसुखादिकम्।
विद्यामहत्त्वं कीर्तिं च नूतनप्रभुदर्शनम्॥20॥
विभवं दारपुत्रादिपितृमातृसुखावहम्।
नीचोग्रखेटसंयुक्ते षष्ठाष्टव्ययराशिगे॥21॥
पापयुक्तेऽथवा दृष्टे धनधान्यपशुक्षयम्।
आत्मबन्धुर्विरोधश्च शूलरोगादिसम्भवम्॥22॥
राजकार्यकलापेन व्याकुलं भवति ध्रुवम्।

बुधदशा बुधभुक्ति में रत्नाभूषणादि का लाभ, विद्या व महत्त्व में वृद्धि, नये अधिकारी या राजा से भेंट, वैभव, स्त्री, पुत्र, माता-पितादि का सुख होता है।

बुध यदि नीचगत पापग्रह से युक्त हो और 6.8.12 में स्थित हो या कहीं भी पापयुक्त दृष्ट हो तो धन-धान्य व पशु धन की हानि, राजकीय कार्यों से मन में व्याकुलता होती है।

द्वितीयद्यूननाथेतु दारक्लेशं भविष्यति॥23॥
आत्मसम्बन्धिमरणं वातशूलादिसम्भवम्॥
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥24॥

यदि बुध 2.7 भावेश हो तो उक्त दशा में स्त्री सम्बन्धी पीड़ा, किसी स्वजन की मृत्यु, वात जल शूल रोग होता है। दोष शान्ति के लिए विष्णुसहस्रनाम का जप करें।

बुधदशा : केतुभुक्ति

बुधस्यान्तर्गते केतौ लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
शुभयुक्तशुभैर्दृष्टे लग्नाधिपसमन्विते॥25॥
योगकारकसम्बन्धे दायेशात्केन्द्रलाभगे।
देहसौख्यं धनाधिक्यं बन्धुस्नेहसहायकृत्॥26॥
चतुष्पाज्जीवलाभः स्यात् संसारे देहतापनम्।
विद्याकीर्तिप्रसंगश्च समानप्रभुदर्शनम्॥27॥
भोजनाम्बरसौख्यं च आदौ मध्ये सुखावहम्।

बुध महादशा में केतु की अन्तर्दशा हो और केतु लग्न से केन्द्र या त्रिकोण में हो, शुभयुक्त या शुभ दृष्ट हो या लग्नेश से युक्त हो या योगकारक ग्रह से सम्बन्ध करे या दशेश से केन्द्र या लाभ स्थान में हो तो शरीर सुख, धन की अधिकता, बन्धुओं से स्नेह, सहायता, चौपाये जीवों से लाभ, सांसारिक उत्तरदायित्वों में अधिक व्यस्तता, विद्या व कीर्ति का लाभ, बराबर के लोगों से मिलन, खान-पान का सुख होता है। इस अन्तर्दशा में विशेषतया प्रारम्भ व मध्य में सुख होता है तथा अन्त में कष्ट होता है।

दायेशाद् रिपुरन्ध्रस्थे रन्ध्रे पानेन संयुते॥28॥
वाहनात्पतनं चैव पुत्रक्लेशसमाकुलम्।
चौरादिराजभीतिश्च पापकर्मरतः सदा॥29॥
वृश्चिकादि विषाद्भीतिर्नीचैः कलहसम्भवः।
शोकरोगादि दुःखं च संसारादिचलं भवेत्॥30॥
द्वितीयद्यूनभावस्थे देहजाड्यं भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं छागदानं तु कारयेत्॥31॥

महादशेश से 6.8 भाव में केतु या लग्न से अष्टम में पापयुक्त हो तो वाहन दुर्घटना, सन्तान को क्लेश, चोरों व राजपक्ष से भय, पापकर्म में रति, डसने वाले जानवरों व कीटों से भय, नीच लोगों के साथ कलह, शोक व रोग, बड़े परिवर्तन होते हैं।

यदि केतु 2.7 भावों में हो तो शरीर कष्ट होता है। दोष निवृत्ति के लिए मेषदान करना चाहिए।

बुधदशा : शुक्रभुक्ति

सौम्यस्यान्तर्गते शुक्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
सत्कथापुण्यधर्मादिसंग्रहः पुण्यकर्मकृत्॥32॥
मित्रप्रभुवशादिष्टं क्षेत्रलाभसुखं भवेत्।
दशाधिपात्केन्द्रगते त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥33॥

तत्काले श्रियमाप्नोति राजश्रीधनसम्पदः।
वापीकूपतडागादिदानधर्मादिसंग्रहः ॥34॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं धनधान्यसमृद्धिदम्।

बुध में शुक्रान्तर्दशा होने पर, शुक्र यदि केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में स्थित हो तो कथा वार्ता, सत्संग, पुण्य कार्य, धर्मकार्य, मित्रों व अधिकारियों के सहयोग से धन सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

दशेश से केन्द्र, त्रिकोण या लाभस्थान में शुक्र हो तो तुरन्त अच्छा लाभ, धन, सम्पत्ति व पद की प्राप्ति होती है।

जनसुविधार्थ बहुत से कार्य करने के योग, व्यवसाय में प्रगति, धन-धान्य समृद्धि होती है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते॥35॥
हृद्रोगं मानहानिश्च ज्वरातीसारपीडनम्।
आत्मबन्धुवियोगश्च आपदागमनं तथा॥36॥
द्वितीयद्यूननाथेतु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादेवी जपं चरेत्॥37॥

महादशेश से 6.8.12 भावों में निर्बल शुक्र हो तो हृदयरोग, मानहानि, रोगपीडा, स्वजनों का वियोग, आपत्तियों का सामना होता है।

यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय होता है, तब दुर्गा पाठ जपादि करना चाहिए।

बुधदशा : सूर्यभुक्ति

सौम्यस्यान्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे।
त्रिकोणे धनलाभे वा तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥38॥
राजप्रासादसौभाग्यं मित्रप्रभुवशात्सुखम्।
भूम्यात्मजेन संदृष्टे आदौ भूलाभमेव॥39॥
लग्नाधिपेन संदृष्टे बहुसौख्यं धनागमम्।
ग्रामभूम्यादि लाभं च भोजनाम्बरसौख्यकृत्॥40॥

बुध दशा में सूर्य की अन्तर्दशा हो और सूर्य स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो या 2.5.9.11 भावों में हो या स्वोच्च स्वराशि के नवांश में हो तो राजमहलों में आने जाने के योग व अधिकारियों का सहयोग होता है।

यदि उक्त सूर्य मंगल से दृष्ट हो तो दशारम्भ में ही जायदाद का लाभ होता है। लग्नेश से दृष्ट हो तो बहुत सुख व धनागम, भूमि-लाभ, खान-पान का विशेष सुख होता है।

षष्ठाष्टमव्यये वापि शन्यारफणिसंयुते।
दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा बलवर्जिते॥41॥
चौराग्निशस्त्रपीडा च पित्ताधिक्यं भविष्यति।
शिरोरुजो मनस्तापं इष्टबन्धुवियोगकृत्॥42॥
द्वितीयसप्तमाधीशे ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
धेनुहिरण्यकं दद्याच्छान्तिं कुर्याद् यथाविधि॥43॥

यदि सूर्य 6.8.12 में शनि, मंगल, राहु में से किसी के साथ हो अथवा महादशेश से 6.8.12 में शनि, मंगल, राहु में से किसी के साथ हो अथवा महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त हो और स्वयं निर्बल हो तो चोरभय, अग्निभय, शस्त्रपीड़ा, शरीर में पित्त की अधिकता, सिर में रोग, मन में सन्ताप, स्वजनों से वियोग होता है।

यदि सूर्य 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु भय को निवृत्त करने के लिए सोना व गाय का दान करें तथा शान्ति विधान कराएँ।

बुधदशा : चन्द्रभुक्ति

सौम्यस्यान्तर्गते चन्द्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि गुरुदृष्टिसमन्विते॥44॥
योगस्थानाधिपत्येन योगप्राबल्यमादिशेत्।
स्त्रीपुत्रादिप्राप्तिश्च वस्त्रवाहनभूषणम्॥45॥
नूतनगृहलाभश्च नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
गीतवाद्यप्रसंगश्च शास्त्रविद्यापरिश्रमः॥46॥
दक्षिणां दिशमाश्रित्य प्रयाणं च भविष्यति।
द्वीपान्तराद्वस्त्रलाभो मुक्ताविद्रुमलाभकृत्॥47॥

बुध दशा में चन्द्रान्तर रहने पर चन्द्रमा यदि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में हो, स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो, किसी भी अच्छे स्थान में गुरु से दृष्टयुक्त हो, स्वयं योग बनाने वाले स्थान का स्वामी हो तो उक्त अवधि में योगफल मिलता है। स्त्री सुख, पुत्र सुख, वस्त्र, वाहन, आभूषण, नूतन घर की प्राप्ति, उत्तम भोजन, गीत-संगीत, आमोद-प्रमोद के अवसर, विद्या के क्षेत्र में परिश्रम के योग होते हैं।

नीचास्तंगते चन्द्रे देहबाधा भविष्यति।
दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये पापेन संयुते॥48॥
चौराग्निनृपभीतिश्च कृषिगोऽश्वादिनाशनम्।
दुष्कृतेर्धनहानिः स्यात् स्त्रीसंगमने क्षयः॥49॥
द्वितीयद्यूननाथेतु देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादेवी जपं चरेत्॥50॥
वस्त्रदानं प्रकुर्वीत ह्यायुर्वृद्धिसुखावहम्।

यदि चन्द्रमा नीचास्तंगत हो तो शरीर कष्ट होता है। महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त चन्द्रमा हो तो विविध पीड़ाएँ, कृषि व व्यवसाय में हानि, वाहनों की हानि, पराई स्त्री के संगम से हानि, दुष्कार्यों से धन हानि होती है।

यदि चन्द्रमा 2.7 भवेश हो तो देह बाधा निवारण के लिए दुर्गा देवी का जप व वस्त्र दान करें। तब आयु वृद्धि व सुख होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणस्थे दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥51॥
तद्भुक्त्यादौ पुण्यतीर्थस्नानदैवतदर्शनम्॥
धीरता च समुत्साहः विदेशधनलाभकृत्॥52॥

महादशेश से केन्द्र कोण में या 3.11 में चन्द्रमा हो तो भुक्ति के आरम्भ में पुण्यदायी तीर्थयात्रा, देवस्थानों के दर्शन, धैर्य, उत्साह तथा विदेश से धन लाभ होता है।

बुधदशा : मंगलभुक्ति

सौम्यस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि लग्नाधिपसमन्विते॥53॥
राजानुग्रहवृद्धिश्च गृहे कल्याणसम्भवम्।
लक्ष्मीकटाक्षचिह्नानि नष्टराज्यार्थलाभकृत्॥54॥
पुत्रोत्सवादि सन्तोषो गृहे गोधनसंकुलम्।
गृहक्षेत्रादि लाभश्च गजवाजिसमन्वितम्॥55॥
राजप्रीतिकरं चैव स्त्रीसौख्यं चातिशोभनम्।

बुध दशा में मंगल की अन्तर्दशा रहने पर, मंगल यदि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में हो, स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो, लग्नेश से युक्त हो तो राजकीय कृपा की वृद्धि, घर में कल्याणकारी बातें, लक्ष्मी जी की कृपा के चिह्न, खोए धन या राज्य की प्राप्ति, पुत्रोत्सव के योग, गोधनवृद्धि, जमीन जायदाद का लाभ, बड़े वाहनों का सुख, राजकीय जनों से मधुर सम्बन्ध, स्त्री सुख होता है।

नीचक्षेत्रसमायुक्ते रन्ध्रे वा व्ययगेऽपि वा॥56॥
पापदृष्टियुते वापि देहपीडा मनोव्यथा॥
उद्योगभंगो देहार्तिः स्वग्रामे धान्यनाशनम्॥57॥
ग्रन्थिशस्त्रव्रणादीनां तापज्वरभयादिकम्।

यदि मंगल नीचगत होकर 8.12 भाव में हो या पापदृष्ट युक्त हो तो परिश्रम की असफलता, देह कष्ट, खड़ी फसल या परिपक्व योजनाओं की दुःखद समाप्ति, भीतरी फोड़े आदि से पीड़ा, घाव व शरीर कष्ट होता है।

दायेशात्केन्द्रगे भौमे त्रिकोणे लाभगेऽपि वा॥58॥
शुभ दृष्टे युते वापि देहसौख्यं धनागमः।
पुत्रलाभो यशोवृद्धि भ्रातृवर्गे महत् प्रियम्॥59॥

महादशेश से केन्द्र, त्रिकोण या लाभस्थान में मंगल हो और शुभ दृष्ट युक्त भी हो तो शरीर सुख, धनलाभ, पुत्र प्राप्ति, यशोवृद्धि, अपने समुदाय में विशेष मान व स्नेहादि लाता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
तद्भुक्त्यादौ महाक्लेशं भ्रातृवर्गे महद्भयम्॥60॥
आगमनं विपत्तीनां पुत्रमित्रविरोधनम्।
स्थानभ्रंशे महद्धैर्यं मध्ये सौख्यं धनागमम्॥61॥
अन्ते तु राजभीतिः स्यात् स्थानभ्रंशोऽपि वा भवेत्।
द्वितीयद्यूननाथेतु मृत्युंजयजपं चरेत्॥62॥
अनड्वाहं प्रकुर्वीत सर्वदोषनिवारणम्॥62॥

महादशेश से 6.8.12 में हो या पापयुक्त हो तो दशारम्भ में बहुत कष्ट, भाई बन्धुओं से भय, विपत्तियों का आगमन, पुत्रों व मित्रों से विरोध, स्थानच्युति की स्थिति में बहुत धीरज की जरूरत होती है।

दशा मध्य में धनलाभ व सुख, अन्त में राजभय व स्थान परिवर्तन होता है।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो दोष निवारण के लिए मृत्युंजय जप तथा साँड़ छोड़ना चाहिए या साँड़ को घास आदि खिलाएँ।

बुधदशा : राहुभुक्ति

बुधस्यान्तर्गते राहौ केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
कुलीरे सिंहगे वापि कन्यायां वृषभेऽपि वा॥63॥
राजसम्मानकीर्तिश्च देवतादर्शनं तथा।
पुण्यतीर्थस्नानलाभो मानाश्वाम्बरलाभकृत्॥64॥
भुक्त्यादौ देहपीडा च ह्यन्ते सौख्यं विनिर्दिशेत्।

बुध दशा राहु भुक्ति में, राहु यदि केन्द्र, लाभ या त्रिकोण में हो, अपि च 2.4.5.6 राशियों में हो तो राज-सम्मान, कीर्ति, देवदर्शन, पुण्यतीर्थ यात्रा, सम्मान, वाहन, वस्त्रलाभ होता है। दशारम्भ में शरीर में कष्ट तथा अन्त में सुख होता है।

षष्ठाष्टव्ययराशिस्थे तद्भुक्तौ धननाशनम्॥65॥
भुक्त्यादौ देहनाशश्च वातज्वरमजीर्णकृत्॥
दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे पापेन संयुते॥66॥
निष्ठुरं राजकार्यं स्यात् स्थानभ्रंशो महद्भयम्।
बन्धनं रोगपीडा च आत्मबन्धुमनोव्यथा॥67॥
हृद्रोगो मानहानिश्च धनहानिर्भविष्यति।
द्वितीयसप्तमस्थे वा ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥68॥

तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गालक्ष्मीजपं चरेत्।
श्वेतां गां महिषीं दद्यादायु आरोग्य वृद्धये॥69॥

यदि राहु लग्न से 6.8.12 में खराब राशियों में पापयुक्त हो तो धनहानि, शरीरकष्ट, वातज्वर या पाचन की खराबी होती है।

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त राहु हो तो क्रूरतापूर्ण राजकार्य करने पड़ते हैं, स्थानभ्रंश, भय, बन्धन, रोगपीड़ा, अपने लोगों से मन को ठेस, हृदयरोग, मानहानि, धनहानि होती है।

यदि राहु 2.7 भाव में हो तो अपमृत्यु का भय होता है। दोषनिवारण के लिए दुर्गा व लक्ष्मी का जप करें तथा सफेद गाय का दान करें।

लग्नाद्युपचये राहौ शुभ ग्रहसमन्विते।
राजसौ लाभसन्तोषौ नूतनप्रभुदर्शनम्॥70॥

लग्न से 3.6.10.11 भावों में शुभ ग्रह से युक्त राहु हो तो राजकीय पक्ष से लाभ व सन्तोष तथा नए बड़े अधिकारियों या राजसी व्यक्तियों से भेंट होती है।

बुधदशा : गुरुभुक्ति

बुधस्यान्तर्गते जीवे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि लाभें वा धनराशिगे॥71॥
देहसौख्यं धनावाप्तिः राजप्रीतिस्तथैव च।
विवाहोत्सवकार्याणि नित्यं मिष्टान्नभेजनम्॥72॥
गोमहिष्यादिलाभश्च पुराणश्रवणादिकम्।
देवतागुरुभक्तिश्च दानधर्ममखादिकम्॥73॥
यज्ञकर्मप्रवृद्धिश्च शिवपूजाफलं तथा।

बुध दशा में गुरु अन्तर्दशा हो और गुरु लग्न से केन्द्र त्रिकोण लाभ में हो या स्वोच्च, स्वक्षेत्र या द्वितीय भाव में हो तो शरीर सुख, धनलाभ, राजकीय जनों से प्रीति, विवाहादि मंगल कार्य, उत्तम भोजन, पशुधन का लाभ, कथा पुराणादि श्रवण, देवभक्ति, दान धर्म व यज्ञादि कार्य होते हैं। यज्ञ सम्पादन की बुद्धि तथा शंकरार्चन के उत्तम फल मिलते हैं।

नीचे वास्तंगते वापि रिःफाष्टव्ययगेऽपि वा॥74॥
शन्यारफणिसंयुक्ते कलहं राजविड्वरम्।
चौरादि देहपीडा च पितृमातृविनाशनम्॥75॥
मानहानी राजदण्डो धनहानिर्भविष्यति।
विषाहिज्वरपीडा च कृषिगोभूमिनाशनम्॥76॥

यदि गुरु नीचगत, अस्तंगत हो या 6.8.12 में हो या शनि मंगल राहु से युक्त

हो तो कलह, राजभय, चोरों से शरीर कष्ट, माता-पिवता को कष्ट, मानहानि, राजदण्ड धनहानि, विष या सर्पादि से पीड़ा, व्यवसाय व सम्पत्ति की हानि होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा बलसंयुते।
बन्धुपुत्रहृदुत्साहशुभं सर्वं भविष्यति॥77॥
पशुवृद्धिर्यशोलाभ अन्नदानादिकं फलम्।
दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते॥78॥
अंगतापश्च वैकल्यं देहबाधा भविष्यति।
कलत्रबन्धुवैषम्यं राजकोपो धनक्षयः॥79॥
अकस्मात्कलहो भीतिः देहबाधा भविष्यति॥
द्वितीयद्यूननाथे वा शिवसाहस्रकं जपेत्॥80॥
गोभूहिरण्यदानेन सर्वारिष्टं विलीयते।

बलवान् गुरु महादशेश बुध से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में हो तो बन्धुओं, पुत्रों से मन में उत्साह, शुभ फल, पशुवृद्धि, यशोवृद्धि, अन्नदान की समर्थ्य होती है।

दशेश से 6.8.12 में निर्बल गुरु हो तो शरीर कष्ट, देह बाधा, स्त्री बन्धुओं से विषमता, राजकोप, धनहानि, अचानक कलह होती है।

2.7 भावेश होने पर भी देहकष्ट होता है। दोष निराकरणार्थ, गोदान, भूमिदान, सुवर्णदान व शिवसहस्रनाम का जप करें। तब सब अरिष्ट दूर होते हैं।

बुधदशा : शनिभुक्ति

सौम्यस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे॥81॥
त्रिकोणलाभगे वापि गृहे कल्याणवर्धनम्।
राज्याप्तिर्महोत्साहो गृहे गोधनसंकुलम्॥82॥
शत्रुस्थानफलावाप्तिर्भुक्त्यन्तेऽर्थविनाशनम्।

बुध दशा में शनि की अन्तर्दशा रहने पर, शनि यदि स्वोच्च स्वक्षेत्र केन्द्र में हो, त्रिकोण लाभ स्थान में हो तो घर में कल्याण वृद्धि, राज्य लाभ, उत्साह, गोधनवृद्धि, शत्रु या विरोधी की अवनति होती है। लेकिन दशान्त में धनहानि होती है।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे दायेशाद्वा तथैव च॥83॥
अरातिदुःखबाहुल्यं दारपुत्रादिपीडनम्।
बुद्धिभ्रंशो बन्धुनाशः कर्मनाशो मनोरुजः॥84॥
विदेशगमनं चैव स्वप्ने दूराभिसम्पदः।
द्वितीयद्यूननाथेतु ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥85॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युंजयजपं चरेत्।
कृष्णां गां महिषीं दद्यादायुरारोग्यवृद्धये॥86॥

महादशेश या लग्न से 6.8.12 में शनि हो तो शत्रुओं से भय, स्त्री-पुत्रादि को पीड़ा, बुद्धि में विकार, बन्धुओं की कमी, कार्य में असफलता, मनोविकार, विदेश गमन, सपने में अच्छी प्राप्तियाँ, वास्तव में शून्य फल होता है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो कष्ट होता है। दोष निवारणार्थ मृत्युंजय जप, काली गाय या भैंस का दान करें, तब आयु व आरोग्य सुरक्षित रहता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
बुधान्तर्दशाफलाध्यायो विंश॥20॥
॥आदितः श्लोकाः 1632॥

21
॥ केत्वन्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

केतोश्चतुष्टयस्थस्य यदा पापा हृतौ तदा।
मानभंगो महाद्वेषो नृपचौराग्निपीडनम्॥1॥
मातृनाशस्तदीयो वा दारपुत्रविनाशनम्।
कर्मनाशः पदभ्रंशः सहसैव कलहो भवेत्॥2॥
केतोस्तथाविधस्यापि शुभभुक्तौ नृपात्प्रियम्।
देहारोग्यकरं सौख्यं बन्धुभिश्च समागमः॥3॥
भोजनाम्बरभूषाप्तिरादौ चान्ते मनोरुजः।
उद्योगभंगं कामार्तिं स्वकुलोद्भवनाशनम्॥4॥

केन्द्रगत केतु में पापग्रह की अन्तर्दशा रहने पर सामान्यतः मानहानि, बड़ा द्वेष भाव, राजा आदि से मुसीबतें, माता से वियोग या अपने परिवार से वियोग, कार्यहानि, पदावनति, अचानक विवाद होते हैं।

इसके विपरीत शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो राजपक्ष से सहयोग, शरीर में सुख, मित्रों, बन्धुओं से समागम, खान-पान का खास सुख, लेकिन दशान्त में मनोमालिन्य, कार्यहानि, अधिक कामावेग, अपने कुल की प्रतिष्ठा की हानि या कुलक्रम से प्राप्त सम्पत्ति आदि की हानि होती है।

त्रिकोणराशियुक्तस्य केतोर्दाये शुभेतरा।
हृतिस्तदामनस्तापं करोति विविधापदः॥5॥
पुत्रवर्गादिमरणं पित्रोर्नाशमथापि वा।
स्थानार्थयोस्तदानाशं भृत्यबन्धुविरोधनम्॥6॥

त्रिकोणगत केतु में पापान्तर्दशा हो तो चोरी, हानि, मनस्ताप, विविध विपत्तियाँ, माता-पिता को विशेष कष्ट, धन व पदवी प्रतिष्ठा में गिरावट, नौकरों व बन्धुओं से विवाद होता है।

शुभग्रहाणां केतोस्तु परिपाके हतिस्तदा।
कृषिगोभूमिलाभश्च विद्याबन्धुसमागमः॥7॥
भोजनाम्बरसौख्यं च भुक्त्यादौ फलमीदृशम्।
भुक्त्यन्ते स्थानचलनमकस्मात्कलहं वदेत्॥8॥

त्रिकोणगत केतु में शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा होने पर व्यवसाय वृद्धि, पशु धन सम्पत्ति की वृद्धि, विद्याप्राप्ति, बन्धुओं से समागम, खान-पान का सुख, दशा के आरम्भ में होता है। दशा के अन्त में स्थान परिवर्तन, अचानक कलह के योग होते हैं।

षष्ठाष्टमव्ययस्थस्य केतोर्दाये शुभेतरा।
कुर्वन्ति मरणं नृणां विदेशं वा पदभ्रमम्॥9॥
प्रमेहमूत्रगुल्मादि राजचौराग्निपीडनम्।
फलमादौ तदन्ते च यत् किंचित्सुखवर्धनम्॥10॥
भुक्तौ सौम्यग्रहाणां तु स्त्रीपुत्रादिकवर्धनम्।
धान्याम्बरविभूषाप्तिं मणिप्रवरकांचनम्॥11॥
विप्रलम्भं च शौर्यं च गौल्यादिपतनं तथा।
स्वबन्धुजनशत्रुत्वं शिरोक्षिगुदपीडनम्॥12॥

6.8.12 भावगत केतु की दशा में पापान्तर्दशा होने पर मृत्यु या विदेशगमन या पद से बहिष्कार, मधुमेह, मूत्रदोष, गुल्म (भीतरी फोड़ा), विविध आपत्तियाँ होती हैं। लेकिन दशा के अन्त में थोड़ी बहुत सान्त्वना मिलती है।

उसी केतु में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो स्त्री पुत्रों की वृद्धि, धन-धान्यवृद्धि, आभूषण गहनों की प्राप्ति होती है।

लेकिन कभी-कभी अपनों से वियोग, छिपकली आदि का गिरना, मन में धीरता, अपने ही लोगों से शत्रुता, सिर, नेत्र व गुदा में रोग होते हैं।

तृतीयलाभयुक्तस्य केतोः पाके परं सुखम्।
शुभभुक्तौ नृपात् प्रीतिर्विचित्राम्बरभूषणम्॥13॥
वाहनं भूमिलाभश्च गन्धमाल्यानुलेपनम्।
दूरात्फलोदयश्चैव स्वबन्धुजनपूज्यता॥14॥
पापभुक्तौ तथा केतोः पापकर्मसमाचरेत्।
सर्वेषां विघ्नकर्तृत्वं बन्धुभिस्त्यक्तजीवनम्॥15॥
परप्रेष्यं कुवस्त्रं च भुक्त्यादौ फलमीदृशम्।
भुक्त्यन्ते सुखमाप्नोति दारपुत्रधनागमः॥16॥

3.11 भावगत केतु की दशा में शुभान्तर्दशा के दौरान बहुत सुख, राजकीय सम्बन्ध, उत्तम वस्त्राभूषण, वाहन, भूमिलाभ, उत्तम रहन-सहन, अपने बन्धुओं से सम्मान, दूर के प्रदेशों से धन लाभ होता है।

पापान्तर्दशा में पापकर्मों का योग, सर्वत्र विघ्न, बन्धुओं से बहिष्कृत, चाकरी के योग, साधारण वस्त्र व भोजनादि होते हैं। भुक्ति के अन्त में सुख, स्त्री पुत्र का सुख तथा धन लाभ होता है।

धनस्थितध्वजस्यापि परिपाके शुभेतरा।
करोति विविधं दुःखं भैक्ष्यमन्नं मनोरुजम्॥17॥
पुत्रमित्रकलत्राणां नाशनं महदापदम्।
राज्ञा चौरेण वा वित्तं ह्रियते बन्धुनाशनम्॥18॥
शुभभुक्तौ धनाप्तिं च विद्यावादजयावहम्।
परोपकारं सर्वेषां भोजनाम्बरभूषणम्॥19॥
भुक्त्यादौ फलमेवं स्यादन्ते किंचिद् धनव्ययः।
वाक्पारुष्यं हृदुद्विग्नं प्रवृत्तेर्भंगमेव च॥20॥

धन भाव में स्थित केतु की दशा में पापान्तर्दशा हो तो बहुत से दुःख, भिक्षावृत्ति की नौबत, मनोविकार, स्त्री, पुत्रादि की हानि, बड़ी मुसीबत, धन का अपहरण, बन्धुओं सहायकों की कमी होती है।

शुभ अन्तर्दशा में धनलाभ, विद्या सम्बन्धी वाद विवाद में जय, परोपकार की भावना, अन्न वस्त्रादि की प्रचुरता, वाणी में कठोरता, मन में उद्विग्नता, काम की लगन का भंग होता है।

केतुदशा : केतुभुक्ति

केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा लग्नाधिपसमन्विते।
भाग्यकर्मेशसम्बन्धे वाहनेशसमन्विते॥21॥
तद्भुक्तौ धनधान्यादि चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
पुत्रदारादिसौख्यं च राजप्रीतिमनोरुजम्॥22॥
ग्रामभूम्यादिलाभश्च गृहे गोधनसंकुलम्।

यदि केतु केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में स्थित हो या लग्नेश से युक्त हो या 4.9.10 भावेशों से कोई सम्बन्ध बनाता हो तो केतु दशा केतु भुक्ति में धन-धान्य वृद्धि, चौपाये पशुओं से लाभ, स्त्री-पुत्रादि का सुख, राजकीय लोगों से स्नेह, मन में तनाव, स्थान व भूमि आदि का लाभ, घर में पशु धन की वृद्धि होती है।

नीचास्तखेटसंयुक्ते रन्ध्रगे व्ययगेऽपि वा॥23॥
हृद्रोगं मानहानिश्च धन-धान्यपशुक्षयम्।
दारपुत्रादिपीडा च मनश्चंचलमेव च॥24॥
द्वितीयद्यूननाथेन सम्बन्धे तत्र संस्थिते।
अनारोग्यं महत्कष्टमात्मबन्धुवियोगकृत्॥25॥
दुर्गापाठं ततः कुर्यात् मृत्युंजय जपं चरेत्।

यदि केतु नीच या अस्तंगत ग्रह से युक्त हो, 8.12 भाव में हो तो हृदयरोग, मानहानि धन-धान्य व पशु धन की हानि, परिवार में वियोग, मन में चंचलता होती है।

यदि 2.7 भावेश से सम्बन्ध करे या 2.7 भाव में हो तो बन्धुओं से वियोग होता है। तब दुर्गापाठ तथा मृत्युंजय जप करें।

केतुदशा : शुक्रभुक्ति

केतोरन्तर्गते शुक्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुते॥26॥
केन्द्रत्रिकोण लाभे वा राज्यनाथेन संयुते।
राजप्रीतिं च सौभाग्यं गजाश्वाम्बरसंकुलम्॥27॥
तत्कालं श्रियमाप्नोति भाग्यकर्मेशसंयुते।
नष्टराज्य धनप्राप्तिः सुखवाहनमुत्तमम्॥28॥
सेतुस्नानादिकं चैव देवतादर्शनं महत्।
महाराजप्रसादेन ग्रामभूम्यादि लाभकृत्॥29॥

यदि शुक्र उच्च, स्वक्षेत्र में, केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में हो या दशमेश से युक्त हो तो राजकीय सहयोग, सौभाग्य, हाथी, घोड़े आदि वाहन प्राप्त होते हैं। यदि 9.10 भावेश से युक्त हो तो तुरन्त लक्ष्मी व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। अपि च खोए राज्य व धन की प्राप्ति, सुख, उत्तम वाहन, लम्बी तीर्थ यात्रा, देवस्थानों के दर्शन, बड़े समर्थ व्यक्ति की सहायता से जायदाद या पद की प्राप्ति होती है।

षष्ठाष्टव्ययराशिस्थे पापग्रहसमन्विते।
तद्भुक्तौ राज्यभीतिश्च पितृमातृवियोगकृत्॥30॥
विदेशगमनं चैव चौराहिविषपीडनम्।
राजमित्रविरोधश्च राजदण्डाद्धनक्षयः॥31॥
शोकरोगभयं चैव तापाधिक्यं ज्वरं भवेत्।

यदि शुक्र 6.8.12 में हो तो, पापग्रह से युक्त हो तो उसकी अन्तर्दशा में राजभय, माता-पिता से वियोग, विदेशवास, सर्पादि या दुष्टों से पीड़ा, राजकीय मित्रों से विरोध, राजदण्ड से धनक्षय, शोकरोग व भय, गर्मी की अधिकता, ज्वरादि से पीड़ा होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनसंस्थिते॥32॥
देहसौख्यं चार्थलाभः पुत्रलाभे मनोदृढम्।
सर्वकार्यार्थसिद्धिः स्यात् स्वल्पग्रामाधिपं युतम्॥33॥

महादशेश से केन्द्र त्रिकोण, 2.11 में शुक्र हो तो धन लाभ, पुत्र लाभ, मन में साहस, सब कार्यों की सिद्धि, स्थानीय प्रमुखता प्राप्त होती है।

दायेशात्रन्ध्ररिःफे वा षष्ठे वा पापसंयुते।
अन्नविघ्नं मनोभीतिः धन-धान्यपशुक्षयः॥34॥

आदिमध्ये महाक्लेशमन्ते सौख्यं विनिर्दिशेत्।
द्वितीयसप्तमाधीशे ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥35॥
ततः शान्तिं प्रकुर्वीत स्वर्णधेनुं प्रदापयेत्।

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त शुक्र हो तो खान-पान में रुकावट, मन में भय, धन-धान्य की हानि, प्रारम्भ व मध्य में बड़े कष्ट व अन्त में सुख होता है।

2.7 भावेश होने पर अपमृत्यु का भय होता है, तब शान्ति विधान तथा सुवर्ण का दान करना श्रेयस्कर है।

केतुदशा : सूर्यभुक्ति

केतोरन्तर्गते सूर्ये स्वोच्चे स्वक्षेत्रमित्रगे॥36॥
केन्द्रत्रिकोणलाभे वा शुभग्रहनिरीक्षिते॥
धनधान्यादिलाभश्च राजानुग्रहवैभवम्॥37॥
अनेकशुभकार्याणि स्वेष्टसिद्धिः सुखागमः।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनसंस्थिते॥38॥
देहसौख्यं चार्थलाभः पुत्रलाभो मनोदृढम्।
यातुः कार्यार्थसिद्धिः स्यात्स्वल्पग्रामाधिपत्यकम्॥39॥

केतु में सूर्य की भुक्ति रहने पर, सूर्य यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र, केन्द्र त्रिकोण या लाभ स्थान में हो और शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो धन-धान्य का लाभ, राजपक्ष की कृपा बहुत से शुभ कार्यों की सम्पन्नता, इष्ट सिद्धि, सुखागम होता है।

केतु से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ या द्वितीय में सूर्य हो तो शरीर सुख, पुत्र लाभ, मन में धीरता, आक्रमण करने पर सफलता, स्थानीय प्रमुखता प्राप्त होती है।

षष्ठाष्टव्ययराशिस्थे पापग्रहसमन्विते।
तद्भुक्तौ राजभीतिश्च पितृमातृवियोगकृत्॥40॥
विदेशगमनं चैव चौराहिविषपीडनम्।
राजमित्रविरोधश्च राजदण्डाद्धनक्षयः॥41॥
शोकरोगभयानि स्युरुष्णाधिक्यं ज्वरादिकम्।
दायेशाद्वा तथाभूते पापग्रहसमन्विते॥42॥
अकस्मात्कलहं चैव पशुधान्यादि पीडनम्।
हृद्रोगो मानहानिश्च शिरोक्षिव्रणपीडनम्॥43॥

यदि सूर्य पापयुक्त होकर 6.8.12 भाव में हो तो राजभय, माता-पिता का वियोग, विदेश पलायन, चोर या सर्पादि से पीड़ा, राजकीय मित्र से मन मुटाव, राजदण्ड से धनहानि, शोक, रोग, भय, गर्मी के रोग आदि होते हैं।

यदि दशेश केतु से 6.8.12 में सूर्य हो और वह पापयुक्त भी हो तो अचानक

कलह, पशुधन की हानि, हृदयरोग, मानहानि, सिर में पीड़ा, आँखों में पीड़ा या चोट लगती है।

केतुदशा : चन्द्रभुक्ति

केतोरन्तर्गते चन्द्रे स्वोच्चे स्वक्षेत्रराशिगे।
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा धने शुभसमन्विते॥44॥
राजप्रीतिर्महोत्साहं कल्याणं च महत्सुखम्।
महाराजप्रसादेन गृहभूम्यादिलाभकृत्॥45॥
भोजनाम्बरपश्वादि व्यवसायात्फलाधिकम्।
अश्ववाहनलाभश्च वस्त्राभरणभूषणम्॥46॥
देवालयतटाकादि पुण्यधर्मादि संग्रहः।
पुत्रदारादिसौख्यं च पूर्णचन्द्रे तथैव च॥47॥

केतु दशा में चन्द्र भुक्ति होने पर, चन्द्रमा यदि उच्च, स्वक्षेत्र, केन्द्र, त्रिकोण, लाभ, धन स्थान में शुभ ग्रह से युक्त हो तो राजकीय जनों से प्रीति, कल्याण, सुख, बड़े लोगों की सहायता से जमीन जायदाद का लाभ, खान-पान का वैभव, व्यवसाय वृद्धि, वाहन सुख, वस्त्राभरणों की प्राप्ति, देवालय या सार्वजनिक सुविधा की चीजें बनवाने में सहयोग, स्त्री-पुत्रादि का सुख होता है। उक्त फल पक्षबली चन्द्रमा होने पर होता है।

नीचे वा क्षीणगे चन्द्रे षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
आत्मक्लेशमनस्तापः कार्यविघ्नं महद्भयम्॥48॥
पितृमातृवियोगश्च देहजाड्यं मनोरुजः।
व्यवसायात्फलं नेष्टं गोमहिष्यादि नाशकृत्॥49॥

यदि चन्द्रमा नीचगत, क्षीण, 6.8.12 भावों में हो तो मन में क्लेश, सन्ताप, कामों में विघ्न, भय, माता-पिता का वियोग, देह में जड़ता, व्यवसाय में हानि, पशु धन की हानि होती है।

दायेशात्केन्द्रकोणे लग्ने वा बलसंयुते।
कृषिगोभूमिलाभश्च इष्टबन्धुसमागमः॥50॥
तामसात्कार्यसिद्धिश्च गृहे गोक्षीरमेव च।
भूकृत्यशुभमारोग्यं मध्ये राजाग्निजं भयम्॥51॥
अन्तेऽपि राजभीतिश्च विदेशगमनं तथा।
दूरयात्रादि संचारः सम्बन्धिजनपूजनम्॥52॥

महादशेश केतु से केन्द्र, त्रिकोण या प्रथम में बली चन्द्रमा हो तो कृषिवृद्धि, भूमि लाभ, इष्टजनों से समागम, क्रोधी या तामसी व्यक्तियों की मदद से कार्यसिद्धि, घर में दूध घी की बहुतायत, जमीन सम्बन्धी कार्य से लाभ, मध्य व अन्त में

राजभय, अग्निभय, विदेश गमन, दूरयात्रा लेकिन रिश्तेदारों व मित्रों में सम्मान वृद्धि होती है।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे वा बलवर्जिते।
धनधान्यादिहानिश्च मनोव्याकुलमेव॥53॥
स्वबन्धुजनदातृत्वं भ्रातृपीडा तथैव च।
निधनाधिपदोषेण द्विसप्तमाधिपैर्युते॥54॥
अपमृत्युभयं तस्य शान्तिं कुर्याद्यथाविधि।
चन्द्रप्रीतिकरीं चैव आयुरारोग्यसम्भवः॥55॥

केतु से 6.8.12 में चन्द्रमा स्थित हो और वह निर्बल भी हो तो धन-धान्य की हानि, मन में व्यथा, बन्धुओं की सहायता से जीवनयापन, भाइयों को पीड़ा होती है।

यदि चन्द्रमा स्वयं अष्टमेश हो या 2.7.8 भावेश से युक्त हो तो अपमृत्यु का भय होता है। तब चन्द्रमा की प्रसन्नता के लिए शान्ति विधान करना चाहिए, उससे आयु व स्वास्थ्य सुरक्षित रहते हैं।

केतुदशा : कुजभुक्ति

केतोरन्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चस्वक्षेत्रगे भौमे शुभदृष्टियुतेक्षिते॥56॥
आदौ शुभ फलं चैव ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
धनधान्यादिलाभश्च चतुष्पाज्जीवलाभकृत्॥57॥
गृहारामक्षेत्रलाभः राजानुग्रहाद्वैभवम्।
भाग्यकर्मेशसम्बन्धे भूलाभं सौख्यमेव च॥58॥

केतु दशा में मंगल भुक्ति रहने पर मंगल यदि लग्न से केन्द्र त्रिकोण में हो या स्वक्षेत्र, स्वोच्च में हो, शुभ ग्रह से युत दृष्ट हो तो दशारम्भ में शुभ फल, स्थान व जायदाद का लाभ, धन-धान्य का लाभ, चौपाये धन का लाभ, घर मकान आदि का सुख, राजकीय जनों की सहायता होती है। यदि मंगल का 9.10 भावेश से सम्बन्ध हो तो जायदाद प्राप्ति व सुख होता है।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा।
राजप्रीतियशोलाभः पुत्रमित्रादिसौख्यकृत्॥59॥

केतु से केन्द्र, त्रिकोण, 3.11 भावों में मंगल हो तो राजकीय प्रीति, यश लाभ, पुत्रों व मित्रों का अच्छा सुख होता है।

षष्ठाष्टमव्यये भौमे दायेशाद्धनगेऽपि वा।
द्रुतं करोति मरणं विदेशे चापदोभ्रमम्॥60॥
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रादि चौरादिनृपपीडनम्।
कलहादिव्यथायोगः किंचित् सुखविवर्धनम्॥61॥

द्वितीयद्यूननाथे तु तापज्वरविषाद्भयम्।
दारपीडामनक्लेशमपमृत्युं करिष्यति॥62॥
अनड्वाहं प्रदद्याद्वै सर्वसम्पत्सुखावहम्॥

महादशेश केतु से 6.8.12 या द्वितीय में मंगल हो तो अचानक मृत्युभय, विदेश में मुसीबत, मधुमेह, मूत्ररोग, चोरादि से भय, कलह के योग होते हैं। धन व व्यवसाय साधारण ढंग से बढ़ते हैं। यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो ज्वर व विषसंक्रमण से स्त्री पीडा, मन में व्यथा, अपमृत्यु होनी सम्भव है। शान्ति के लिए साँड़ छोड़ना चाहिए।

केतुदशा : राहुभुक्ति

केतोरन्तर्गते राहौ स्वोच्चे स्वक्षेत्रराशिगे॥63॥
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा दुश्चिक्ये धनभावगे।
तत्कालं श्रियमाप्नोति धनधान्यपटादिकम्॥64॥
म्लेच्छप्रभुवशात्सौख्यं ग्रामभूम्यादिलाभकृत्।
भुक्त्यादौ क्लेशमाप्नोति मध्येऽन्ते सौख्यमाप्नुयात्॥65॥

केतु दशा में राहु भुक्ति हो और राहु स्वोच्च, स्वक्षेत्र या अन्य अच्छी राशियों में हो या केन्द्र त्रिकोण, लाभ, 2-3 भावों में हो तो तुरन्त लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। धन-धान्य वृद्धि, म्लेच्छ राजकीय पुरुषों से सहायता पाकर सम्पदा का लाभ होता है।

सामान्यतः दशारम्भ में परेशानियाँ तथा मध्य व अन्त में सुख मिलता है।

रन्ध्रे वा व्ययगे राहौ पापग्रहयुतेक्षिते।
बहुमूत्रात्कृशो देहः शीतज्वरविषाद्भयम्॥66॥
चातुर्थिकज्वरं चैव क्षुद्रोपद्रवपीडनम्।
अकस्मात्कलहं चैव प्रमेहः शूलमेव च॥67॥
द्वितीयसप्तमस्थे वा महाक्लेशो महद्भयम्।
तद्दोषपरिहारार्थं दुर्गादेवीजपं चरेत्॥68॥

यदि पाप युक्त दृष्ट राहु 8.12 भावों में हो तो मधुमेह, अधिक मूत्र के कारण शरीर में कमजोरी, ठण्ड में ज्वर चढ़ना, तीसरे चौथे दिन बुखार की पुनरावृत्ति, छोटे मोटे उपद्रवों से परेशानी, अचानक कलह, शरीर में कष्ट होता है।

यदि राहु 2.7 भावों में हो तो बहुत क्लेश, बड़ा भय होता है। तब दुर्गा देवी का जप पाठ करके 10 हजार आहुतियाँ दें।

केतुदशा : गुरुभुक्ति

केतोरन्तर्गते जीवे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे वापि लग्नाधिपसमन्विते॥69॥

कर्मभाग्याधिपैर्युक्ते धनधान्यार्थसम्पदः।
राजप्रीतिः महोत्साहोऽश्वान्दोल्यादिलाभकृत्॥70॥
गृहे कल्याणसम्पत्तिः पुत्रलाभो महोत्सवः।
पुण्यतीर्थादियात्रा स्यात्सत्कर्मसुखलाभदः॥71॥
इष्टदेवप्रसादेन विजयः कार्यलाभकृत्।

केतु दशा में गुरु भुक्ति हो और वृहस्पति केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में सुराशि में हो या स्वोच्च, स्वक्षेत्र में हो, 1.9.10 भावेशों में से किसी के साथ सम्बन्ध करता हो तो राजकीय जनों से प्रेम, मन में उत्साह, वाहन लाभ, घर में मंगल का वातावरण, पुत्र लाभ, उत्तम तीर्थों की यात्रा, सत्कर्मों का फलोदय होता है। अपि च, ईश्वर की कृपा से सर्वत्र विजय, कार्य की प्राप्ति होती है।

षष्ठाष्टमव्यये जीवे दायेशान्नीचगेऽपि वा॥72॥
चौराहिव्रणभीतिश्च धनधान्यादिनाशनम्।
पुत्रदारवियोगश्च महाक्लेशादिसम्भवम्॥73॥
आदौ शुभफलं चैव प्रान्ते क्लेशकरं भवेत्।

यदि महादशेश से 6.8.12 में या नीचगत वृहस्पति हो तो चोरभय, सर्पभय, धन-धान्य की हानि, स्त्री पुत्रों का वियोग, बड़ी मुसीबत होती है। पुनश्च दशारम्भ में थोड़ा सुख तथा अन्त में बहुत क्लेश होते हैं।

दायेशात्केन्द्रकोणे वा दुश्चिक्ये लाभगेऽपि वा॥74॥
शुभयुक्ते न स्याद्भीतिर्विचित्राम्बरभूषणम्॥
दूरदेशप्रयाणं च स्वबन्धुजनपोषणम्॥75॥
भोजनाम्बरपश्वादि भुक्त्यादौ देहपीडनम्।
अन्ते तु स्थानचलनमकस्मात्कलहो भवेत्॥76॥
द्वितीय द्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति।
महामृत्युञ्जयं कुर्यात् शिवसाहस्रकं जपेत्॥77॥

महादशेश से केन्द्र त्रिकोण, 3.11 भावों में पापयुक्त गुरु हो तो भय, साधारण वस्त्राभूषण, दूर प्रदेश की यात्रा, अपने बन्धुओं का सहारा, खाने पीने का सुख, दशारम्भ में शरीर कष्ट, अन्त में स्थान परिवर्तन, अचानक कलह होती है।

यदि गुरु 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु भय दूर करने हेतु महामृत्युंजय जप या शिव सहस्रनाम का पाठ करना चाहिए।

केतुदशा : शनिभुक्ति

केतोरन्तर्गते मन्दे स्वदेशे पीडनं भवेत्।
बन्धुक्लेशो मनस्तापः चतुष्पाज्जीवलाभकृत्॥78॥

राजकार्यकलापेन धननाशो महद्भयम्।
स्थानाच्च्युतिः प्रवासश्च मार्गे चौरभयं भवेत्॥79॥
आलस्यं मनसो हानिः सर्वं प्रायोऽशुभं भवेत्।

केतु में शनि की भुक्ति रहने पर अपने स्थान पर बड़ी पीड़ा, बन्धुओं से क्लेश, मन में उदासी, चौपाये धन की बढ़ोत्तरी, राजकीय कार्य में धन नाश, भय, स्थान से बेदखली, परदेशवास, रास्ते में चोरी का भय, आलस्य, मन में हीन भावना, प्रायः सब अशुभ फल होते हैं। उक्त फल 8.12 में या खराब राशि में शनि होने पर समझें।

मूलत्रिकोणगे मन्दे तुलायां स्वर्क्षगेऽपि वा॥80॥
केन्द्रत्रिकोणे लाभे वा दुश्चिक्ये वा शुभांशके।
शुभदृष्टिसमायुक्ते सर्वकार्यार्थसाधनम्॥81॥
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यं वस्त्राभरणलाभदम्।
स्वग्रामे सुखसम्पत्तिः स्ववर्गे राजदर्शनम्॥82॥

यदि शनि मूल त्रिकोण, स्वराशि या उच्च में हो या अच्छी राशि में केन्द्र त्रिकोण, षष्ठ, लाभ, तृतीय में हो और शुभ नवांश में रहे, शुभ ग्रह से युक्त दृष्ट हो तो सब कार्य सिद्ध होते हैं। अपने अधिकारी से विशेष सुख सहयोग, वस्त्र-भूषण की भेंट, अपने गाँव में जायदाद निर्माण अपने वर्ग में राजा जैसी स्थिति मिलती है।

दायेशात्षष्ठरिःफे वा रन्ध्रे पापेन संयुते।
देहतापो मनस्तापः कार्यविघ्नं महद्भयम्॥83॥
आलस्यं मानहानिश्च पितृमातृविनाशनम्।
द्वितीयद्यूननाथेतु तिलहोमं समाचरेत्॥84॥
कृष्णां गां महिषीं दद्यादपमृत्युहरोविधिः॥

महादशेश से 6.8.12 में शनि हो या पापयुक्त हो तो शरीर व मन में कष्ट, काम में विघ्न, भय, आलस्य मानहानि, माता-पिता का वियोग होता है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो अपमृत्यु का भय दूर करने के लिए काले तिलों से हवन, काली गाय या भैंस का दान करना चाहिए।

केतुदशा : बुधभुक्ति

केतोरन्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे॥85॥
स्वोच्चे स्वक्षेत्रसंयुक्ते राज्यलाभो महत्सुखम्।
सत्कथाश्रवणं दानं धर्मसिद्धिः सुखागमः॥86॥
अयत्नाद्धर्मलब्धिश्च विवाहश्च भविष्यति।
गृहे शुभकरं चैव वस्त्राभरणभूषणम्॥87॥
भाग्यकर्माधिपैर्युक्ते भाग्यवृद्धिः सुखावहा।
विद्वद्गोष्ठिकलापेन संतापो भूषणाधिकम्॥88॥

केतु दशा में बुधान्तर्दशा रहने पर, बुध यदि केन्द्र, लाभ, त्रिकोण में अच्छी राशि में हो, या कहीं भी उच्च या स्वक्षेत्र में हो तो राज्यलाभ, सुख, दान-पुण्य व धर्माचरण के योग, सुखप्राप्ति, बिना खास प्रयत्नों के धनलाभ, विवाह योग, घर में कल्याणकारी बातें, वस्त्राभूषणों के योग होते हैं।

यदि बुध 9-10 भावेशों के साथ सम्बन्ध करता हो तो विशेष भाग्य वृद्धि होती है। सेमिनार, विद्वानों की गोष्ठी आदि में अधिक समय लगने से थकावट हो सकती है तथा पदवी, पारितोषिक, विरुद आदि प्राप्त होते हैं।

दायेशात्केन्द्रगे सौम्ये त्रिकोणे लाभगेऽपि वा।
देहारोग्यं महालाभः पुत्रकल्याणवैभवम्॥89॥
भोजनाम्बरपश्वादिव्यवसायात्फलाधिकम्।

महादशेश केतु से केन्द्र त्रिकोण या लाभ स्थान में बुध हो, तब भी शरीर सुख, बहुत लाभ, सन्तान की उन्नति से हर्ष, भोजन वस्त्रादि का सुख, व्यवसाय से उत्तम फल प्राप्त होते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये सौम्ये मन्दाराहियुतेक्षिते॥90॥
विरोधे राजकार्येषु परावासनिवासनम्।
वाहनाम्बरपश्वादि धनधान्यादिनाशकृत्॥91॥
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तं मध्ये सौख्यं धनागमः।
अन्ते क्लेशकरं चैव दारपुत्रादिपीडनम्॥92॥

यदि बुध 6.8.12 भावों में शनि, मंगल या राहु से युक्त दृष्ट हो तो सरकारी कामों में विरोध, दूसरों के घर में निवास की मजबूरी, वाहन, धन आदि का नाश होता है।

दशारम्भ में थोड़ा शुभ फल, मध्य में सुख व धन तथा अन्त में परिवार समेत स्वयं को क्लेशों का सामना करना पड़ता है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते।
तद्भुक्त्यादौ महाक्लेशो दारपुत्रादिपीडनम्॥93॥
राजभीतिकरं चैव मध्ये तीर्थे गमो भवेत्।
द्वितीयद्यूननाथे तु ह्यपमृत्युर्भविष्यति॥94॥
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥95॥

महादशेश से 6.8.12 में निर्बल बुध हो तो प्रारम्भ में बड़े क्लेश, परिजनों को पीड़ा, राजभय, मध्य में तीर्थ यात्रा तथा अन्त में पुनः क्लेश होता है। यदि बुध 2.7 भावेश हो तो दोषनिवारणार्थ विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
केत्वन्तर्दशाफलाध्याय एकविंशः॥21॥
॥आदितः श्लोकाः 1727॥

22

॥ शुक्रान्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल

केन्द्रस्थितस्य शुक्रस्य सौम्यानां तु हतिर्यदा।
राज्याप्ती राजसम्मानं यानाम्बरविभूषणम्॥1॥
उत्साहकीर्तिसम्पत्तिस्त्रीपुत्रधनसम्पदः ।
भाग्योत्तरं मनोधैर्यं राज्यद्वाराधिपत्यताम्॥2॥
तथाविधस्य वाच्छस्य पापभुक्तौ धनक्षयम्।
कुभोजनं कुवस्त्रं च शुभकर्मविनाशनम्॥3॥
भुक्त्यादौ फलमेवं स्यादन्ते शोभनमादिशेत्।
कृषिगोभूमिपालं च दूरदेशाद्धनागमः॥4॥

केन्द्र में स्थित शुक्र की महादशा में शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा हो तो राज्यलाभ, राज-सम्मान, वाहन, जीवन स्तर में उठाव, मन मे उत्साह, कीर्ति, सम्पत्ति, घर परिवार का सुख, सम्पत्ति, भाग्यवृद्धि राजकीय विभागों में सुगम प्रवेश होता है।

केन्द्रस्थित शुक्रदशा में पापभुक्ति के दौरान धनहानि, खराब भोजन, साधारण पहनावा, अच्छे कार्यों में विघ्न होता है।

उक्त अशुभ फल दशारम्भ में होता है, अन्त में शुभ फल, व्यवसाय व धन की वृद्धि, दूरस्थ प्रदेश से धनलाभ होता है।

त्रिकोणगस्य शुक्रस्य शुभभुक्तौ शुभक्रिया।
देवभूसुरभक्तिश्च सुतदारविवर्धनम्॥5॥
यज्ञादिकर्मलाभश्च गोभूषणजयावहम्।
आरोग्यं देहकान्तिश्च चिन्तितार्थमनोरथम्॥6॥
तथाविधस्य शुक्रस्य पापभुक्तौ मनोव्यथा।
अनारोग्यमर्यादं नृपचौरारिपीडनम्॥7॥

कुस्त्रीसंगं कुवार्तां च बन्धुद्वेषं मतिभ्रमम्।
दुःस्वप्नं गौलिपतनमपकीर्तिं लभेन्नरः॥8॥

त्रिकोणस्थ शुक्र दशा में शुभ भुक्ति रहने पर शुभ कर्मो का सम्पादन, देवों ब्राह्मणों का सत्कार, परिवार में वृद्धि, यज्ञ कार्यों में अवसर, पशुधन तथा आभूषणों की प्राप्ति, विजय, उत्तम स्वास्थ्य, शरीर शोभा, मनोरथ पूर्ति होती है।

पापदशा में मनोव्यथा, स्वास्थ्य हानि, राजभय, शत्रुभय, चोरभय, खराब स्त्री का साथ, अशुभ समाचार, बन्धुओं से द्वेष, बुद्धि भ्रम, खराब सपने, खराब शकुन, अपकीर्ति होती है।

पाके शुक्रस्य दुःस्थस्याशुभभुक्तौ महद्यशः।
राज्यसम्मानमर्थाप्तिः पुत्रस्त्रीधनसम्पदः॥9॥
वस्त्रवाहनभूषाप्तिरादौ चान्ते मनोरुजः।
बन्धुद्वेषो गुरोर्नाशः स्वकुलोद्भवनाशनम्॥10॥

यदि शुक्र 6.8.12 भावों में स्थित हो और उस में पाप ग्रहों की अन्तर्दशा रहे तब यश, राज-सम्मान धन-लाभ, स्त्री, पुत्र, सम्पत्ति की प्राप्ति, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति दशारम्भ में होती है।

दशा के अन्त में मनोव्यथा, बन्धुओं से द्वेष, किसी बुजुर्ग से वियोग, परिवार में शोक होता है।

शुभग्रहाणां भुक्तौ तु देहारोग्यं महत्सुखम्।
परान्नं पट्टवस्त्राप्तिं गन्धमाल्यविभूषणम्॥11॥
भुक्त्यादौ फलमेव स्यादन्ते क्लेशकरं भवेत्।
चौरारिदेहपीडा च स्वबन्धुजननाशनम्॥12॥

6.8.12 भावगत शुक्र दशा में शुभ ग्रहों की अन्तर्दशा हो तो शरीर सुख, अन्य भौतिक सुख, उत्तम भोजन, उत्तम वस्त्राभूषण दशारम्भ में होते हैं।

दशा के अन्त में क्लेश, चोरादि से पीड़ा, अपने किसी निकटवर्ती का शोक होता है।

तृतीयायस्थशुक्रस्य परिपाके शुभेतरा।
हृतिर्दुःखमवाप्नोति धनधान्यविनाशनम्॥13॥
उद्योगभंगं क्लेशं च चौराग्निनृपपीडनम्।
भूविवादं स्वबन्धूनां नाशनं स्वपदस्य च॥14॥
तथाविधस्य शुक्रस्य शुभभुक्तौ महत्सुखम्।
नृपपूज्यं मनोधैर्यं देशग्रामाधिपत्यताम्॥15॥
वाहनभूषणाप्तिं च पुत्रस्त्रीभृत्यसम्पदः।
कूपारामतटाकानां निर्माणं धर्मसंग्रहम्॥16॥

3.11 भावगत शुक्र में अशुभ अन्तर्दशा हो तो दुःख, धन-धान्य की हानि,

परिश्रम की विफलता, क्लेश, विविध पीड़ाएँ, जायदाद सम्बन्धी विवाद, अपनी प्रतिष्ठा व सहायकों में कमी होती है।

इसी शुक्र में यदि शुभ दशा हो तो बहुत सुख, राज-सम्मान, देश या ग्राम का आधिपत्य, वाहन, वस्त्राभूषण की प्राप्ति, स्त्री-पुत्र, नौकरों का सुख, धर्मार्थ सार्वजनिक हित में कार्य करने के योग होते हैं।

धनस्थितस्य शुक्रस्य शुभभुक्तौ महत्प्रियम्।
दारपुत्रार्थलाभश्च स्वबन्धुजनरक्षणम्॥17॥
विद्या जयो मनोल्लासो देवभूसुरतर्पणम्।
यज्ञादिकर्मलाभश्च लभेन्नामद्वयं तथा॥18॥
तथास्थितस्य शुक्रस्य पापभुक्तौ भृशं वदेत्।
राजदण्डं मनोदुःखं हृद्रोगाक्षिपीडनम्॥19॥
विद्याहानिः कृषेर्नाशः कर्महानिः पदे पदे।
पदच्युतिर्भीति कम्पं लभते नात्र संशयः॥20॥

द्वितीय भावगत शुक्र दशा में शुभ भुक्ति रहने पर बड़े लोगों से स्नेह सम्बन्ध, स्त्री पुत्र, धन लाभ, अपने बन्धु की अश्रयता, विद्यालाभ, मन में उत्साह, देवकार्य सम्पादन, यज्ञयागादि के अवसर, दो नामों से प्रसिद्धि होती है।

इसी शुक्रदशा में पापान्तर्दशा हो तो बड़ा राजदण्ड, मन में दुःख, हृदय रोग, नेत्रपीड़ा, विद्याहानि, कृषि (व्यवसाय) हानि, कार्य में विघ्न, पदच्युति भय होता है।

शुक्रदशा : शुक्रभुक्ति

भृगोरन्तर्गते शुक्रे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
लाभे वा बलसंयुक्ते योगप्राबल्यमादिशेत्॥21॥
विप्रमूलाद्धनप्राप्तिर्गोमहिष्यादिलाभकृत्।
पुत्रोत्सवादिसन्तोषा गृहे कल्याणसम्भवम्॥22॥
सन्मानं राजसम्मानं राज्यलाभं महत्सुखम्।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥23॥
नूतनगृहनिर्माणं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्।
अन्नदानं प्रियं नित्यं दानधर्मादिसंग्रहम्॥24॥

शुक्रदशा में शुक्र अन्तर्दशा होने पर, शुक्र यदि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण, लाभ भाव में बलवान् हो तो जन्मकुण्डली के योगों का अच्छा फल मिलता है।

ब्राह्मणों के सहयोग से धनप्राप्ति, गाय भैंस आदि पशुधन की प्राप्ति, पुत्रोत्सव या पुत्र की उन्नति, घर में कल्याणकारी बातों के योग, सज्जनों द्वारा मान, राजपक्ष के सत्कार, राज्य या पद की प्राप्ति, सुख होता है।

यदि यह शुक्र उक्त स्थानों में स्वोच्च, स्वक्षेत्रनवांशादि में हो तो नए घर,

जायदाद का निर्माण, उत्तम रहन-सहन, अन्नदान की सामर्थ्य, प्रिय बातों के योग, दान धर्म में प्रवृत्ति होती है।

कलत्रपुत्रविभवं मित्रसंयुक्तभोजनम्।
महाराजप्रसादेन वाहनाम्बरभूषणम्॥25॥
व्यवसायात्फलाधिक्यं चतुष्पाज्जीवलाभकृत्।
प्रयाणं पश्चिमे भागे वाहनाम्बरलाभकृत्॥26॥

उक्त प्रकार से स्थित शुक्रदशा में शुक्रान्तर के दौरान, स्त्री-पुत्र का वैभव, मित्रों के साथ सहभोज के योग, समर्थ लोगों की सहायता से वाहन वस्त्रादि की प्राप्ति, व्यवसाय में अच्छा लाभ, चौपाये धन से लाभ होता है।

लग्नाद्युपचये शुक्रे शुभदृष्टि युतेक्षिते।
मित्रांशे तुंगलाभेशयोगकारकसंयुते॥27॥
राज्यलाभो महोत्साहो राजप्रीतिः सुखावहा।
गृहे कल्याणसम्पत्तिर्दारपुत्रादिवर्धनम्॥28॥

लग्न से 3.6.10.11 भावों में शुक्र यदि मित्र नवांश, उच्च नवांश में हो या किसी योगकारक या लाभेश से युक्त हो तो राज्य लाभ, उत्साह, राजकीय प्रीति, घर में कल्याणकारी वातावरण, स्त्री-पुत्रादि की उन्नति होती है।

षष्ठाष्टमव्यये शुक्रे पापयुक्तेऽथवीक्षिते।
चौरादिव्रणभीतिश्च सर्वत्र जनपीडनम्॥29॥
राजद्वारे जनद्वेष इष्टबन्धुविनाशम्।
दारपुत्रादिपीडाथ देहबाधा भविष्यति॥30॥
द्वितीयद्यूननाथे तु मरणं सम्भविष्यति।
दुर्गादेवी जपं कुर्याद् धेनुदानं च कारयेत्॥31॥

6.8.12 में शुक्र यदि पापदृष्ट युक्त हो तो चोरभय, चोटभय, सर्वत्र पीड़ा, अदालती विवाद, सहयोगियों की कमी, स्त्री-पुत्रों को कष्ट, शरीर कष्ट होता है। यदि शुक्र 2.7 भावेश हो तो मृत्यु सम्भव है। तब दुर्गापाठ तथा गोदान कराना चाहिए।

शुक्रदशा : रविभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते सूर्ये संतापो राजविड्वरम्।
दायादिकलहश्चैव व्यवहारोऽथवा भवेत्॥32॥
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे सूर्ये मित्रर्क्षे केन्द्रकोणे।
दायेशात्केन्द्रकोणे वा लाभे वा धनगेऽपि वा॥33॥
तद्भुक्तौ धनलाभः स्याद् राज्यस्त्रीधनसम्पदः।
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यमिष्टबन्धुसमागमः॥34॥

पितृमातृसुखप्राप्तिर्भ्रातृलाभो सुखावहः।
सत्कीर्तिसुखसौभाग्यं पुत्रलाभश्च जायते॥35॥

शुक्र में सूर्य भुक्ति रहने पर सन्ताप, राजकीय विवाद, उत्तराधिकार सम्बन्धी कलह, मुकद्दमा आदि होता है।

यदि सूर्य उच्च, स्वक्षेत्र, मित्रक्षेत्र में केन्द्र त्रिकोण में हो या शुक्र से केन्द्र त्रिकोण, द्वितीय या लाभ में हो तो इस भुक्ति में धनलाभ, राज्यप्राप्ति, परिवार सुख, धन-सम्पदा, अपने अधिकारी से सुख, इष्टमित्रों का सहयोग, माता-पिता का सुख, भाई का सुख, सत्कीर्ति, सुख-सौभाग्य, पुत्र प्राप्ति के योग होते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये सूर्ये दायेशाद्वा तथैव च।
नीचे वा पापवर्गस्थे देहतापो मनोरुजः॥36॥

यदि सूर्य लग्न या महादशेश से 6.8.12 में स्थित हो तो या नीच राशि, नीच नवांश या पापवर्गों में हो तो शरीर कष्ट, मनस्ताप आदि होते हैं।

स्वजनात्परिसंक्लेशः नित्यं निष्ठुरं भाषणम्।
पितृपीडाबन्धुहानी राजद्वारे विरोधकृत्॥37॥
व्रणपीड़ाहिबाधा च स्वर्क्षगे च भयं तथा।
नानारोगभयं चैव गृहक्षेत्रादि नाशनम्॥38॥
सप्तमाधिपदोषेण देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं सूर्यशान्तिं समाचरेत्॥39॥

अपि च उक्त दशा में अपने लोगों से कष्ट, कठोर भाषण, चिड़चिड़ा स्वभाव, चोट भय, जीव-जन्तुओं से भय होता है। यदि सूर्य 6.8.12 में स्वक्षेत्री भी हो तो विविध भय होता है।

यदि सूर्य सप्तमेश हो तो शरीरकष्ट सम्भव है। तब सूर्यशान्ति करनी चाहिए।

शुक्रदशा : चन्द्रभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते चन्द्रे केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे स्वक्षेत्रगे चैव भाग्यकर्मेशसंयुते॥40॥
शुभयुक्ते पूर्णचन्द्रे राज्यनाथेन संयुते।
तद्भुक्तौ वाहनाधिक्यं सेनापत्यं महत्सुखम्॥41॥
महाराजप्रसादेन गजान्तैश्वर्यमादिशेत्।
महानदीस्नानपुण्यं देवब्राह्मणपूजनम्॥42॥
गीतवाद्यप्रसंगादि विद्वज्जनविभूषणम्।
गोमहिष्यादिवृद्धिश्च व्यवसायात्फलाधिकम्॥43॥

शुक्र दशा में चन्द्रमा की भुक्ति के दौरान, चन्द्रमा यदि 1.4.7.10.11.5.9 भावों में हो या स्वोच्च, स्वराशि में 9.10 भावेश से युक्त हो, या शुभ ग्रह से युक्त

पूर्ण चन्द्रमा हो तो कई वाहनों का सुख, व्यापक बहुत सुख, बहुत ऐश्वर्य, बड़ी नदियों व तीर्थों में स्नान का पुण्य, देवों व ब्राह्मणों का सत्कार, गीत-संगीत, आमोद प्रमोद के अवसर, विद्वानों द्वारा प्रशंसा, पशुधन की वृद्धि, व्यवसाय में प्रगति होती है।

नीचे वास्तंगते वापि षष्ठाष्टव्ययराशिगे।
दायेशात्षष्ठगे वापि रन्ध्रे वा व्ययराशिगे॥44॥
तत्कालं धननाशः स्यात् संचरश्च महद्भयम्।
देहायासो मनस्तापो राजद्वारे विरोधकृत्॥45॥
विदेशगमनं चैव तीर्थयात्रादिकं फलम्।
दारपुत्रादिपीडा च स्वबन्धूनां वियोगकृत्॥46॥

नीचगत, अस्तंगत, दायेश या लग्नेश से 6.8.12 में स्थित चन्द्रमा हो तो तुरन्त धनहानि, परिभ्रमण भय, शरीरकष्ट, मानसिक तनाव, अदालती विवाद, तीर्थयात्रा, स्त्री-पुत्रों को पीड़ा, विदेश गमन, बन्धुओं से वियोग होता है।

दायेशात्केन्द्रलाभस्थे त्रिकोणे धनगेऽपि वा।
राजप्रीतिकरं चैव देशग्रामाधिपत्यता॥47॥
धैर्यं यशः सुखं कीर्तिर्वाहनाम्बरभूषणम्।
कूपारामतटाकादि निर्माणं धनसंग्रहः ॥48॥
भुक्त्यादौ देहसौख्यमन्ते क्लेशकरं भवेत्।
नखदन्तशिरोरोगः कामिला चापि सम्भवेत्॥49॥

महादशेश से केन्द्र, लाभ, त्रिकोण या धन स्थान में चन्द्रमा होने पर, राजकीय लोगों से प्रेम, स्थानीय नेतृत्व, धीरता, यश, सुख, कीर्ति, वाहन वस्त्रादि का लाभ, सार्वजनिक सुविधा हेतु कार्य करने के योग, धन-संग्रह होता है।

अन्तर्दशा के आरम्भ में स्वास्थ्य अच्छा व अन्त में कष्ट, नाखून या दाँतों में रोग, सिर में पीड़ा, जिगर की खराबी से उत्पन्न रोग होते हैं।

शुक्रदशा : मंगलभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते भौमे लग्नात्केन्द्रत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे भौमे लाभे वा बलसंयुते॥50॥
लग्नाधिपेन संयुक्ते कर्मभाग्येशसंयुते।
तद्भुक्तौ राजयोगादि सम्पदश्च सुखं परम्॥51॥
वस्त्राभरणभूम्यादिस्वेष्टसिद्धिः सुखावहा।

शुक्र में मंगल की अन्तर्दशा रहने पर, मंगल यदि लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में हो, स्वोच्च या स्वक्षेत्र में हो बलवान् होकर लाभ में बैठा हो लग्नेश 9.10 भावेश से युक्त हो तो राजयोगों के श्रेष्ठफल, उत्तम सम्पदाएँ परम सुख, वस्त्राभरण का सुख, जमीन जायदाद की प्राप्ति, इष्ट सिद्धि होती है।

षष्ठाष्टमव्यये वापि दायेशाद्वा तथैव च॥52॥
शीतज्वरादिपीडा स्यात् पितृमातृभयावहः।
स्थानभ्रंशो मनोरोगः कलहो राजविड्वरः॥53॥
स्वबन्धुजनहानिश्च धनधान्यव्ययाधिकम्।
व्यवसायात्फलं नेष्टं स्थानभूम्यादिलाभकृत्॥54॥
द्वितीयद्यूननाथे तु देहबाधा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं भौमशान्तिं समाचरेत्॥55॥

यदि लग्न या महादशेश से 6.8.12 में मंगल हो तो ज्वर की अधिकता, माता-पिता को भय, स्थानहानि, मनोद्वेग, कलह, राजकीय कोप, व्यवसाय में हानि, धन-धान्य का अधिक व्यय, बन्धु-बान्धवों की कमी, जायदाद की प्राप्ति होती है।

यदि मंगल 2.7 भावेश हो तो शरीर कष्ट होता है। शान्ति के लिए मंगल शान्ति करनी चाहिए।

शुक्रदशा : राहुभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते राहौ केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा शुभसंदृष्टे योगकारकसंयुते॥56॥
तद्भुक्तौ बहुसौख्यं च धनधान्यादिलाभकृत्।
इष्टबन्धुसमाकीर्णं भोजनाम्बरलाभदः॥57॥
यातुः कार्यार्थसिद्धिः स्यात्पशुक्षेत्रादि सम्भवः।

यदि राहु केन्द्र, त्रिकोण, लाभ में हो, शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट हो या योगकारक के साथ बैठा हो, अपनी उच्च (अच्छी) राशि में हो तो शुक्रदशा राहु भुक्ति में बहुत सुख, धन-धान्य लाभ, अभीष्ट लोगों से सम्पर्क, उत्तम रहन-सहन, यात्रा में सफलता, अथवा वाद-विवाद में सफलता, स्थान लाभ, पशु धन की वृद्धि होती है।

लग्नाद्युपचये राहौ तद्भुक्तिः सुखदा भवेत्॥58॥
शत्रुनाशो महोत्साहो राजप्रीतिं च विन्दति।
भुक्त्यादौ शरमासान् स पुच्छे ज्वरमजीर्णकृत्॥59॥
कार्यविघ्नमवाप्नोति संचरश्च मनोव्यथा।
नैर्ऋतिं दिशमाश्रित्य प्रयाणं प्रभुदर्शनम्॥60॥
सर्वकार्यर्थसिद्धिः स्यात्स्वदेशे पुनरागमः।
परं सुखं च सौभाग्यं नरोऽतीव समश्नुते॥61॥

लग्न से 3.6.10.11 भावों में स्थित राहु की अन्तर्दशा सुखदायक होती है। इस भुक्ति में शत्रुनाश, मन में उत्साह, राजकीय जनों की प्रीति प्राप्त होती है।

अन्तर्दशा के पहले 5 मास तक तथा अन्तिम महीनों में ज्वर, पाचन विकार, काम में विघ्न, वृथा भ्रमण, हताशा होती है।

अन्य मासों में उत्तम फल, नैऋत्य दिशा की यात्रा, धन लाभ, उत्तम सुख, सौभाग्य होता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते।
अशुभं लभतेकर्म पितृमातृजनो वधम्॥62॥
सर्वत्र जनविद्वेषं नानादोषादि सम्भवम्।
द्वितीये सप्तमे वापि देहालस्यं विनिर्दिशेत्॥63॥
तद्दोषपरिहारार्थं मृत्युञ्जयजपं चरेत्।

महादशेश शुक्र से 6.8.12 भावों में स्थित हो तो राहु भुक्ति में अशुभ फल, स्तरहीन कार्य, माता-पिता या उनके समान लोगों को बड़ा कष्ट, सर्वत्र जनविरोध, अनेक दोषों की उत्पत्ति होती है।

यदि राहु लग्न से 2.7 भावों में हो तो शरीर कष्ट होता है। दोषशान्ति के लिए मृत्युंजय जप करना चाहिए।

शुक्रदशा : गुरुभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते जीवे स्वोच्चे स्वक्षेत्रकेन्द्रगे॥64॥
दायेशाच्छुभराशिस्थे भाग्ये वा कर्मराशिगे।
नष्टराज्यधनप्राप्तिरिष्टार्थाम्बरसम्पदः ॥65॥
मित्रप्रभोश्च सम्मानं धनधान्यादिकं महत्।
राजसम्मानकीर्तिश्चाश्वान्दौल्यादिलाभकृत् ॥66॥
विद्वज्जनानां संयोगः शास्त्रे भूरि परिश्रमः।
पितृमातृसुखप्राप्तिः भ्रातृपुत्रादिसौख्यकृत्॥67॥

शुक्र दशा गुरु भुक्ति में, गुरु यदि स्वोच्च, स्वक्षेत्र में केन्द्रगत हो, महादशेश से शुभ भावों में या 9.10 भावों में हो तो नष्ट धन या पद की प्राप्ति, उत्तम सम्पदा, विशेष जीवन स्तर, अपने जानकार समर्थ व्यक्ति की सहायता से सम्मान, धन-धान्य वृद्धि, राज-मान्यता, कीर्ति, घोड़ा पालकी (वाहन) का सुख, विद्वानों से समागम, शास्त्र ज्ञान, माता-पिता का सुख, भाइयों व पुत्रों से सुख होता है।

दयेशात्षष्ठराशिस्थे व्यये वा पापसंयुते।
राजचौरादिपीडा च देहपीडा भविष्यति॥68॥
स्थानच्युतिः प्रवासश्च नानारोगसमुद्भवः।
कलहो बन्धुकष्टश्च पीडास्यादात्मनस्तथा॥69॥
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा समुद्भवः।
दोषस्य परिहारार्थं महामृत्युंजयं चरेत्॥70॥

महादशेश से 6.12 भावों में पापयुक्त गुरु हो तो राजभय, चोरभय, शरीरकष्ट,

स्थानच्युति, प्रवास, रोगोत्पत्ति, कलह, बन्धुओं को कष्ट, मन में व्यथा होती है।

यदि वृहस्पति 2.7 भावेश हो तो देहकष्ट होता है। तब दोष निराकरण हेतु महामृत्युंजय जप कराना चाहिए।

शुक्रदशा : शनिभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते मन्दे स्वोच्चे वा परमोच्चगे।
स्वर्क्षे केन्द्रत्रिकोणस्थे तुंगांशे स्वांशगेऽपि वा॥71॥
तद्भुक्तौ बहुसौख्यं स्यादिष्टबन्धुसमागमः।
सम्मानं प्रभुसम्मानं पुत्रिकागमनं तथा॥72॥
पुण्यतीर्थफलावाप्तिर्दानधर्मादिपुण्यकृत् ।

शुक्र में शनि की अन्तर्दशा होने पर, शनि यदि उच्च, परमोच्च, स्वक्षेत्री हो या केन्द्र त्रिकोण में अच्छी राशि में हो या उत्तम नवांश में हो तो बहुत सुख, इष्टजनों से समागम, सम्मान, अपने अधिकारी की प्रशंसा, कन्या जन्म, तीर्थयात्रा, दानधर्म में मति, आदि उत्तम फल होते हैं।

षष्ठाष्टमव्यये मन्दे दायेशाद्वा तथैव च॥73॥
स्वप्रभोश्च विशेषः स्यादतीवक्लेशसम्भवः।
देहालस्यमवाप्नोति आगमादधिकव्ययः॥74॥
भुक्त्यादौ देहमारोग्यं चरमे पितृवियोगकृत्।
दारपुत्रादिपीडा च स्वतनोश्च भवेद्भ्रमः॥75॥
व्यवसायात्फलं नेष्टं गोमहिष्यादिहानिकृत्।
द्वितीयसप्तमाधीशे देहबाधा भविष्यति॥76॥
तद्दोषपरिहारार्थं तिलहोमं च कारयेत्।
रुद्रार्चा सविशेषेण सर्वान् दोषान् व्यपोहति॥77॥

यदि शनि लग्न या शुक्र से 6.8.12 में हो तो अपने अधिकार से विशेष कष्ट, शरीर में शिथिलता, आय से अधिक व्यय, दशारम्भ में थोड़ा सुख, अन्त में पिता आदि का वियोग, स्त्री-पुत्रों को पीड़ा, अपने शरीर में उतार-चढ़ाव, व्यवसाय में हानि, पशुधन की हानि होती है।

यदि शनि 2.7 भावेश हो तो देहकष्ट सम्भव है। दोष शान्ति के लिए तिलों से हवन करें तथा रुद्रहोम करें।

एक विशेष नियम

परस्परदशायां स्वभुक्तौ सूर्यजभार्गवौ।
व्यत्ययेन विशेषेण प्रदिशेतां शुभाशुभम्॥78॥

लघुपाराशरी के नियमानुसार शुक्रदशा में शनि तथा शनि में शुक्र अपनी अपनी

अन्तर्दशा में एक दूसरे का फल, चाहे शुभ हो या अशुभ, विशेषतया देते हैं।

अर्थात् शनि दशा शुक्र भुक्ति में शनि का फल विशेष होगा तथा शुक्रदशा शनि भुक्ति में शुक्र का विशेष फल होगा।

शुक्रदशा : बुधभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते सौम्ये केन्द्रलाभत्रिकोणगे।
स्वोच्चे वा स्वर्क्षगे वापि राजप्रीतिकरं शुभम्॥79॥
सौभाग्यं पुत्रलाभश्च सन्मार्गाद्धनागमः।
पुराणधर्मश्रवणं शृंगारिजन संगमः॥80॥
इष्टबन्धुसमाकीर्णं विप्रप्रभुसमागमः।
स्वप्रभोश्च महत्सौख्यं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥81॥

शुक्र में बुधान्तर्दशा रहने पर, बुध यदि केन्द्र, त्रिकोण, लाभ स्थान में हो या स्वोच्च, स्वराशि में हो तो राजकीय जनों में स्नेहभाव, सौभाग्य, पुत्रप्राप्ति, सन्मार्ग से धनागम, पुराण कथा आदि के श्रवण के योग, फैशनपरस्त लोगों की संगति, अपने अधिकारी की विशेष कृपा, श्रेष्ठ ब्राह्मण से सम्पर्क होता है।

दायेशात्षष्ठरन्ध्रे वा व्यये वा बलवर्जिते।
पापदृष्टेऽथवायुक्ते चतुष्पाज्जीवहानिकृत्॥82॥
अन्यगृहे निवासः स्यान्मनोव्याकुलता भवेत्।
कालातिक्रमभुक्तिश्च ऋणद्रव्याप्तिरेव च॥83॥
भुक्त्यादौ शोभनं प्रोक्तं मध्ये सौख्यं विनिर्दिशेत्।
अन्ते क्लेशकरं चैव शीतवातज्वरादिकम्॥84॥
सप्तमाधीशदोषेण देहपीडा भविष्यति।
तद्दोषपरिहारार्थं विष्णुसाहस्रकं जपेत्॥85॥

महादशेश से 6.8.12 भावों में निर्बल बुध हो अथवा पापदृष्ट युक्त हो तो चौपाये धन की हानि, पराये घर में आश्रय, मन में व्यथा, समय असमय भोजन, ऋण से कार्यसाधन होता है।

आरम्भ में सामान्य शुभ, मध्य में सुख तथा अन्त में अशुभ फल रोगादि होते हैं। यदि बुध सप्तमेश हो तो शरीर कष्ट होने की सम्भावना होती है। दोष निवारण हेतु विष्णुसहस्रनाम का पाठ करना चाहिए।

शुक्रदशा : केतुभुक्ति

शुक्रस्यान्तर्गते केतौ स्वोच्चे वा स्वर्क्षगेऽपि वा।
योगकारक सम्बन्धे स्थानवीर्यसमन्विते॥86॥
भुक्त्यादौ शुभमाधिक्यात् गोमहिष्यादिवृद्धिकृत्।

व्यवसायात्फलाधिक्यं नित्यं मिष्टान्नभोजनम्॥87॥
मध्ये मध्ये महत्कष्टं पश्चादारोग्यमादिशेत्।

शुक्र में केतु भुक्ति रहने पर, केतु यदि पूर्वोक्त अपने उच्च या स्वक्षेत्र में हो, योगकारक से सम्बन्ध करे, अच्छे स्थान में स्थित हो तो उत्तम शुभ फल, पशुधन की वृद्धि, दशारम्भ में विशेष शुभ, व्यवसायवृद्धि उत्तम रहन-सहन होता है।

बीच-बीच में परेशानियाँ आती रहती हैं, परन्तु अन्त में सब ठीक हो जाता है।

दायेशाद्रिपुरन्ध्रस्थे व्यये वा पापसंयुते॥88॥
चौराहिव्रणपीडा च वृद्धिनाशौ महद्भयम्।
शिरोरोगो मनस्तापोऽकर्मकलहसम्भवः॥89॥
भार्यापुत्रविरोधश्च कार्यहानिर्धनस्रुतिः।
द्वितीयद्यूनभावे तु देहबाधा भविष्यति॥90॥
मृत्युञ्जयजपं कृत्वा छागदानं समाचरेत्।
दोषहानिर्भवेन्नूनं सर्वसम्पत् प्रदायिनी॥91॥

महादशेश से 6.8.12 में पापयुक्त केतु हो तो चोरभय, सर्पभय, कभी उन्नति, कभी अवनति, भय, सिर में रोग, मनस्ताप, बिना कारण कलह, परिवार में विरोध, कार्यहानि, धन की कमी होती है।

यदि केतु 2.7 भाव में हो तो मृत्युंजय जप व छागदान करें। तब सब प्रकार से सुख होगा।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
शुक्रान्तर्दशाफलाध्यायो द्वाविंशः॥22॥
॥आदितः श्लोकाः 1818॥

23

॥ प्रत्यन्तर्दशाफलाध्यायः ॥

सामान्य फल विचार

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि ग्रहस्योपदशाफलम्।
लग्नेशरोगनाशौ च निधनेशेन संयुतौ॥1॥
मारकेशयुतौ दृष्टौ रोगनाथांशगौ यदि।
तदा भुक्तौ विजानीयात् व्यथा शस्त्रेण वै नृणाम्॥2॥
शुभयोगेन बाधा स्यात्पापयोगेन मृत्युकृत्।
जीवांशे जीववर्गेण मूलांशे मूलवर्गतः॥3॥

अब प्रत्यन्तर्दशा का फल कहने हेतु मूलभूत नियम कहे जा रहे हैं–

1. लग्नेश व षष्ठेश से अष्टमेश का योग हो तो 1.6.8 भावेशों की दशान्तर्दशा प्रत्यन्तर्दशा में बहुत पीड़ा, शरीर कष्ट, बाधाएँ होती हैं।
2. लग्नेश व षष्ठेश यदि किसी मारकेरश से युत-दृष्ट हों तो इन तीनों की दशा अन्तर्दशा प्रत्यन्तर जब एक साथ आए तो भी उक्त अशुभ फल होता है।
3. लग्नेश व षष्ठेश यदि षष्ठेश के नवांश में हो तो लग्नेश, षष्ठेश व षष्ठेश के अधिष्ठित नवांशेश की परस्पर दशा, भुक्ति व उप दशा में उक्त अशुभ फल होता है।
4. यदि उक्त ग्रह शुभ ग्रहों से सम्बन्ध करते हों तो प्राणभय न होकर, केवल बाधा मात्र होती है। अपि च पाप सम्बन्धी हों तो मृत्यु तक हो सकती है।
5. निष्कर्षतः 1.6.8 भावेश, मारकेश, षष्ठेश का अधिष्ठित नवांशेश या किसी निसर्ग पापग्रह की एक साथ दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा आए तो कष्ट होता है।
6. उक्त ग्रह जीववर्ग की राशि नवांश में हों तो जीवधारियों से व मूल

वर्ग की राशियों में हों तो मूलवर्ग के कारण कष्ट होता है। अर्थात् राशि स्वरूपानुसार बाधा का कारण जानें।

विलग्ननाथस्य नवांशनाथो रन्ध्रांशपस्थाधिपतिश्च युक्तः।
मेषस्य षड्वर्गगतौ यदा तु भुक्तौ तदा जम्बुकभीतितो वधः॥4॥

लग्नेश जिस नवांश में गया हो, उसका स्वामी, अष्टम भाव में पड़ने वाले 64वें नवांश राशि में स्थित ग्रह व 64वें नवांश का स्वामी, इन तीनों की परस्पर दशान्तर्दशा प्रत्यन्तर हो तो भी बाधा होती है।

यदि ये ग्रह मेष राशि के वर्गों में अधिकांशतः हों तो गीदड़, भेड़िया, कुत्ता आदि जानवरों के कारण शरीर बाधा होती है।

वृषवर्गगतौ तौ चेद् वृश्चिकाद्भयमादिशेत्।
युग्मवर्गगतौ भीतिः कपिजा नात्र संशयः॥5॥
कर्कवर्गगतौ स्यातां रासभाद्भयमादिशेत्।
सिंहवर्गगतौ नूनं व्याघ्रभीतिं दिशन्ति वै॥6॥
कन्यावर्गगतौ नाथौ भल्लुकाद्भयमंजसा।
तुलाधारगतौ स्यातां गजाद्भीतिं वेदद्बुधः॥7॥

लग्न नवांशेश व अष्टम भाव नवांशेश (64वें नवांश का स्वामी) इनकी परस्पर दशान्तर्दशा प्रत्यन्तर्दशा हो और पूर्वोक्त 64वें नवांश राशि में स्थित ग्रह या 6.8 भावेश भी इन में शामिल हों तथा दशेश, भुक्तीश, प्रत्यन्तर्दशेश में से कोई दो वृष राशि के वर्ग में हों तो बिच्छू आदि से भय, मिथुनवर्ग में हों तो बन्दर आदि से भय। कर्क के वर्ग में हों तो गधे, घोड़े, खच्चर आदि से भय। सिंह वर्ग में हों तो शेर, चीता, बाघ आदि से भय। कन्या वर्ग में हों तो भालू से भय। तुला वर्ग में हों तो हाथी से भय कहना चाहिए।

अलिवर्गगतौ नूनं भयं स्याद्गजतः सदा।
यदि कार्मुकवर्गस्थौ भुक्तौ स्याद् रथतो भयम्॥8॥
नक्रवर्गगतौ तौ चेद् भुक्तौ मकरजं भयम्।
कुम्भवर्गगतौ स्यातां गोलांगूलाद्भयं वेदत्॥9॥
मीनवर्गगतौ भुक्तौ तेषां स्याद् दाहजं भयम्।
सम्यग् विचार्य मतिमान् प्रवदेत्कालवित्तमः॥10॥

यदि ये वृश्चिक नवांश में हों तो हाथी से भय, धनुवर्ग में हों तो वाहन से भय, मकरवर्ग में हों तो जलजन्तु से भय, कुम्भ वर्ग में हों तो लंगूर आदि से भय तथा मीनवर्ग में हों तो अग्नि भय होता है। इस प्रकार राशि शील का विचार करके बुद्धिमान् दैवज्ञ प्रत्यन्तर्दशा में फल कहे।

सूर्यान्तर्दशा में प्रत्यन्र्दशा फल

उद्वेगोऽथ बलं वित्तं दारार्ति शिरसिव्यथा।
ब्राह्मणेन विवादश्च सूर्यः स्वविदशां गतः॥11॥
उद्वेगः कलहश्चित्तपीड़ा स्वहृतिश्चाद्भुतम्।
मणिमुक्तादिनाशश्च विदशासु रवेः शशी॥12॥
राजभीतिः शस्त्रभीतिर्बन्धनं बहुसंकटम्।
शत्रुवह्निकृतापीडा विदशासु रवेः कुजः॥13॥

सामान्यतः सूर्य की अन्तर्दशा में सूर्य की प्रत्यन्तर्दशा हो तो उद्वेग, शक्ति में वृद्धि, धन, स्त्री को पीड़ा, सिर में कष्ट, ब्राह्मण से विवाद होता है।

चन्द्रमा के प्रत्यन्तर में भी उद्वेग, कलह, मनोव्यथा, धनहानि, संचित धन का नाश होता है। मंगल की विदशा में राजभय, शस्त्रभय, बन्धन, संकट, शत्रुपीड़ा अग्निभय होता है।

श्लेष्मव्याधिं शस्त्रभीतिं धनहानिं महद्भयम्।
राज्यभंगं तथा त्रासं विदशासु रवेस्तमः॥14॥
शत्रुनाशं जयं वृद्धिं वस्त्रहेमादिभूषणम्।
अश्वयानादिकं दत्ते गोधनं च रवेर्गुरुः॥15॥
धनहानिः पशोः पीड़ा महोद्वेगो महारुजः।
अशुभं लभ्यते सर्वं विदशासु रवेः शनिः॥16॥

सूर्य भुक्ति में राहु विदशा हो तो कफ बाधा, कफ जनित रोग, शस्त्र भय, धनहानि, भय, राज्य या पद की हानि, भीतरी डर होता है।

गुरु की विदशा में शत्रुहानि, जय, बुद्धि, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, वाहन सुख, गोधनवृद्धि होती है।

शनि की विदशा में धनहानि, पशुओं को पीड़ा, बहुत उद्वेग, बड़ा रोग, सब अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

विद्यालाभो बन्धुसंगो भोज्यप्राप्तिर्धनागमः।
धर्मलाभो नृपात्पूजा विदशासु रवेर्बुधः॥17॥
प्राणभीतिर्महाहानी राजभीतिश्च विग्रहः।
शत्रूणां च महावादो विदशासु रवेः शिखी॥18॥
दिनानि समरूपाणि लाभोऽप्यल्पो भवेदिह।
स्वल्पा च सुखसम्पत्तिर्विदशासु रवेर्भृगुः॥19॥

सूर्य भुक्ति में बुध विदशा हो तो विद्या प्राप्ति, बन्धुओं का संग, उत्तम खान-पान, धन-लाभ, धर्मवृद्धि राजमान्यता होती है।

केतु विदशा में प्राणभय, बड़ा नुकसान, राजभय, विवाद, शत्रुओं से प्रबल

विरोध होता है। शुक्र विदशा में सब कुछ समरूप चलता है, साधारण लाभ, साधारण सुख सम्पत्ति होती है।

चन्द्रान्तर्दशा में प्रत्यन्तर्दशा फल

भूभोज्यधनसम्प्राप्तिः राज्यपूजामहत्सुखम्।
महालाभः स्त्रियो भोगो विदशासु स्वयं शशी॥20॥
मतिवृद्धिर्महापूज्या सुखं बन्धुजनैः सह।
धनागमः शत्रुभयं चन्द्रान्तर्गतः कुजः॥21॥
भवेत्कल्याणसम्पतिः राज्यवित्तसमागमः।
सुसौख्यमल्पमृत्युश्च चन्द्रान्तर्गतस्तमः॥22॥

चन्द्रमा की अन्तर्दशा में चन्द्रप्रत्यन्तर हो तो भूमि लाभ, उत्तम खान-पान, धनवृद्धि, राज-सम्मान, सुख, बड़ा लाभ, स्त्रियों से सुख होता है।

मंगलप्रत्यन्तर हो तो बुद्धिवृद्धि, बड़ा सम्मान व मान्यता, सुख, बन्धु-बान्धवों का समागम, धनलाभ, लेकिन शत्रुभय होता है।

राहु प्रत्यन्तर में सर्वविध कल्याण, राज्य व धन की प्राप्ति, उत्तम सुख, अल्पमृत्यु का भय होता है।

वस्त्रलाभो महातेजो ब्रह्मज्ञानं च सद्गुरोः।
वस्त्रालंकरणावाप्तिश्चन्द्रान्तर्गते गुरौ॥23॥
दुर्दिनं लभते पीडां वातपित्ताद्विशेषतः।
धनधान्ययशोर्हानिश्चन्द्रान्तर्गते शनौ॥24॥
पुत्रजन्महयप्राप्तिर्विद्यालाभो महोन्नतिः।
शुक्लवस्त्रान्नलाभश्च चन्द्रान्तर्गते बुधे॥25॥

वृहस्पति के प्रत्यन्तर में वस्त्रलाभ, तेजोवृद्धि, अच्छे गुरु से आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति, वस्त्राभूषणों का सुख होता है।

शनि के प्रत्यन्तर में बुरे दिनों का सामना, पीड़ा, वात-पित्त से कष्ट, धन-धान्य व पशुओं की हानि होती है।

बुध प्रत्यन्तर में पुत्र-जन्म, वाहन प्राप्ति, विद्यालाभ, उन्नति, सफेद वस्त्र, अन्न की बहुलता होती है।

ब्राह्मणेन समं युद्धमपमृत्युः सुखक्षयः।
सर्वत्र जायते क्लेशश्चन्द्रमध्ये गते ह्यगौ॥26॥
धनलाभो महासौख्यं कन्याजन्मसुभोजनम्।
प्रीतिश्च सर्वलोकेभ्यो चन्द्रान्तर्गते भृगौ॥27॥
अन्नागमो वस्त्रलाभः शत्रुहानिः सुखागमः।
सर्वत्रविजयप्राप्तिश्चन्द्रमध्ये दिवाकरे॥28॥

केतु प्रत्यन्तर होने पर बुद्धिमानों व विद्वानों के साथ कलह, अपमृत्यु का

भय, सुख हानि, सर्वत्र क्लेश होता है।

शुक्र प्रत्यन्तर्दशा में धनलाभ, खूब सुख, कन्या जन्म, सब लोगों का स्नेह सत्कार प्राप्त होता है।

सूर्य प्रत्यन्तर्दशा में उत्तम भोजन, उत्तम पहनावा, शत्रुहानि, सुख, सर्वत्र विजय होती है।

मंगलान्तर्दशा में विदशा फल

शत्रुभीतिः कलिर्घोरा सहसा जायते भयम्।
रक्तस्रावोऽपमृत्युश्च विदशासु स्वयं कुजः॥29॥
बन्धनं राज्यभंगश्च धनहानिः कुभोजनम्।
कलहः शत्रुभिर्नित्यं भौमान्तर्गतस्तमः॥30॥
मतिनाशस्तथा दुःखं सन्तापः कलहो भवेत्।
विफलं चिन्तितं सर्वं भौममध्ये सुरार्चितः॥31॥

मंगल की अन्तर्दशा में मंगल का प्रत्यन्तर हो तो शत्रुभय, बड़ी कलह, खून बहने के योग, अपमृत्यु होती है।

राहु प्रत्यन्तर होने पर बन्धन, पदनाश, धनहानि, खराब भोजन, शत्रुओं से कलह होती है। गुरु प्रत्यन्तर्दशा में बुद्धि का विपर्यय, दुःख, सन्ताप, कलह, सर्वत्र असफलता मिलती है।

स्वामिनाशस्तथापीडा धनहानिर्महाभयम्।
वैकल्यं कलहस्त्रासो भौममध्ये गते शनौ॥32॥
सर्वथा बुद्धिनाशश्च धनहानिः ज्वरागमः।
वस्त्रान्नसुहृदां नाशो भौमान्तर्गतो बुधः॥33॥
आलस्यं च शिरः पीडा पापरोगोऽपमृत्युकृत्।
राज्यभीतिः शस्त्रघातो भौमान्तर्गतः शिखी॥34॥

शनि प्रत्यन्तर रहने पर अपने स्वामी की हानि, पीड़ा, धनहानि, भय का वातावरण, विफलता, कलह आदि फल होते हैं।

बुध प्रत्यन्तर में बुद्धिनाश, धनहानि, ज्वरादि से पीड़ा, खान-पान में कमी, मित्रों व सहायकों की कमी होती है।

केतु प्रत्यन्तर्दशा में आलस्य, सिर में पीड़ा, खराब रोग, अपमृत्यु का भय, राज्यभय, शस्त्र की चोट होती है।

चाण्डालात्संकटस्त्रासो राजशस्त्रभयं भवेत्।
अतीसारोऽथवमनं भौममध्ये च भार्गवे॥35॥
भूमिलाभोऽर्थसम्पत्तिः सन्तापो मित्रसंगतिः।
सर्वत्रसुखमाप्नोति भौममध्ये दिवाकरः॥36॥

याम्यां दिशि भवेल्लाभः सितवस्त्रविभूषणम्।
संसिद्धिः सर्वकार्याणां भौममध्ये निशापतिः॥37॥

शुक्र की प्रत्यन्तर्दशा में नीच व्यक्ति से संकट, भय, शस्त्रभय, उल्टी, दस्त से पीड़ा होती है।

सूर्य के प्रत्यन्तर में भूमिलाभ, धन, सम्पत्ति, सन्ताप, मित्र संगति, सर्वत्र सुख प्राप्त होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में दक्षिण दिशा से लाभ, श्वेत वस्त्रों व आभूषणों की प्राप्ति, सब कामों में सफलता होती है।

राहु मध्ये विदशा : फल

बन्धनं बहुधा रोगो बाहुघातः सुहृद्भयम्।
अकस्मादापदो यान्ति राहौ जलवह्नितो भयम्॥38॥
सर्वत्र जायते लाभो गजाश्वधनसम्पदः।
राजसम्मानदश्चैव राहौ देवगुरुः सदा॥39॥
बन्धनं जायते घोरं सुखहानिर्महद्भयम्।
प्रत्यहं वातपीडा च राह्वतन्तर्गते शनौ॥40॥

राहु अन्तर्दशा में राहु का प्रत्यन्तर हो तो बन्धन, विविध रोग, हाथ में चोट, मित्रों से कष्ट, अचानक मुसीबतें, पानी या आग से भय होता है।

गुरु की प्रत्यन्तर्दशा में लाभ, हाथी घोड़े आदि वाहन, धन-सम्पत्ति राज-सम्मान होता है। शनि के प्रत्यन्तर में बन्धन, सुख में कमी, भय, प्रतिदिन वातरोग से पीड़ा होती है।

सर्वत्र बहुधा लाभो वनिताजनितं सुखम्।
परदेशागतः सिद्धिं राह्वन्तर्गते बुधे॥41॥
बुद्धिनाशो भयं विघ्नं धनहानिर्महामयम्।
सर्वत्रकलहोद्वेगौ राहौ केतौ समागते॥42॥
योगिनीभ्यो भयं भूपादश्वहानिः कुभोजनम्।
स्त्रीनाशः कुलजः शोको राहुमध्यगते भृगौ॥43॥

बुध के प्रत्यन्तर में सर्वत्र अनेक प्रकार से लाभ, स्त्री का भरपूर सुख, परदेश से सफलता होती है। केतु प्रत्यन्तर में बुद्धिनाश, भय, विघ्न, धनहानि, मुसीबतें, सर्वत्र कलह व उद्वेग होता हैं।

शुक्र प्रत्यन्तर में विचित्र प्रकार की मानसिक व्याधि, सरकार द्वारा वाहन जब्त कर लेना, खराब भोजन, स्त्रीहानि, परिवार में शोक होता है।

ज्वररोगो महाभीतिः पुत्रपौत्रादिपीडनम्।
अल्पमृत्युः प्रमादश्च राह्वन्तर्गते रवौ॥44॥

उद्वेगः कलहश्चिन्ता मानहानिर्महद्भयम्।
पित्ताद्वैकल्यता देहे राहवन्तर्गते शशी॥45॥
भगंदरकृता पीड़ा रक्तपित्तप्रपीडनम्।
अर्थहानिर्महोद्वेगो राहवन्तर्गते कुजे॥46॥

सूर्य प्रत्यन्तर में ज्वर, बड़ा भय, पुत्र पौत्रों को पीड़ा, अल्पमृत्यु, प्रमाद होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में मन में बेचैनी, कलह, चिन्ता, मानहानि, भय, पित्तजनित रोग होते हैं।

मंगल प्रत्यन्तर में भगंदर या तत्सदृश रोग, रक्तपित्त के रोग, धन हानि, उद्वेग आदि अशुभ फल होते हैं।

गुर्वन्तर्दशा में विदशा फल

हेमलाभो धनवृद्धिः कल्याणं च फलोदयः।
बहुभावा गृहे वृद्धिर्जीवान्तर्गते गुरौ॥47॥
गोभूमिहयलाभः स्यात्सर्वत्रसुखसाधनम्।
संग्रहो ह्यन्नपानादि गुर्वन्तरगे शनौ॥48॥
विधालाभो वस्त्रलाभो ज्ञानलाभः समौक्तिकः।
सुहृदां संगमः स्नेहो जीवान्तर्गते बुधे॥49॥

गुर्वन्तर्दशा में गुरु की प्रत्यन्तर्दशा हो तो स्वर्णलाभ, धनवृद्धि, कल्याण, उत्तम फलों की प्राप्ति, घर में बहुत-सी खुशियाँ व उन्नति होती है।

शनि प्रत्यन्तर में पशुधन, भूमि, वाहन की प्राप्ति, सुख साधनों में वृद्धि, अच्छी बचत, खान-पान का सुख होता है।

बुध प्रत्यन्तर्दशा में विद्या लाभ, वस्त्र लाभ, ज्ञान लाभ, मोती माणिक आदि का लाभ, मित्रजनों से संगम, स्नेहभाव होता है।

जलभीतिस्तथाचौर्यं बन्धनं कलहो भवेत्।
अल्पमृत्युर्भयं घोरं जीवान्तर्गते ध्वजे॥50॥
नानाविधार्थसम्प्राप्ति हेमवस्त्रविभूषणम्।
लभतेक्षेमसन्तोषं जीवमध्ये गते भृगौ॥51॥
नृपाल्लाभस्तथामित्रं पितृतो मातृतोऽपि च।
सर्वत्र लभते पूजां जीवमध्ये दिवाकरे॥52॥

गुर्वन्तर में केतु की विदशा रहने पर जलभय, चोरी, बन्धन, कलह, अल्पमृत्यु, भय होता है।

गुर्वन्तर में शुक्र प्रत्यन्तर होने पर अनेक विद्याओं में गति, सुवर्ण व वस्त्रालंकार की प्राप्ति, कुशलता सन्तोष होता है।

सूर्य प्रत्यन्तर होने पर राजा से लाभ, मित्रता, माता व पिता से भी लाभ, सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है।

सर्वदुःखविमोक्षश्च मुक्तालाभो हयस्य च।
सिद्ध्यन्ति सर्वकार्याणि जीवान्तर्गते शशी॥53॥
शस्त्रभीतिर्गुदे पीडा वह्निमान्द्यमजीर्णता।
पीडा शत्रुकृता भूरि जीवजीवान्तरे कुजः॥54॥
चाण्डालेन विरोधः स्याद् भयं तेभ्यो रतिग्रहः।
कष्टं स्याद्व्याधिशत्रुभ्यो जीवान्तर्गते तमः॥55॥

गुरु अन्तर्दशा में चन्द्रमा का प्रत्यन्तर होने पर दुःखों से मुक्ति, वाहन लाभ, मुक्तामणि आदि का लाभ, सब कार्यों में सफलता होती है।

मंगल प्रत्यन्तर रहने पर शस्त्र भय, गुदाद्वार में कष्ट, भूख की कमी, अपच, शत्रुओं से कष्ट, रोग, पीड़ा होती है।

शन्यन्तर्दशाः प्रत्यन्तर फल

देहपीडाकलिर्भीतिर्भयमन्त्यजलोकतः ।
विदेशगमनं दुःखं तदा शन्यन्तरे शनिः॥56॥
बुद्धिनाशः कलेर्भीतिरन्नपानादिहानिकृत्।
धनहानिर्भयं शत्रोः सदाशन्यन्तरे बुधः॥57॥
बन्धुशत्रुगृहे जातो कर्महानिर्बहुक्षुधा।
चित्ते चिन्ताभयं त्रासो भवेच्छन्यन्तरे शिखी॥58॥

शन्यन्तर्दशा में शनि का प्रत्यन्तर हो तो शरीर कष्ट, कलह होने का डर, नीच जनों से भय, विदेश गमन, दुःख होता है।

बुध प्रत्यन्तर में बुद्धि का ह्रास, कलह होने का डर, खान-पान में बाधा, धनहानि, शत्रुभय आदि अशुभ फल होते हैं।

केतु प्रत्यन्तर में घरेलू बन्धु ही शत्रु हो जाते हैं, कार्य में हानि, भूख में निरन्तरता की कमी, मन में चिन्ता, भय आदि फल होते हैं।

चिन्तितं वर्धते वस्तुकल्याणं स्वजने जने।
मनुष्यकृषितो लाभः शनेरन्तर्गते भृगौ॥59॥
राजतेजोऽधिकारित्वं स्वगृहे जायते कलिः।
ज्वरादिव्याधिपीडा च तदा शन्यन्तरे रविः॥60॥
स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मन्दतेजो बहुव्ययः।
बहुस्त्रीभिः समं भोगं दत्ते शन्यन्तरे विधुः॥61॥

शन्यन्तर्दशा में शुक्र का प्रत्यन्तर होने पर मनोवांछित कार्यों में सफलता, परिवार में कल्याणकारी बातें, लोगों से लाभ, कृषि (व्यवसाय) वृद्धि होती है।

सूर्य प्रत्यन्तर रहने पर राजकीय अधिकार, तेजस्विता, घर में कलह, ज्वरादि पीड़ा होती है।

चन्द्रप्रत्यन्तर में बुद्धि का विकास, बड़े कार्यों का शुभारम्भ, तेजस्विता में कमी, अधिक व्यय, अनेक स्त्रियों से सुख होता है।

तेजोहानिर्पुत्रघातो वह्निभीती रिपोर्भयम्।
वातपित्तकृता पीडा दत्ते शन्यन्तरे कुजः॥62॥
धननाशो वस्त्रहानिर्भूमिनाशो भयं भवेत्।
विदेशगमनं मृत्युं दत्ते शन्यन्तरे तमः॥63॥
गृहेषु स्त्रीकृतं छिद्रं ह्यसमर्थो निरीक्षणे।
अथवा कलिमुद्वेगं दत्ते सौर्यन्तरे गुरुः॥64॥

शनि अन्तर्दशा में मंगल का प्रत्यन्तर रहने पर तेज में कमी, पुत्र को कष्ट, अग्निभय, शत्रुभय, वातपित्त आदि से उत्पन्न रोगों से पीड़ा होती है।

राहु प्रत्यन्तर में धननाश, वस्त्रादि का नाश, जायदाद की हानि, भय, विदेश गमन, मृत्यु के योग होते हैं।

गुरु प्रत्यन्तर में घर में स्त्रियों के कारण अनुशासनहीनता, घर की देख-रेख करने में असामर्थ्य, कलह, मन में चिन्ता आदि फल होते हैं।

बुध प्रत्यन्तर फलम्

बुद्धिविद्यार्थलाभो वा वस्त्रलाभो महत्सुखम्।
स्वर्णादिधनलाभः स्यात्सौम्यान्तर्गते बुधे॥65॥
कठिनान्नस्य सम्प्राप्तिरुदरे रोगसम्भवः।
कामला रक्तपित्तं च दत्ते सौम्यान्तरे शिखी॥66॥
उत्तरस्यां भवेल्लाभो हानिः स्यात्तु चतुष्पदे।
अधिकारान्महाप्रीतिः दत्ते सौम्यान्तरे भृगुः॥67॥

बुध की अन्तर्दशा में बुध का ही प्रत्यन्तर हो तो बुद्धि-विद्या की वृद्धि, वस्त्र प्राप्ति, बहुत सुख, सुवर्णादि धन का लाभ होता है।

केतु प्रत्यन्तर में मोटे अन्न की प्राप्ति, पेट में रोग, रक्तपित्त, अम्लपित्तता होती है।

शुक्र प्रत्यन्तर होने पर उत्तर दिशा में लाभ, चौपाये धन की हानि, अधिकार वृद्धि से मन में सन्तोष होता है।

तेजोहानिर्मवेद्रोगो तनुपीडा तु मार्दवी।
जायते चित्तवैकल्यं बुधे सौम्यान्तरे रविः॥68॥
स्त्रीलाभश्चार्थसम्पत्तिः कन्यालाभो महाधनम्।
लभते सर्वतः सौख्यं तदा सौम्यान्तरे विधौ॥69॥

धर्मधीधनसम्प्राप्तिश्चौराग्न्यादिप्रपीडनम् ।
रक्तस्रावः शस्त्रघाती वदेत्सौम्यान्तरे कुजे॥70॥

बुधान्तर में सूर्य प्रत्यन्तर होने पर तेजस्विता में कमी, रोग, शरीर में साधारण पीड़ा, मन में बेचैनी होती है।

चन्द्रप्रत्यन्तर होने पर स्त्रीप्राप्ति, धन-सम्पत्ति, कन्या की प्राप्ति, बहुत धन, सर्वत्र सुख होता है।

मंगल प्रत्यन्तर होने पर धर्मवृद्धि, धनवृद्धि, चोर या अग्नि से पीड़ा, शस्त्र की चोट, खून बहने के योग होते हैं।

कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद्भयसम्भवः।
राजशस्त्रकृताभीतिर्विदशायांमगोर्भवेत्॥71॥
राज्यं राज्याधिकारो वा पूजा राजसमुद्भवा।
विद्याधनान्नगुल्मश्च भवेत्सौम्यान्तरे गुरौ॥72॥
वातपित्तमहापीडा देहघातस्य सम्भवः।
धननाशमवाप्नोति तदा सौम्यान्तरे शनौ॥73॥

राहु के प्रत्यन्तर में स्त्रियों से कलह, अचानक भय की प्राप्ति, राजभय, शस्त्रभय के योग होते हैं।

गुरु प्रत्यन्तर में राज्य प्राप्ति या राज्याधिकार या राजकीय सम्मान, विद्यावृद्धि, खान-पान सामग्री की बहुलता होती है।

शनि प्रत्यन्तर में विविध रोग, शरीर में चोट के योग, धन नाश आदि फल होते हैं।

केतु विदशा फल

आपत्समुद्भवोऽकस्माद्देशान्तरसमागमः।
धननाशोऽल्पमृत्युश्च केतुमध्ये गते ध्वजे॥74॥
म्लेच्छभीत्यार्थनाशो वा नेत्ररोगः शिरोव्यथा।
हानिश्चतुष्पदानां च केतुमध्ये यदा भृगुः॥75॥
मित्रैः सह विरोधश्च स्वल्पमृत्युः पराजयः।
मतिभ्रंशो विवादश्च केतुमध्ये यदा रविः॥76॥

केतु अन्तर्दशा में केतु प्रत्यन्तर रहने पर सहसा मुसीबत, देशान्तर में गमन, धननाश, अपमृत्यु के योग होते हैं।

शुक्र प्रत्यन्तर दशा में म्लेच्छ जनों के कारण धनहानि, भय के कारण धनव्यय, नेत्र व सिर में कष्ट, चौपाये धन की हानि होती है।

सूर्य प्रत्यन्तर होने पर मित्रों के साथ विरोध, अल्पमृत्यु, पराजय, बुद्धि, विपर्यय, विवाद आदि फल होते हैं।

अन्ननाशः पशोर्हानिर्देहपीडा मतिभ्रमः।
आमवातादिवृद्धिश्च केतोः केत्वन्तरे शशी॥77॥
शस्त्रघातेन पातेन पीडितो वह्निपीडया।
नीचाद्भीती रिपोः शंका केतोः केत्वन्तरे कुजः॥78॥
कामिनीभ्यो भयं भूपात्तथा वैरिसमुद्भवः।
क्षुद्रादपि भवेद्भीतिः केतोः केत्वन्तरे तमः॥79॥

केतु में चन्द्र प्रत्यन्तर हो तो खाने पीने में बाधा, चौपाये धन की हानि, शरीर कष्ट, बुद्धिभ्रम, पेट में गैस व दस्तावर संक्रमण होता है।

केतु में मंगल हो तो शस्त्रघात, गिरने से चोट, अग्निभय, नीचजनों से भय, शत्रुओं के प्रहार की आशंका होती है।

राहु प्रत्यन्तर में स्त्रीजनों से भय, शत्रुओं से कष्ट, राजकीय प्रकोप, नीच जनों या साधारण सेवक वर्ग के लोगों से भय होता है।

धनहानिर्महोत्पातो वस्त्रमित्रविनाशनम्।
सर्वत्र लभते क्लेशं केतोः केत्वन्तरे गुरुः॥80॥
गोमहिष्यादिमरणं देहपीडा सुहृद्वधः।
स्वल्पाल्पलाभकरणं केतोः केत्वन्तरे शनिः॥81॥
बुद्धिनाशो महोद्वेगो विद्याहानिर्महाभयम्।
कार्यसिद्धिर्न जायेत् केतोः केत्वन्तरे बुधः॥82॥

केतु में वृहस्पति का प्रत्यन्तर हो तो धनहानि, बड़ी मुसीबत, वस्त्रादि की हानि, मित्रों में कमी एवं सर्वत्र क्लेश होता है।

शनि प्रत्यन्तर में गाय भैंस आदि दुधारू पशुओं की हानि, शरीर कष्ट, मित्रों की हानि, अति साधारण लाभ होता है।

बुध प्रत्यन्तर में मति विभ्रम, निर्णय क्षमता की कमी, विद्याहानि, महाभय, कार्यों में असफलता होती है।

शुक्रान्तर्दशा : विदशाफल

श्वेताश्ववस्त्रमुक्ताद्यैः स्वर्णमाणिक्यसम्भवः।
लभते सुन्दरीं नारीं शुक्रशुक्रान्तरेः भृगुः॥83॥
वातज्वरः शिरः पीडा राज्ञः पीडा रिपोरपि।
जायते स्वल्पलाभश्च शुक्रे शुक्रान्तरे रवौ॥84॥
कन्याजन्मनृपाल्लाभो वस्त्राभरणसंयुतः।
राज्याधिकारसम्प्राप्ति शुक्रे शुक्रान्तरे विधौ॥85॥

शुक्रान्तर में शुक्र प्रत्यन्तर हो तो सफेद घोड़े की प्राप्ति अर्थात् उत्तम वाहन, सुख, वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, सुवर्णादि की वृद्धि, सुन्दर स्त्री का सुख होता है।

सूर्य प्रत्यन्तर में वात ज्वर, सिर में पीड़ा, राजकीय विभागों से परेशानी शत्रुओं से भय, साधारण लाभ होता है।

चन्द्र प्रत्यन्तर में कन्या प्राप्ति, राजा या राजकीय विभागों से लाभ, भेंट स्वरूप वस्त्राभूषणों की प्राप्ति, राज्याधिकार प्राप्ति होती है।

रक्तपित्तादिरोगं च कलहस्ताडनं भवेत्।
महान् क्लेशो भवेदत्र शुक्रे शुक्रान्तरे कुजे॥86॥
कलहो जायते स्त्रीभिरकस्माद्भयसम्भवः।
राजतः शत्रुतः पीडा शुक्रे शुक्रान्तरे तमे॥87॥
महाद्रव्यं महाराज्यं वस्त्रमुक्तादिभूषणम्।
गजाश्वादिपदप्राप्तिः शुक्रे शुक्रान्तरे गुरौ॥88॥

शुक्र में मंगल का प्रत्यन्तर हो तो रक्त पित्त विकार, कलह, अपमान, क्लेश आदि फल होते हैं।

राहु प्रत्यन्तर में स्त्रियों से कलह, अकस्मात् भय, राजपक्ष व शत्रुपक्ष से पीड़ा होती है।

गुरु प्रत्यन्तर में बहुत धन, उत्तम अधिकार, वस्त्र मुक्तादि आभूषणों की प्राप्ति, हाथी घोड़े की सवारी, अच्छे पद की प्राप्ति होती है।

खरोष्ट्रछागसम्प्राप्तिर्लौहमाषतिलादिकम् ।
लभते स्वल्पपीडादि शुक्रे शुक्रान्तरे शनिः॥89॥
धनं ज्ञानं च राज्ये च साधिकारत्वमंजसा।
निक्षेपाद्धनलाभोऽपि शुक्रे शुक्रान्तरे बुधे॥90॥
अल्पमृत्युर्महाघोरा देशाद्देशान्तरागमः।
लाभोऽपि जायते मध्ये शुक्रे शुक्रान्तरे ध्वजे॥91॥

शुक्र में शनि प्रत्यन्तर हो तो व्यवसाय में सहायक वाहन आदि (गधा, ऊँट वगैरह) की प्राप्ति, लोहा, काले उड़द, तिल आदि से लाभ या इन वस्तुओं की प्राप्ति, मामूली पीड़ा भी होती है।

बुध प्रत्यन्तर में धन, ज्ञान, राजकीय अधिकार, धन के सुचिन्तित विनियोग से लाभ होता है।

केतु के प्रत्यन्तर में दर्दनाक अल्पमृत्यु, देशान्तर में गमन, मध्यवर्ती समय में लाभ भी होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
प्रत्यन्तर्दशाफलाध्यायस्त्रयोविंशः॥23॥
॥आदितः श्लोकाः॥1909॥

24

॥ सूक्ष्मदशाफलाध्यायः ॥

सूर्य प्रत्यन्तर में सूक्ष्मदशा फल

निजभूमिपरित्यागो विगमः प्राणनाशनम्।
स्थाननाशो महाहानिः सूर्यसूक्ष्मदशाफलम्॥1॥
देवब्राह्मणभक्तिश्च नित्यकर्मरतस्तथा।
सुप्रीतिः सर्वमित्रैश्च रवेः सूक्ष्मगते विधौ॥2॥
क्रूरकर्मरतिस्तिग्मशत्रुभिः परिपीडनम्।
रक्तस्रावादिरोगश्च रवेः सूक्ष्मगते कुजे॥3॥

सूर्य की सूक्ष्मदशा में अपने स्थान का त्याग, आय में कमी या अनपेक्षित नुकसान, प्राणभय, हानि आदि फल होते हैं।

चन्द्र की सूक्ष्मदशा में देवों व ब्राह्मणों की भक्ति, नित्यकर्म का सुचारु निर्वाह, सब मित्रों के साथ प्रेमभाव होता है।

मंगल की सूक्ष्मदशा में क्रूर कार्यों में रति, खतरनाक शत्रुओं से पीड़ा, रक्तस्राव, रोग होते हैं।

चौराग्निविषभीतिश्च रणे भंगः पराजयः।
दानधर्मादिहीनश्च रवेः सूक्ष्मगते ह्यगौ॥4॥
नृपसत्काराराजार्हो सेवकैः परिपूजितः।
राजचक्षुर्गतः शान्तः सूर्ये सूक्ष्मगते गुरौ॥5॥
चौर्यसाहसकर्मार्थं देवब्राह्मणपीडनम्।
स्थानच्युतिर्मनोदुःखं रवेः सूक्ष्मगते शनौ॥6॥

राहु की सूक्ष्मदशा में चोर व अग्नि आदि से भय, युद्ध में पराजय, दान धर्म की असामर्थ्य होती है।

गुरु की सूक्ष्मदशा में राज-सम्मान, नौकरों चाकरों का सुख, राजा की आँखों में चढ़ने के योग होते हैं।

शनि की सूक्ष्मदशा में चोरी या साहसिक कार्यों से धन, देवों व ब्राह्मणों का विरोध, स्थानच्युति, मन में ग्लानि होती है।

दिव्याम्बरादि लब्धिश्च दिव्यस्त्रीपरिभोगतः।
अचिन्तितार्थसिद्धिश्च रवेः सूक्ष्मगते बुधे॥7॥
गुर्वार्तिर्विनाशश्च भृत्यदारभवस्तथा।
क्वचित्सेवकसम्बन्धो रवेः सूक्ष्मगते ध्वजे॥8॥
पुत्रमित्रकलत्रादि सौख्यं सम्पत्तथैव च।
नानाविधसुखप्राप्तिः रवेः सूक्ष्मगते भृगौ॥9॥

बुध की सूक्ष्मदशा में दिव्य, उत्तम वस्त्रों की प्राप्ति, उत्तम स्त्री से सुख, अचानक ही सफलता प्राप्त होती है।

केतु की सूक्ष्मदशा में स्त्रीजन व नौकरों के कारण बड़ी पीड़ा या इन्हीं लोगों के पीड़ित होने से कष्ट होता है।

शुक्र की सूक्ष्मदशा में स्त्री, पुत्र, मित्रों का सुख, सम्पत्ति विविध प्रकार के सुख होते हैं।

चन्द्र सूक्ष्मदशा फल

भूषणं भूमिलाभश्च सन्माननृपपूजनम्।
तामसत्वं गुरुत्वं च चन्द्रसूक्ष्मदशाफलम्॥10॥
दुःखं शत्रुविरोधश्च कुक्षिरोगः पितृर्मृतिः।
वातपित्तकफोद्रेकः शशिसूक्ष्मगते कुजे॥11॥
क्रोधनं मित्रबन्धूनां देशत्यागो धनक्षयः।
विदेशान्निगडप्राप्तिः शशिसूक्ष्मगतेऽप्यहौ॥12॥

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में जायदाद की प्राप्ति, आभूषण प्राप्ति, राज-सम्मान, तमो गुण वृद्धि, मोटापा या बड़प्पन में वृद्धि होती है।

मंगल की सूक्ष्मदशा में शत्रुओं से विरोध, दुःख, पेट में रोग, पिता की मृत्यु, वात पित्त कफ में असन्तुलन होता है।

राहु की सूक्ष्मदशा में मित्रों व बन्धुओं से मनमुटाव, स्थान त्याग, धनहानि, विदेश से बन्धन या विदेश में मुकद्दमेबाजी होती है।

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
सर्वत्रसुखमाप्नोति शशिसूक्ष्मगते गुरौ॥13॥
राजोपद्रवनाशः स्याद् व्यवहारे धनक्षयः।
चौरता विप्रभीतिश्च शशिसूक्ष्मगते शनौ॥14॥
राजमानो वस्तुलाभो विदेशाद् वाहनादिकम्।
पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च शशिसूक्ष्मगते बुधे॥15॥

वृहस्पति की सूक्ष्मदशा में बहुत वैभव, छत्र व चंवर से युक्त सम्मान, पुत्र वृद्धि, सर्वत्र सुख होता है। शनि की सूक्ष्मदशा में राजकीय उपद्रव से नाश, व्यवसाय व लेन-देन में धनहानि, चोरी की प्रवृत्ति, ब्राह्मण या सुशिक्षित लोगों से भय होता है।

बुध की सूक्ष्मदशा में राज-सम्मान, लाभ, विदेश से वाहनादि की प्राप्ति, पुत्रों व पौत्रों की वृद्धि होती है।

आत्मनोवृत्तिहननं सस्यशृंगवृषादिभिः।
अग्निसर्पादिभीतिः स्याच्छशिसूक्ष्मगते ध्वजे॥16॥
विवाहो भूमिलाभश्च वस्त्राभरणवैभवम्।
राज्यलाभश्च कीर्तिश्च शशिसूक्ष्मगते भृगौ॥17॥
क्लेशात्क्लेशः कार्यनाशः पशुधान्यधनक्षयः।
गात्रे विषमता नृणां शशिसूक्ष्मगते रवौ॥18॥

केतु की सूक्ष्मदशा में स्वव्यवसाय की हानि, जानवरों की हानि व कष्ट, अग्नि या सर्प से भय होता है।

शुक्र की सूक्ष्मदशा में विवाह, भूमिलाभ, वस्त्राभरण, उत्तम रहन-सहन, राज्यप्राप्ति, कीर्ति में वृद्धि होती है।

सूर्य की सूक्ष्मदशा में कष्टों की अधिकता, कार्य में असफलता, पशु धन व अन्य धन का क्षय, शरीर में रोगादि से कष्ट होता है।

मंगल सूक्ष्मदशा फल

भूमिहानिर्मनःखेदमपस्मारी च बन्धुयुक्।
पुरक्षोभो वपुस्तापो भौमसूक्ष्मदशाफलम्॥19॥
अंगदोषो जनाद्भीतिः प्रमदावशं नाशनम्।
वह्निसर्पभयं घोरं भौमसूक्ष्मगतेऽप्यहौ॥20॥
देवपूजारतिश्चात्र मन्त्राभ्युत्थानतत्परः।
लोकपूज्यं प्रमोदश्च भौमसूक्ष्मगते गुरौ॥21॥

मंगल प्रत्यन्तर में मंगल की सूक्ष्मदशा रहने पर जायदाद की हानि, मन में व्यथा, दिमागी बीमारी, बन्धुओं व निवास स्थान के कारण व्यथा, शरीर कष्ट आदि होते हैं।

राहु की सूक्ष्मदशा में शरीर में बाधा, लोगों से भय, स्त्री कुल में हानि, अग्नि सर्प से भय, आदि फल होते हैं।

गुरु की सूक्ष्मदशा में देवपूजन में रति, मन्त्र सिद्धि की कामना, संसार में सम्मान, आनन्द आदि फल होते हैं।

बन्धनान्मुच्यते बद्धो धनधान्यपरिच्छदः।
भृत्यार्थबहुलः श्रीमान् भौमसूक्ष्मगते शनौ॥22॥

वाहनच्छत्रसंयुक्तं राजभोगपरं सुखम्।
कासश्वासादिका पीडा भौमसूक्ष्मगते बुधे॥23॥
परप्रेरितबुद्धिश्च सर्वत्रापि च गर्हितः।
अशुचिः सर्वकालेषु भौमसूक्ष्मगते ध्वजे॥24॥

शनि की सूक्ष्मदशा में बन्धन से मुक्ति, धन-धान्य की वृद्धि, नौकरों, चाकरों का सुख, धनागम, श्रीमन्तता होती है।

बुध सूक्ष्मदशा में वाहन, छत्रादि से युक्त राज्यभोग, सांस की तकलीफ आदि होती है।

केतु सूक्ष्मदशा में दूसरों के इशारों पर चलना, सर्वत्र निन्दा, अपवित्रता आदि होती है।

इष्टस्त्रीभोगसम्पत्तिरिष्टभोजनसंग्रहः ।
इष्टार्थानां च लाभः स्याद्भौमसूक्ष्मगते भृगौ॥25॥
राजद्वेषो द्विजात्क्लेशः कार्याभिप्रायवंचना।
लोकेऽपिनिन्द्यतां याति भौमसूक्ष्मगते रवौ॥26॥
शुद्धत्वं धनसम्प्राप्तिर्देवब्राह्मणवत्सलः।
व्याधिना परिभूयते भौमसूक्ष्मगते विधौ॥27॥

शुक्र की सूक्ष्मदशा में उत्तम स्त्री के सुख, इच्छित पदार्थों का घर में संग्रह, इच्छित लाभ आदि फल होते हैं।

सूर्य की सूक्ष्मदशा हो तो राजकीय विभागों से द्वेष, शिक्षित लोगों से क्लेश, काम करवाने के नाम पर ठगी, सर्वत्र बदनामी होती है।

चन्द्र की सूक्ष्मदशा में तन मन की शुद्धता, धनलाभ, देवताओं व ब्राह्मणों की कृपा, रोग से कष्ट होता है।

राहु सूक्ष्मदशा फल

लोकोपद्रवबुद्धिश्च स्वकार्ये मतिविभ्रमः।
शून्यता चित्तदोषः स्याद् राहौ सूक्ष्मगते निजे॥28॥
दीर्घरोगी दरिद्रश्च सर्वेषां प्रियदर्शनः।
दानधर्मरतः शस्तो राहौ सूक्ष्मगते गुरौ॥29॥
कुमार्गात्कुत्सितोग्रश्च दुष्टश्च परसेवकः।
असत्संगमतिर्मूढो राहौ सूक्ष्मगते शनौ॥30॥

राहु के प्रत्यन्तर में राहु की सूक्ष्मदशा हो तो लोगों में उपद्रव पैदा करने की विचारधारा, अपने काम में गलत निर्णय, सूनापन, उदासी, मन में विकार होते हैं।

गुरु की सूक्ष्मदशा में लम्बा रोग, दरिद्रता; लेकिन फिर भी सब का स्नेह, दान धर्म में मति व प्रशंसा मिलती है।

शनि की सूक्ष्मदशा में कुमार्ग गमन, निन्दित व उग्र कार्य, दुष्टता, दूसरों की अधीनता, खराब संगति के कारण बुद्धि की खराबी होती है।

स्त्रीसंगो मतौ कामी लोकसम्भावनावृतः।
अन्नमिच्छंस्तनौ ग्लानिः राहोः सूक्ष्मगते बुधे॥31॥
माधुर्यं मानहानिश्च बन्धनं चाप्तमारणम्।
पारुष्यं जीवहानिश्च राहोः सूक्ष्मगते ध्वजे॥32॥
बन्धनान्मुच्यते बद्धः स्थानमानार्थसंचयः।
कारणाद्द्रव्यलाभश्च राहोः सूक्ष्मगते भृगौ॥33॥

बुध की सूक्ष्मदशा में स्त्रियों से संग, मन में काम वासना की अधिकता, लोगों में ख्याति की सम्भावना, शरीर की विकृति के कारण, भोजन की इच्छा होने पर खाने में अशक्ति होती है।

केतु की सूक्ष्मदशा में आचरण में मधुरता, मानहानि के योग, बन्धन, किसी के साथ विश्वासघात करना, रूखा स्वभाव, जीवों के प्रति क्रूरता होती है।

शुक्र की सूक्ष्मदशा में बन्धन से मुक्ति, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि, मान-सम्मान व धन की वृद्धि, सकारण धन लाभ होता है।

व्यक्ताशा गुल्मरोगश्च क्रोधहानिस्तथैव च।
वाहनादिसुखं सर्वं राहौ सूक्ष्मगते रवौ॥34॥
मणिरत्नधनावाप्तिर्विद्योपासनशीलवान्।
देवार्चनपरोभक्त्या राहौ सूक्ष्मगते विधौ॥35॥
निर्जितो जनविद्रावैः जनक्रोधश्च बन्धनम्।
चौर्यशीलरतिर्नित्यं राहौ सूक्ष्मगते कुजे॥36॥

सूर्य की सूक्ष्मदशा हो तो महत्वाकांक्षाओं में वृद्धि, भीतरी फोड़ेनुमा रोग, क्रोध से हानि, वाहनादि का सुख होता है।

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा हो तो धन, रत्नादि की प्राप्ति, शीलवृद्धि, देवार्चन के योग, भक्ति वृद्धि होती है।

मंगल की सूक्ष्मदशा में लोगों द्वारा खिलाफत, नारेबाजी का सामना, जनता में आक्रोश, बन्धन, चोरी की बुद्धि आदि फल होते हैं।

गुरु सूक्ष्मदशा फल

शोकनाशो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम्।
वाहनं छत्रसंयुक्तं जीवसूक्ष्मदशाफलम्॥37॥
व्रतहाऽऽसुर्यवृत्तिश्च विदेशे वसुनाशनम्।
न रोधो धननाशश्च गुरौ सूक्ष्मगते शनौ॥38॥

राज्यप्रसादसम्पत्तिर्विद्यावृद्धिः सुखोदयम्।
दारपुत्रादिसौख्यं च गुरौ सूक्ष्मगते बुधे॥39॥

गुरु में गुरु की सूक्ष्मदशा हो तो शोक नाश, धन की अधिकता, हवन यज्ञ, शिवपूजा के योग, वाहन, प्रतिष्ठादि सुख प्राप्त होते हैं।

शनि की सूक्ष्मदशा में व्रतहानि, राक्षसी वृत्ति, विदेश में धनहानि, धनव्यय की निरन्तरता, हानि आदि फल होते हैं।

बुध की सूक्ष्मदशा में राजकीय प्रसाद, सम्पत्ति, विद्याप्राप्ति, सुख, स्त्री-पुत्रों का सुख होता है।

ज्ञानं विभवपाण्डित्यं शास्त्रश्रुतिशिवार्चनम्।
अग्निहोत्रं गुरौ भक्तिर्गुरौ सूक्ष्मगते ध्वजे॥40॥
रोगान्मुक्तिः सुखं भोगधनधान्यसमागमः।
पुत्रदारादिकं सौख्यं गुरौ सूक्ष्मगते भृगौ॥41॥
वातपित्तप्रकोपश्च श्लेष्मोद्रेकस्तु दारुणः।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरौ सूक्ष्मगते रवौ॥42॥

केतु की सूक्ष्मदशा में ज्ञान, वैभव, पाण्डित्य, शास्त्रश्रवण, शिवार्चन, हवन यज्ञादि कार्य, गुरु के प्रति भक्ति होती है।

शुक्र सूक्ष्मदशा में रोगमुक्ति, सुख, भोग, धन-धान्य की प्राप्ति, स्त्री-पुत्रादि का सुख होता है।

सूर्य की सूक्ष्मदशा होने पर वात-पित्त का प्रकोप, कफ वृद्धि से बहुत परेशानी, पानी या पेय पदार्थों से पैदा होने वाले रोग होते हैं।

छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
नेत्रकुक्षिगता पीडा गुरौ सूक्ष्मगते विधौ॥43॥
स्त्रीजनाच्च विषोत्पत्तिर्बन्धनं चातिनिग्रहः।
देशान्तरगमो भ्रान्तिर्गुरौ सूक्ष्मगते कुजे॥44॥
व्याधिभिः परिभूतस्याच्चौरैरपहृतं महत्।
सर्पवृश्चिकदंशः स्याद् गुरौ सूक्ष्मगतेऽथहौ॥45॥

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में छत्र चामर से युक्त वैभव, पुत्र-प्राप्ति या पुत्रों की सम्पत्ति वृद्धि, आँख व पेट में पीडा होती है।

मंगल की सूक्ष्मदशा में स्त्रियों के कारण विषभय या वैमनस्य, बन्धन, बड़ी कलह, देशान्तर में गमन, परिभ्रमण आदि फल होते हैं।

राहु की सूक्ष्मदशा में रोगों से पीड़ा, बड़ी चोरी, साँप-बिच्छू का डंक लगने के योग होते हैं।

शनि सूक्ष्मदशा फल

धनहानिर्महाव्याधिः शत्रुपीड़ा कुलक्षयः।
भिन्नाहारी महादुःखी मन्दसूक्ष्मदशाफलम्॥46॥
वाणिज्यं वृत्तिलाभश्च विद्याविभवमेव च।
स्त्रीलाभश्च महाप्राप्तिः शनौ सूक्ष्मगते बुधे॥47॥
चौरोपद्रवकुष्ठादि वृत्तिक्षयविगुम्फनम्।
सर्वांगपीडनं व्याधिः शनिः सूक्ष्मगते ध्वजे॥48॥

शनि प्रत्यन्तर में शनि की सूक्ष्मदशा हो तो धन हानि, बड़ा रोग, शत्रु पीड़ा, कुल परिवार में धन जन की हानि, परहेज से भोजन के योग, दुःख होते हैं।

बुध की सूक्ष्मदशा में व्यापार वृद्धि, व्यवसाय में लाभ, विद्याप्राप्ति, स्त्री सुख, बड़ा लाभ होता है।

केतु की सूक्ष्मदशा में चोरों का उपद्रव, त्वचा विकार, व्यवसाय में कमी, काम व परिवार में बिखराव, सारे शरीर में पीड़ा या कोई रोग होता है।

ऐश्वर्यमायुधाभ्यासः पुत्रलाभोऽभिषेचनम्।
आरोग्यं धनकामौ च शनि सूक्ष्मगते भृगौ॥49॥
राजतेजोविकारत्वं स्वगृहे जायते कलिः।
किंचित्पीडा स्वदेहोत्था शनि सूक्ष्मगते रवौ॥50॥
स्फीतबुद्धिर्महारम्भो मन्दतेजो बहुव्ययः।
स्त्रीपुत्रैश्चसमं सौख्यं शनिसूक्ष्मगते विधौ॥51॥

शुक्र की सूक्ष्मदशा में ऐश्वर्य, शस्त्र विद्या या युद्ध विद्या का अभ्यास, पुत्र प्राप्ति, पदप्राप्ति, उत्तम स्वास्थ्य, धन वृद्धि व मनोरथ वृद्धि होती है।

सूर्य की सूक्ष्मदशा में राजकीय प्रभाव या दबाव से कष्ट, अपने घर में कलह, शरीर में साधारण विकार होता है।

चन्द्र की सूक्ष्मदशा में बुद्धि का विकास, बड़े कार्यों की शुरूआत, प्रभाव में कमी, बहुत व्यय, स्त्री-पुत्रों के साथ सुखपूर्वक समय यापन होता है।

तेजोहानिर्महोद्वेगो वह्निक्षयभ्रमः कलिः।
वातपित्तकृता पीड़ा शनि सूक्ष्मगते कुजे॥52॥
पितृमातृविनाशश्च मनोदुःखं गुरुर्व्ययः।
सर्वत्र स्यान्निष्फलता शनिसूक्ष्मगतेऽप्यहौ॥53॥
सन्मुद्राभोगसम्मानं धनधान्यविवर्धनम्।
छत्रचामर सम्प्राप्तिः शनेः सूक्ष्मगते गुरौ॥54॥

मंगल की सूक्ष्मदशा में तेजस्विता में कमी, मन में उद्वेग, अग्नि से हानि, कलह, शरीर में पीड़ा होती है।

राहु की सूक्ष्मदशा में माता-पिता की हानि, मन में दुःख, बड़ा खर्च, सर्वत्र निष्फलता होती है।

गुरु की सूक्ष्मदशा में उत्तम धन, भोग, सज्जनों द्वारा मान्यता, धन-धान्य में वृद्धि, पद व अधिकार प्राप्ति होती है।

बुध सूक्ष्मदशा फल

सौभाग्यं राजसम्मानं धनधान्यादि सम्पदः।
सर्वेषां प्रियदर्शी च बुधसूक्ष्मदशाफलम्॥55॥
बालग्रहाग्निभिस्तापः स्त्रीगदोद्भवदोषभाक्।
कुमार्गी कुत्सिताशी च बुधसूक्ष्मगते ध्वजे॥56॥
वाहनं धनसम्पत्तिर्जलजान्नार्थसम्भवः।
शुभकीर्तिर्महाभोगो बुधसूक्ष्मगते भृगौ॥57॥

बुध में बुध की सूक्ष्मदशा हो तो सौभाग्य, राज-सम्मान, धन-धान्य की वृद्धि, सब का स्नेहभाव होता है।

केतु की सूक्ष्मदशा में क्षुद्र जीवों, जीवाणुओं से कष्ट, अग्निभय, स्त्री के कारण रोग, कुमार्गगमन, खराब व निन्दित भोजन की आदत होती है।

शुक्र की सूक्ष्मदशा में वाहन, धन-सम्पत्ति, जल से उत्पन्न धान्य व भोज्य पदार्थ से धन प्राप्ति, उत्तम कीर्ति, बहुत सुख भोग होते हैं।

ताडनं नृपवैषम्यं बुद्धिस्खलनरोगभाक्।
हानिरपमानभीतिश्च बुधसूक्ष्मगते रवौ॥58॥
सुभगः स्थिरबुद्धिश्च राजसम्मानसम्पदः।
सुहृदां गुरुसंस्कारो बुधसूक्ष्मगते विधौ ॥59॥
अग्निदाहो विषोत्पत्तिर्जडत्वं च दरिद्रता।
विभ्रमश्च महोद्वेगो बुधसूक्ष्मगते कुजे॥60॥

सूर्य की सूक्ष्मदशा में डाँटफटकार, अधिकारियों की नाराजगी, बुद्धि में विभ्रम, हानि-अपमान भय होता है।

चन्द्र की सूक्ष्मदशा में सौभाग्य, स्थिर बुद्धि, राज-सम्मान, सम्पत्ति, मित्रों व गुरुजनों से उत्तम सम्बन्ध होते हैं।

मंगल की सूक्ष्मदशा में अग्निदाह, विष संक्रमण, जड़ता, दरिद्रता, गलत निर्णय, मन में बेचैनी होती है।

अग्निसर्पनृपाद्भीतिः कृच्छ्रादरिपराभवः।
भूतावेशः प्रमादभ्रान्तिर्बुधसूक्ष्मगतेऽप्यहौ॥61॥
गृहोपकरणं भव्यं त्यागभोगादिवैभवम्।
राजप्रासादसम्पत्तिर्बुधसूक्ष्मगते गुरौ॥62॥

वाणिजयं वृत्तिलाभश्च विद्याविभवमेव च।
स्त्रीलाभश्च महाव्याप्तिर्बुधसूक्ष्मगते शनौ॥63॥

राहु की सूक्ष्मदशा में अग्नि, सर्प व राज पक्ष से भय, मुश्किल से शत्रुओं पर नियन्त्रण, भूत प्रेतादि से पीड़ा, बुद्धिभ्रम होता है।

गुरु की सूक्ष्मदशा में घर में उत्तम उपकरणों की खरीद, दान, भोग व वैभव, राजकीय अधिकारियों की प्रसन्नता व सम्पत्ति होती है।

शनि की सूक्ष्मदशा में व्यापार, व्यवसाय-वृद्धि, विद्या-लाभ, स्त्री-सुख, काम में फैलाव होता है।

केतु सूक्ष्मदशा फल

पुत्रदारादिजं दुःखं गात्रवैषम्यमेव च।
दारिद्र्याद्भिक्षुवृत्तिश्च केतोः सूक्ष्मदशाफलम्॥64॥
रोगनाशोऽर्थलाभश्च गुरुविप्रानुवत्सलः।
संगमः स्वजनैः सार्धं केतोः सूक्ष्मगते भृगौ॥65॥
युद्धभूमौ विनाशश्च विप्रवासः स्वदेशतः।
सुहृद्विपत्तिरार्तिश्च केतौ सूक्ष्मगते रवौ॥66॥

केतु में केतु की सूक्ष्मदशा रहने पर स्त्री-पुत्रों की ओर से दुःख, शरीर में शिथिलता, गरीबी के कारण बेहाली होती है।

शुक्र की सूक्ष्मदशा में रोगनाश, धन-लाभ, गुरुओं व विप्रों का स्नेह, स्वजनों से मेल-मिलाप होता है।

सूर्य की सूक्ष्मदशा में युद्ध भूमि में बड़ी हानि, स्वदेश से बाहर गमन, मित्रों को कष्ट, परेशानियाँ आदि होती हैं।

दासीदाससमृद्धिश्च युद्धे लब्धिर्जयस्तथा।
ललिताकीर्तिरुत्पन्ना केतोः सूक्ष्मगते विधौ॥67॥
आसने भयमश्वादेश्चोरदुष्टादिपीडनम्।
गुल्मपीडा शिरोरोगः केतोः सूक्ष्मगते कुजे॥68॥
विनाशः स्त्रीगुरूणां च दुष्टस्त्रीसंगमाल्लघु।
वमनं रुधिरे पित्तं केतोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ॥69॥

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में नौकरों चाकरों की वृद्धि, युद्ध में लाभ व विजय, उत्तम कीर्ति होती है।

मंगल की सूक्ष्मदशा में वाहन से गिरने का भय, चोरों या दुष्टों से भय, भीतरी फोड़ा, सिर में रोग होते हैं।

राहु की सूक्ष्मदशा रहने पर स्त्री जन व बुजुर्गों की हानि, दुष्ट स्त्री के सम्पर्क से कष्ट, खून की उल्टी पित्त आदि फल होते हैं।

वैरं विरोधसम्पत्तिः सहसा राज्यवैभवम्।
पशुक्षेत्रविनाशार्तिः केतोः सूक्ष्मगते गुरौ॥70॥
मृषापीडाभवेत्क्षुद्रसुतोत्पत्तिश्च लंघनम्।
स्त्रीविरोधः सस्यहानिः केतोः सूक्ष्मगते शनौ॥71॥
नानाविधजनाप्तिश्च विप्रयोगोऽरिपीडनम्।
अर्थसम्पत्समृद्धिश्च केतोः सूक्ष्मगते बुधे॥72॥

गुरु की सूक्ष्मदशा में वैरभाव, झगड़े की सम्पत्ति, अचानक राज्य का वैभव, पशुधन व जायदाद की हानि होती है।

शनि सूक्ष्मदशा में मिथ्या आरोप आदि से पीड़ा, अयोग्य पुत्र का जन्म, भोजन काल में व्यवधान, धन सम्पत्ति की वृद्धि होती है।

शुक्र सूक्ष्मदशा फल

शत्रुहानिर्महासौख्यं शंकरालयसम्भवम्।
तडागकूपनिर्माणं शुक्रसूक्ष्मदशाफलम्॥73॥
उरस्तापोभ्रमश्चैव गतागतविचेष्टितम्।
क्वचिल्लाभः क्वचिद्धानिर्भृगोः सूक्ष्मगते रवौ॥74॥
आरोग्यं धनसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः।
वैरिनिर्वारबुद्धिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते विधौ॥75॥

शुक्र में शुक्र की सूक्ष्मदशा रहने पर शत्रु हानि, बहुत सुख, शंकर जी के मन्दिर का निर्माण, तड़ाग, कुआँ आदि सार्वजनिक सुविधाओं का निर्माण होता है।

सूर्य की सूक्ष्मदशा में हृदय में ताप, भ्रम, बार-बार यात्राएँ, कभी लाभ, कभी हानि होती है।

चन्द्रमा की सूक्ष्मदशा में स्वास्थ्य, धन-सम्पत्ति, कार्य प्राप्ति, भ्रमण से लाभ, वैरियों को नियन्त्रित करने की बुद्धि होती है।

जडत्वं रिपुवैषम्यं देशभ्रंशो महद्भयम्।
व्याधिदुःखसमुत्पत्तिर्भृगोः सूक्ष्मगते कुजे॥76॥
राज्याग्निसर्पजाभीतिर्बन्धुनाशो गुरुव्यथा।
स्थानच्युतिर्महाभीतिर्भृगोः सूक्ष्मगतेऽप्यगौ॥77॥
सर्वत्रकार्यलाभश्च क्षेत्रार्थविभवोन्नतिः।
वणिग्वृत्या महालब्धिर्भृगोः सूक्ष्मगते गुरौ॥78॥

मंगल की सूक्ष्मदशा में बुद्धि की जड़ता, शत्रुओं से वैर, स्थान त्याग, भय, रोग, दुःख होते हैं।

राहु की सूक्ष्मदशा में राज्यपक्ष, अग्नि व सर्प से भय, बन्धुओं की हानि, बड़ी पीड़ा, स्थानच्युति व भय होता है।

गुरु की सूक्ष्मदशा होने पर सर्व कार्य की प्राप्ति, जायदाद व धन की वृद्धि, व्यापार से लाभ होता है।

शत्रुपीड़ा महादुःखं चतुष्पदविनाशनम्।
स्वगोत्रगुरुहानिः स्याद् भृगोः सूक्ष्मगते शनौ॥79॥
बान्धवादिषु सम्पत्तिर्व्यव्हारे धनोन्नतिः।
पुत्रदारादितः सौख्यं भृगोः सूक्ष्मगते बुधे॥80॥
अग्निरोगोमहत्पीडा मुखनेत्रशिरोव्यथा।
संचितार्थात्मनः पीडा भृगोः सूक्ष्मगते ध्वजे॥81॥

शनि की सूक्ष्मदशा होने पर शत्रु पीडा, दुःख, चौपाए धन की हानि, अपने कुल के वृद्ध की हानि होती है।

बुध की सूक्ष्मदशा में बन्धु-बान्धवों को सम्पत्ति देना या उनके नाम से निजी सम्पत्ति लेना, व्यापार में धन स्त्री पुत्रों से सुख होता है।

केतु की सूक्ष्मदशा होने पर गर्मी के रोग, बड़ा कष्ट, मुँह, नेत्र व सिर में पीड़ा संचित धन के विषय में तनाव होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
सूक्ष्मदशाफलाध्यायश्चतुर्विंशः॥24॥
॥आदितः श्लोकाः॥1990॥

25
॥ प्राणदशाफलाध्यायः ॥

प्राणदशा में विशेष योग :

शरीरनाथो मरणाधिपेनयुक्तो मृगेन्द्रेण मृगाधिपांशे।
तयोर्विपाके भयमाखुतोमृतिं सर्पात्तदा प्राहुरुदारचित्ताः॥1॥

लग्नेश व अष्टमेश यदि एक साथ सिंह राशि व सिंह नवांश में हों तो इनकी परस्पर सूक्ष्म, प्रत्यन्तर या प्राणदशा में चूहा, साँप, बिच्छू आदि जहरीले प्राणियों के काटने से बहुत कष्ट, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो जाती है।

सिंहे कन्यांशगौ तौ चेत्कफकम्पादितो मृतिः।
मृगराजे तुलांशस्थे तयोर्भुक्तौ मृतिं वदेत्॥2॥
अत्यंशगौ मृगेन्द्रे वा तयोर्दाये सरीसृपात्।
चापांशगौ मृगेन्द्रे तु तद्वर्गाच्च मृतिं वदेत्॥3॥
मृगांशगौ तौ सिंहे च तयोर्दाये खरान्मृतिः।
कुम्भांशगौ यदा स्यातां मृगराजनृपाद्भयम्॥4॥

1.8 भावेश सिंह राशि में इकट्ठे हों और कन्या नवांश में हों तो खाँसी, बलगम की अधिकता व कँपकपी से मृत्यु होती है।

सिंह राशि व तुला नवांश में हों तो भी इनकी परस्पर सूक्ष्मादि दशा में मृत्यु होती है।

सिंह राशि व वृश्चिक नवांश में एक साथ हों तो साँप आदि से मृत्यु होती है।

धनु नवांश में हों तो शेर, चीता आदि जंगली जानवरों से मृत्यु होती है।

मकर नवांश में हों तो गधा, घोड़ा आदि से मृत्यु, कुम्भ नवांश में हों तो सिंह या राजा के कारण मृत्यु होती है।

मीनांशकगतौ सिंहे सारंगाद्भयमादिशेत्।
सिंहे मेषांशगौ तौ चेत् गोमायोर्भयमादिशेत्॥5॥

सिंह राशि मीन नवांश में लग्नेश व अष्टमेश साथ हों तो हिरण से भय होता है। मेष नवांश में साथ हों तो गीदड़, भेड़िया, कुत्ता आदि से भय होता है।

वृषांशगौ तौ सूर्यर्क्षे तमोर्दाये शुनोर्मृतिः।
युग्मांशकगतौ स्यातां गोलांगूलाद्भयं भवेत्॥6॥
कर्कांशगौ तौ सिंहे च अग्निदाहाद्गृहे मृतिः।
एवं भ्रात्रादिभावानां तत्तद्भुक्तौ मृतिं वदेत्॥7॥

वृष नवांश में दोनों हों तो उनकी सूक्ष्मदशा में कुत्तों के कारण मृत्यु होती है।

मिथुनांश में हों तो बन्दर, लंगूर आदि से मृत्यु, कर्कांश में हों तो घर में अग्नि से मृत्यु होती है। लग्नेश व अष्टमेश की उक्त स्थिति से जातक की सूक्ष्मदशा का जो फल है वही विधि अन्य सम्बन्धियों के विषय में अपनाई जाएगी। जिस भाव का विचार करना हो उसी भाव से अष्टमेश लेंगे। जैसे सप्तमेश व उससे अष्टमेश (द्वितीयेश) की स्थिति से पत्नी के विषय में, तृतीयेश व दशमेश से भाई के विषय में। पंचमेश व द्वादशेश से पुत्रादि के विषय में अनिष्ट विचार करें।

देहाधिपो मृत्युपतिश्च युक्तश्चापांशगौ कार्मुकराशिगौ चेत्।
दाये तयोर्वाजिकृतं च मृत्युं वदन्ति तत्कालविदो महान्तः॥8॥

लग्नेश व अष्टमेश धनु राशि धनु नवांश में एकत्र हों तो उनकी दशा व प्राणदशा में घोड़े आदि से मृत्यु होती है।

चापे मृगांशगौ तौ चेत् सारंगाद्भयमादिशेत्।
हये कुम्भांशगौ तौ चेद् वाराहाद्भयमादिशेत्॥9॥
हये मीनांशगौ स्यातां पापौ नक्राद्भयं भवेत्।
मेषांशे चापगे विद्यात् भयं दाये चतुष्पदात्॥10॥
हये वृषांशगौ तौ चेद् भयं रासफजं भवेत्।
युग्मांशगौ हयांगे तु वानराद्भयमादिशेत्॥11॥

धनु राशि मकर नवांश में लग्नेश व अष्टमेश हों तो हिरण आदि से भय, कुम्भ नवांश में सूअर से भय, मीन नवांश मे मगरमच्छ से भय।

मेष नवांश में चौपाए पशु से भय होता है।

वृष नवांश हों तो गधे आदि से भय, मिथुनांश में हों तो वानर से भय होता है।

कर्कांशगौ हयांगे तु चाम्बुपाताद्भयं दिशेत्।
सिंहांशे जम्बूकाद्भीतिं कन्यांशे वानराद्भयम्॥
तुलांशे प्रस्तराघाताद् वृश्चिकांशे सरीसृपात्॥12॥
विलग्नपो नैधननायकश्च मृगे मृगांशे च यदा भवेताम्।
भुक्तौ तयोः प्रीतिविवाहदात्री गृहेऽथवामंगलकर्मयोगः॥13॥

कर्कांश में दोनों हों तो पानी में गिरने से मृत्यु, सिहांश में हों तो गीदड़ आदि से भय, कन्यांश में हों तो वानर से भय, तुलांश में हों तो पत्थर आदि या मिट्टी गिरने से मृत्यु, वृश्चिकांश में हों तो रेंगने वाले कीटों से मृत्यु होती है।

लग्नेश व अष्टमेश यदि मकर राशि में मकर नवांश में हों तो उनकी सूक्ष्मादि दशा में प्रेम सम्बन्धों के योग, विवाह योग या घर में कोई मंगल कार्य अर्थात् अपना विवाहादिसम्भव न हो तो सन्तान आदि का विवाह होता है।

कुम्भांशगौ मृगांगे च भल्लूकाद्भयमादिशेत्।
झषांशगौ मृगाद्भीतिं युग्मेऽपि स्याच्चतुष्पदात्॥14॥
इभात्कर्कांशगौ भीतिं वृश्चिकांशे च दंशनात्।
चापांशगौ यदा पापौ मार्जारान्मृतिमादिशेत्॥15॥

मकर राशि, कुम्भ नवांश में हों तो भालू से भय, मीनांश में हों तो मृग से भय, मिथुनांश में भी मीन सदृश फल, कर्कांश में हाथी से भय, वृश्चिकांश में डसने से भय, धनु नवांश में बिल्ली या मार्जार प्रजाति के जन्तु से मृत्यु होती है।

उक्त अशुभ फल कहने से पूर्व प्राणादि दशेशों की पापिता, मारकता आदि का अवश्य विचार करें।

सूर्य प्राणदशा फल

पौंश्चल्यं विषजा बाधा शोषणं विषमेक्षणम्।
सूर्यप्राणदशायां तु मरणं कृच्छ्रमादिशेत्॥16॥
सुखं भोजनसम्पत्तिः संस्कारो नृपवैभवम्।
उदरे विकृतेर्भीतिर्भानोः प्राणगते विधौ॥17॥
भूपोपद्रवमन्यार्थे द्रव्यनाशो महद्भयम्।
अपचयाधिक्यमादेश्यं रवेः प्राणगते कुजे॥18॥
अन्नोद्भवा महापीडा विषोत्पत्तिर्विषाद्भयम्।
अर्थाग्निराजभिः क्लेशं रवेः प्राणगतेऽप्यहौ॥19॥

सूर्य की प्राण दशा में बदनामी, विष विकार, शरीर में सूखापन, नेत्रदोष, कष्ट, मृत्यु सम्भव है।

चन्द्रमा की प्राणदशा में सुख, समयानुसार भोजन, उत्तम संस्कार, राजसी वैभव, पेट में विकार होता है।

मंगल की प्राणदशा में दूसरों के कारण राजकीय उपद्रव, धनहानि, बड़ा भय, लगातार हानि होती है।

राहु की प्राणदशा में भोजन से विषसंक्रमण, विषभय, धनहानि, अग्निभय आदि फल होते हैं।

नानाविधार्थसम्पत्तिः कार्यलाभो गतागतैः।
नृपविप्राश्रयः सूक्ष्मे रवेः प्राणगते गुरौ॥20॥
बन्धनं प्राणनाशश्च चित्तोद्वेगस्तथैव च।
बहुबाधा महाहानिः रवेः प्राणगते शनौ॥21॥
राजान्नभोगः सततं राजलाञ्छनतत्पदम्।
आत्मा सन्तर्प्यते दैवाद् रवेः प्राणगते बुधे॥22॥

वृहस्पति की प्राणदशा हो तो अनेक प्रकार की सम्पत्तियाँ, यात्रा से कार्यवृद्धि, राजा या किसी विद्वान् का आश्रय होता है।

शनि की प्राणदशा में बन्धन, जीवनहानि, मन में अनेक बाधाएँ, बड़ी हानि होती है।

बुध की प्राणदशा में राजकीय खान-पान का वैभव, राजसी उपाधि या नाम से प्रसिद्धि, अथवा राजसी प्रतिष्ठा भाग्यवृद्धि से मन में भरपूर सन्तोष होता है।

अन्योन्यं कलहश्चैव वसुहानिः पराजयः।
गुरुस्त्रीबन्धुहानिश्च सूर्यप्राणगते ध्वजे॥23॥
राजपूजा धनाधिक्यं स्त्रीपुत्रादिभवं सुखम्।
अन्नपानादिभोगाप्तिः सूर्ये प्राणगते भृगौ॥24॥

केतु की प्राणदशा में परस्पर कलह, धनहानि, पराजय, गुरुजनों, स्त्रीजन, बन्धु सहायकों की हानि होती है।

शुक्र की प्राणदशा में राजकीय सत्कार, धन की अधिकता, स्त्री-पुत्रादि का सुख, खान-पान का वैभव होता है।

चन्द्र प्राणदशा फल

योगाभ्यासः समाधिश्च लभते नूतनाम्बरम्।
स्त्रीपुत्रादि सुखं द्रव्यं निजप्राणगते विधौ॥25॥
क्षयं कुष्ठं बन्धुनाशो रक्तस्रावान्महद्भयम्।
भूतावेशादि जायेत विधोः प्राणगते कुजे॥26॥
सर्पभीति विशेषेण भूतोपद्रवान् सदा।
दृष्टिक्षोभो मतिभ्रंशो विधोः प्राणगतेऽप्यहौ॥27॥

चन्द्र की सूक्ष्मदशा में चन्द्र की ही प्राणदशा हो तो योगाभ्यास, समाधि, ध्यान का अभ्यास, नए कपड़ों की भेंट, स्त्री-पुत्रों का सुख, धन होता है।

मंगल की प्राणदशा में क्षयरोग, त्वचा रोग, बन्धुओं की कमी, खून बहने का डर, भूतप्रेतादि का प्रकोप आदि फल होता है।

राहु की प्राणदशा में सर्पभय, भूतप्रेतादि का उपद्रव, आँखों में परेशानी, बुद्धि का भ्रम होता है।

धर्मवृद्धिः क्षमाप्राप्तिर्देवब्राह्मणपूजनम्।
सौभाग्यं प्रियदृष्टिश्च चन्द्रे प्राणगते गुरौ॥28॥
सहसा देहपतनं शत्रूपद्रववेदना।
अन्धत्वं च धनप्राप्तिश्चन्द्रप्राणगते शनौ॥29॥
चामरच्छत्रसम्प्राप्ती राज्यलाभो नृपात्ततः।
समत्वं सर्वभूतेषु चन्द्रे प्राणगते बुधे॥30॥

गुरु की प्राणदशा में धर्मवृद्धि, क्षमा प्राप्ति, देवों व ब्राह्मणों का सत्कार, सौभाग्य, प्रियजनों से अनुकूलता होती है।

शनि की प्राणदशा में अचानक किसी स्थान से गिरने के योग, शत्रुओं का उपद्रव, वेदना, अन्धापन लेकिन धन प्राप्ति होती है।

बुध की प्राणदशा में चँवर छत्र वाला राजयोग, राज्यप्राप्ति, सब प्राणियों के प्रति समता का भाव होता है।

शस्त्राग्निरिपुजापीडा विषाग्नि कुक्षिरोगिता।
पुत्रदारवियोगश्च चन्द्रे प्राणगते ध्वजे॥31॥
पुत्रमित्रकलत्राप्तिर्विदेशाच्च धनागमः।
सुखसम्पत्तिरर्थश्च चन्द्रे प्राणगते भृगौ॥32॥
क्रूरताकोपवृद्धिश्च प्राणहानिर्मनोव्यथा।
देशत्यागो महाभीतिश्चन्द्रे प्राणगते रवौ॥33॥

केतु की प्राणदशा में शस्त्र, अग्नि या रिपुओं से पीड़ा, पेट में विषसंक्रमण, स्त्री व पुत्रों का वियोग होता है।

शुक्र की प्राणदशा में पुत्र, मित्र व स्त्री का सुख, विदेश से धनागम, सुख-सम्पत्ति व धन-लाभ होता है।

सूर्य की प्राणदशा में क्रूर स्वभाव, क्रोध की अधिकता, प्राणभय, मानसिक व्यथा, देशत्याग के अवसर होते हैं।

मंगल प्राणदशा फल

कलहो रिपुभिर्बन्धो रक्तपित्तादि रोगभीः।
निजसूक्ष्मदशामध्ये कुजे प्राणगते फलम्॥34॥
विच्युतः सुतदारैश्च बन्धूपद्रवपीडितः।
प्राणत्यागोविषेणैव भौमप्राणगतेऽप्यहौ॥35॥
देवार्चनपरः श्रीमान् मन्त्रानुष्ठानतत्परः।
पुत्रपौत्रसुखावाप्तिर्भौमप्राणगते गुरौ॥36॥

मंगल की सूक्ष्मदशा में मंगल की ही प्राणदशा हो तो कलह, शत्रुओं द्वारा बन्धन, रक्तपित्त के रोग होते हैं।

राहु की प्राणदशा में स्त्री पुत्रों से वंचित, बन्धुओं द्वारा उपद्रव, विषभय, प्राणभय होता है।

गुरु की प्राणदशा में देवपूजन भजन, श्रीमन्तता, मन्त्रों का अनुष्ठान, पुत्र-पौत्रों का सुख होता है।

अग्निबाधा भवेन्मृत्युरर्थनाशः पदच्युतिः।
बन्धुभिर्बन्धुतावाप्तिर्भौमप्राणगते शनौ॥37॥
दिव्याम्बरसमुत्पत्तिर्दिव्याभरणभूषितः ।
दिव्यांगनायाः सम्प्राप्तिर्भौमप्राणगते बुधे॥38॥
पातोत्पातपीडा च नेत्रक्षोभो महद्भयम्।
भुजंगाद्द्रव्यहानिश्च भौमप्राणगते ध्वजे॥39॥

शनि की प्राणदशा हो तो अग्नि भय, मृत्यु, धनहानि, पदच्युति लेकिन बन्धुओं से सहायता सहानुभूति होती हैं।

बुध की प्राणदशा में उत्तम वस्त्र, उत्तम आभूषण, उत्तम स्त्री का सम्पर्क होता है।

केतु की प्राणदशा हो तो उत्थान-पतन, नेत्ररोग, बड़ा भय, सर्पभय, धनहानि आदि फल होते हैं।

धनधान्यादिसम्पत्तिर्लोकपूजा सुखागमः।
नानाभोगैर्भवेद्भोगी भौमप्राणगते भृगौ॥40॥
ज्वरोन्मादः क्षयोऽर्थस्य राजविस्नेहसम्भवः।
दीर्घरोगी दरिद्री स्याद् भौमप्राणगते रवौ॥41॥
भोजनादि सुखप्राप्तिर्वस्त्राभरणजं सुखम्।
शीतोष्णव्याधिपीडा च भौमप्राणगते विधौ॥42॥

शुक्र की प्राणदशा हो तो धन-धान्य, सम्पत्ति, सम्मान, सुख, विविध प्रकार के भोग मिलते हैं।

सूर्य की प्राणदशा में ज्वरपीडा, धनहानि, राजकीय लोगों से सम्बन्धों में विकार, दीर्घरोगी, दरिद्रता होती है।

चन्द्रमा की प्राणदशा में उत्तम रहन-सहन, उत्तम खान-पान, मौसमी रोग होते हैं।

राहु प्राणदशा फल

अन्नाशने विरक्तश्च विषभीतिस्तथैव च।
साहसाद्धननाशश्च राहौ प्राणगतेऽप्यगौ॥43॥
अंगसौख्यं विनिर्भीति वाहनादेश्च संगता।
नीचैः कलहसम्प्राप्तिः राहोः प्राणगते गुरौ॥44॥

गृहदाहः शरीरे रुङ् नीचैरपहृतं धनम्।
तथा बन्धनसम्प्राप्ती राहौ प्राणगते शनौ॥45॥
गुरूपदेशविभवो गुरुसत्कारवर्धनम्।
गुणवांश्शीलवांश्चापि राहोः प्राणगते बुधे॥46॥

राहु की सूक्ष्मदशा में राहु की प्राणदशा हो तो खान-पान में विरक्ति, विषसंक्रमण का भय, दुःसाहसपूर्ण कदम से धनहानि होती है।

गुरु की प्राणदशा में शरीर सुख, निडरता, वाहनादि सम्पत्ति का सुख, नीचजनों से कलह होती है।

शनि की प्राणदशा में घर में अग्निभय, शरीर में रोग, नीचजनों द्वारा धन का अपहरण, बन्धन के योग होते हैं।

बुध की प्राणदशा में गुरुजनों की सलाह से वैभव, खूब मान-सम्मान, गुण व चरित्र की स्वच्छता होती है।

स्त्रीपुत्रादिविरोधश्च गृहान्निष्क्रमणादपि।
साहसात्कार्यहानिश्च राहोः प्राणगते ध्वजे॥47॥
छत्रवाहनसम्पत्तिः सर्वार्थफलसंचयः।
शिवार्चनगृहारम्भो राहोः प्राणगते भृगौ॥48॥
अर्शादिरोगभीतिश्च राज्योपद्रवसम्भवः।
चतुष्पादादिहानिश्च राहौ प्राणगते रवौ॥49॥

केतु की प्राणदशा में परिवार में वैर विरोध, घर से निकलने के योग, गलत कदम से हानि होती है।

शुक्र की प्राणदशा में वाहन, सम्पत्ति, सब तरह से सफलता, शिवालय को चलाने के योग होते हैं।

सूर्य प्राणदशा में गुदा द्वार के रोग, राज्य या पद के सम्बन्ध में उपद्रव, चौपाये धन की हानि होती है।

सौमनस्यं च सद्बुद्धिः सत्कारो गुरुदर्शनम्।
पापाद् भीतिर्मनः सौख्यं राहौ प्राणगते विधौ॥50॥
चाण्डालाग्निवशाद्भीतिः स्वपदच्युतिरापदः।
मलिनः श्वादिवृत्तिश्च राहोः प्राणगते कुजे॥51॥

चन्द्रमा की प्राणदशा में मन में प्रसन्नता, उत्तम बुद्धि, विचार, गुरुजनों का मार्गनिर्देशन, सम्मान, पाप से भय, मन में तसल्ली होती है।

मंगल की प्राणदशा में चाण्डालादि व अग्नि से भय, अपने पद से हटाये जाने के योग, मलिन विचार, नीच वृत्ति होती है।

गुरु प्राणदशा फल

हर्षागमो धनाधिक्यमग्निहोत्रं शिवार्चनम्।
वाहनं छत्रसंयुक्तं निजप्राणगते गुरौ॥52॥
व्रतहानिर्विषादश्च विदेशे धननाशनम्।
विरोधो बन्धुवर्गैश्च गुरोः प्राणगते शनौ॥53॥
विद्याबुद्धिविवृद्धिश्च लोके पूजा धनागमः।
स्त्रीपुत्रादिसुखप्राप्तिर्गुरोः प्राणगते बुधे॥54॥
ज्ञानं विभवपाण्डित्यं शास्त्रज्ञानं शिवार्चनम्।
अग्निहोत्रं गुरोर्भक्तिर्गुरोः प्राणगते ध्वजे॥55॥

गुरु की सूक्ष्मदशा में गुरु की ही प्राणदशा हो तो खुशी, धन का आगम, अग्निहोत्रादि मंगल कार्य, शंकर जी के प्रति भक्ति, वाहन सुख, प्रतिष्ठा होती है।

शनि की प्राणदशा में नियम हानि, मन में खेद, विदेश में धनहानि, बन्धुओं से विरोध होता है।

बुध की प्राणदशा में विद्या बुद्धि की वृद्धि, समाज में सम्मान, धनलाभ, पारिवारिक सुख होता है।

केतु की प्राणदशा में ज्ञान, वैभव, पाण्डित्य, शस्त्रों का ज्ञान, शिवभक्ति, धार्मिक कार्य, गुरुजनों के प्रति आदर भाव होता है।

रोगान्मुक्तिः सुखं भोगो धनधान्यसमागमः।
पुत्रदारादिजं सौख्यं गुरोः प्राणगते भृगौ॥56॥
वातपित्तप्रकोपश्च श्लेष्मोद्रेकस्तु दारुणः।
रसव्याधिकृतं शूलं गुरोः प्राणगते रवौ॥57॥
छत्रचामरसंयुक्तं वैभवं पुत्रसम्पदः।
नेत्रकुक्षिगता पीडा गुरौ प्राणगते विधौ॥58॥

शुक्र की प्राणदशा में रोग मुक्ति, सुख, भोग, धन-धान्य की वृद्धि, स्त्री पुत्रों का सुख होता है। सूर्य की प्राण दशा में वात पित्त के रोग, कफ की अधिकता के रोग, भीतरी कमजोरी होती है। चन्द्र की प्राणदशा में वैभव, पुत्र सम्पत्ति, प्रतिष्ठा परन्तु आँख व पेट में पीड़ा होती है।

स्त्रीजनाच्च विषोत्पत्तिर्बन्धनं वातिनिग्रहः।
देशान्तरगमो भ्रान्तिर्गुरोः प्राणगते कुजे॥59॥
व्याधिभिः परिभूतः स्याच्चौरैरपहृतं धनम्।
सर्पवृश्चिकभीतिश्च गुरौ प्राणगतेऽप्यहौ॥60॥

मंगल की प्राणदशा में स्त्री के कारण वैमनस्य या शरीर में रोग, बन्धन, बड़ी कलह, देशान्तर की यात्रा, बुद्धिभ्रम होता है।

राहु की प्राणदशा में रोगों से कष्ट, चोरी से हानि, साँप बिच्छू का भय होता है।

शनि प्राणदशा फल

ज्वरेण ज्वलिता कान्तिः कुष्ठरोगो दारादिरुक्।
जलाग्निकृता मृत्युस्यान्निजप्राणगते शनौ॥61॥
धनं धान्यं च मांगल्यं व्यवहाराभिपूजनम्।
देवब्राह्मणभक्तिश्च शनेः प्राणगते बुधे॥62॥
मृत्युवेदनदुःखं च भूतोपद्रवसम्भवः।
परदाराभिभूतत्वं शनेः प्राणगते ध्वजे॥63॥
पुत्रार्थविभवं सौख्यं क्षितिपालादितः सुखम्।
अग्निहोत्रं विवाहश्च शनेः प्राणगते भृगौ॥64॥

शनि की सूक्ष्मदशा में शनि की ही प्राणदशा हो तो ज्वर से त्वचा की कान्ति की मलिनता, त्वचारोग, पेट के रोग, जल या अग्नि से मृत्यु होने का भय होता है।

बुध की प्राणदशा में धन, धान्य, मंगल कार्य, लोक व्यवहार में लाभ, देवों व ब्राह्मणों के प्रति भक्ति होती है।

केतु की प्राणदशा में मृत्यु तुल्य वेदना, दुःख, भूतप्रेतादिकों का उपद्रव, परस्त्री के कारण कष्ट होता है।

शुक्र की प्राणदशा में पुत्र सुख, धन सुख, राजा या समर्थ व्यक्ति से सुख, अग्निहोत्र, धार्मिक कार्य, विवाह आदि कार्य होते हैं।

अक्षिपीडाशिरोव्याधिः सर्पशत्रुभयं भवेत्।
अर्थहानिर्महाक्लेशः शनेः प्राणगते रवौ॥65॥
आरोग्यं पुत्रलाभश्च शान्तिपौष्टिकवर्धनम्।
देवब्राह्मणभक्तिश्च शनेः प्राणगते विधौ॥66॥
गुल्मरोगः शत्रुभीतिर्मृगयाप्राणनाशनम्।
सर्पाग्निविषतो भीतिः शनेः प्राणगते कुजे॥67॥
देशत्यागो नृपाद्भीतिर्मोहनं विषभक्षणम्।
वातपित्तकृता पीडा शनेः प्राणगतेऽप्यहौ॥68॥
सेनापत्यं भूमिलाभः संगमः स्वजनैः सह।
गौरवं नृपसम्मानं शनेः प्राणगते गुरौ॥69॥

सूर्य की प्राणदशा में नेत्र पीड़ा, सिर में रोग, सर्प भय, शत्रु भय, धनहानि, बड़ा क्लेश होता है।

चन्द्रमा की प्राणदशा में स्वास्थ्य लाभ, पुत्र लाभ, शान्ति सुख, पुष्टि, देवों ब्राह्मणों के प्रति भक्ति होती है।

मंगल की प्राणदशा में गुल्मरोग, शत्रुभय, शिकार आदि में प्राणभय, सर्प, अग्नि, विष से भय होता है।

राहु की प्राणदशा में देशत्याग, राजा से भय, बेहोशी, विषपान के योग, वात पित्त की पीड़ा होती है।

गुरु की प्राणदशा में जनसमर्थन, सेनापतित्व, जायदाद प्राप्ति, स्वजनों से संगम, गौरव, राज-सम्मान होता है।

बुध प्रणदशा फल

आरोग्यं सुखसम्पत्तिर्धर्मकर्मादिसाधनम्।
समत्वं सर्वभूतेषु निजप्राणगते बुधे॥70॥
वह्नितस्करतो भीतिः परमाधिविषोद्भवः।
देहान्तकरणं दुःखं बुधप्राणगते ध्वजे॥71॥
प्रभुत्वं धनसम्पत्तिः कीर्तिर्धर्मः शिवार्चना।
पुत्रदारादिजं सौख्यं बुधप्राणगते भृगौ॥72॥

बुध की सूक्ष्मदशा में बुध की ही प्राणदशा हो तो शरीर सुख, सम्पत्ति, धर्म कर्म की प्राप्ति, सब प्राणियों के प्रति आदर भाव पैदा होता है।

केतु की प्राणदशा में अग्नि व चोर से भय, मानसिक रोग, विषादि सेवन से मनोविकार, शरीर हानि।

शुक्र की प्राणदशा में अधिकार वृद्धि, कीर्ति, धर्म वृद्धि, शिवार्चन के योग, पुत्र-स्त्री के सुख होते हैं।

अन्तर्दाहो ज्वरोन्मादो बान्धवानां रतिः स्त्रिया।
प्राप्यते स्तेयसम्पत्तिर्बुधप्राणगते रवौ॥73॥
स्त्रीलाभश्चार्थसम्पत्तिः कन्यालाभो धनागमः।
लभते सर्वतः सौख्यं बुधप्राणगते विधौ॥74॥
पतितः कुक्षिरोगी च दन्तनेत्रादिना व्यथा।
अर्शार्तिर्प्राणसन्देहो बुधे प्राणगते कुजे॥75॥

सूर्य की प्राणदशा में पेट में जलन, ज्वर से उत्पन्न उन्माद, स्त्री व बान्धवों से रति, चोरों से धनसम्पत्ति प्राप्त होती है।

चन्द्रमा की प्राणदशा में स्त्री से लाभ, धन-सम्पत्ति, कन्या प्राप्ति, धनागम, सर्वत्र सुख होता है।

मंगल की प्राणदशा में पतन, पेट में रोग, दाँत व नेत्रों में पीड़ा, बवासीर से परेशानी, प्राण सन्देह होता है।

वस्त्राभरणसम्पत्तिर्वियोगो विप्रवैरिता।
सन्निपातोद्भवं दुःखं बुधे प्राणगतेऽप्यहौ॥76॥

गुरुत्वं धनसम्पत्तिर्विद्या सद्गुणसंग्रहः।
व्यवसायेन संलाभो बुधे प्राणगते गुरौ॥77॥
चौर्येण निधनप्राप्तिर्विधनत्वं दरिद्रता।
याचकत्वं विशेषेण बुधे प्राणगते शनौ॥78॥

राहु की प्राणदशा में वस्त्राभूषणों की बहुतायत, सम्पत्ति, वियोग, विद्वानों से विरोध, सन्निपात ज्वर से पीड़ा होती है।

गुरु की प्राणदशा में बड़प्पन, धन-सम्पत्ति, विद्या प्राप्ति, गुणों में वृद्धि, व्यवसाय में लाभ होता है।

शनि की प्राणदशा में चोरों द्वारा मृत्यु, धनहीनता, ऋण आदि के योग होते हैं।

केतु प्राणदशा फल

अश्वपातेन घातश्च शत्रुतः कलहागमः।
निर्विचारवधोत्पत्तिर्निजप्राणगते ध्वजे॥79॥
क्षेत्रलाभो वैरिनाशो हयलाभो मनः सुखम्।
पशुक्षेत्रधनाप्तिश्च केतोः प्राणगते भृगौ॥80॥
स्तेयाग्निरिपुभीतिश्च धनहानिर्मनोव्यथा।
प्राणान्तकरणं कष्टं केतोः प्राणगते रवौ॥81॥

केतु की सूक्ष्मदशा में केतु की प्राणदशा हो तो वाहन या घोड़े आदि से गिरने से चोट, शत्रुओं से कलह, अचानक विपत्ति का आगमन होता है।

शुक्र की प्राणदशा में सम्पत्ति लाभ, वैरियों का नाश, वाहनप्राप्ति, मन में तसल्ली, धन-धान्यादि की वृद्धि होती है।

सूर्य की प्राणदशा में चोर, शत्रु व अग्नि से भय, धन-हानि, मन में व्यथा, प्राण-हानि होती है।

देवद्विजगुरोः पूजा दीर्घयात्रा धनं सुखम्।
कर्णे वा लोचने रोगः केतोः प्राणगते विधौ॥82॥
पित्तरोगो नसावृद्धिर्विभ्रमः सन्निपातजः।
स्वबन्धुजनविद्वेषः केतोः प्राणगते कुजे॥83॥
विरोधः स्त्रीसुताद्यैश्च गृहान्निष्क्रमणं भवेत्।
स्वसाहसात्कार्यहानिः केतोः प्राणगतेऽप्यहौ॥84॥

चन्द्रमा की प्राणदशा में देवताओं व गुरुओं की प्रसन्नता, लम्बी यात्रा, धन, सुख, कान या आँख में रोग होता है।

मंगल की प्राणदशा में पित्तरोग, नाक में रोग, तीव्र ज्वर से मस्तिष्क के कार्य में बाधा, अपने बन्धुओं से द्वेष भाव होता है।

राहु की प्राणदशा में परिवारजनों से विरोध, घर से पलायन, अपने गलत कदम से पीड़ा होती है।

शस्त्रव्रणैर्महारोगो हृत्पीडादिसमुद्भवः।
सुतदारवियोगश्च केतोः प्राणगते गुरौ॥85॥
मतिविभ्रमतीक्ष्णत्वं क्रूरकर्मरतिः सदा।
व्यसनाद्बन्धनं दुःखं केतोः प्राणगते शनौ॥86॥
कुसुमं शयनं भूषा लेपनं भोजनादिकम्।
सौख्यं सर्वांगभोग्यं च केतोः प्राणगते बुधे॥87॥

गुरु की प्राणदशा में घाव में विकार होने से बड़ा रोग, हृदय में पीड़ा, परिवार से वियोग होता है।

शनि की प्राणदशा में मति विभ्रम, विनम्र स्वभाव, क्रूर कर्मों में रति, विपत्ति, बन्धन, दुःख होता है।

बुध की प्राणदशा में वस्त्राभूषणों का राजसी सुख, उत्तम रहन-सहन, सब तरह के सुख होते हैं।

शुक्र प्राणदशा फल

ज्ञानमीश्वरभक्तिश्च सन्तोषश्च धनागमः।
पुत्रपौत्रसमृद्धिश्च निजप्राणगते भृगौ॥88॥
लोकप्रकाशकीर्तिश्च सुतसौख्यविवर्जितः।
उष्णादिरोगजं दुःखं शुक्रप्राणगते रवौ॥89॥
देवार्चने कर्मरतिर्मन्त्रतोषणतत्परः।
धनसौभाग्यसम्पत्तिः शुक्रप्राणगते विधौ॥90॥

शुक्र की सूक्ष्मदशा में शुक्र की ही प्राणदशा हो तो ज्ञानवृद्धि, ईश्वर भक्ति, सन्तोष, धनलाभ, पुत्रों व पौत्रों की समृद्धि होती है।

सूर्य की प्राणदशा हो तो संसार में यश का फैलाव, पुत्र की ओर से कम सुख, गर्मी के रोगो से परेशानी होती है।

चन्द्र की प्राणदशा में देवयजन पूजन में रति, काम में अधिक उत्साह, संकल्पसिद्धि के उत्कृष्ट यत्न, धन, सौभाग्य व सम्पत्ति होती है।

ज्वरो मसूरिका स्फोटकण्डूचिपिटकादिकाः।
देवब्राह्मणपूजा च शुक्रप्राणगते कुजे॥91॥
नित्यं शत्रुकृता पीड़ा नेत्रकुक्षिरुजादयः।
विरोधः सुहृदां पीडा शुक्रप्राणगतेऽप्यहौ॥92॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रस्त्रीधनवैभवम्।
छत्रवाहनसम्प्राप्तिः शुक्रप्राणगते गुरौ॥93॥

मंगल की प्राणदशा रहने पर ज्वर, खसरा, फोड़े फुंसी, मुहांसे आदि होते हैं। अपि च धार्मिक भावनाओं की वृद्धि होती है।

राहु की प्राणदशा में शत्रुओं से पीड़ा, नेत्र व पेट में रोग, मित्रों से विरोध, पीड़ा होती हैं।

गुरु की प्राणदशा में आयुवृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, ऐश्वर्य वृद्धि, पुत्र व स्त्री का सुख, वैभव, विलासिता व प्रतिष्ठा दायक वस्तुओं की प्राप्ति होती है।

राजोपद्रवजा भीतिः सुखहानिर्महारुजः।
नीचैः सह विवादश्च भृगोः प्राणगते शनौ॥94॥
सन्तोषो राजसम्मानं नानादिग्भूमिसम्पदः।
नित्यमुत्साहवृद्धिश्च शुक्रप्राणगते बुधे॥95॥
जीवितात्मयशोहानिर्धनधान्यपरिक्षयः ।
त्यागभोगधनानि स्युः शुक्रप्राणगते ध्वजे॥96॥

शनि की प्राणदशा में राजकीय उपद्रव, सुख में कमी, बड़ा रोग, नीचजनों के साथ विवाद होता है।

बुध की प्राणदशा में सन्तोष, राजकीय सत्कार, विभिन्न स्रोतों से सम्पत्ति वृद्धि, उत्साह की अधिकता होती है।

केतु की प्राणदशा में जीवन हानि, धन-धान्य की हानि, जैसे तैसे जीवनयापन के योग्य धन होता है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
प्राणदशाफलाध्यायः पंचविंशः॥25॥
॥आदितः श्लोकाः 2085॥

26
॥ चरादिदशाफलाध्यायः ॥

यो यो दशाप्रदो राशिस्तस्यरन्ध्रत्रिकोणके।
पापखेटयुते विप्र! सा दशा दुःखदायिका॥1॥

चर स्थिरादि दशाओं में जिस राशि से 5.8.9 भावों में पापग्रह स्थित हों तो उस राशि की दशा में विशेषतया दुःख होते हैं।

—तीनों भावों में पापग्रह हों या सभी पापग्रह इन भावों में हों तो अत्यधिक कष्ट समझें।

—स्वक्षेत्री या उच्चादिगत पापग्रह हों तो कष्ट नहीं होता है।

—नीचादिगत पापग्रह हों तथा गुलिक भी इनमें स्थित हो तो अति विशेष कष्ट होता है।

—कम पापग्रह हों या शुभ पाप मिश्रित हों तो साधारण कष्ट, मिला जुला फल होता है।

तृतीयषष्ठगे पापे जयादिः परिकीर्तितः।
शुभखेटयुते तत्र जायते च पराजयः॥2॥

दशा राशि से 3.6 भावों में केवल पाप ग्रह हों तो दशा में सर्वत्र विजय व सफलता होती है। लेकिन इन्हीं भावों में केवल शुभ ग्रह हों तो सर्वत्र पराजय होती है। मिश्रित स्थिति होने पर मिश्रित फल समझना युक्तियुक्त है।

लाभस्थे च शुभे पापे लाभो भवति निश्चितम्।
यदा दशाप्रदो राशिः शुभखेटयुतो द्विज!॥3॥

दशा राशि से एकादश भाव में शुभ या पाप कोई भी ग्रह हो तो सफलता होती है। स्वयं सिद्ध है कि ग्रह बलवान् होगा तो विशेष लाभ होगा।

इसी तरह जिस राशि की दशा हो, उसी राशि में बलवान् शुभ ग्रह बैठा हो तो भी लाभ, उपलब्धि होती है। इस प्रसंग में पाराशरीय मत से शुभ पाप ग्रह का निर्णय करना अधिक उपयुक्त है।

दशाराशि से फल का तारतम्य

शुभक्षेत्रे हि तद्राशेः शुभं ज्ञेयं दशाफलम्।
पापयुक्ते शुभक्षेत्रे पूर्वं शुभमसत्परे॥4॥

यदि दशाराशि में कोई ग्रह न हो तो दशाराशि के स्वामी की शुभाशुभता से फल निर्णय करें। दशाराशि का स्वामी शुभ हो तो दशाफल में शुभता का मौलिक भाव आ जाता है।

शुभ राशि होने पर भी, वहाँ कोई पाप ग्रह बैठा हो तो दशा के पूर्वार्ध में शुभ फल तथा उत्तरार्ध में अशुभ फल होता है।

पापर्क्षे शुभसंयुक्ते पूर्वं सौख्यं ततोऽशुभम्।
पापक्षेत्रे पापयुक्ते सा दशा सर्वदुःखदा॥5॥

दशाराशि का स्वामी पाप ग्रह हो और उसमें कोई शुभ ग्रह बैठा हो तो भी दशा के पूर्वार्ध में शुभ फल तथा उत्तरार्ध में अशुभ फल होता है।

यदि पापराशि दशा में उस राशि में कोई पाप ग्रह स्थित हो तथा वह स्वक्षेत्र या उच्च में न हो तो सारी दशा प्रायः दुःखप्रद ही होती है।

शुभक्षेत्रदशाराशौ युक्ते पापैः शुभैर्द्विज!।
पूर्वं कष्टं सुखं पश्चान्निर्विशंकं प्रजायते॥6॥
शुभक्षेत्रे शुभं वाच्यं पापक्षेत्रे फलमसत्॥6॥

शुभ ग्रह की राशि में शुभ पाप ग्रह हों तो पहले कष्ट, बाद में सुख होता है। पाप राशि में शुभ पापग्रह हों तो प्रायः सर्वदा कष्ट ही होता है। शुभ क्षेत्र में शुभ ग्रह हो तो सब शुभ फल होते हैं।

द्वितीय पंचम भाव प्रभाव

द्वितीये पंचमे सौम्ये राजप्रीतिर्जयो ध्रुवम्।
पापे तत्र गते ज्ञेयमशुभं तद्दशाफलम्॥7॥

दशा राशि में 2.5 भावों (राशियों) में शुभ ग्रह हों तो दशाकाल में राजकीय जनों से स्नेहभाव विजय, सफलता मिलती है।

इसके विपरीत पापग्रह 2.5 में हों तो अशुभ फल होता है।

चतुर्थे तु शुभं सौख्यारोग्यं त्वष्टमे शुभे।
धर्मवृद्धिर्गुरुजनात्सौख्यं च नवमे शुभे॥8॥
विपरीते विपर्यासो मिश्रे मिश्रं प्रकीर्तितम्।

दशाराशि से चतुर्थ में शुभ ग्रह हों तो सुख, अष्टम में शुभ ग्रह हों तो अच्छा स्वास्थ्य, नवम में शुभ ग्रह हों तो धर्मवृद्धि तथा गुरु जनों से सुख होता है।

यदि इन्हीं भावों में पाप ग्रह हों तो उक्त सन्दर्भ में अशुभ फल तथा

शुभ-पाप ग्रह रहने से मिश्रित फल होता है।

पाकभोग राशि से निर्णय :

पाके भोगे च पापाढ्ये देहपीडा मनोव्यथा॥9॥
सप्तमे पाकभोगाभ्यां पापे दारार्तिरीरिता।
चतुर्थे स्थानहानिः स्यात्पंचमे पुत्रपीडनम्॥10॥
दशमे कीर्तिहानिः स्यान्नवमे पितृपीडनम्।
पाकाद् रुद्रगते पापे पीडा सर्वाप्यबाधिका॥11॥
उक्तस्थानगते सौम्ये ततः सौख्यं विनिर्दिशेत्।
केन्द्रस्थानगते सौम्ये लाभः शत्रुजयप्रदः॥12॥
जन्मकालग्रहस्थित्या सगोचरग्रहैरपि।
विचारितैः प्रवक्तव्यं तत्तद्राशिदशाफलम्॥13॥

जिस राशि की दशा हो, वह राशि यदि पापयुक्त हो तथा साथ ही भोग राशि भी पाप युक्त हो तो शरीर कष्ट मानसिक व्यथा अधिक होती है।

जिस राशि की दशा हो वह राशि पाकराशि या द्वार राशि कलहाती है। यह दशाश्रयराशि या पाकराशि पहली दशाराशि से जितनी आगे हो, उतनी ही आगे वाली राशि दशा पाकराशि से गिने लें, यही भोगराशि है। माना चरदशा या स्थिर दशा या किसी भी राशि दशा प्रकार में पहली राशि कर्क की है। वर्तमान में वृश्चिक की दशा चल रही है। समराशि होने से विपरीत क्रम से गिना तो वृश्चिक दशा नवीं है। अतः वृश्चिक से नवीं दशा राशि योग राशि होगी। क्रम विपरीत ही होगा। यह मीन राशि है। अतः इस उदाहरण में वृश्चिक राशि तथा मीन राशि भोग राशि है। पाक को दशाश्रयराशि तथा भोग को बाह्यराशि भी कहते हैं।

पाक व भोग राशि से सप्तम में पापग्रह हो तो पत्नी पीड़ा, चतुर्थ में पापग्रह हो तो जायदाद व प्रतिष्ठा में कमी, पंचम में पापग्रह हो तो पुत्र को कष्ट, दशम में पापग्रह हो तो कीर्ति में कमी, नवम में पापग्रह हो तो पिता को कष्ट, एकादश में पापग्रह हो तो बड़ी अनिवार्य बाधा होती है। यदि इन स्थानों में शुभ ग्रह हों तो उक्त बातों का सुख होता है। पाक व भोगराशि से केन्द्र में शुभग्रह हो तो सर्वत्र विजय होती है। यह पाप व शुभ स्थिति जन्म चक्र व गोचर दोनों से देखें।

पाक व भोग दोनों पर पाप प्रभाव हो तथा जन्म गोचर से भी यह सिद्ध होता हो तो बड़ा अशुभ समझें।

शुभमध्य राशिदशा : शुभ

यश्च राशिः शुभाक्रान्ता पूर्वपश्चाच्छुभग्रहाः।
तद्दशा शुभदा प्रोक्ता विपरीते विपर्ययः॥14॥

त्रिकोणरन्ध्ररिःफस्थैः शुभपापैः शुभाशुभम्।
तद्दशायां च वक्तव्यं फलं दैवविदा सदा॥15॥

जो राशि स्वयं शुभयुक्त हो या जिस राशि के आगे पीछे शुभग्रह हों, उसकी दशा शुभ फलदायक होती है। यदि दोनों ओर पापग्रह हों तो दशा अशुभ होगी।

जिस राशि से 5.8.8.12 राशियों में शुभ-पाप मिश्रित ग्रह हों तो उस दशा में भी मिश्रित फल ही कहना चाहिए।

बाधास्थान से दशाफल

मेषकर्कतुलानक्रराशिनां च यथाक्रमम्।
बाधा स्थानानि प्रोक्तानि कुम्भगोसिंहवृश्चिकाः॥16॥
पाकेशाक्रान्तराशौ वा बाधास्थाने शुभेतरे।
स्थिते सति महाशोको बन्धनव्यसनामयाः॥17॥

सभी चर राशियों में ग्यारहवीं राशि बाधा स्थान कहलाती है। अतः 1.4. 7.10 राशियों में क्रमशः 11.2.5.8 राशियाँ बाधा स्थान है।

यदि दशा राशि के स्वामी के साथ या बाधा स्थान में पापग्रह हों तो दशा काल में महाशोक, बन्धन, विपत्ति व रोग होते हैं।

उच्चस्वर्क्षग्रहे तस्मिंच्छुभं सौख्यं धनागमः।
तच्छून्यं चेदसौख्यं स्यात्तदशा न फलप्रदा॥18॥

दशाराशि में, दशाराशीश के साथ या बाधा स्थान में उच्चगत या स्वक्षेत्री ग्रह हो तो उस दशा में सुख व धन की अधिकता होती है।

यदि उक्त राशियाँ ग्रह रहित हों तो साधारण फल, सामान्य नियमों के अनुसार होगा। यदि वहाँ नीचादिगत ग्रह हों तो दुःख, कष्ट आदि होते हैं।

पापग्रहों से राशिफल में तारतम्य

बाधकव्ययषड्रन्ध्रे राहुयुक्ते महद्भयम्।
प्रस्थाने बन्धनप्राप्ती राजपीडा रिपोर्भयम्॥19॥

दशा राशि से बाधा स्थान या 6.8.12 में राहु स्थित हो तो उस राशि की दशा में बड़ा भय, यात्रा में बन्धन, राजकीय पक्ष से कष्ट तथा शत्रुओं से कष्ट होता है।

रव्यारराहुशनिभिर्युक्त राशेः स्थिरा यदि।
तद्राशिभुक्तौ पतनं राजकोपान्महद्भयम्॥20॥

जिन राशियों में सूर्य, मंगल, राहु, शनि स्थित हों, उन राशियों की चरदशा, विशेषतया स्थिरदशा में अन्तर्दशा आने पर पतन, अवनति, राजकोप आदि होते हैं।

भुक्तिराशित्रिकोणे तु नीचखेटः स्थितो यदि।
तद्राशौ वा युते नीचे पापे मृत्युभयं वदेत्॥21॥

अन्तर्दशा राशि से 5.9 में यदि नीचगत पापग्रह हो तो उसकी अन्तर्दशा में मृत्युभय सम्भव होता है।

शुभ ग्रहों से शुभ फल

भुक्तिराशौ स्वतुंगस्थे त्रिकोणे वापि खेचरे।
यदा भुक्तिदशा प्राप्ता तदा सौख्यं लाभेन्नरः॥22॥
नगरग्रामनाथत्वं पुत्रलाभं धनागमम्।
कल्याणं भूरिभाग्यं च सेनापत्यं महोन्नतम्॥23॥
पाकेश्वरो जीवदृष्टः शुभराशौ स्थितो यदि।
तद्दशायां धनप्राप्तिर्मंगलं पुत्रसम्भवम्॥24॥

दशाराशि में या उससे 5.9 राशियों में कोई उच्चगत ग्रह हो तो उस दशा में खूब सुख, नगर या गांव की प्रमुखता, पुत्र प्राप्ति, धन लाभ, कल्याण, उत्तम भाग्य, व्यापक जनसमर्थन, प्रतिष्ठा, सेना नायकत्व व खूब उन्नति होती है।

दशाराशि का स्वामी यदि वृहस्पति से दृष्ट होकर शुभराशि में बैठा हो तो उस राशि की दशा में धनप्राप्ति, मंगल कार्य, पुत्रों का कल्याण होता है।

नीच सम्बन्ध : दुर्भाग्य

यत्र स्थितो नीचखेटस्त्रिकोणे वाथ नीचगः।
तथा राशीश्वरे नीचे सम्बन्धो नीचखेटकैः॥25॥
भाग्यस्य विपरीतत्वं करोत्येव द्विजोत्तम।
धनधान्यादिहानिश्च देहे रोगभयं तथा॥26॥

जिस राशि से 1.5.9 राशियों में नीचगत ग्रह स्थित हो या दशाराशि का स्वामी भी नीच में हो तो उस राशि की दशा में भाग्य की विपरीतता, धन-धान्य की हानि, शरीर में रोग होते हैं।

दशाराशीश यदि नीचग्रह से सम्बन्ध करता हो तो भी उस राशि की दशा में उक्त अशुभ फल होते हैं।

शुक्र चन्द्र की दृष्टि व दशा राशीश

यद्दशायां शुभं बूयात्सचेन्मारकसंस्थितः।
यस्मिन्राशौ दशान्तः स्यात्तस्मिन् दृष्टे युतेऽपि वा॥27॥
शुक्रेण विधुना वा स्याद्राजकोपाद्धनक्षयः।
दशान्तश्चेदरिक्षेत्रे राहुदृष्टयुतेऽपि वा॥28॥
इदं फलं शनेः पाके न विचिन्त्यं द्विजोत्तम!
दशाप्रदे नक्रराशौ न विचिन्त्यमिदं फलम्॥29॥

1. जिस राशि की दशा में पूर्वोक्त नियमों से शुभ फल आता हो, लेकिन वह राशि जन्मकुण्डली में मारक स्थानों में हो।
   अथवा दशाकाल में दशा राशि का स्वामी या वह राशि गोचर में शुक्र या चन्द्रमा से युतदृष्ट हो तो उस दशा काल में राजकोप से धन हानि भी होती है।
2. दशा के दौरान दशाराशीश यदि गोचर में शत्रुराशि में हो या राहु से युक्त-दृष्ट हो तो वह दशा सामान्य नियमों से शुभ होती हुई भी उस गोचर काल की अवधि में शुभ नहीं होती है।
3. यह विधि दशाराशीश शनि हो या शनि की कोई दशा हो तो नहीं अपनायी जाएगी। चरस्थिरादि दशा में विशेषतया मकर राशि की दशा में उक्त विधि नहीं देखी जाएगी।

प्रसंगवश ग्रहों की शत्रुराशियाँ

सितासितभयुग्माश्च सूर्यस्यरिपुराशयः।
कौर्पितौलिघटाश्चेन्दोर्भौमस्य रिपुराशयः॥30॥
घटमीननृयुक्तौलिकन्याज्ञस्य ततः परम्।
कर्कमीनालिकुम्भाश्च राशयो रिपवः स्मृता॥31॥
वृषतौलिनृयुक्कन्या राशयो रिपवो गुरोः।
सिंहालिकर्कचापाश्च शुक्रस्य रिपुराशयः॥32॥
मेषसिंहधनुःकौर्पिकर्कटाः शनिशत्रवः।
एवं ग्रहान्तर्दशां चिन्तयेत् कोविदो द्विज!॥33॥

2.3.7.10.11 सूर्य की शत्रु राशियाँ हैं। 8.7.11 चन्द्रमा की शत्रु राशियाँ हैं। 11.12.3.7.6 मंगल की शत्रु राशियाँ हैं। 4.12.8.11 बुध की शत्रु राशियाँ हैं। 2.7.3.6 गुरु की शत्रु राशियाँ हैं। 4.5.8.9 शुक्र की शत्रु राशियाँ हैं। 1.5.9.8.4 ये शनि की शत्रु राशियाँ हैं। इस विधि से दशा के दौरान गोचर विचार में शत्रु राशियों का विचार करें।

राहुयुक्त राशिदशा : सर्वस्व हानि

राहोर्दशान्ते सर्वस्वनाशो मरणबन्धने।
देशान्निर्वासनं वा स्यात्कष्टं वा महदश्नुते॥34॥
तत्त्रिकोणगते पापे निश्चयाद्दुःखमादिशेत्।
तस्मिन्नेव च राहुश्चेन्निरोधो द्रव्यनाशनः॥35॥

राहु की अधिष्ठित राशि की दशा के अन्तिम चरण में सर्वस्व हानि, मरण, बन्धन, निर्वासन या बड़ा कष्ट होता है। यदि उस राशि से 5.9 में पाप ग्रह हो तो उक्त फल निश्चय से होता है। यदि दशा राशि में राहु गोचर करता हो तो उस गोचर काल में द्रव्य हानि, आमदनी में बाधा होती है।

॥ग्रन्थकृद्वंशवर्णनम्॥

आसीद्रत्नपुरे पराशरकुलोत्पन्नो द्विजोदुम्बरः
ख्यातः पाठकनामतो गुणनिधिः श्रीनन्दरामाभिधः।
तत्सूनुर्गणितागमज्ञतिलकः श्रीमोतिरामांगजो
रेवाशंकर आगमेषु निपुणो भक्ताग्रणीः कोविदः॥1॥

पराशरक्षेत्र में उदुम्बर पाठक वंशोत्पन्न श्रीनन्दराम पाठक रतलाम (रत्नपुर) में उत्पन्न हुए थे। उनके पुत्र श्री मोतीराम पाठक गणितादि ज्योतिष में प्रवीण उत्पन्न हुए। श्रीमोतीराम से श्री रेवाशंकर पाठक नामक विद्वान् भी उत्तमज्योतिर्वित् उत्पन्न हुए हैं।

तदात्मज उदारधीर्गणकमौलिचूडामणि-
रभूद् धरणीमण्डले गुणनिधिर्महादेवकः।
तदंगजनुषा मया कृतमिदं सतां प्रीतये
दशाफलविनिर्णयं सकलकार्यसंसाधकम्॥2॥

श्री रेवाशंकर के पुत्र श्री महादेव पाठक बहुत प्रसिद्ध ज्योतिषी हुए हैं। उनके पुत्र मैंने (श्रीनिवासपाठक ने) सज्जनों के प्रीत्यर्थ यह दशाफल निर्णय करने वाला, सर्वत्र उपयोगी ग्रन्थ संग्रहीत किया है।

फाल्गुनस्य सिते पक्षे पंचम्यां रविवासरे।
खरसांकेन्दुसंख्याके विक्रमाब्दे शुभे दिने॥3॥
दशाफलविचारस्याखिलकष्टनिवृत्तये।
संग्रहोऽयं कृतः सर्वग्रन्थादुद्धृत्य यत्नतः॥4॥

विक्रम संवत् 1960, फाल्गुन शुक्ल पंचमी रविवार को यह दशाफल विचारात्मक दशाफलदर्पण नामक ग्रन्थ, विभिन्न ग्रन्थों से संग्रह करके लिखा है।

इति श्री दशाफलदर्पणे पं. सुरेशमिश्रकृते हिन्दीव्याख्याने
चरादिदशाफलाध्यायः षड्विंशः॥26॥

॥आदितः श्लोकाः 2122॥

॥वंशवर्णनसहिताः 2126॥

॥समाप्तोऽयं ग्रन्थः॥

27
॥ व्यावहारिक दशाविवेचन ॥

ग्रन्थ में मूल पाठ के अनुरोध से सोदाहरण विवेचन करने पर विषय का क्रम तारतम्य भंग होने का भय था, अतः अन्त में पाठकों को कुछ खास व्यावहारिक नियमों का विवेचन करके यहाँ दिखाया जा रहा है। **लघुपाराशरी** के नियमों को ग्रन्थ में ही यथावसर पुष्पित कर दिया गया है। पाठकों को हमारी सलाह है कि दशा फल विवेचन में जहाँ तक हो सके **लघुपाराशरी** व **बृहत्पाराशर होरा शास्त्र** के नियमों को अपने मस्तिष्क में क्रमशः जमा लेना चाहिए। इन दो पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य कहीं कही गई दशाफल सम्बन्धी बातें प्रायः अति सामान्य स्तर की हैं।

विंशोत्तरी की महत्ता—सभी नक्षत्र दशा प्रकारों में विंशोत्तरी दशा ही प्रमुख प्रकार है तथा सर्वत्र बिना किसी शर्त प्रयोग किया जा सकता है तथा प्रयोग किया जाना चाहिए। देश व काल भेद से कुछ अन्य दशा भेदों की वकालत करने वाले लोगों के लिए निवेदन है कि सभी नाक्षत्रिक दशाओं में विंशोत्तरी ही आत्मा है तथा फल कथन का प्राण है। अतः व्यक्तिगत फलादेश के प्रसंग में विंशोत्तरी दशा का जवाब नहीं है।

पंचमेश का योग : पारस पत्थर

सभी जगह कहा गया है कि 6.8.12 भावेशों की स्थिति जिस किसी भाव में हो, वे अपनी स्थिति से उसी भाव को बिगाड़ते हैं, लेकिन त्रिक भावेश यदि बली पंचमेश से युक्त होकर केन्द्र त्रिकोण में बैठे हों तो बहुत उत्तम, यदि अनिष्ट भावों में हों तो भी उत्तम फल अपने दशा काल में देते हैं। उदाहरणार्थ यहाँ दी जा रही कुण्डली में अष्टमेश वृहस्पति, पंचमेश बुध के साथ दशम आगे में है, फलस्वरूप उक्त नियम से वृहस्पति की दशा में दशम भाव सम्बन्धी तथा गुरुदृष्ट भावों से सम्बन्धित शुभ फल होगा, यह निश्चय हुआ। यद्यपि सूर्य के साथ रहने पर बुध व वृहस्पति दोनों ही उदाहरण में अस्त प्रायः तथा निर्बल प्रतीत होते हैं, जबकि गुरुदशा में उक्त व्यक्ति ने विशेष मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। उस समय ये सज्जन उम्र

के छठे दशक में चल रहे थे। यह एक दक्षिण भारतीय प्रसिद्ध दैवज्ञ की कुण्डली है।

ध्यान रहे, पंचमेश बलवान् होकर व्यक्ति की बुद्धिमत्ता, दुनियांदारी, अनुभव, मन्त्रशक्ति, संकल्प शक्ति को बढ़ाता है तथा व्यक्ति प्रायः ऐसा भीतरी आत्मिक बल प्राप्त कर लेता है, जिससे वह सम्भावित बाधाओं को सरलता व बुद्धिमानीपूर्वक पार करके सफल हो जाता है।
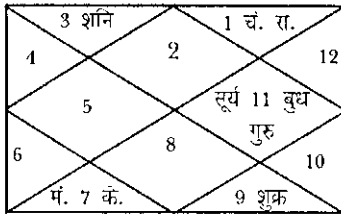
12.2.1856
इष्ट 14:30 घटी

इसी उदाहरण में चतुर्थेश व पंचमेश का योग भी दशम में हो रहा है जो मणिकांचन योग बनाता है।

योगकारक सम्बन्ध : अशुभता का नाश

प्रत्येक कुण्डली में योगकारक ग्रह ऐसी विशेषता रखता है कि उसके सम्पर्क में आने वाले सभी ग्रह, चाहे वे दुष्ट ही क्यों न हों, एक तरह से सत्संगति प्राप्त करके, अपनी दशा में शुभ फलदायक हो जाते हैं। विशेषता यह है कि पापी दुष्टभावेश अर्थात् 6.8.12 पापी भावेश की संगति से योगकारक नहीं बिगड़ता है वरन् योगकारक की संगति से वह दुष्टफलदायी भी काफी हद तक सुधर जाता है।

पाक कला विशेषज्ञ कहते हैं (देखें बृहत्संहिता) सब मसालों में धनिया सबसे बलवान् होता है। यदि मसालों के सम्मिश्रण में धनिया अधिक हो जाए तो अन्य मसालों के गुण व सुगन्ध धनिये के सामने दब जाते हैं। ठीक इसी तरह योगकारक भी अन्य ग्रहों की अशुभता को दबा देता है तथा अन्य योगकारक या शुभ फलदायी ग्रह से मिलकर विशेष गुण पैदा करता है।
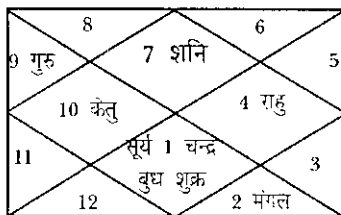
22.4.1925
18:45 घंटे

योगकारक ग्रह भी कभी कभी संगति के प्रभाव में आकर अपनी वास्तविक आभा खो बैठता है, उस परिस्थिति का विवेचन उपरोक्त कुण्डली के आधार पर आगे किया जा रहा है।

चतुर्थेश पंचमेश शनि की दृष्टि 3.6 भावेश गुरु पर है। चन्द्र राशीश मंगल से भी दृष्ट है, लग्नेश शुक्र से त्रिकोण संबंध बन रहा है, साथ ही लाभेश, भाग्येश, दशमेश से भी त्रिकोण सम्बन्ध है। जनवरी 1992 में गुरुदशा जब इन्हें शुरू हुई तो अपने कार्यक्षेत्र में राष्ट्रव्यापी प्रसिद्धि, यश व सफलता प्राप्त होती गई है तथा अभी तक अक्षुण्ण है। हालाँकि वृहस्पति स्वक्षेत्री है, लेकिन तुला लग्न वालों के लिए वृहस्पति शुभ फलदायक कहीं भी नहीं कहा है। योगकारक सम्बन्ध, सामान्य नियम से अशुभ ग्रह को, कैसे शुभता प्रदान कर देता है, यहाँ स्पष्ट हो जाता है। योगकारक ग्रह ऐसा पारस पत्थर है, जो लोहे को भी सोना बनाने की सामर्थ्य रखता है।

नवमेश व गुरु सम्बन्ध

जिस ग्रह से नवमेश या वृहस्पति या दोनों ही कोई सम्बन्ध रखते हों तो उस सम्बन्धी ग्रह के दशा काल में व्यक्ति का भाग्य व प्रतिष्ठा स्वमेव बढ़ जाती है। स्पष्ट है कि सम्बन्धी ग्रह की निजी स्थिति से फल प्राप्ति में तारतम्य होगा।

त्रिकोणेश सदा स्वाभाविक शुभ हैं, यह बात पाराशरीय मत में खासतौर पर रेखांकित की गई है। ये त्रिकोणेश ऐसा च्यवनप्राश बन जाते हैं कि जिनके सम्बन्ध से अन्य कमजोर या दुःस्वास्थ्य ग्रह भी युवावस्था जैसे ओज को पा लेते हैं। यदि ग्रह पहले से ही सुस्थित हुआ हो तो फिर क्या कहना? विशेष शुभता स्वयं सिद्ध ही होगी। **पाराशरहोरा** में कहा गया है—

भाग्येशगुरुसम्बन्धाद्योगदृक्केन्द्रभादिभिः।
परेषामपि दायेषु भाग्योपक्रममुन्नयेत्॥

यह एक केन्द्रीय मन्त्री की कुण्डली है। आप लगातार दो सरकारों में मन्त्री रहे हैं। मंगल की दशा में आपको उक्त पद प्राप्त हुआ था। यहाँ मंगल पर पंचमेश शुक्र, नवमेश बुध, राशीश गुरु की दृष्टि तो है ही, साथ में पाप केन्द्रेश मंगल का परमकारक शुक्र से स्थान परिवर्तन सम्बन्ध भी बन रहा है।

केन्द्रेश त्रिकेश दशा

यदि एक ही ग्रह षष्ठेश व सप्तमेश हो या पंचमेश षष्ठेश एक ही हो, सप्तमेश अष्टमेश एक ही हो जैसे सिंह लग्न में शनि, कन्या में पंचमेश षष्ठेश शनि, कर्क लग्न में 7.8 भावेश शनि, किसी भी प्रकार से शुभ सम्बन्ध करता हो तो वह अपनी दशा में प्रायः शुभ फल देता है। बशर्त, वह राहु या केतु के साथ न हो। यदि वह संयुक्त भावेश दशा में बलवान् हो तो राजयोग बनाता है।

इस कुण्डली में 7.8 भावेश शनि पंचमेश से युक्त है। योग कारक से भी युक्त है। नवमेश गुरु से केन्द्र सम्बन्ध बनाता है, अतः शुभ हुआ। लेकिन साथ में राहु से भी युक्त है, अतः अशुभ फल देने की प्रवृत्ति भी रखता है। कुण्डली वाले जातक को शनि दशा में विशेष उन्नति प्राप्त हुई, लेकिन इसी दशा में रोग व दुर्घटना भी आई। कहा गया है–

षष्ठस्य सप्तमस्यैको नायको मानराशिगः।
दशा तस्य शुभा ज्ञेया तथा तेन युतस्य च॥

(दशाफलदर्पण)

विशेष व्युत्पत्ति के लिए हमारी **लघुपाराशरी** का मनन करना आवश्यक है।

राहुयोग : कष्टदशेश

कोई योग कारक या अन्य नियम से शुभ सिद्ध होता हुआ यदि राहु केतु के अंशों के आसपास हो, खासतौर पर 7°-8° अंशों के भीतर हो तो उस ग्रह की दशा के अन्त में विशेष परेशानियाँ आती हैं। कहा गया है–

भावेशाक्रान्तराशीशो राहुग्रस्तोऽथ नीचगः।
छन्नो वा पापदृष्टश्च भावनाशकरो मतः॥

अपि च दशेश जिस ग्रह की राशि में हो, वह ग्रह भी यदि राहु से ग्रस्त हो या नीच में हो या अस्त हो और पापदृष्ट भी हो तो बहुत हानिप्रद होता है। अन्यथा शुभ सिद्ध होता हो तो शुभ फल भी आएँगे।

गुरुदशा शुक्र अन्तर्दशा में आप को अपने जीवन साथी को खोना पड़ा, जबकि अन्य उपलब्धियाँ अच्छी रहीं।

इस कुण्डली में शुक्र द्वितीयेश सप्तमेश होने से मारक है। स्वयं नीच में है, शुक्र का राशीश बुध केतु के साथ निकट में ही है। उक्त नियम स्पष्ट तथा घटित हो रहा है। यदि दूर होता तो कम अनिष्ट अथवा केवल रोग और कम होने पर केवल चिन्ता ही होती।

कुछ विचारणीय बिन्दु

कोई भी ग्रह, किसी भी लग्न में, किसी भी भाव में स्थित हो, निम्नलिखित परिस्थितियों में अपनी शुभता को बरकरार रखता है तथा जैसे भाव में हो, जैसे भाव का स्वामी हो, जैसे ग्रहों से सम्बन्ध करता हो, उनके विषय में यथावसर

शुभता को बढ़ाता है। अतः अपनी दशा में गुण पैदा करता है।

- परमोच्च व उसके आसपास स्थित ग्रह अपनी परिस्थित व सम्बन्धानुसार पूरी शक्ति से शुभ फल को बढ़ाता है तथा अशुभता को समेटता है। अर्थात् लगभग शत प्रतिशत शुभ फल देने की सामर्थ्य रखता है।
- उच्च राशि में परमोच्च से थोड़ा कम शुभ, उच्च राशि के आसपास वाली राशि में पूर्वोक्त से थोड़ा कम शुभ है।
- अपनी मूल त्रिकोण या स्वराशि में पूर्वोक्त से कम शुभ है, लेकिन शुभ अवश्य है।
- अपने अधिमित्र की राशि में पूर्वोक्त से थोड़ा कम, निसर्ग मित्र की राशि में अधिमित्र से थोड़ा कम शुभ तथा तत्काल मित्र की राशि में पूर्वोक्त से थोड़ा कम शुभ है।
- समग्रह की राशि में शुभ व पाप फल लगभग बराबर रहते हैं।
- शत्रुराशि में अशुभता थोड़ी बढ़ जाती है।
- अधिशत्रु राशि में और अधिक अशुभ, नीच राशि के पास थोड़ा और अधिक अशुभ, नीच राशि में और अधिक अशुभ, परम नीच में सर्वाधिक अशुभ होता है।
- अस्तंगत, युद्ध में पराजित ग्रह भी नीचवत् अशुभ है।
- नीच, शत्रुवर्गों में गया ग्रह भी उन्हीं राशियों के समान समझना चाहिए।
- केन्द्रत्रिकोणगत शुभता को बढ़ाता है। 6.8.12 में स्थित ग्रह शुभता को घटाता है।
- 3.11 में परिस्थिति वशात् शुभ या अशुभ तथा 2.12 में उदासीन होता है।
- चन्द्रमा की दशा में पक्षबली चन्द्रमा सदा शत्रुता बढ़ाता है।
- सूर्य से पीछे की राशियों में स्थित ग्रह शुभ फल देने में संकोच करते हैं तथा सूर्य से आगे की राशियों में ग्रह खुलकर अपना शुभ फल देते हैं।
- स्वनवांश, उच्चनवांश व द्रेष्काण में स्वगृही या उच्च की तरह अपना शुभ फल बढ़ाते हैं।
- वर्गोत्तम नवांशगत ग्रह भी शुभ फलदायक होता है।
- अपने अष्टवर्ग में स्थित राशि में 5 से अधिक रेखाएँ पाने वाला ग्रह अपनी दशा में शुभ होता है।

उक्त विधि से ग्रह की शुभता की मात्रा का निर्णय करके फल कहना चाहिए।

भावेशत्व से विशेष शुभता

- एक ही ग्रह 2.7 भावेश हो, जैसे मेष लग्न में शुक्र, तो उसकी दशा तथा उससे युक्त ग्रह की दशा में शुभ फल भी होते हैं। सम्भव होने पर मारकत्व तो रहता ही है।
- जिस दशेश से 3.6.10.11 में शुभ ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों, उसकी दशा शुभ होती है।
- जिस ग्रह से केन्द्र कोण व अष्टम में राहु हो, उसकी दशा में परेशानियाँ व व्यर्थ कष्ट होता है।

कुछ विशेष अनुभूत नियम

1. राहु केतु की परस्पर दशान्तर्दशा में बाधाएँ स्वयमेव आती हैं।
2. गुरु शुक्र की परस्पर दशान्तर्दशा में, विवाहित जीवन में सुख की कमी होती है, बशर्त उनमें से कोई एक अशुभ भाव या राशि में हो।
3. यदि दोनों ही शुभ भाव व राशि में हैं तो बहुत शुभ फल देते हैं।
4. शनि शुक्र में से कोई एक कमजोर भाव या राशि में हो तो इनकी परस्पर दशान्तर्दशा में अचानक शुभता में बढ़ोत्तरी होती है। अन्य नियमों से प्राप्त फल बरकरार रहते हैं।
5. यदि दोनों की स्थिति अशुभ हो तो विशेष कष्ट होते हैं।
6. शनि राहु यदि साथ में स्थित हों या किसी योगकारक से सम्बन्ध करें तो अपनी दशान्तर्दशा में विशेष तरक्की देते हैं।
7. राहु यदि 1.2.3.4.8.9.12 राशियों में कहीं भी स्थिति हो तो कुछ न कुछ अच्छे फल अवश्य देता है।
8. किसी भी राशि के 30वें अंश में स्थित ग्रह, चाहे अन्य नियमों से शुभ सिद्ध होता हो, तब भी सहसा कार्यविघ्न, कार्यहानि तथा कष्ट लाता है।
9. नीचगत ग्रह या राहु के साथ स्थित ग्रह अपने शुभ फलों को देने में बहु संकोच करता है।
10. दशेश व अन्तर्दशेश यदि परस्पर 2.12 या 6.8 में हों तो शुभ फलों को रोकते हैं।
11. राहु व गुलिक की राशि का स्वामी ग्रह, अपनी सारी शुभता को छिपा लेता है तथा अशुभ फल भी देता है।

12. गुलिक के साथ स्थित ग्रह भी अशुभ होता है।
13. सारी अन्तर्दशा को तीन बराबर भागों में बाँट लें। प्रथम त्रिभाग में भावजन्यफल, द्वितीय त्रिभाग में राशि स्थिति का फल तथा तृतीय त्रिभाग में दृष्टि फल विशेषतया देते हैं।

पाकस्यादौ भावजन्यं ग्रहाणां तत्तद्राशिस्थानजं पाकमध्ये।
दायस्यान्ते दृष्टिसंजातमेव सर्वे तारापाकभेदं वदन्ति॥

(जातक पारिजात)

विशेष विवेचन हेतु पाठकों को सलाह है कि वे हमारा **बृहत्पाराशर होराशास्त्र, जातक पारिजात, लघुपाराशरी, फलदीपिका** अवश्य पढ़ें। वहाँ बहुत से उदाहरणों द्वारा विषय को सर्वथा स्पष्ट किया गया है।

॥इति शम्॥